प्रेम ही है परमात्मा

दृष्टांत सागर

The Secret of Happiness

अनुभव का ज्ञान उज्जवलता की वाणी।
कहे कबीर गूंगे की सैना जिन जानी तिन मानि।।

कुछ चुने हुए भजनों के मुखड़े

मेरी जिंदगी में क्या था, तेरे मिलन से पहले
मैं बुझा हुआ दिया था...तेरे मिलन से पहले...

मुझे अपनी पसंदी का बना लो जी
मुझे झुकना नहीं आता मुझे झुकना सिखा दो जी...

आपने अपना बनाया, मेहरबानी आपकी
शीशे से हीरा बनाया, कदरदानी आपकी...

क्या कहूं कौन सी दौलत है गुरु
मेरी जन्नत मेरी पूजा मेरा जीवन है गुरु...

पियो रे राम रस है कोई प्यासा
पियो रे पियो राम रस पियो है कोई प्यासा...

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में...

अनमोल तेरा जीवन यूं ही गंवा रहा है।
किस ओर तेरी मंजिल किस ओर जा रहा है...

इस माटी में सुन मेहरबान जब तलक एक भी स्वांस हो
तेरी प्रीत ना बिसराऊं मैं ये ही होंठों पे अरदास हो...

दृष्टांतों की सूची

दृष्टांत सागर
(खंड-1)

	दृष्टांत	संख्या	पेज संख्या
1.	गुरु-शिष्य	1-59	17-60
2.	ज्ञान	60-112	61-112
3.	विवेक	113-166	113-152
4.	देहध्यास मिटाना	167-179	153-166
5.	आसक्ति मिटाना	180-217	167-198
6.	ब्रह्मज्ञानी	218-228	199-208
7.	समदृष्टि	229-231	209-210
8.	संस्कार	232-233	211-212
9.	माया का पर्दा	234-286	213-246
10.	अहंकार	287-301	247-259
11.	मरना-मिटना	302-308	260-263
12.	कर्मयोग	309-310	264-266
13.	भावी	311-333	267-282
14.	भावना	334-363	283-306
15.	सच्ची समझ	364-400	307-332

16.	श्रद्धा, भक्ति, उदारता, प्रेम	401-441	333-360
17.	गुण (क्षमा, नम्रता आदि)	442-472	361-388
18.	त्याग भावना, त्याग, दान	473-482	389-396
19.	सत्संग की महिमा	483-488	397-402
20.	प्रारब्ध	489-493	403-405
21.	निंदा-कीर्ति	494-499	406-410

महापुरुषों के दृष्टांत-की सूची

श्रीकृष्ण

91. दुर्वासा निराहारी कृष्ण ब्रह्मचारी
94. आत्मा की एकता
165. कृष्ण ने वैकुंठ दिखाया
175. बछड़ा मर गया
286. रुक्मिणी ने गर्म दूध पिलाया
297. कृष्ण ने गोवर्धन उठाया
412. सूरदास ने कृष्ण को बांधा
435. अपने कर्म खुद भोगने हैं

गुरु नानक

3. थल्ला बनाओ
4. कितना बजा है
8. मुर्दा खाओ
148. खेतों को पानी दिया
362. बुराई करे उससे भलाई

राजा जनक

41. राजा जनक को तीन चमाट
47. गुरु जनक को ज्ञान सुनाता
126. ये सत्य या वो सत्य
167. तुम सब चमार
195. शुकदेव को तेल कटोरा
196. जनक के महल में आग
369. जनक के खोटे सिक्के लिए

नारद

122. नारद ने वाल्मीकि को फेरा
168. नारद और शुकदेव में कौन बड़ा
243. सूअर ने पूछा स्वर्ग में विष्टा
253. नारद को माया दिखाई
299. नारद को सुरीली वीणा का
300. नारद को मंदिर का सुख
411. भगवान सब को खिलाकर
427. महापुरुषों की महिमा
429. भगवान को पग धूलि देगा?
468. नारद को नर्क जाने का श्राप

रामतीर्थ

6. पैसा नदी में फेंको
38. वैश्या ने पाप-कर्म भेंट
88. जहां-तहां भगवान
104. अपनी फलक
302. रामतीर्थ ने चिट्ठी लिखी

राजा भर्तृहरि

101. जड़ भरत ने पालकी उठाई
188. राजा भर्तृहरि का वैराग
270. पान के थूक में हाथ डाला
279. राजा भर्तृहरि के दो जन्म
288. अहंकार पहचाना
452. राजा भर्तृहरि ने सच्चाई दिखाई

रामचंद्र जी

406. सब राम ही राम
414. राम का तीर
425. राम से बड़ा राम का भक्त

रामकृष्ण परमहंस

213. भगवान के लिए मिट्टी सोना एक
453. रामकृष्ण ने चाखरी लगाई
459. रामकृष्ण ने नम्रता का सबक

विवेकानन्द

99. भगवान दिखाओ
441. विवेकानन्द अटूट श्रद्धा
464. एकाग्रता में शक्ति

कबीर

160. कबीर ने अपात्र को ज्ञान
164. तीर्थों में भी चोर
422. बेटों से चोरी कराई

गांधी जी

187. गठरी बांधकर
428. महात्मा गांधी की परख

संत मीरा

144. फोटो से विवेक
145. पुजारी का विवेक

बुद्ध

110. बुद्ध को गाली
419. बुद्ध और अंगुलिमाल
483. सत्संग की महिमा

शुकदेव

177. वेद व्यास शुकदेव
180A. चांडाल की झोंपड़ी
195. जनक ने शुकदेव को

वशिष्ठ

179. वशिष्ठ भीतर गए
251. मिथ्या जगत
483. सत्संग की महिमा

ईसा

1. गुरु वाक्यं सत्यं
96. ईसा सूखे नारियल जैसा

1. गुरु-शिष्य के दृष्टांतों की सूची

गुरु वाक्यं सत्यं

1. गुरु वाक्यं सत्यं कर
2. गुरु ने कहा हट जा
3. गुरु नानक ने शिष्य से कहा थल्ला बनाओ
4. गुरु नानक ने लहणा को कहा कितना बजा है
5. गुरु ने अपने शिष्यों को कहा अपना खून दो
6. रामतीर्थ ने शिष्यों से कहा पैसा नदी में फेंको
7. अधिक मूल्यवान गुरु आज्ञा
8. गुरु नानक ने लहणा को कहा मुर्दा खाओ
9. गुरु ने शिष्य से कहा रुमाल शराब में डुबा लाओ
10. गुरु ने कहा पीठ पर लात रख
11. मैं मुआ तो खुद खुदा हुआ

गुरु ने रमज़ दी

12. गुरु ने रमज़ से दही खाना छुड़ाया।
13. गुरु ने कहा रबर की चप्पल पहनो
14. संत ने गुड़ खाना छुड़वाया
15. राम कहे बंधन छूटे नहीं, सतगुरु मिले तो बंधन छूटे

गुरु ने विवेक जगाया

16. गुरु जागना सिखाता है
17. तू कौन मैं कौन
18. नेष्ठामुक्त और वाचामुक्त
19. गुरु ने शिष्य की आसक्ति निकाली
20. गुरु ने कहा शास्त्रों से ज्ञान न होगा
21. कुछ भी नहीं बनो
22. पूरे गुरु की पहचान नहीं होती

23. दो साधु
24. गाय के बछड़े जितना भी प्यार गुरु से नहीं
25. शिष्य ने गुरु की पेटी खोली

गुरु ने अहंकार, लोभ, मोह से बचाया

26. पुराने शिष्यों का अहंकार तोड़ा
27. लोभ के कारण मौत
28. सांसारिक प्रेम क्या होता है
29. गुरु ने शिष्य को माया का सुख दिलाया
30. मोह है स्वार्थ
31. गोरख नाथ ने सोना फेंका
32. सूली का कांटा

गुरु ने ज्ञान दिया, प्रेम दिया

33. गुरु बृहस्पति और चन्द्रमा
34. गुरु ने लाल दिया Order से नहीं नम्रता से
35. सागर में गागर
36. तरबूज को तीन हिस्सों में बांटा
37. सब रूप में भगवान ही आता है
38. रामतीर्थ को वेश्या ने पूरे पाप कर्म भेंट दिए
39. बैल का रूप
40. संत को लोहा लगाया
41. राजा जनक को गुरु ने तीन चमाट लगाई
42. गुरु के भक्त को गाली दी तो खुद को ही लगी
43. दुरात्मा से महात्मा
44. सत्गुरु ही हमारे मन से सुन्दर
45. गुरु ने आशीश दिया–मनुष्य बनो
46. संत ने उर्वशी से कहा स्त्री-तत्त्व कहां?
47. गुरु राजा जनक को ज्ञान सुनाता था

गुरु को रिझाना

48. बुल्लेशाह ने गुरु को कैसे रिझाया
49. लायक जिज्ञासु
50. गुरु को अपने ज्ञान का निश्चय सुनाओ
51. बुद्धिमान बालक

गुरु-शिष्य परीक्षा

52. अपनी परीक्षा देना
53. ब्रह्मज्ञानी को शिष्य ने अहं में छोड़ा,
54. गुरु ने शिष्य की परीक्षा ली नहर खोलकर
55. सच्चे गुरु की पहचान
56. इन्द्र और विरोचन सौ वर्षों का ब्रह्मचर्य
57. गुरु ने शिष्यों को फल दिया

गुरु से रीस

58. बताहू अल्लाहू
59. तुम भी बाबा हम भी बाबा

गुरु-शिष्य के अन्य दृष्टांत

गुरु वाक्यं सत्यं

गुरु ने रमज दी

23. दो साधु
255. सुख-दुख की List बनाई

गुरु ने विवेक जगाया

167. तुम सब चमार हो
237. माया का नशा
268. बाप-बेटी इकट्ठे न बैठें
335. गुण-ग्राहक दृष्टि
488. सूली से कांटा

गुरु से रीस

गुरु ने अहं, लोभ, मोह से बचाया

239. कामिनी-कंचन-कीर्ति

गुरु ने ज्ञान, प्रेम दिया

242. स्वप्न में हार-जीत
298. झाड़ू वाली ने उपकार किया
336. क्रोध नहीं धन्यवाद दो
420. बुद्ध भगवान और उंगलिमाल डाकू
493. ऐसा भी होता है

गुरु-शिष्य परीक्षा

गुरु को रिझाना

468. नारद को नर्क जाने का श्राप

दृष्टांत सागर

(खंड–1)

भाग्य बड़े सतगुरु मैं पायो, मन की दुविधा दूर नसाई।
बाहर ढूंढ़त फिरा मैं जिसको, सो वस्तु घट भीतर पाई।
सकल जून जीवन के माही, पूरण ब्रह्म ज्योति दरसाई।
जन्म जन्म के बंधन काटे, चौरासी लख त्रास मिटाई।
ब्रह्मानंद चरण बलिहारी, गुरु महिमा हरि से अधिकाई।

गुरु वाक्यं सत्यं

1. गुरु वाक्यं सत्यं कर

एक दिन क्राइस्ट ने शिष्य को ईंट उठाने के लिए कहा। सबने उठाई पर एक–दो के मन में शंका आई कि ज्ञान सुनने आए हैं या ईंट उठाने के लिए! उन्होंने नहीं उठाई। आगे चले तो जिन्होंने ईंट उठाई उनकी ईंट सोने की हो गई और जिन्होंने नहीं उठाई उनको आगे चलकर पांव में लगी।

सिद्धांत : गुरु वाक्यं सत्यं करने से सूली भी कांटा हो जाएगी नहीं तो कांटा भी सूली की तरह पांव में लगेगा।

2. गुरु ने कहा हट जा

एक गुरु किसी और प्रेमी से बात कर रहा था। दूसरा सामने आया तो गुरु ने कहा हट जा। शिष्य केवल इतना सुनकर घर गया और सब पदार्थों से हट गया। इतना लीन हो गया कि जगत से ऊपर हो गया। थोड़े समय के बाद वह बीमार हो गया, शरीर घुटने लगा तो सबको कहा, मेरे गुरु को बुलाओ, उसे प्रणाम करूं जिसने मेरे को जगत से ऊपर किया है। गुरु को बुलवाया गया। गुरु ने कहा, मैं तो इसे

पहचानता नहीं हूं, पर उसने बताया मैं तो आपके एक वचन से निहाल हो गया।

सिद्धांत : गुरु के मुख से जो वचन निकले उस पर मिट जाएं।

3. गुरु नानक ने शिष्य से कहा थल्ला बनाओ, मिटाओ

गुरु नानक ने दो शिष्यों से कहा थल्ला बनाओ। फिर कहा ठीक नहीं बना है, तोड़ो, फिर से बनाओ। फिर बनाया गया, गुरु ने कहा कि ठीक नहीं बना है, फिर तोड़ो और बनाओ। एक शिष्य तो भाग गया क्योंकि उसने सोचा, यह बूढ़ा हो गया है और इसे मालूम नहीं पड़ता है यह क्या बोल रहा है। दूसरे ने कहा ठीक है, फिर बनाना शुरू किया। उसने सोचा—'वैसे भी तो शरीर बैठा ही है, इससे जो भी सेवा हो, ठीक है।' गुरु नानक ने उसे गले लगाया, कहा—'मैं देख रहा था कौन बुद्धि मिटा के चलता है।'

सिद्धांत : सतगुरु उल्टा-सीधा चलाकर मन-बुद्धि खत्म कर देता है। यह अपने आप कई बरसों के अभ्यास से भी नहीं हो सकता।

4. गुरु नानक ने लहणा को कहा कितना बजा है

एक रात गुरु नानक ने बाबा बूढ़े को कहा—'कितना वक्त हुआ है।' बाबा बूढ़े ने बताया—'चार बजे हैं।' फिर गुरु नानक ने पूछा—'कितना समय हूआ है।' बाबा बूढ़े ने

कहा—'चार बजकर दो मिनट।' गुरु नानक ने फिर पूछा तो कहा—'चार बजकर पांच मिनट।' गुरु नानक ने लहणा से पूछा, बच्चा कितना बजा है। लहणा ने कहा—'साईं, जितनी रात आपने बिताई है उतनी बीत गई है, जितनी आपने बचाई उतनी बची है।'

सिद्धांत : लहणा को मालूम था कि गुरु नानक को सब मालूम है हम क्यों बुद्धि चलाएं।

5. गुरु ने अपने शिष्यों को कहा अपना खून दो

एक गुरु के तीन शिष्य थे। आधी रात का समय था। तीनों सोए हुए थे। सांप आया तो गुरु ने पूछा—'क्या चाहिए?' सांप ने तीनों का खून मांगा। गुरु ने कहा—'ठहरो, मैं लेकर आता हूं।' तीनों शिष्य तीन कोठरी में सोए पड़े थे। गुरु एक शिष्य के पास गया और उसका खून निकाला। शिष्य शांत रहा, उसके अंदर में था गुरु की हर बात में राज है। दूसरे के पास गया तो शिष्य ने खून निकालने का कारण पूछा। गुरु ने बताया और खून निकाला। तीसरे के पास गया तो शिष्य खून के नाम से भाग गया। ज्योंही आगे गया तो सांप ने काट लिया और वह मर गया।

सिद्धांत : गुरु वाक्य सत्यं करने से मौत के मुंह से बच जाएंगे।

6. रामतीर्थ ने शिष्यों से कहा पैसा नदी में फेंको

रामतीर्थ ने एक दिन सब शिष्यों से कहा कि तुम्हें भगवान

में विश्वास है तो पैसे नदी में फेंक दो। उन्होंने पैसे नदी में फेंक दिए। शांतमय बैठे रहे। कुछ समय बाद आप ही एक आदमी आया और कहने लगा—'आप हमारे घर चलकर खाइए।' शिष्यों को विश्वास हो गया कि माया के सिवाय भी हम परमात्मा के सहारे और अधिक अच्छे ढंग से चल सकते हैं। परमात्मा सबका मूल है।

सिद्धांत : गुरु ही भक्तों को अनुभव कराते हैं। निराकार ही सबका आधार है अगर हम आज्ञानुसार चलें तो।

7. अधिक मूल्यवान गुरु आज्ञा

एक बार एक राजा ने बहुत ही मूल्यवान हीरा बहुत धन देकर खरीदा। थोड़ी देर बाद राजा ने मंत्रियों को उस हीरे के टुकड़े-टुकड़े करने को कहा। मंत्रियों ने पूछा कि ऐसा क्यों करवाना चाहते हैं। राजा उनको कुछ उत्तर न देकर अपने विशेष दास को ऐसा करने को कहते हैं।

उसने तुरंत ही हीरे के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। सब मंत्रियों ने उसे मूर्ख करार दिया और पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया।

वो बोला, आपको हीरा कीमती दिखाई दिया, मुझे स्वामी की आज्ञा। इस उत्तर ने सबको लाजवाब कर दिया।

सिद्धांत : सबसे कीमती गुरु की आज्ञा।

8. गुरु नानक ने लहणा को कहा मुर्दा खाओ

गुरु नानक के समय में मालूम पड़ गया कि गद्दी अंगद

देव को मिलेगी तो उनकी औरत ने कहा—'ऐसी बात होवे जो गद्दी घर में लड़कों को मिले।' गुरु नानक शांत रहे। एक दिन रास्ते में गुजर रहे थे, गुरु नानक के लड़के भी साथ में थे और अंगद देव भी। सामने नदी में मुर्दा तैर रहा था। गुरुनानक ने लड़के से कहा—'मुर्दा खाओ।' लड़कों ने कहा—'हम बड़े घर के हैं, मुर्दा कैसे खाएंगे।' गुरु नानक ने कहा—'भाई लहणा। मुर्दा खाओ।' लहणा शांत रहा, बोला—'बताइए, ऊपर से खाऊं या नीचे से शुरू करूं?' गुरु नानक ने कहा—'नीचे से शुरू करो।' लहणे ने मुर्दे को रखकर नीचे चादर लगाई। जब चादर उठाई तो देखा कि प्रसाद है, मुर्दा नहीं।

एक बार और ऐसे ही लहणा ने गुरु वाक्यं सत्यं किया। लोटा गटर में गिर गया था। गुरु नानक के कहने पर लड़के लोटा नहीं लाए, पर लहणा जल्दी जाकर निकाल लाया।

सिद्धांत : गुरु वाक्यं सत्यं ही गुरु की सच्ची भक्ति है।

9. गुरु ने शिष्य से कहा रुमाल शराब में डुबा लाओ

एक गुरु ने अपने भक्त से कहा, ये रुमाल शराब में डुबा के लाओ। अब शराब कहां मिले। खोजते हुए वेश्यालय पर गया। वहां शिष्य की खोई हुई बेटी बैठी मिली। वह भी वेश्या थी। भक्त उसे वहां से ले के आया और गुरु की बात में बात जानकर कृतकृत्य हो गया।

सिद्धांत : गुरु की हर बात में राज है।

10. गुरु ने कहा पीठ पर लात रख

गुरु ने शिष्य को कहा, मेरी पीठ पर लात लगाओ। शिष्य ने कहा, गुरु जी आपकी पीठ पर कैसे लात लगाएं। गुरु ने कहा, मेरे मुंह पर तो तुमने लात लगा दी जब मेरी बात नहीं मानी।

सिद्धांत : गुरु कहे सागर का पानी मीठा तो कहिए, हां जी हां।

11. मैं मुआ तो खुद खुदा हुआ

गुरु ने शिष्य की परीक्षा के लिए उसे कहा कि पेड़ पर चढ़ जाओ। वह ऊपर पहुंचा तो गुरु बोले, कूद जाओ। शिष्य सच्चा था, मन बुद्धि मार कर बैठा था। कूदने को तैयार हुआ और बोला—'गुरु जी मैं मुआ।' उसकी यह तत्परता ही गुरु देखना चाहते थे। उन्होंने एक दम रोक दिया और बोले—'मैं मुआ तो खुद खुदा हुआ, अब नीचे उतर आओ।'

सिद्धांत : गुरु के वचन पर मर मिटने से ही आत्म-निश्चय होगा।

अंधकार शाश्वत है, प्रकाश को लाना पड़ता है। इसी प्रकार अज्ञान शाश्वत है, ज्ञान को प्राप्त करना पड़ता है।

गुरु ने रमज़ दी

12. गुरु ने रमज़ से दही खाना छुड़ाया।

एक पिता अपने पुत्र को रोज कहता था कि ज्यादा दही मत खाओ पर उसे दही का बहुत शौक था और वह कहना नहीं सुनता था। एक दिन पिता अपने पुत्र को गुरु के पास लेकर चला। गुरु ने कहा—'बेटा, दही जरूर खाओ। उससे तुम्हें बुढ़ापा नहीं आएगा। खूब खाना तो चोर नहीं आएगा। हरिओम बोलते रहोगे।' बेटा खुश होकर चला गया। पिता ने कहा फिर से गुरु के पास जाओ और उनकी बात का अर्थ समझकर आओ।

बेटा गुरु के पास गया तो इस बार उसने अर्थ समझाया कि ज्यादा दही खाएगा तो शरीर जल्दी छूट जाएगा, इसलिए बुढ़ापा नहीं आएगा। खांसी से तंग होएगा तो रात भर नहीं सोएगा, इसलिए चोर नहीं आएगा।

तबीयत खराब रहेगी तो हरिओम-हरिओम ही बोलता रहेगा। इस तरह का Analysis सुनकर पुत्र का दही खाना हमेशा के लिए छूट गया।

सिद्धांत : गुरु ही रमज़ से माया भी छुड़ाता है।

13. गुरु ने कहा रबर की चप्पल पहनो

एक राजा को पांव में बीमारी हो गई। डॉक्टर ने बताया कि पांव जमीन पर नहीं रख सकता। जहां पांव रखे, वहां रबर हो तो उसे कष्ट नहीं होगा। राजा सोच में पड़ गया कि सारी सड़कों पर रबर लगवाना पड़ेगा। वह गुरु के पास गया। गुरु ने कहा यह तो टके की बात है। तीन रुपए में रबर की चप्पल ले लो।

सिद्धांत : गुरु हर जटिल समस्या को मिनटों में हल कर देते हैं।

14. संत ने गुड़ खाना छुड़वाया

एक लड़के का स्वास्थ्य बहुत खराब रहता था। डॉक्टर ने उसे गुड़ खाने को मना किया था पर वह न मानता था। पिता उसे गुरु के पास ले गया। गुरु ने पूरी बात जानकर कहा, चार दिन बाद फिर से पुत्र को लेकर आना। चार दिन बाद पिता फिर इतना रास्ता तय करके गुरु के पास आया। गुरु ने प्यार से समझाया कि गुड़ नहीं खाना चाहिए। उसके ये सब नुकसान हाते हैं। पिता ने पूछा, गुरु जी, यह तो आप चार दिन पहले भी बता सकते थे, फिर आपने दोबारा क्यों बुलवाया? गुरु जी बोले, उस समय मैं भी गुड़ खाता था।

सिद्धांत : पहले रहनी फिर कहनी। तभी बात का असर होगा।

15. राम कहे बंधन छूटे नहीं, सतगुरु मिले तो बंधन छूटे

एक संत रोज रानी के पास कथा कहता था। अंत में सबको बोलता था, 'राम कहे तो बंधन टूटे।' सब यही कहते थे पर तोता पिंजरे में से कहता—'यूं मत कहो रे पंडित झूठे।' पंडित को क्रोध आता कि सब क्या सोचेंगे। वह अपने गुरु के पास गया और सब हाल बताया। गुरु तोते के पास गया और पूछा, तुम ऐसा क्यों कहते हो। तोते ने कहा, मैं पहले उड़ता रहता था। एक ज़गह संत के पास मैंने राम सुना, संत ने मुझे पकड़कर पिंजरे में रखा, फिर श्लोक पढ़ना सिखाया तो सेठ ने मुझे खरीद लिया और चांदी के पिंजरे में रखा। मेरा तो बंधन बढ़ता गया। मैं कैसे कहूं 'राम कहे तो बंधन छूटे।' गुरु ने कहा—'आज तुम चुपचाप सो जाओ हिलना ही नहीं। रानी समझेगी मर गया और छोड़ देगी।' ऐसा ही हुआ। दूसरे दिन सत्संग हुआ, तोता वहां नहीं था, संत ने आराम की सांस ली। सब खत्म हुआ तो तोता कह उठा—'सतगुरु मिले तो बंधन छूटे।' तोता ऊपर आजादी में था।

सिद्धांत : शास्त्र कितना पढ़ें, राम कहें, पर सत्गुरु के सिवाय बंधन नहीं छूटता।

गुरु ने विवेक जगाया

16. गुरु जागना सिखाता है

एक गुरु था जो चौबीस घण्टे जगने की कला सिखाता था। एक बार घूमते-घूमते एक राजकुमार वहां पहुंचा और उसने भी यह कला सीखनी चाही। गुरु ने कहा—'तुम्हें कुछ समय यहीं रुकना पड़ेगा और सारा दिन जागते रहना होगा। मैं देखता रहूंगा और अगर सोएगा तो डंडा लगाऊंगा।' डंडे के भय से राजकुमार जागता रहता, यदि पलक झपकता तो डंडा पड़ता। फिर एक दिन गुरु ने कहा—'अब तू डंडे का आदी हो गया है, पलक झपकने पर अब तलवार लगानी पड़ेगी।' तलवार के भय से राजकुमार और ज्यादा सुजाग हो गया और उसकी पलक झपकनी बंद हो गई। गुरु ने कहा—'अब तुमको रात को भी जागना है—सोया तो डंडा पड़ेगा।' राजकुमार सुजाग हो गया और जागने की कला सीख गया। गुरु ने तलवार उठाई तो भी सुजाग था।

गुरु ने उससे पूछा—'तुम्हारी सुजागी में क्या फर्क हुआ?' राजकुमार बोला—'दिन में सुजाग रहा तो स्थूल के सम्बंध भूल गए। रात को जागा तो सूक्ष्म की स्वप्न-सृष्टि

खलास हुई और तलवार उठाई तो कारण भी गुम हो गया।' गुरु हमेशा छुप के आता कि देखूं यह सुजाग है या नहीं? एक दिन राजकुमार ने देखा गुरु पेड़ के नीचे आंखें बंद करके बैठा है। राजकुमार तलवार लेकर उस ओर बढ़ने लगा। गुरु ने दूर से ही कहा—'मेरे को मत परख बच्चे! अब मेरी उम्र बड़ी हो गई है।' राजकुमार शर्मिन्दा हो गया।

गुरु ने राजकुमार से कहा कि वृक्ष के ऊपर चढ़ जाओ। जब चढ़ गया तो गुरु ने कहा—'अभी उतर आओ।' राजकुमार सम्भल-सम्भलकर उतरने लगा। जब काफी नीचे आ गया तो गुरु ने कहा—'सम्भलना।' राजकुमार के मन में आया, जब ऊपर था तो गुरु ने कुछ न कहा अब दो ही सीढ़ी बची हैं तो क्यों कहता है। गुरु ने कहा—'यह ही गिरने की सीढ़ी है जब अहंकार आ जाता है।' राजकुमार गुरु के चरणों में गिर गया।

सिद्धांत : सच्चा गुरु पहरेदारी करके हमेशा आत्मा में जागना सिखाता है।

17. तू कौन मैं कौन

एक गुरु सबको ज्ञान देता था—'तू कौन—मैं कौन? तू और मैं एक ही आत्मा हैं।' एक शिष्य गुरु से सबक लेकर चला गया और कुछ ही दिनों में अद्वैत भूलकर दान-पूण्य में लग गया। वह सब को खिलाकर खुश होता। गुरु को जब मालूम पड़ा तो वह वेश बदलकर वहां आया।

शिष्य ने पूछा, आप खट्टा, मीठा, नमकीन, कैसा भोजन करेंगे? गुरु ने कहा—'सब बना देना।' जब गुरु भोग लगाकर उठा तो शिष्य ने पूछा—'आप तृप्त हुए?' गुरु ने कहा—'तू कौन, मैं कौन।' शिष्य को एकदम याद आ गया कि ऐसा तो मेरा गुरु बोलता था। वह गुरु को पहचान गया और बोला, आप तो पहले ही तृप्त हैं तो तृप्त किसको करें, यह सबक अब न भूलूंगा। पर वह फिर भूल गया। एक जगह बारात देखी तो देखता ही रह गया। फिर वहां भी उसको सुजाग करने गुरु पहुंच गया। गुरु को देखकर बोला—'घोड़ा देखा, दूल्हा देखो'—दृश्य का स्वरूप हो गया और गुरु के कंधे पर चढ़ गया, जैसे गुरु घोड़ा हो और वह दूल्हा। गुरु ने फिर कहा—'तू कौन मैं कौन।' शिष्य बहुत शर्मिन्दा हुआ और हमेशा के लिए सीख गया।

सिद्धांत : सच्चा ज्ञान है अद्वैत, जहां सब एक ही आत्मा है तो Emotion ही नहीं है।

18. नेष्ठामुक्त और वाचामुक्त

दो शिष्य थे। एक नेष्ठामुक्त और दूसरा वाचामुक्त। वाचामुक्त कहता था कि तू सारा दिन ब्रह्म चिंतन क्यों करता है, गुरु ने कह दिया तू ब्रह्म है, जगत मिथ्या तो अब ब्रह्म चिंतन क्या करना। नेष्ठामुक्त ने कहा, केवल बोलना नहीं है, नेष्ठा के लिए अभ्यास साधन जरूरी है। एक दिन उनके गुरु ने दोनों को खाना खाने के लिए कहीं भेजा। वहां खीर

बनी थी। वाचामुक्त ने स्वाद ले-लेकर खाई और थोड़ी कमण्डलु में भी ले ली कि रात को भी खाऊंगा। भर पेट खाकर जब सोया तो स्वप्न आया कि सोने की तिजोरी है जिसे वह उठा रहा है। स्वप्न में ही उठाने के लिए जोर लगाया तो भारी पेट में से सब खाना बह गया। कपड़े-बिस्तरा खराब हो गया। अगले ही दिन सवेरे नदी पर धोने गया। वहां पर गुरु और नेष्ठामुक्त दोनों खड़े थे। नेष्ठामुक्त ने पूछा, क्या कर रहे हो? वाचामुक्त का सिर नीचा हो गया कि सच्ची बात है, कि केवल बोलना नहीं है पर अभ्यास से नेष्ठा करनी है।

सिद्धांत : अन्दर विषय रस है बाहर से बोलना अपने को ठगना है।

19. गुरु ने शिष्य की आसक्ति निकाली

एक शिष्य अपने गुरु की बहुत सेवा करता था। गुरु ने प्रसन्न होकर शिष्य से कहा, अभी तो तू बहुत जान गया है। शिष्य को खुशी हुई कि गुरु राजी है। दो दिन बाद शिष्य ने कहा, अब ज्ञान से तृप्त हूं, थोड़ा घरवालों को तृप्त कर आऊं। गुरु जान गया कि यह माया से ऊपर तो नहीं उठा है। गुरु ने कहा, अभी तो तुमको घर वाले सम्बंधी लगते हैं, इसका मतलब तुमको ज्ञान का 'ज्ञ' भी नहीं लगा है, चल बैठ जा। शिष्य फिर से गुरु की भक्ति में लग गया, घर-बार सब कुछ भुला दिया। ज्ञान और भक्ति से शिष्य फिर ऊंचा

उठा तो गुरु ने कहा—'अब तो तुम देह से ऊपर हो गए हो। अब तू शांतस्वरूप आनन्दस्वरूप लगता है।' शिष्य के अन्दर फिर थोड़ी खुशी का बीज उठा। थोड़े दिन बाद शिष्य बोला—'गुरु-भाई, भक्त-सेवक बुलाते हैं, घर आओ उनके पास जाऊं।' गुरु ने स्वगत कहा—'अभी ये फिर इधर खड़ा हो जाता है। यहां ही इसका ज्ञान गुम हो जाएगा कीर्ति में।' फिर गुरु ने कहा—'तू अभी मरा कहां है जो इधर-उधर भटकेगा।' ऐसा कहकर फिर शांत करा दिया। अब तो शिष्य अपने में इतना लीन हो गया तो सोचा गुरु कीर्ति करे, अपकीर्ति करे, समानता योग आत्मा में रहना है। गुरु ने फिर अंत में परीक्षा ली, फिर कीर्ति की—अब तू स्थूल-सुक्ष्म तीन ही देह से ऊपर उठ गया है। अब तो शिष्य इतना मिटा हुआ था जो कोई आवाज ही न निकली। गुरु ने भी देखा कि यह तो समानता योग में आ गया तो हमेशा के लिए अपने में समा लिया।

सिद्धांत : गुरु परीक्षा लेता, ऊपर-नीचे करके समानता में ला देता है। फिर कहीं भी जाएं, एक बार समानता का बीज आ गया, फिर कहीं नहीं टूटेगा।

20. गुरु ने कहा शास्त्रों से ज्ञान न होगा

एक संत को उसके भक्त कहते थे कि पुस्तक लिखो ताकि वाणी से हमको फायदा हो पर वो न मानता था। एक दिन संत ने पुस्तक लिखी और शिष्य को दी तो और भक्त

रोने लगे पर गुरु-शिष्य दोनों हंसे। गुरु हंसा कि शिष्य ने ज्ञान समझा और शिष्य हंसा कि शास्त्रों से कभी ज्ञान नहीं होता।

सिद्धांत : सच्चा भक्त ही गुरु के ज्ञान को समझता है बाकी सब शास्त्रों में फंसे रहते हैं।

21. कुछ भी नहीं बनो

एक ब्रह्मज्ञानी गुरु सबको बताता था—'कुछ नहीं बनो। कहीं भी रहो, कुछ बनना नहीं।' एक दिन गुरु शिष्य के साथ कहीं जा रहा था। चलते-चलते ब्रह्मज्ञानी आगे हो गया, शिष्य पीछे आ रहा था। सामने राजा का महल आया, ब्रह्मज्ञानी सीधा अंदर चला गया। जब शिष्य आया, उसे चौकीदार ने रोक दिया और कहा—'तुम कौन हो?' शिष्य बोला—'मैं गुरु का शिष्य हूं, मुझे अन्दर जाने दो।' चौकीदार ने डंडे मारकर निकाल दिया कि ये कोई आश्रम या धर्मशाला नहीं है। यह तो राजा का महल है। शिष्य बेचारा डंडे खाकर बाहर रोने लगा कि गुरु तो अन्दर चला गया, मैं ही इधर रह गया। उधर गुरु बड़े आराम से सीधा राजा के तख्त पर जा बैठा। दो तीन जने आए, चौकीदार आए, ब्रह्मज्ञानी से पूछा, आप कौन हैं, कैसे आए हैं और यहां क्यों बैठे हैं? ब्रह्मज्ञानी बड़ी शांति से बैठकर मुस्कुरा रहा था। कुछ बोला नहीं। आखिर राजा को बुलाकर लाए। ब्रह्मज्ञानी की आंखों में देखकर राजा को शांति आ गई पर उसने ब्रह्मज्ञानी से पूछा—'आप कौन हैं और यह कोई धर्मशाला है क्या जो आप यहां आ गए?'

गुरु ने कहा—'धर्मशाला नहीं तो और क्या है यह महलात? तुम्हारे पहले यह किसका था?' राजा ने कहा—'मेरे बाप का और उससे पहले दादा का और उससे पहले परदादा का।' तो गुरु ने कहा—'धर्मशाला ही तो हुआ।' राजा गुरु के चरणों में गिर गया और उसने ज्ञान लिया। गुरु वापिस गया, शिष्य को देखकर पूछा—'तू यहां कैसे?' शिष्य रोने लगा। गुरु ने कहा—'सच बता, तू कुछ बना तभी मार खाई।' शिष्य शर्मिन्दा हो गया।

सिद्धांत : कुछ भी बनेगा तो मार खाएगा। अतः कुछ न बनो।

22. पूरे गुरु की पहचान नहीं होती।

एक गुरु ने शिष्य को ब्रह्मज्ञान दिया—'तू देह नहीं है, आत्मा है। बस यही पक्का कर, ज्ञान इतना ही है।' शिष्य को विश्वास नहीं आया। वह बहुत संतों के पास भटका। उन्होंने दस साल शिष्य से सेवा करवाई और फिर कहा—'तू देह नहीं है, आत्मा है।' शिष्य को अपनी भूल का अहसास हुआ कि उसने सच्चे गुरु को नहीं पहचाना।

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञान का हीरा बहुत आसानी से मिल जाए तो बहुत बार शिष्य उसकी कीमत नहीं कर पाते।

23. दो साधु

एक गुरु के पास दो शिष्य लड़ते हुए पहुंचे। एक ने दूसरे

को कहा गधा है, दूसरे ने पहले वाले को कहा भैंस है। गुरु ने एक को भैंस का खाना और दूसरे को गधे का खाना दिया तो आगे के लिए ऐसे अपशब्द उनके मुख से निकलने बंद हो गए।

सिद्धांत : रमज़ से हर विकार निकाला जा सकता है।

24. गाय के बछड़े जितना भी प्यार गुरु से नहीं

एक बार गुरु ने शिष्य से कहा—'गुरु को गाय के बछड़े जितना भी प्यार करो तो बहुत है।' शिष्य को समझ न आया कि गुरु ऐसे क्यों कह रहा है। कुछ दिन बाद शिष्य और उसकी औरत का भाव हुआ कि गुरु हमारे यहां ही खाएं। थोड़े दिन में शिष्य कहीं काम से चला गया। औरत ने कुछ दिन खाना खिलाया, फिर मैके चली गई। जब कई दिन बीत गए, जब आदमी और औरत घर पहुंचे तो गुरु की बात वे भूल गए। दो दिन बाद ध्यान आया कि बछड़ा नहीं है। सोचा, हो सकता है कि वह गुरु के पास पहुंच गया हो क्योंकि वह गुरु की कुटिया पर कभी-कभी जाता था। गुरु ने इन्हें देखा तो पूछा—'आज कैसे याद आई?' फिर गुरु ने कहा—'इसलिए मैं कहता था कि गुरु को बछड़े जितना प्यार करो तो बड़ी बात है। आज बछड़े की वजह से आए हो। इतने दिन गुरु को खाना मिला या नहीं वह भी भूल गए।'

सिद्धांत : जब अपना सुख-स्वार्थ छोड़ेंगे तब गुरु में ममता पड़ेगी।

25. शिष्य ने गुरु की पेटी खोली

गुरु ने शिष्य को कहा, यह पेटी देता हूं इसे फलां जगह पहुंचा देना पर रास्ते में खोलना नहीं। आधे रास्ते में शिष्य से रहा न गया और पेटी खोल डाली। अन्दर एक चूहा था जो पेटी खुलते ही भाग गया। शिष्य को पश्चात्ताप हुआ कि गुरु को क्या मुंह दिखाऊंगा और गुरु समझ गया कि यह मेरी Mystery नहीं रख सकता है।

सिद्धांत : अज्ञान की अनुभूति ही ज्ञान का द्वार खोलती है। यदि अज्ञान न हो तो ज्ञान का महत्त्व ही समाप्त हो जाता है।

> **अज्ञान की अनुभूति ही ज्ञान का द्वार खोलती है। यदि अज्ञान न हो तो ज्ञान का महत्त्व ही समाप्त हो जाता है।**

गुरु ने अहंकार, लोभ, मोह से बचाया

26. पुराने शिष्यों का अहंकार तोड़ा

एकांत जंगल में एक अनुभवी ब्रह्मज्ञानी कुछ शिष्यों के साथ रहते थे। शिष्य आज्ञाकारी, विवेकपूर्ण और वैरागी थे। एक दिन अचानक पांच युवक वहां आए जो दिखने में तेजस्वी और विवेकी लगते थे। गुरु को उन्होंने आदर से प्रणाम किया और गुरु को लगा कि ये सूक्ष्म बुद्धि वाले सच्चे जिज्ञासु हैं तो उनकी ओर ध्यान देने लगे। इससे पुराने शिष्यों में ईर्ष्या पैदा हो गई। गुरु समझ गए और उन्हें सच्चाई दिखाने के लिए एक दिन गुरु ने रात को दर्द में ऊंची आवाजें निकालनी शुरू की।

यह सुनकर सब शिष्य जल्दी ही गुरु के पास आ गए और पूछा क्या बात है? गुरु ने कहा—'घुटने में एक फोड़ा है। कोई पीक चूसकर थूके तो आराम आ जाएगा।' सब शिष्य पीछे हो गए। केवल एक शिष्य ने झट से गुरु का दर्द निवारण करना शुरू किया। वह पीक देखते-देखते अमृत हो

गया। पुराने शिष्यों के शीश लज्जा से झुक गए। उनका गर्व हमेशा के लिए टूट गया।

सिद्धांत : कर्मों आपो अपनी, कोई नेड़े कोई दूर।

27. लोभ के कारण मौत

एक गुरु अपने शिष्य के साथ जा रहे थे। रास्ते में पेड़ के नीचे बैठे। वहां शिष्य ने धरती नम देखी। खोदा तो सोने की मोहरों पर घड़ा था।

उसके मन में माया थी। उसने वो लेने को सोचा पर गुरु जी ने कहा कि यह मौत की खान है, यहीं गाड़ दो। वो वहां से चला गया। अगले दिन जब वह वापिस आ रहे थे तो उसी पेड़ के नीचे आठ आदमी मरे पड़े थे। साथ में सोने की मोहरों का घड़ा भी पड़ा था। तब गुरु ने शिष्य को बताया कि आठों आदमियों को घड़ा मिलने के बाद भूख लगी तो चार खाना लेने गए। उनके मन में आया कि हम खाना खाने के बाद खाने में जहर मिला देते हैं ताकि वे चार में बांट सकें तो ज्यादा मिले।

उधर उनके मन में आया कि जब वो खाना लेकर आएं तो उन्हें मार देंगे और आपस में बांट लेंगे।

ऐसा ही हुआ। जब वह खाना लेकर आए तो उन्होंने उनकी गर्दन काट दी और आराम से खाना खाने लगे और सब मर गए।

सिद्धांत : लोभ ही समस्त दुखों का मूल है।

28. सांसारिक प्रेम क्या होता है

एक शिष्य रोज अपने गुरु को कहता था कि मेरे घर वाले मुझे बहुत प्यार करते हैं। एक दिन गुरु ने सोचा, इसको सांसारिक प्रेम की असलियत दिखनी चाहिए। उसने शिष्य को कहा कि—'तुम घर जाकर कहना कि पेट में बहुत दर्द हो रहा है। साथ में यह गोली भी खा लो। इससे तुम्हारा शरीर मृत जैसा हो जाएगा।' शिष्य ने ऐसा ही किया और सब ने सोचा कि मर गया है। थोड़ी देर में संत वहां पहुंच गया। सब बहुत रो रहे थे और उन्होंने संत से कहा कि इसे वापस जिंदा कर दो। संत बोला—'मैं इसको जिंदा कर सकता हूं पर तुममें से किसी को इसकी जिंदगी के लिए अपनी जिंदगी देनी होगी।' शिष्य की मां से कहा—'तुम्हारा जीवन तो करीब-करीब खतम हो गया है, तुम क्यों नहीं अपनी जान इसे दे देते?' मां बोली—'मैं एक बेटे को जान दे दूंगी तो मेरे बाकी बेटे दुखी होंगे।' पिता से पूछने पर उन्होंने भी ऐसा ही जवाब दिया। उसकी पत्नी ने कहा—'मेरे भाग्य में विधवा होना लिखा है तो उसे कौन बदल सकता है और फिर मुझे बच्चों की देख-रेख भी तो करनी है।' उसकी सब संतानों में से एक भी पिता के लिए कुरबान होने को तैयार नहीं था। भक्त यह सब बातचीत सुन रहा था। इस तरह गुरु ने उसकी आसक्ति और मोह का पर्दा हटाया।

सिद्धांत : सब अपने सुख से बंधे हैं, कोई किसी का नहीं है।

29. गुरु ने शिष्य को माया का सुख दिलाया

एक बार एक शिष्य गुरु के पास धन, पदार्थ की इच्छा लेकर गया। गुरु ने कहा—'ठीक है, यह चिट्ठी देता हूं। राजा के पास जाना और यह चिट्ठी देना। तुम्हारी सब इच्छाएं पूरी हो जाएंगी।' राजा अंदर ही अंदर भक्ति में लीन था। गुरु की चिट्ठी पढ़ी, फिर लड़के को सारा महल धन-पदार्थ दिखाया। सारा काम-काज समझाकर उसे चाबियां सौंपकर कहा—'तुम यह सब रखो मैं गुरु के पास जाता हूं।' लड़के ने सोचा, राजा गुरु के पास जाने के लिए सारी राजाई का सुख मुझे देकर जा रहा है तो जरूर गुरु के पास इससे भी बड़ी राजाई का सुख होगा। फिर मैं क्यों न गुरु के पास जाऊं? उसने तुरंत निर्णय लिया और सब चाबियां लौटाकर गुरु की शरण में चला गया।

30. मोह है स्वार्थ

एक शिष्य गुरु के पास संतान की ख्वाहिश लेकर आया। गुरु ने पूछा संतान क्यों चाहिए। वह बोला—'मेरे पास बहुत बच्चे होंगे तो मैं उन्हें खूब प्यार करूंगा।' गुरु ने कहा—'चल मैं तुझे प्यार का स्वरूप दिखाऊं।' उस समय वहां नदी में बाढ़ आई हुई थी। पानी ऊपर चढ़ता जा रहा था। एक पेड़ की शाखा पर एक बंदरिया और उसके कई बच्चे बैठे थे।

जहां तक बंदरिया बैठी थी वहां तक पानी आ गया था तो

वह सबसे ऊंची डाल पर जाकर बैठ गई। सब बच्चे मां से चिपटे हुए थे।

जब पानी और ऊपर चढ़ा तो बंदरिया ने एक बच्चे को निर्दयता से अपने पांव के नीचे रख दिया जो वह कुछ और ऊंची हो जाए। पानी और चढ़ता गया और उसने अपनी रक्षा के लिए सब बच्चों को पैरों के नीचे दबाया। ऐसे ही लोग और चीजें हमें तब तक प्यारी हैं जब तक हमारा स्वार्थ सिद्ध होता है।

सिद्धांत : अपने सुख से सब जग बांध्या को काहू को नाही, प्रीतम जान लियो मन माही।

31. गोरख नाथ ने सोना फेंका

मच्छेन्द्रनाथ और गोरखनाथ एक जगह से दूसरी जगह जा रह थे। मच्छेन्द्रनाथ अपनी गठरी हमेशा साथ रखता था, वह एक क्षण के लिए भी उसे नहीं छोड़ता था। एक बार जब मच्छेन्द्रनाथ दैनिक क्रिया के लिए गया तो गारेखनाथ ने खोलकर देखा, गठरी में सोने का टुकड़ा था। गोरखनाथ सिद्ध पुरुष था, उसको पीड़ा हुई कि इस सोने ने मच्छेन्द्र को गुलाम बनाया है। उसको इस आसक्ति से मुक्त करने के लिए उसने वह सोना पास के कुएं में फेंक दिया। लौटने पर मच्छेन्द्र ने देखा सोना गायब है। गोरखनाथ ने उसे सब बता दिया तो मच्छेन्द्र ने उसे बहुत मारा। थककर गोरखनाथ पसीने से लथपथ एक पत्थर पर गिर पड़ा। उसके पसीने की बूंदों से

वह सारा पत्थर सोने का हो गया। अब मच्छेन्द्र को गोरख की महानता नजर आई और सोने से उसकी आसक्ति निकल गई।

सिद्धांत : मुक्ति के आगे दुनियावी पदार्थ तुच्छ है।

32. सूली का कांटा

दो दोस्त थे, एक वेश्या के पास जाता था, एक गुरु के पास। एक दिन वेश्या घर पर नहीं मिली तो वह दोस्त गुस्से में जमीन पर हाथ मारता रहा तो उसे जमीन पर एक घड़ा मिला। वह कोयले से भरा था पर एक सोने की गिन्नी भी थी उसमें। वह गिन्नी लेकर खुशी-खुशी आ रहा था तो दोस्त दिखा, जिसके पांव में कांच घुसने के कारण खून बह रहा था। वह बोला, देख मुझे गिन्नी मिली है। तू गुरु के पास जाता है, तुझे चोट मिली। वे दोनों गुरु जी के पास आते हैं। एक पूछता है कि मैं आपके पास आता हूं तो मुझे कांटा चुभा है और वह एक गलत जगह पर जाता है तो इसे सोने की गिन्नी मिली, ऐसा क्यों? गुरु जी बोले—'सारा घड़ा सोने की गिन्नियों से भरा था पर इसके गलत कर्मों ने उसे कोयले का बना दिया। सिर्फ एक बची। तेरे को फांसी लगने वाली थी पर तू सन्मार्ग पर चला तो सूली कांटा होकर खत्म हो गया।'

सिद्धांत : गुरु के द्वारे आने से कितने कर्मों से बच जाता है।

कोई भी गुरु मार्ग दिखा सकता है किंतु चलना तो स्वयं को ही पड़ेगा। कोई भी गुरु पहुंचा नहीं सकता।

गुरु ने ज्ञान दिया, प्रेम दिया

33. गुरु बृहस्पति और चन्द्रमा

गुरु बृहस्पति की स्त्री तारा से चन्द्रमा ने दिल लगाया तो बेटा पैदा हुआ। आपस में निर्णय करके बेटा चन्द्रमा को ही दिया गया। इतनी बात शास्त्रों में आती है।

इसका अर्थ है—गुरु की स्त्री है ज्ञान। ज्ञान से शिष्य चन्द्रमा दिल लगाता है तब बौद्ध रूपी बेटा पैदा होता है। तो बौद्ध रूपी बेटा शिष्य का ही हुआ।

सिद्धांत : जो ज्ञान से दिल लगाएगा ज्ञान उसका है। गुरु अपने पास कुछ नही रखता।

34. गुरु ने लाल दिया Order से नहीं नम्रता से

एक राजा को किसी ने आके बताया कि एक संत के पास बढ़िया लाल है, जैसा तुमने कभी देखा भी न होगा। राजा संत के पास गया और बोला, मुझे लाल दे दो। संत ने कहा, अभी नहीं दे सकता हूं। राजा को गुस्सा आ गया और उसने उसे जेल में डाल दिया। फिर आकर सब बात वजीर को सुनाई। वजीर ने कहा—'झुककर उसकी सेवा करने से वह लाल दे देगा।'

राजा ने वजीर की बात मान ली और नम्रता से उसकी सेवा करने लगा। उसे अन्दर ही अन्दर प्यार मिला और संत के अच्छे Vibrations मिले। सात दिन में संत को बोला—'मुझे पूरा लाल मिल गया।' गुरु ने कहा—'मैंने तुम्हें लाल दिया नहीं पर नम्रता से मिल गया।'

सिद्धांत : नम्रता से न मिलने वाली चीज भी मिल जाती है।

35. सागर में गागर

एक लड़का सागर के पास बैठकर रो रहा था। किसी ने पूछा, क्यों रो रहे हो? वह बोला, मेरी गागर में सागर क्यों नहीं समाता? गुरु ने समझाया—

सिद्धांत : तेरी इस देह रूपी गागर में सागर समा सकता है। जब तक देहध्यास है तब तक इतना व्यापक भगवान देह में कैसे रहेगा। वह तो सर्व व्यापक है, अंदर बाहर है। सच में कुछ भी है तो परमात्मा ही परमात्मा है। परमात्मा ही नेड़े ते नेड़े है। नहीं जानते हैं तो ढूंढ़ते हैं।

36. तरबूज को तीन हिस्सों में बांटा

तीन लड़कों को उनके गुरु ने पांच रुपए दिए और कहा, आपस में बांट लेना। उन्होंने सोचा कि कोई चीज खरीद लेंगे और आपस में बांट लेंगे। तीनों कलिंगर तरबूज ही खरीदना चाहते थे। पर उनमें से एक अंग्रेज, दूसरा मराठी, तीसरा इरानी

था। पहला कहता Water melon लेना है। दूसरा कलिंगर और तीसरा तरबूज। आपस में झगड़ा होने लगा। फिर वे एक Linguist के पास गए जो तीनों भाषा जानता था। वह चुपचाप एक बड़ा तरबूज लाया और तीनों को बराबर काटकर दे दिया। सब खुश हो गए।

सिद्धांत : सब सम्प्रदायों में एक ही परमात्मा है। झगड़ा नाम-रूप का है।

37. सब रूप में भगवान ही आता है

एक शिष्य बड़ा गुरु भक्त था। वह गुरु जहां रहता था उसके नजदीक ही वह भी एक कुटिया में रहता था और रोज गुरु के लिए खाना बनाकर ले जाता था। उसके बाद ही वह स्वयं भोजन करता था। एक दिन गुरु ने पूछा—'जहां तुम रहते हो वहां कोई भी आता जाता है?' शिष्य बोला—'नहीं प्रभु, वहां कोई नहीं आता।' गुरु ने कहा कि एक दिन वह आएगा। कुछ ही दिन बाद शिष्य जब खाना ले जा रहा था तो दरवाजे पर एक भूखा काला कुत्ता आया। शिष्य ने सोचा, पहले गुरु को खिलाऊं, फिर कुत्ते को दूं। यह सोचकर वह निकल पड़ा। थोड़ी देर में उसको लगा, यह मैंने गलत किया। वापस कुत्ते को ढूंढने निकला तो कुत्ता नहीं मिला। गुरु के पास पहुंचा तो गुरु बोले—'तुझे इतनी दूर आने की क्या जरूरत थी? मैं तो खुद तेरे दरवाजे पर पहुंचा था।' कुछ दिन बाद एक भूखा शुद्र खाना खाने के समय वहां

पहुंचा। शिष्य ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। गुरु के पास गया तो गुरु ने कहा—'तुझे इतनी गर्मी में आने की जरूरत नहीं थी। मैं तो तेरे दरवाजे के पास खड़ा था।' शिष्य बहुत शर्मिन्दा हुआ।

सिद्धांत : घट-घट वासी को पहचानकर हमेशा सेवा भाव में रहो।

38. रामतीर्थ को वेश्या ने पूरे पाप कर्म भेंट दिए

एक वेश्या रामतीर्थ के पास आई और उनके पैर दबाने लगी। शिष्यों को अच्छा नहीं लगा तो रामतीर्थ ने कहा—'तुम किसी को पांच रुपए दो और किसी को पांच सौ। कौन-सी रकम वापिस आने में तुम्हें खुशी होगी?' शिष्य ने कहा—'पांच सौ रुपए आने में।' रामतीर्थ ने कहा—'इसने ज्यादा पाप किए हैं और सब मेरे को लौटा रही है।'

सिद्धांत : संत का संग निन्दक तारे। गुरु करुणा का सागर है।

39. बैल का रूप

एक क्लास में मास्टर ने देखा, एक बच्चे का ध्यान इधर-उधर जा रहा है। उसने बुलाकर कारण पूछा। लड़का बोला—'घर पर एक बैल है, मेरा मन बार-बार उसके पास जा रहा है।' मास्टर ने कहा—'जाओ उस पेड़ के नीचे

बैठकर पूरी तरह से बैल के बारे में सोचो। जब मन पूरा भर जाए तब क्लास में आना।' लड़का एक हफ्ते तक बैल का चिंतन करता रहा। जब उसे लगा अब और कुछ सोचना बाकी नहीं रहा तब वह क्लास की तरफ आया और बाहर से मास्टर को पुकारा। मास्टर ने कहा, अन्दर आओ तो लड़का बोला—'सिर पर सींग हैं, दरवाजा छोटा है, मैं अन्दर नहीं आ सकता।'

सिद्धांत : जिसका मन-चिंतन होता है, मनुष्य उसी का रूप बन जाता है तो क्यों न भगवान का मनन हो।

40. संत को लोहा लगाया

एक आदमी ने एक संत को पीछे से लोहे के टुकड़े से मारा। उसके खून निकलने लगा। शिष्यों को बहुत खराब लगा और वे उस आदमी को मारने के लिए दौड़ पड़े। संत ने उन्हें रोका और कहा, उस आदमी ने मुझे पारस समझकर लोहा लगाया था इसलिए संत ने लोहे जितना सोना उसे दे दिया।

सिद्धांत : सद्पुरुषों में क्षमा और करुणा का स्त्रोत बहता है।

41. राजा जनक को गुरु ने तीन चमाट लगाई

राजा जनक ने अष्टावक्र को अपना गुरु स्वीकार किया था और तन-मन-धन उनको दे दिया था। फिर वह गए गुरु

के पास और बोले कि—'गुरुदेव मुझे इतने में ज्ञान दें कि घोड़े की एक रकाब में पांव डालकर दूसरी में डालूं।' गुरु ने जनक को चमाट लगाई कि तन को अपना जाना तभी घोड़े की रकाब में पांव डाला।

दूसरी बार एक दिन जनक ने जेब में हाथ डाला कुछ पैसा निकालने के लिए। गुरु ने फिर चमाट लगाई कि धन अपना समझा।

तीसरी बार राज्य के काज का कोई संकल्प मन में आया तो गुरु ने फिर चमाट लगाई कि मन तेरा है क्या?

राजा जनक तीनों से ऊपर उठ गया।

सिद्धांत : ज्ञान समझना है तो गुरु से चमाट खाना होगा।

42. गुरु के भक्त को गाली दी तो खुद को ही लगी

एक बार गुरु अमरदास जी गुरु अर्जुन देव के लिए पानी भरने सुबह को जा रहे थे। एक दिन पानी की गागर सहित रास्ते में गिर पड़े, वहां एक औरत रहती थी, उसके आदमी ने पूछा, कौन होगा इस समय? औरत ने कहा—'निथावा अमर होगा (जिसका कोई धाव नहीं)।' गुरु अमरदास ने सुना भी पर वो भक्ति में लीन हो गए और चले गए। कुछ समय बाद वह औरत पागल हो गई। वह गुरु अर्जुन देव जी के पास गई, कहा, मेरे को ठीक करो। गुरु ने कहा—'तुम

अमरदास से माफी मांग लो।' उसने माफी मांगी और ठीक हो गई।

सिद्धांत : किसी भी गुरु भक्त को कम जास्ती न देखो।

43. दुरात्मा से महात्मा

भीखा नाम के एक व्यक्ति थे, जिनमें किसी प्रकार की विद्या न थी। ऊपर से आलस और गरीबी के शिकार थे। कई-कई दिन उनके घर चूल्हा नहीं जलता था। एक दिन गरीबी से तंग आकर आत्महत्या की ठान ली और पेड़ के नीचे बैठकर भगवान के लिए व्यंग्य भरे भाव निकालने लगे। कभी कहते कि तू मुझे पैदा ही न करता तो तेरी सृष्टि में कौन-सी उजाड़ हो जाती? यदि पैदा किया था तो खाने के लिए पेट भर देने में तेरे भण्डारे में कौन-सी कमी आ जाती? ऐसी कई बातें बोली। भगवान की प्रेरणा से एक महात्मा वहां से आ निकले। उन्होंने भीखा की सारी बात सुनकर कहा, अगर तुम सचमुच गरीब हो तो अपनी एक वस्तु दे दो। हम तुम्हें एक हजार रुपए देने को तैयार हैं। भीखा ने कहा—'क्यों मजाक करते हो। मैं तो भूखा मर रहा हूं।' महात्मा ने कहा—'हमारा काम किसी से मजाक करना नहीं है। तुम एक वस्तु देने का वचन दो, हम तुम्हें इसके बदले दस हजार देने को तैयार हैं।' और महात्मा ने अपनी झोली से कुछ सोने की मोहरें निकालकर उसके सामने रख

दी। भीखू अचम्भे में पड़ गया कि मेरे पास ऐसा क्या है? अंत में वह देने को तैयार हो गया और महात्मा से कहा कि मुझे आपकी बात स्वीकार है। महात्मा बोले—'अपनी एक आंख दे दो और मैं दस हजार रुपए नकद देता हूं।' यह देखकर कि भीखू आंख नहीं देना चाहते, वे बोले कि आंख नहीं तो कान दे दो। वे भी नहीं तो हाथ-पांव कुछ भी दे दो। भीखू ने सब चीजों से इंकार कर दिया ती महात्मा बोले—'अच्छा एक उंगली काट दो।' भीखू ने सब नामंजूर कर दिया। पर उसकी समझ में आ गया कि यह मानव शरीर अनमोल है। इसका एक अंग बेचने से बहुत धन प्राप्त हो सकता है। फिर महात्मा ने भीखू को समझाया कि शरीर से भी ज्यादा मन मूल्यवान है। मन से श्रेष्ठ बुद्धि है। बुद्धि विवेकपूर्ण अपना काम नहीं करे तो शरीर के अंग व्यर्थ हो जाते हैं।

अंत में समझाया कि बुद्धि भी अपने आप में कुछ नहीं है। उसमें भी आत्मा की शक्ति है उसी से यह सारे काम करती है।

सारी सृष्टि भी आत्मा के सहारे है। यह सुनकर भीखू की आंख हमेशा के लिए खुल गई। जिन विचारों ने उन्हें कंगाल बना रखा था उन्हें समेटकर भीखू ने अपने आप को भक्ति की तरफ लगा दिया और वे ब्रह्म को प्राप्त हुए। इस प्रकार दुरात्मा से महात्मा बन गए।

सिद्धांत : भूखा कोई नहीं, सबकी गठरी लाल।

44. सतगुरु ही हमारे मन से सुन्दर

एक चर्च था, उसका पादरी अपना हारमोनियम किसी को नहीं बजाने देता था। एक दिन राजा आया, बोला—'मैं हारमोनियम बजाऊंगा।' और छिपके बजाने लगा, बहुत सुन्दर बजा कि स्वयं पादरी हैरान हो गए।

सिद्धांत : ऐसे ही हम पहले तो बोलते हैं हम माया और अज्ञान में खुश हैं, पर गुरु छिपके मन का ऐसा सुन्दर स्वर बजाता है जो बाद में गुरु का कदर करता है।

45. गुरु ने आशीश दिया—मनुष्य बनो

एक गुरु शिष्य को जब भी आशीश करता, वह कहता—'मनुष्य बनो।' शिष्य को शंका आई कि मनुष्य तो मैं हूं ही। उसने शंका प्रकट की तो गुरु ने कहा—'कचहरी में जाकर देखो।' शिष्य वहां गया तो उसने महसूस किया कि कोई तो कुत्ते की तरह भौंक रहा है, कोई बकरी की तरह मैं...मैं कर रहा है। कोई हिंसक पशुओं जैसे लड़ रहे हैं। यह देखकर उसे समझ में आया कि गुरु उसे क्या आशीश दे रहे हैं।

सिद्धांत : सब लोग जानवरों के संस्कार लेकर आते हैं। गुरु ही हमको मनुष्य बनाते हैं।

46. संत ने उर्वशी से कहा स्त्री-तत्त्व कहां?

गुरु अपने दो शिष्यों को अप्सरा उर्वशी का नृत्य दिखाने

लाया। उर्वशी आई और नाचने लगी तो एक शिष्य सोचने लगा, गुरु कहां ले आया और वह भाग गया। उर्वशी नृत्य करती हुई अपने वस्त्र उतार रही थी। दूसरा शिष्य भी न देख पाया और वहां से चला गया। अंत में उर्वशी पूर्ण नग्न हो खड़ी रही पर गुरु में कोई हलचल नहीं हुई। उर्वशी ने पूछा—'आपको कुछ नहीं लगता?' संत बोले—'स्त्री-तत्त्व कहां है, वह दिखाओ। चमड़ा मांस हड्डी एक समान है। बाकी और क्या है?'

सिद्धांत : मोहन-मोहिनी स्वरूप एक ही भगवान का है। भोग बुद्धि में स्त्री और पुरुष हैं। बाकी कुछ है ही नहीं।

47. गुरु राजा जनक को ज्ञान सुनाता था

जब राजा जनक सभा में आते तभी गुरु ज्ञान बताना आरम्भ करते नहीं तो मौन ही बैठे रहते। बाकी सब को विक्षेप होता कि गुरु यह कैसा पक्षपात कर रहे हैं। एक दिन मंत्री ने आकर कहा कि राजमहल में भयंकर आग लग गई है।

जनक शांत बैठे रहे और गुरु मुख से निकले हुए ज्ञान के वचन को सुनते, मनन करते रहे। जो और साधु-संत वहां पर बैठे थे, आग की खबर सुनकर झट भाग खड़े हुए। किसी की झोंपड़ी महल से लगती हुई थी। किसी की लंगोटी सूख रही थी।

किसी की मौसी का घर वहां था। इन सब कारणों से सब लोग वहां से भाग गए। केवल जनक जी ने कहा—'जिसने आग लगाई है वह आप ही बुझाएगा। मैं क्यों सोचूं?' आग सचमुच में नहीं लगी थी—सिर्फ राजा जनक की परीक्षा ली गई थी। बाकी सब को समझ में आ गया कि गुरु क्यों जनक के आने पर ही ज्ञान बताते हैं।

सिद्धांत : सुपात्र ही गुरु से ज्ञान निकालता है।

गुरु को रिझाना

48. बुल्ले शाह ने गुरु को कैसे रिझाया

बुल्ले शाह गुरु का पहले नम्बर का भक्त था। एक दिन गुरु ने उसको बाथरूम साफ करने को कहा। उसे अच्छा नहीं लगा कि इतने लोगों के सामने गुरु ने मुझे ऐसा काम बताया। गुरु भी नाखुश हो गया और बुल्ला भी गुरु को छोड़कर चला गया। बाद में उसने सोचा, गुरु को तो रिझाना ही होगा। वह एक नर्तकी के पास गया और नृत्य सीखा। फिर वेश बदलकर गुरु के सामने नृत्य किया। गुरु पहचान गया, बोला—'तू तो बुल्ला है और प्रेम से उसे अपने में मिलाकर एक कर लिया।'

सिद्धांत : गुरु को रिझाने से तेरा ही काम पूरा होगा।

49. लायक जिज्ञासु

एक गुरु के पास जब कोई ज्ञान सुनने आता तो गुरु उससे कहते, पहले आश्रम के बारह चक्कर लगाओ फिर ज्ञान मिलेगा।

एक आया और कहने लगा बारह चक्कर लगाने में ही शरीर छूट गया तो मैं मुक्त होने के सिवाय ही मर जाऊंगा

क्या? गुरु को अच्छा लगा कि ऐसा शिष्य होना चाहिए जो गुरु से ज्ञान निकाले।

सिद्धांत : जिसे अपनी मुक्ति की सच्ची लगन है उसे ही गुरु भी पसंद करते हैं।

50. गुरु को अपने ज्ञान का निश्चय सुनाओ

एक शिष्य गुरु के पास आया। गुरु ने कहा—'तुम्हारे शहर में प्याज और चावल किस भाव से मिलते हैं?' उसने गुरु को कहा—'प्याज और चावल को छोड़कर ही तो आपके पास आया हूं। आप हमें ज्ञान सुनाएं।'

सिद्धांत : लायक जिज्ञासु से गुरु रीझता है

51. बुद्धिमान बालक

एक विद्यालय में अध्यापक ने छात्रों से पूछा कि तुम बतला सकते हो ईश्वर कहां रहता है? एक छात्र बोला—'गुरुदेव क्या आप हमें यह बतलाने का कष्ट करेंगे कि ईश्वर कहां नहीं है?' अध्यापक उस बालक की प्रशंसा करने लगे।

गुरु-शिष्य परीक्षा

52. अपनी परीक्षा देना, गुरु की न लेना

एक संत अपने ब्रह्मचिंतन में रहता था। सामने एक बूढ़ा रहता था। वह संत की खोज-खबर रखता था और रोज शाम को आकर पूछता था कि——'आप सारा दिन क्या करते हैं?' संत कहता——'मैं ब्रह्मचिंतन करता हूं।' बूढ़ा हंसता और कहता——'आपका ब्रह्मचिंतन अभी तक खत्म नहीं हुआ, मेरा तो कब का पूरा हुआ।' संत को करुणा होती कि ब्रह्म कहता है पर जानता नहीं है। बूढ़े को उसकी स्थिति दिखाने और ध्यान में आगे बढ़ाने के लिए संत ने पोस्टमैन से कहा कि यह टेलीग्राम देना कि उसका इकलौता बेटा जो लंदन में रहता है उसका शरीर शांत हो गया है। टेलीग्राम पाते ही बूढ़ा रोने, पीटने-परेशान होने लगा। थोड़ दिन बाद उसे मालूम पड़ा कि संत ने उसकी परीक्षा ली थी और वह हार गया। उसे बहुत क्रोध आया और उसने एक आदमी से कहा——'जब संत नहाने जाए तो उसे पीछे से धक्का देना।'

संत को धक्के से चोट लगी। शाम के समय बूढ़ा पूछने

लगा कि आप को क्या हुआ? संत बोला——'हवा का झोंका आया और ऐसा हो गया।' बूढ़े ने कहा——'नहीं, तुम्हें किसी ने धक्का दिया होगा।' संत बोला——'तुम ही होगे।' फिर शांत रहा।

सिद्धांत : अज्ञानी परीक्षा में फेल है। ज्ञानी की कोई हालत नहीं है। तुम ब्रह्मज्ञानी की परीक्षा न लेना।

53. ब्रह्मज्ञानी को शिष्य ने अहं में छोड़ा, राजा ने महल में रखा

एक ब्रह्मज्ञानी एक शिष्य के पास झोंपड़ी में रहता था। शिष्य को अहंकार आया कि गुरु मेरे आधार में रहता है, खाता है और औरों से कहता है मैं निराहारी हूं, मैं तो भगवान हूं, सब को खिलाने वाला हूं। एक दिन वह गुरु को घुमाने ले गया और वहीं रास्ते में छोड़ दिया। ब्रह्मज्ञानी एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। वहां से एक राजा निकला। उसने ब्रह्मज्ञानी से बात की। ब्रह्मज्ञानी ने उसे ज्ञान सुनाया। राजा को लगा ऐसा ब्रह्मज्ञानी मेरे महल में होना चाहिए और उसे ले गया। शिष्य ने सोचा शायद गुरु अब तक मर गया होगा। उसकी खबर निकाली तो मालूम पड़ा वह राजा के साथ महल में चला गया। अब तो वह रोने लगा कि मैंने उसकी Value नहीं की।

सिद्धांत : जो गुरु की परीक्षा लेगा वही मरेगा।

54. गुरु ने शिष्य की परीक्षा ली नहर खोलकर

एक गुरु के दस शिष्य थे। गुरु ने उनको काफी ज्ञान सुनाया था। एक दिन सोचा इनकी परीक्षा लूं। पास में एक नहर थी। गुरु ने कहा—'इसमें खड़े हो जाओ और जब तक मैं न बुलाऊं, नहीं निकलना।' गुरु ने नहर चालू कर दी। धीरे-धीरे पानी बढ़ने लगा और घुटनों तक आ पहुंचा। थोड़ा और ऊपर चढ़ा तो उसमें से दो शिष्य सोचने लगे कि शायद गुरु भूल गए हैं और वे भाग गए। पानी तो ऊपर चढ़ता ही जा रहा था। गले तक पहुंचा तो सब भाग गए, बस दो बचे। उनमें से एक ने कहा—'देखकर आता हूं। गुरु शायद भूल गए हैं, उन्हें याद कराऊं।' दूसरे को भी कहा—'तू भी साथ में चल।' पर उसने कहा—'गुरु आप ही बुलाएंगे। नहीं तो उनके ध्यान में ही लीन हो जाऊंगा।' पानी चढ़ता गया। उसकी नाक तक, फिर आंखों तक और सिर तक आ पहुंचा। उसने अंदर ही अंदर कहा, तुझे अर्पण है, मौत स्वीकार है। वो गुरु के ज्ञान में खड़ा हो गया। अब वह डूबने वाला ही था। सांस घुट रहे थे। गुरु ने देखा और जल्दी से गेट का मुंह बंद कर दिया। पानी दूसरी तरफ से बह गया। गुरु ने शिष्य को गले लगा लिया कि तू ही सच्चा निकला, परीक्षा में पास हुआ। फिर उसके अन्दर से पानी निकाल उसे फ्रेश कर दिया।

सिद्धांत : विश्वास, प्रेम, धीरज, कुर्बानी से सतगुरु को राजी करो।

55. सच्चे गुरु की पहचान

एक शिष्य ने सोचा गुरु के पास जाता हूं, परीक्षा लूं कि सच्चा है या नहीं। गुरु से कहा—'कल मैं सब का भोजन बनाऊंगा।' सब शिष्यों को बोला, खाना नहीं बनाना, मैं लाऊंगा। गुरु तो आत्मा की बात ही करता रहा। दूसरे दिन ये सब टिफिन लाए पर सब खाली थे। गुरु को विक्षेप न आया। दूसरे दिन फिर इसने कहा—'मैं खाना लाऊंगा।' पर खाली टिफिन ही लाया। बस आकर कह दिया रास्ते में भूखे कुत्ते मिले उन्हें दे डाला। गुरु शांत रहा पर शिष्यों को क्रोध आ गया। तीसरी बार इसने गुरु को घर बुलाया खाना खिलाने। पर खाना नहीं बनाया। ऊपर से गुरु को Insult किया। गुरु की शांति फिर भी भंग नहीं हुई। यह देख शिष्य बहुत रोया कि इतने सच्चे गुरु की इस प्रकार परीक्षा ली।

सिद्धांत : मान-अपमान से छूटना ही बड़ा काम है।

56. इन्द्र और विरोचन सौ वर्षों का ब्रह्मचर्य

शास्त्रों में आता है कि इन्द्र को सौ वर्षों में ज्ञान हुआ। इन्द्र और विरेचन गुरु के पास ज्ञान लेने को गए। कुछ वर्षों तक गुरु की सेवा कि फिर गुरु ने बताया—'जाकर पानी में देखो और जो भी तुम्हें दिखाई दे वही ब्रह्म है।' विरोचन ने नदी में झुककर देखा, उसको अपनी ही परछाई दिखी। बोला—'गुरु ने कहा है 'मैं ही ब्रह्म हूं'।' इस प्रकार उसने अपने शरीर को ही ब्रह्म मानकर उसकी पूजा करनी शुरू कर दी। इन्द्र ने

सोचा—'देह तो ब्रह्म नहीं हो सकती, क्योंकि यह Changeable है।' वह वापिस गुरु के पास गया। इस तरह से चार बार गुरु के पास गया और फिर उसे निश्चय हुआ।

सिद्धांत : पूरा निश्चय गुरु से करना है। उसके पहले चले जाना ठीक नहीं है।

57. गुरु ने शिष्यों को फल दिया

एक गुरु अपने शिष्यों की परीक्षा लेना चाहता था। उसने उन्हें एक-एक फल दिया कि जहां कोई नहीं देख सके वहां जाकर खा लेना। सब ने छुपकर खा लिया पर एक वापस ले आया। बोला, ऐसी कोई जगह नहीं है जहां भगवान मुझे नहीं देख रहा है। एक ही परीक्षा में पास हुआ।

सिद्धांत : भगवान सर्वत्र है, सर्वज्ञ है, हमारे अंग-संग है।

गुरु से रीस

58. बताहू अल्लाहू

एक गुरु और शिष्य नदी पार करके दूसरी जगह जाने वाले थे। गुरु ने शिष्य को कहा, तू बताहू (गुरु का नाम) बोलना तो तर जाएगा। जब पार कर रहे थे तो गुरु अल्लाहू कह रहा था। शिष्य के मन में शंका आई कि गुरु अल्लाहू कहने लगा। तो वह आधे में डूबने लगा। गुरु को करुणा आई और प्यार से पूछा, उसने गलती मानी। वह फिर बताहू कहने लगा और तर गया।

सिद्धांत : गुरु से रीस नहीं करनी है, पर जो गुरु कहे वैसे करें।

59. तुम भी बाबा हम भी बाबा

एक सर्वसम्पन्न ब्रह्मज्ञानी गुरु अपने शिष्य को लेकर राजा के पास गया। वहां गुरु और शिष्य दोनों की पूजा होने लगी। गुरु को हार डाला तो शिष्य को भी हार डाला। शिष्य अपने को गुरु के समान समझने लगा। एक दिन गुरु ने मंच पर ही शिष्य से कहा—'पानी भर कर लाना।' शिष्य ने

कहा—'तुम भी बाबा, हम भी बाबा पानी कौन भरे?' गुरु समझ गया कि इसको अहंकार आ गया है कि मैं कुछ जान गया हूं। जब शहर से वापिस आए तो गुरु ने मौन कर दिया और कहा, तुम भी बाबा हम भी बाबा। दोनों ही अलग-अलग कमरे में बैठते हैं। तुम भी मौन करना मैं भी मौन हूं। गुरु तो शांत था, हर बात में Prepared था, पहले ही, निराहारी था। खाना नहीं बना तो उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। शिष्य आखिर थक गया। उसे धूप-छांव, गर्मी-सर्दी में समानता न थी। आकर गुरु के चरणों में झुक गया कि मुझे माफ कीजिए। कीर्ति में आ गया था।

सिद्धांत : गुरु पद देता है तो अहं आ जाता है। सीखने के लिए हमेशा गुरु से द्वैत में रहना। सागर से लहर हुई, लहर से सागर नहीं।

2. ज्ञान के दृष्टांतों की सूची

60. हर वस्तु में मिठास परमात्मा की
61. संत के दर्शन से अपना दर्शन
62. भीष्म पितामह को 18 दिन में ज्ञान
63. हवा आई मच्छर भागा
64. माल निकालो तो गोदाम खाली
65. भोजयिता, भोक्ता और भोज्य
66. समाधि पर शिव-पार्वती संवाद
67. नचिकेता ने यमराज से आत्मज्ञान प्राप्त किया
68. उषस्ति ने राजा का यज्ञ पूरा करवाया
69. सत्यकाम ने ब्रह्म विद्या पाई
70. श्वेतकेतु वह सत् तू ही है
71. एक सौ वर्ष का ब्रह्मचर्य (छान्दोग्य उपनिषद्)
72. तीन बार 'द' (बृहदारण्यक उपनिषद्)
73. याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को ज्ञान दिया
74. याज्ञवल्क्य सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मनिष्ठ
75. अज्ञान आंख में पड़े धूल के कण जैसी है
76. जो कील से लग जाए वो पिसने से बच जाए
77. दो चिड़िया एक पेड़ पर
78. काजी के नौकर ने तीन सवाल का उत्तर दिया
79. एक हाथ में आग और एक हाथ में जल
80. दर्पण के टुकड़े-टुकड़े
81. रानी ने अपने कुत्ते को दर्पण दिखाया
82. ज्ञान की जीत होगी

83. बकरियों के संग शेर भूल गया
84. राजा जनक के दरवाजे पर शुकदेव खड़े रहे
85. जिसने पत्थर लगाया उसने हलवा खिलाया
86. तिजोरी से लाख रुपए मिले
87. आत्मा का ऊंट
88. संत ने कहा जहां-तहां भगवान है
89. अपने ऊपर आशिक होना
90. ब्रह्म अशब्दी है
91. दुर्वासा निराहारी कृष्ण ब्रह्मचारी
92. मेंढक क्या जाने मछली को
93. है तो आत्मा
94. भगवान कृष्ण ने आत्मा से आत्मा की एकता बताई
95. गान्धारी ने कृष्ण को श्राप दिया
96. ईसा सूखे नारियल जैसे
97. अंधे आदमी शीशे का रंग बताते हैं
98. भांग का नशा घोटने से चढ़ता है
99. विवेकानन्द ने कहा भगवान दिखाओ
100. जैसी निराकार ने प्रेरणा डाली
101. जड़ भरत ने पालकी उठाई
102. घोड़े के सिर से ज्ञान
105. देवदत्त को बुलाओ
104. अपनी फलक
105. कांच के पत्थर ने मोर से दिल लगाया
106. सीटी बजा के भगवान माया ले गया
107. खोई हुई सूई
108. मनुष्य का अंत:करण खाली
109. एक जेल में फल लाया एक ने दरवाजा खोला
110. गौतम बुद्ध को किसी ने गाली दी
111. जेल में भी पृथ्वी वल्लभ
112. राजा को तीन गुड़ियां मिलीं

ज्ञान के अन्य दृष्टांतों की सूची

17. तू कौन मैं कौन
21. कुछ भी नहीं बनो
57. गुरु ने शिष्य को फल दिया
118. ऐसा घर कहां मृत्यु नहीं जहां
119. पांच कोश
126. न ये सत्य न वो सत्य
157. आत्मा का प्रत्यक्ष प्रमाण
171. मन का भुलावा
173. सब को बनाने वाला कुम्हार एक
178. कष्टदायक बीमारी से पीड़ित
179. चांडाल की झोंपड़ी
184. माता मदाल्सा, निर्मोही राजा
211. आग से पुत्र को कौन बचाए
226. दाइ सोम्या
242. स्वप्न में हार-जीत
246. जगत शीश महल है
290. ब्रह्म ही विजयी है
298. झाड़ू वाली ने उपकार किया
379. राजा रणजीत सिंह कुरान
401. दुश्मन भी प्यारा हो
404. भगवान सब पर समान करुणा
405. बैल का रूप
40/. मुर्गे का चित्र
415. भगवान तुम्हारे हृदय में
470. भगवान की रजा से
472. कौन-सी चीज भगवान की शरण नहीं।

जगत जिसका ये कुल बनाया हुआ है।
वही सब घटों में समाया हुआ है॥
नहीं दूसरा कोई उससे न्यारा।
वो अपने में आप ही समाया हुआ है॥
हर एक शै जो होगी वो रंगी-बिरंगी।
ये जलवा उसी का दिखाया हुआ है॥
उसी की अकल में ये आती हैं बातें।
शरण सद्गुरु की जो आया हुआ है॥
है ताकत उसी में ही मुंह खोलने की।
जो कुछ भेद संतों से पाया हुआ है॥
'धर्मदास' हरदम उसी की फिकर में।
करोड़ों की दौलत लुटाया हुआ है॥

ज्ञान

60. हर वस्तु में मिठास परमात्मा की·

एक शक्कर के कारखाने वाला मिठाई की दुकान पर गया। मिठाई वाला अपनी मिठाइयों की प्रशंसा करने लगा कि देखो मेरी मिठाइयां कितनी मीठी हैं। कारखाने वाला बोला—'इन सब मिठाइयों की मिठास तो मेरे ही कारखाने के शक्कर से है। बाकी बेसन, मैदा तो सब फीके हैं।' मिठाईवाले का मुंह नीचा हो गया।

शिक्षा : मिठास परमात्मा की है बाकी सब फीका है। 'और स्वाद सब फीकिया, तन मन फीका होए।'

61. संत के दर्शन से अपना दर्शन

संत के पास एक आदमी ज्ञान सुनने गया। सुनकर नाचने लगा। बोला, संत के दर्शन करने पर अपने ही दर्शन हो गया।

सिद्धांत : गुरु करे आप समाए।

62. भीष्म पितामह को 18 दिन में ज्ञान

कौरवों और पाण्डवों की जब लड़ाई हुई, भीष्म पितामह

को तीर लगने पर शरीर शांत न हुआ। उन्होंने दृढ़ संकल्प किया था कि जब तक आत्मनिष्ठ न हो जाऊं तब तक शरीर नहीं छोडूंगा। पूरी तीरों की शैया बन गई। अट्ठारह दिन तक तीरों की शैया पर सोए। कृष्ण ने उन्हें दर्शन दिया और ज्ञान दिया। द्रौपदी आई तो वह भी ज्ञान सुन रह थी। द्रौपदी ने कहा, आप तो ज्ञान सुनाते हैं, जब मुझे नग्न किया गया उस समय आप कहां थे? तो उन्होंने कहा, मैंने दुर्योधन का अन्न खाया था तो कुछ बोला नहीं। अब 18 दिन तीरों की सेज पर इसलिए सोया हूं कि पहले वाले अन्न का खून निकल जाए और शुद्ध ज्ञान अंदर रहे। जब सूर्य उत्तरायण में आए तब शरीर छूटा।

सिद्धांत : जब झूठा अन्न निकलेगा तब ज्ञान लगेगा। तीरों की सेज यानी कष्ट सहने होंगे। संकल्प करोगे तो उत्तरायण में शरीर छूटेगा।

63. हवा आई मच्छर भागा

एक बार मच्छर मल ने कोट में केस किया कि हवा मेरे को ठहरने ही नहीं देती है। कोर्ट में हवा को बुलाया गया। ज्यों ही हवा आई तो मच्छर पहले ही भागा। इसमें हवा की क्या बात है, उसकी ताकत के आगे मच्छर ठहर ही नहीं सकता।

सिद्धांत : ज्ञान आया तो अज्ञान का नाश।

64. माल निकालो तो गोदाम खाली

एक आदमी ने अपना गोदाम ठेके पर लगाया। कुछ समय

बाद उसे गोदाम की जरूरत पड़ी। जाकर मांगा तो मारवाड़ी ने कहा, तुम्हारा गोदाम कहां है, मेरा माल ही माल है। दिखाओ गोदाम कहां है। आदमी परेशान हो गया। संत के पास गया। संत ने कहा, चार आदमी लेकर सारा माल निकाल दो, गोदाम तुमको मिल जाएगा।

सिद्धांत : मन को संकल्पों-विकल्पों से भरकर कहते हैं आत्मा कहां है। मन ख्याल ही है। गुरु सब ख्यालों को निकाल देता है तो आत्मारूपी गोदाम खाली मिल जाता है।

65. भोजयिता, भोक्ता और भोज्य

एक स्वामी जी राजा के आश्रित रहकर नृसिंह भगवान की आराधना करते थे। उनके मन में यह चिंता थी कि मैं भगवान के आश्रित नहीं हूं, राजा के आश्रित हूं। राजा हमें रोटी दे, पानी दे तो हम खाएं, पीएं और भगवान का भजन करें।

वे जिस पेड़ के नीचे बैठे थे, उस पेड़ पर चिड़िया का घोंसला था। उसमें एक अंडा था। अंडा नीचे गिरकर टूट गया और उसमें से चिड़िया का बच्चा निकल पड़ा। अब उसको कहां से मिले खाना और कहां से मिले पानी? वह लम्बी सांसें लेने लगा—उसका मुंह बंद होए, खुले, बंद होए। इसी बीच दो मक्खियां ऊपर लड़ने लगीं और लड़कर जिस समय उसका मुंह खुला उसी समय उसके मुंह में आकर गिर

गईं। वह जहां था वहीं भगवान ने उसे चारा पहुंचा दिया। चिड़िया का बच्चा भोक्ता था, मक्खियां भोज्य थीं और उनको भोजन पहुंचाने वाला भोजयिता था।

सिद्धांत : तीनों प्रपंच के रूप हैं और एक ही परमात्मा तीनों रूपों में प्रकट होता है। वही आत्मा है, वही देह है।

66. समाधि पर शिव-पार्वती संवाद

एक दिन पार्वती ने शिव जी से कहा कि मुझे समाधि में बैठना सिखा दीजिए, जिससे मैं भी आनन्द में रहूं जब आप श्मशान में समाधि लगाकर बैठ रहते हैं। शिवजी ने कहा कि—'आसन लगाकर बैठ जाओ और अपनी आंखों को अंतर्मुखी कर लो।' फिर शिव-पार्वती में यह संवाद हुआ—

शिव—क्या दिखाई पड़ रहा है?

पार्वती—आपका दर्शन हो रहा है।

शिवजी—नाम रूप से ऊपर उठो। अब क्या दिखता है?

पार्वती—ज्योति ही ज्योति।

शिवजी—ज्योति से भी परे जाओ। अब क्या है?

पार्वती—ओम की ध्वनि।

शिवजी—शब्द से ऊपर उठो। क्या अनुभव होता है?

पार्वती के मुख से कोई उत्तर न निकला। वे ब्रह्म से एक हो गई थीं जहां दृष्टा, दृश्य नहीं बची। केवल एक परम सत्य—isness रह गया था। समाधि से उठने पर पार्वती के मुख से धीरे से निकाला—'मैं ही ब्रह्म हूं!'

सिद्धांत : सहज समाधि ही सच्ची है।

67. नचिकेता ने यमराज से आत्मज्ञान प्राप्त किया

सतयुग में चारों तरफ यज्ञ का प्रचार था। उसी समय उद्दालक मुनि ने विश्वजीत नाम का यज्ञ किया जिसमें सब दान करना होता है। उनके एक नचिकेता नाम का पुत्र था। जिस समय उद्दालक ऋषि दक्षिणा बांट रहे थे तो उसमें अच्छी बुरी सभी तरह की गायें दी जा रही थीं। बालक नचिकेता के मन में आया कि शक्तिहीन और असमर्थ गायों को देने से उल्टा अमंगल होता है। उसके मन में दर्द हुआ कि वह अपना बलिदान करके पिता को अमंगल से बचा ले। उसने पिता से पूछा—'पिता जी मैं आपका धन हूं, मुझे आप किसको देते हैं?' पिता ने उत्तर नहीं दिया तो उसने तीन बार पूछा, तो ऋषि ने चिढ़कर कहा—'तुम्हें देता हूं मृत्यु को।' पिता के क्रोध भरे वचन सुनकर नचिकेता ने सोचा, अच्छा पुत्र वह होता है जो पिता का अभिप्राय समझकर आज्ञा पर चल लेता है। हो सकता है पिता जी ने क्रोध में कह दिया हो पर पिता का वचन असत्य नहीं होना है। ऐसा सोचकर उसने यमराज के यहां जाने का निश्चय कर लिया। उधर पिता पछता रहे थे कि मैंने क्रोध में क्या कह दिया पर नचिकेता ने आकर कहा कि—'हमारे पूर्वजों के चरित्र में कभी असत्य नहीं है। आदमी को एक दिन तो मरना ही होता है, इसलिए मुझे सत्य का पालन करने के लिए यमराज के यहां जाने की आज्ञा दें।' पुत्र की सच्चाई देख पिता ने आज्ञा दी।

वह यमराज के यहां पहुंचा तो मालूम पड़ा कि वे कहीं बाहर गए हुए हैं। नचिकेता तीन रात बिना अन्न-जल ग्रहण किए दरवाजे पर खड़े रहे। यमराज आया तो लोगों ने उन्हें बताया कि अग्नि जैसा एक अतिथि उनसे मिलने के लिए तीन रात से ठहरा है। उसने अन्न-जल ग्रहण नहीं किया है। यह सुनकर यमराज जल का पात्र लेकर उनके पैर धोने के लिए दौड़े, उन्हें नमस्कार किया और बोले—'तीन रात जो तुमने मेरी प्रतीक्षा की है उसके लिए मुझसे तीन वर मांग लो।' नचिकेता बोले—'हे मृत्यो! तीन वरों में से पहला यह मांगता हूं कि मेरे पिता का मेरे प्रति गुस्सा शांत हो जाए।' यमराज ने कहा—'तथास्थु, मृत्यु के मुख से छूटे हुए तुमको देख वे सुख से सोएंगे और उनका क्रोध शांत होगा।'

पिता के लिए सुख मांगने के बाद नचिकेता ने जवों के मंगल के स्वर्ग के साधन अग्नि तत्त्व को जानने की प्रार्थना की। यमराज ने बड़ी तपस्या से अग्नि तत्त्व को जाना था। आज नचिकेता को उत्तम जिज्ञासु जानकर उन्होंने बताया, यह अग्नि अनन्त लोकों की और इस जगत की प्रतिष्ठा का मूल कारण है। तुम इसे विद्वानों की बुद्धि रूप गुफा में स्थिति जानो। फिर यमराज ने नचिकेता को बतलाया कि उसके लिए कैसी और कितनी ईंटें किस प्रकार रखी जाती हैं और कौन-कौन-सी चीजों की जरूरत पड़ती है। नचिकेता ने जो सुना उसको जस का तस दोहरा दिया तो यमराज ने प्रसन्न होकर कहा—'आज से यह नचिकेता कहलाएगी।' फिर

यमराज बोला—'जो इस अग्नि को ब्रह्म से उत्पन्न हुआ जानता है वह मृत्यु के पहले ही शोक रहित हो स्वर्ग के आनंद को प्राप्त करता है।' अब यमराज ने तीसरा वर मांगने को कहा।

नचिकेता ने सोचा, वह स्वर्ग सुख में ही जीव का परम कल्याण है। पुण्य क्षय होने से स्वर्ग से भी तो लौटना पड़ता है। अब तीसरे वर में आत्म-तत्त्व आप से जानना चाहता हूं जिससे जानने पर और कुछ जानना काफी नहीं रहता।

यमराज ने सोचा आत्म-तत्त्व देने से पहले पात्र परीक्षा की जरूरत है। इसलिए उसने कहा आत्म-तत्त्व समझना आसान नहीं। यह बड़ा सूक्ष्म विषय है। तुम कोई दूसरा वर मांगो।

नचिकेता ने कहा, यदि यह आसान नहीं तो इसको समझाने वाला आपसे अच्छा मुझे कहां मिलेगा? इसकी तुलना में दूसरा वर नहीं, इसलिए आप मुझे यही समझाइए। अब यमराज ने लोभ का प्रयोग किया। तुम को मैं सौ-सौ वर्ष जीने वाले पुत्र-पौत्र देता हूं। सोना, हाथी, घोड़ा और इस विशाल भूमण्डल का सम्राट तुम्हें बनाता हूं पर यह प्रश्न मुझसे न पूछो।

नचिकेता ने कहा—'हे मृत्यो! आपने जिन भोग वस्तुओं का वर्णन किया है वे कल तक रहेंगी या नहीं इसमें भी संदेह है। ब्रह्म का जीवन भी अल्पकाल का है इसलिए यह सब आप अपने पास ही रखें। नचिकेता आत्म विज्ञान के अलावा और कोई वर नहीं चाहता।'

यमराज ने नचिकेता को परम वैरागी, दानी, निर्भय और उत्तम जिज्ञासु पाया। यमराज ने बताया।

1. एक वस्तु श्रेय (वास्तविक कल्याणकारी, मोक्ष देने वाली) है।
2. दूसरी प्रेय (स्त्री-पुरुष, धन-सम्पति देने वाली)। जो श्रेय मांगता है वह मोक्ष पाता है। जो प्रेय चाहता है वह धन-मान से भ्रष्ट हो जाता है।
3. बहुत से लोगों को आत्मा का ज्ञान सुनने को नहीं मिलता। बहुत से लोग सुनकर भी इसे जान नहीं पाते। आत्मज्ञान बताने वाला भी बहुत मुश्किल से मिलता है। यह तर्क से प्राप्त नहीं होता। यह तो अलौकिक ब्रह्मज्ञानी के द्वारा बतलाए जाने पर प्राप्त होता है।
4. यह आत्मा जीव रूप से सबके हृदय में विद्यमान है पर सहज में इसका दर्शन नहीं होता क्योंकि यह अति सूक्ष्म है। जब कोई धीर पुरुष विषयों से मन को हटाकर आत्मा तत्त्व में लगाता है तब इसे जानकर सुख-दुख से तर जाता है। जो आत्मा को इस देह से न्यारा जान लेता है वह आनन्द में रम जाता है। मैं समझता हूं नचिकेता इस आनन्द के लायक है।

नचिकेता ने कहा, अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कार्य-कारण से ऊपर, भूत-भविष्य से न्यारे, विषय-व्यवहार से परे जिस ब्रह्म को आप देखते हैं उसे मुझे बतलाइए।

तब यमराज ने फिर से बताना आरम्भ किया——

5. जिसके बारे में वेद बताते हैं और तप किए जाते हैं वह संक्षेप में ॐ है। वह परमात्मा सब नामों से परे होते हुए भी सब में भरा हुआ है। ॐ शब्द ब्रह्म का प्रतीक है। जो इसकी उपासना करता है वह ब्रह्म को पाता है।
6. यह चैतन्य स्वरूप आत्मा न जन्मता है, न मरता है, न किसी से पैदा होता है, न कोई इससे पैदा होता है। यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत, पुरातन, सनातन है और शरीर के मारे जाने पर भी है ही है। जिस प्रकार मकान नष्ट होने से उसका आकाश नष्ट नहीं होता उसी प्रकार ब्रह्म है ही है। अज्ञानी मारने वाला और मरने वाला समझता है पर आत्मा न किसी को मारता है न मरता है।
7. यह अनित्य शरीरों में रहते हुए भी शरीर रहित है। सारे अनित्य पदार्थों में व्याप्त भी सदा स्थिर है।
8. न वह वेद से, न विशाल बुद्धि से न जन्म भर शास्त्र सुनने से मिलता है।
9. जिसको ये स्वप्रकाश आत्मा स्वयं स्वीकार कर लेता है और अपना यथार्थ स्वरूप प्रकट कर देता है——'सोई जानई जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि होई जाई।'
10. जब तक परमात्मा को पाने के लिए हृदय में व्याकुलता और अधीरता नहीं उत्पन्न होती, वह निष्काम साधन से सम्पन्न नहीं होता, परमात्मा के नित्य स्वरूप के

साथ उसका मन नहीं जुड़ता तब तक सारी बातें सूखी और बेकार हैं।

11. कर्म के द्वारा अपरब्रह्म को और ज्ञान के द्वारा परब्रह्म को जानना चाहिए।

12. शरीर रथ है, आत्मा रथ का स्वामी रथी है, बुद्धि सारथी है आर मन लगाम है। इंद्रियां घोड़े हैं, शब्द—स्पर्श आदि विषय इनके दौड़ने के मैदान हैं और शरीर, इंद्रिय तथा मन से युक्त आत्मा को भोतज कहते हैं।

13. जिसका मन वश नहीं होता वह रथ कभी अपने लक्ष्य—ब्रह्म की प्राप्ति तक नहीं पहुंचता। उसके जन्म मरण में भटकना पड़ता है। जो विवेकी है, सदा पवित्र है, वह परम पद पाता है, जहां से लौटना नहीं पड़ता है।

14. इंद्रियों से उसके विषय श्रेष्ठ हैं, विषय से मन, मन से बुद्धि, बुद्धि से महत्, महत् से अव्यत्त श्रेष्ठ है और अव्यत्त से पुरुष श्रेष्ठ है। इस पुरुष के परे और कोई नहीं है।

15. उठो, जागो, महापुरुषों के पास जाकर इसे जानो। बुद्धिमान लोग इस मार्ग को तलवार की धार पर चलने जैसा बताते हैं।

16. जिसके दिल में मोक्ष की शुभ इच्छा है वह इंद्रियों को अंदर मोड़ कर अन्तरात्मा को देख पाता है। विवेकी

पुरुष इस अमृत को जानकर अनित्य पदार्थों से नित्य वस्तु की प्रार्थना नहीं करते।

17. ज्ञान की प्राप्ति केवल विचार से हो सकती है। जिसको संसार में नाम रूप की वजह से भेद दिखाता है उसको बार-बार मृत्यु की शरण लेनी पड़ती है, पर जो शुद्ध जल के जैसे शुद्ध जल में मिल जाता है वह ब्रह्मरूप बन जाता है।

18. जिसका जैसा कर्म, जैसी वासना, जैसा ज्ञान होता है, वह उसी के अनुसार मृत्यु के बाद माता के गर्भ में जाता है। और कोई-कोई पेड़, पत्थर जैसी योनियां भी ग्रहण करते हैं।

19. जब सब प्राणी सुषुप्ति में होते हैं तब जो एक निर्गुण, ज्योतिर्मय ब्रह्म सुप्रकाशित रूप से जाग्रत रहकर सबको प्रकाशित करता है वही शुद्ध है, अमृत है, ब्रह्म है। सब लोक उसी में है उसके बाहर, उससे परे कुछ नहीं है।

20. अग्नि एक ही है, लेकिन वह संसार में अलग-अलग रूपों में दिखती है। ऐसे समस्त प्राणियों में रहने वाला आत्मा एक होने पर भी भिन्न-भिन्न रूप दिखता है। आकाश की तरह होने के कारण बाहर भी वही दिखता है। वह अग्नि-रूप में प्रकाश स्वरूप होकर सारे में फैल जाता है और वायु-रूप में प्राण होकर देह में प्रवेश करता है।

21. जैसे एक सूर्य सब की आंख है, अच्छी-बुरी सभी

वस्तुओं को प्रकाश देता है, पर उनके दोष से लिप्त नहीं होता, ऐसे ही सर्वव्यापी होते हुए भी आत्मा जगत के दुखों से लिप्त नहीं होता ।

22. सब प्राणियों की शक्ति वही है और वह सब का नियंता है। नित्यों का नित्य है, चेतनों का भी चेतन है। जो एक ही अनेक कामनाओं को पूरी करता है उस शरीर-स्वरूप आत्मा का जिसको अनुभव होता है वह नित्य शांति को प्राप्त हो जाता है।

23. जिसको सूरज-चांद-तारे प्रकाशित नहीं करते उसे बेचारा अग्नि क्या प्रकाशित करेगा। जिसके प्रकाश से सब का प्रकाश होता है उस दिव्य ज्योति से सारा विश्व प्रकाशित हो रहा है। सब उसकी सत्ता से कांपते हुए अपने-अपने काम में लगे रहते हैं, क्योंकि वह उठे हुए वज्र की तरह महाभयंकर है। अग्नि उसके भय से तपता है, सूर्य उसी के भय से तपता है। इन्द्र और वायु उसी के भय से दौड़ते हैं।

जब मनुष्य की इच्छा-कामना खत्म हो जाती है और मन मलिनता को त्याग कर अत्यंत शुद्ध बन जाता है, जब अंत:करण की सारी वासनाएं नष्ट हो जाती हैं तब यह मरणशील मनुष्य अमृत बनकर यहीं पर ब्रह्म को प्राप्त होकर ब्रह्मानन्द में मग्न हो जाता है। उस समय हृदय की मैं, मेरी ग्रंथियां टूट जाती हैं और वह अमृत बन जाता है। बस यही शास्त्र का उपदेश है, इससे परे और कुछ भी नहीं है।

68. उषस्ति ने राजा का यज्ञ पूरा करवाया

एक बार कुरु देश में बहुत अकाल पड़ा और सब लोग वह देश छोड़कर दूसरी जगह पनाह लेने लगे। मुनि उषस्ति भी अपनी पत्नी सहित भटकते-भटकते एक महावतों के गांव में जा पहुंचे। उषस्ति बिना जन्म के मरने वाले हो रहे थे। वहां एक महावत को उड़द खाते देखा तो कहा, मुझे थोड़ा उड़द दो। उसने कहा, जो मैं खा रहा हूं उसके अलावा मेरे पास नहीं है। उषस्ति ने कहा, इसी में से थोड़ा दे दो। महावत ने थोड़ा उड़द दिया और उनके आगे पानी का पात्र रखकर कहा—'लो इनको खाकर जल पी लो।' इस पर उषस्ति ने कहा—'भाई मैं जल पी लूंगा तो दूसरे की जूठन खाने का दोष मुझे लग जाएगा।' महावत ने अचरज से पूछा—'जूठी उड़द का दोष नहीं तो जल दोष क्यों?' उषस्ति ने कहा—'उड़द नहीं खाता तो मेरे प्राण नहीं रहते। जल तो दूसरी जगह भी मिल जाएगा।' इतना कहकर उषस्ति ने कुछ उड़द खा लिए और बाकी पत्नी को दे दिए। ब्राह्मणी को कुछ खाने को मिल चुका था इसलिए पति के जूठे उड़द नहीं खाए, अपने पास रख लिए। दूसरे दिन उषस्ति ने कहा—'मुझे जरा-सा भी अन्न खाने को मिल जाए तो मैं निर्वाह लायक धन प्राप्त करूं। राजा यज्ञ कर रहा है वहीं ऋत्विक का काम मुझे भी मिल जाएगा।' स्त्री ने पहले दिन के उड़द दे दिए। उषस्ति ने यज्ञ भूमि में जाकर देखा कि ऋत्विक भूल कर रहे हैं। उनसे कहा कि जिन देवता की

स्तुति आप कर रहे हैं उन्हें जाने बिना स्तुति करेंगे तो आप का मस्तक नीचे गिर पड़ेगा। यह सुनकर सब चुप हो गए। राजा ने पूछा कि—'भगवन, आप कौन हैं।' उषस्ति ने परिचय दिया तो राजा बोला—'मैं यज्ञ कराने के लिए आपको ही ढूंढ रहा था।' उषस्ति ने कहा—'इन सब ऋत्विकों को नहीं हटाना। न ही इनसे ज्यादा दक्षिणा मुझे देना। ये सब मेरी देख-रेख में रहेंगे और हम साथ में यज्ञ करेंगे।'

सिद्धांत : सच्चाई में रहना और अपने को किसी से ऊंचा नहीं मानना।

69. सत्यकाम ने ब्रह्म विद्या पाई

जाबला नाम की एक सदाचारिणी ब्राह्मणी का सत्यकाम नाम का एक पुत्र था। वह गुरुकुल जाना चाहता था तो उसने मां से कहा—'गुरु मुझसे गोत्र पूछेंगे सो मेरा गोत्र बतलाओ।' मां ने कहा, मेरी जवानी में तेरे पिता के घर बहुत अतिथि आते थे जिनकी सेवा में मैं लगी रहती थी तो गोत्र पूछने का समय नहीं मिला। तेरे जन्म के शीघ्र बाद पिता मर गए। बाद में दुख में होने से मैंने गोत्र नहीं पूछा।

सत्यकाम गौतम ऋषि के आश्रम में गया और बोला—'मैं ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ आपकी सेवा में रहना चाहता हूं। मुझे स्वीकार कीजिए।' गोत्र के बारे में उसने साफ-साफ बता दिया। इतनी सीधी-सच्ची बात सुनकर ऋषि प्रसन्न हो गए। उसको वेदाध्ययन कराकर ऋषि ने 400

दुबली-पतली गाएं सत्यकाम को दीं और कहा कि इनको वन में ले जाओ, जब तक ये 1000 न हो जाएं तब तक वापस न आना।

ब्रह्म-विद्या की इच्छा वाले शिष्य ने सहर्ष गोपालन स्वीकार किया। वह ऐसे वन में, जहां खूब हरियाली थी, कुटिया बनाकर रहने लगा और गायों की तन-मन से सेवा करने लगा।

जब हजार की संख्या पूरी हुई तो एक बैल ने पुकारा, हमारी संख्या 1000 हो गई, अब गुरु के पास ले चलो। मैं तुमको ब्रह्म के एक बात का उपदेश करता हूं—इसका नाम प्रकाशवान है। दूसरा उपदेश अग्नि देवता से मिला। उसने कहा—यह अनन्तवान है। तीसरा उपदेश हंस से मिला—यह ज्योतिमान है। चौथा जलमुर्ग से मिला—यह विशालवान है। इस तरह का उपदेश पाकर उसका मुख चमकने लगा और उसने गुरु के पास जाकर सारी बात बताई और गुरु से ब्रह्मज्ञान देने को कहा। गुरु बोले—'इसके सिवा और कुछ जानना बाकी नहीं है। यही ब्रह्मत्त्व है।'

70. श्वेतकेतु वह सत् तू ही है

आरुणी उद्दालक ऋषि के श्वेतकेतु नाम का एक पुत्र था। पिता सोचता था यह स्वयं विद्या प्राप्त करने की इच्छा करे तो अच्छा है। पर ऐसा नहीं हुआ और वह बारह साल तक खेलता ही रहा। फिर पिता ने कहा—'हे श्वेतकेतु! तुम

ब्रह्मचारी होकर किसी गुरु के पास रहो, वेदों का अध्ययन करके ब्रह्म को प्राप्त करो।'

12 साल से 24 साल श्वेतकेतु गुरुकुल में रहा और व्याकरण सहित 4 वेदों का पूर्ण अध्ययन करके गुरु आज्ञा से वापस लौटा। उसे अहंकार था कि मेरे जैसा कोई पंडित नहीं, सो बिना प्रणाम किए पिता के पास आकर बैठ गया। पिता ने कहा—'तू ऐसा क्या पढ़ आया जो इतना अभिमान है। विद्या तो विनय सिखाती है। तूने गुरु से यह सीखा हो तो बता कि ऐसी कौन-सी वस्तु है जिसे सुनने से सब सुना जाता है, जिस एक के विचार से सब विचार हो जाता है और जिस एक के ज्ञान से सब ज्ञान हो जाता है?' यह सुनकर श्वेतकेतु का गर्व गल गया और उसने विनय पूर्वक पिता से कहा—'आप उस वस्तु का उपदेश कीजिए।'

आरुणि ने कहा—'हे सौम्य, जैसे कारण-रूप मिट्टी का ज्ञान होने से उससे बनी सब (कार्य-रूप) घट आदि का ज्ञान हो जाता है और यह पता लग जाता है कि घट आदि सच नहीं है, सत्य तो केवल मिट्टी है, इसी तरह सोने के गहने आदि में केवल सोना ही सच है बाकी सब वाणी के विकार हैं। वैसे यह नामरूप का जगत पैदा होने के पहले एक अद्वैत सत् ही था। उस सत् ब्रह्म ने संकल्प किया कि मैं एक बहुत हो जाऊं। तो पहले तेज हुआ, फिर जल हुआ, फिर अन्न हुआ और इन तीन चीजों से सब पदार्थ बने। जहां प्रकाश या गर्मी है वहां तेज ज्यादा है, जहां तरलता है वहां

जल ज्यादा है और जहां कठोरता है वहां अन्न या पृथ्वी ज्यादा है अग्नि में जो लाल रंग है वह तेज है, नीला धरती है, सफेद पानी है। अगर अग्नि, सूर्य, चन्द्र, बिजली में से तेज, जल और पृथ्वी को निकाल दिया जाए तो कुछ भी न रह जाए। इसी तरह अन्न के भी तीन रूप होते हैं स्थूल से मूत्र, रक्त, हड्डी, मध्य से त्वचा और सूक्ष्म से वाणी रूप होता है। मतलब मन अन्नमय है, प्राण जलमय है और वाक् तेजमय है।' श्वेतकेतु ने कहा—'हे पिता! और खोलकर बताइए।'

उद्दालक आरुणि बोले—'हे सौम्य, जैसे दही मथने से उसका सूक्ष्म तत्त्व मक्खन ऊपर तैर आता है वैसे ही अन्न से मन बन जाता है। पर सबका मूल कारण सत् परमात्मा है। वह सबका आश्चर्य और अधिष्ठान है। उसमें अलग-अलग आकार (Shape) और रूप (form) रस्सी में सांप की तरह कल्पित है। वह सत् वस्तु तू है—तत्त्वमसि। हे सौम्य, जैसे शहद की मक्खी अलग-अलग फूलों के रसों से शहद बनाती है और शहद बनकर वह रस नहीं जानता कि मैं आम के पेड़ का हूं या कटहल के पेड़ का हूं। ऐसे ही सुषुप्ति काल में जीव सत् के साथ एकीभाव में रहता है पर सृष्टि काल में जागकर अपना पहला वाला सिंह व कीट, पतंग या मच्छर का शरीर धारण कर लेता है। यह जो सूक्ष्म तत्त्व है यही आत्मा है, यह सत् है यही तू है। तत्त्वमसि।' श्वेतकेतु बोला—'मुझे फिर समझाइए।' आरुणि बोले—'जैसे समुद्र

में जल से बादलों के द्वारा नदियां बनती हैं और फिर समुद्र में ही मिल जाती हैं। जब मिलती हैं तो अपना नामरूप—मैं गंगा हूं, मैं नर्मदा हूं—भूल जाती हैं पर जब निकलती है तो यह भूल जाती है कि मैं समुद्र से निकलती हूं। इसी प्रकार यह जीव भी सत् में से निकलकर सत् में ही लीन हो जाता है। वह जो सूक्ष्म तत्त्व सबका आत्मा है वह तू है। तत्त्वमसि।'

पिता आरुणि ने कहा—'एक बड़ा फल तोड़कर ला।' श्वेतकेतु फल लाया। पिता ने कहा—'अब इसको तोड़कर देख इसमें क्या है? इसमें छोटे-छोटे बीज हैं। बीज को तोड़कर देख इसमें क्या है?' श्वेतकेतु बोला—'इसमें तो कुछ भी नहीं दिखता।' आरुणि ने कहा—'तू इस बीज के सूक्ष्म भाव को नहीं देख सकता। इस सूक्ष्म तत्त्व से विशाल वटवृक्ष बन जाता है। इसी प्रकार सूक्ष्म सत् आत्मा समस्त स्थूल जगत का आधार है। तू मेरे वचन में श्रद्धा रख, वह सत् आत्मा तू है। तत्त्वमसि।' श्वेतकेतु ने कहा—'मुझे फिर से दूसरे दृष्टांत से समझाइए।'

उद्दालक ने एक नमक की डली श्वेतकेतु को दी और कहा इसे पानी से भरे लोटे में डाल दे और कल सवेरे मेरे पास लोटे को लेकर आना। दूसरे दिन वे बोले—'रात को जो नमक की डली लोटे में डाली थी। उसको जल से ढूंढ़कर निकाल तो दे, मैं उसे देखूं।' श्वेतकेतु को नमक की डली नहीं मिली क्योंकि वह जल-रूप हो गई थी और सारा जल खारा हो गया। आरुणि बोले—'जैसे उस नमक की

डली को देख नहीं सकते, परंतु जीभ द्वारा उसका पता लगता है कि उसकी स्थिति जल में सर्वत्र है, ऐसे ही सूक्ष्म तत्त्व आत्मा है और वह तू ही है। तत्त्वमसि।' श्वेतकेतु ने कहा—'मुझे फिर उपदेश करें।'

उद्दालक बोले—'जैसे कोई चोर किसी आदमी की आंख पर पट्टी बांधकर कहीं दूर निर्जन वन में छोड़ दे और जब पुकार करे तो कोई करुणावान उसे रास्ता दिखा दे, ऐसे ही अज्ञान की पट्टी बांधे हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह के वन में जीव खो गया है। कोई ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के बतलाए हुए मार्ग पर श्रद्धा से चलकर जीवन सत् आत्मा को प्राप्त हो जाता है।'

जैसे कोई मरने वाला रोगी आदमी तब तक सम्बंधियों को पहचानता है जब तक वाणी मन में, मन प्राणों में, प्राण तेज में और तेज ब्रह्म में लय नहीं होता, पर जब तेज ब्रह्म में लय हो जाता है और उसमें से मैं-मेरा खत्म हो जाता है तब वह सत् आत्मा को प्राप्त हो जाता है। वही तू है।

इस प्रकार पिता उद्दालक आरुणि के उपदेश से श्वेतकेतु आत्मा के अपरोक्ष ज्ञान को प्राप्त होकर कृतार्थ हो गए।

71. एक सौ वर्ष का ब्रह्मचर्य (छान्दोग्य उपनिषद्)

एक बार प्रजापति ने कहा—'पाप रहित, शोक रहित सत्य आत्मा को जानकर जो उसका अनुभव करता है वह सम्पूर्ण लोकों को प्राप्त करता है।' यह सुनकर देवताओं और

असुरों को आत्मा को जानने की इच्छा हुई। देवताओं में इंद्र और असुरों में विरोचन चुने गए। प्रजापति के पास जाकर परस्पर ईर्ष्या को भुलाकर बत्तीस वर्ष तक़ दोनों ने ब्रह्मचर्य का पालन किया। फिर प्रजापति ने पूछा—'किस इच्छा से तुम दोनों यहां आए हो।' उन दोनों ने कहा कि आत्मा को जानने की इच्छा से आए हैं। प्रजापति ने कहा—'आंखों में यह जो पुरुष द्रष्टा अंतर्मुखी दृष्टि वालों को दिखता है यही आत्मा है, अमृत है, अभय है, यही ब्रह्म है।'

अशुद्ध-बुद्धि होने की वजह से उन्होंने समझा कि आंख में जो प्रतिबिम्ब दिखता है वही आत्मा है। फिर उन्होंने प्रजापति से पूछा—'जल में जो परछाईं दिखती है या दर्पण में जो दिखती है, इन दोनों में आपका ब्रह्म कौन-सा है? क्या दोनों एक ही हैं?' प्रजापति ने कहा—'दोनों में जो दिखता है, वह प्रत्येक वस्तु में है।' फिर प्रजापति ने कहा—'जल से भरे कुण्ड में देखो और यदि वहां आत्मा को न पहचान सको तो मुझसे पूछो।' उन्होंने देखकर कहा—'नख से लेकर शिखा तक हम सारे आत्मा को देख रहे हैं।' नख-शिखा की बात सुनकर प्रजापति ने कहा—'वस्त्र-आभूषण पहनो और फिर जल के कुण्ड में देखो।' नख और केश जैसे वस्त्र-आभूषण भी अनात्मा हैं, यह समझाने के लिए प्रजापति ने ऐसे कहा था, पर वे गलत समझे और बोले—'जैसे हमने सुन्दर वस्त्र पहने हैं वैसे ही आत्मा ने भी सुन्दर वस्त्र पहने हैं।' प्रजापति ने सोचा मेरे वचनों का मनन करने से ये अपने

आप जान जाएंगे इसलिए उन्होंने कहा—'यही आत्मा अविनाशी है, अभय है, ब्रह्म है।' प्रजापति के वचन सुन दोनों संतुष्ट होकर अपने-अपने घर चले गए। प्रजापति ने सोचा, ये बेचारे बिना आत्मा जाने चले गए। अगर इन्होंने शरीर को ही आत्मा मान लिया हो तो ये नष्ट हो जाएंगे। विरोचन असुरों के पास पहुंचा और बोला—'प्रजापति ने शरीर को ही आत्मा बताया है। इसकी सेवा और पूजा से मनुष्य को दोनों लोकों का सुख प्राप्त हो जाएगा।' आज भी जो देह की पूजा में लगा है उसे असुर कहते हैं।

दैवी सम्पदा वाले इन्द्र को स्वर्ग पहुंचने से पहले विचार उठा, प्रजापति ने आत्मा को अभय कहा है पर प्रतिबिम्ब को बहुत भय रहता है। शरीर सुन्दर तो परछाईं सुन्दर, शरीर लूला-लंगड़ा तो परछाईं लूली-लंगड़ी, शरीर नाश तो परछाईं नाश। इसलिए परछाईं तो आत्मस्वरूप हो सकता है। इंद्र से जाकर यह प्रजापति ने कहा—'वास्तव में प्रतिबिम्ब आत्मा नहीं। तुम 32 साल ब्रह्मचर्य करो, फिर जो भोगता हुआ फिरता है वही आत्मा है, अभय है, अमृत है, वही ब्रह्म है।' इन्द्र ने सोचा, यद्यपि स्वप्न का सुख-दुख होता हुआ-सा लगता है, इसलिए इसमें भी आनन्द नहीं। इंद्र ने प्रजापति को अपनी शंका सुनाई। प्रजापति ने कहा—'ठीक यही बात है। स्वप्न का द्रष्टा आत्मा नहीं। मैं तुम्हें फिर उपदेश करूंगा। 32 साल ब्रह्मचर्य में रहो।' फिर प्रजापति ने कहा—'जिसमें यह जीव नींद में है और उसके इंद्रियों के कर्म शांत हैं और

वह पूरा निर्मल है और सपने का अनुभव नहीं करता वही आत्मा है, अभय है, अमृत है, ब्रह्म है।' इन्द्र ने सोचा—'सुषुप्ति का सुख हमेशा नहीं है इसलिए इसमें आनन्द नहीं है।' इस प्रकार सोच इंद्र चौथी बार फिर प्रजापति के पास आया और अपनी शंका प्रकट की। प्रजापति ने कहा—'ठीक है, सुषुप्ति में पड़ा जीव आत्मा नहीं है। तुम यहां 5 साल ब्रह्मचर्य का पालन करो।' इस प्रकार पूरे सौ वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत से हृदय का मल नाश हो गया तब प्रजापति ने कहा—'यह आने-जाने वाला शरीर अशरीरी आत्मा का अधिष्ठान है। अविवेक से मनुष्य जब शरीर में आत्मा भाव रखता है तो सुखी-दुखी होता है। ज्ञान से जिसका देहध्यास नष्ट हो गया है उसे सुख-दुख नहीं छू सकते। इस शरीर में, जो असल में जानता है कि मैं देखता, सूंघता, बोलता, सुनता हूं और आंख, नाक, मुंह और कान केवल साधन हैं, वह आत्मा है और मन उसका दिव्य चक्षु है। अपने स्वरूप को प्राप्त वह सब पदार्थों से मुक्त अपने आनन्द को प्राप्त होता है। यही आत्म-तत्त्व है। यह जानकर इंद्र आनन्द में मग्न हो गया और देवलोक में लौटकर आत्मा का उपदेश दिया।'

सिद्धांत : अपने असल स्वरूप को जानने में ही सर्वानन्द है।

72. तीन बार 'द' (बृहदारण्यक उपनिषद्)

एक बार देवता, मनुष्य और असुर सबके पिता प्रजापति

ब्रह्माजी के पास विद्या सीखने गए और विनय पूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन और सेवा करने लगे। कुछ समय के बाद तीनों को शिक्षा रूप में ब्रह्मा जी ने एक ही अक्षर कहा—'द'। देवता भोगों में लिप्त रहते हैं इसलिए उन्होंने 'द' का अर्थ किया, 'दमन' अर्थात—इंद्रिय-संयम से कल्याण को प्राप्त होंगे।

मनुष्यों के अन्दर कंजूसी और संग्रह बहुत है इसलिए उन्होंने 'द' का अर्थ निकाला, 'दान', कि दान करने से उदारता और एकता आएगी।

असुरों में क्रूरता बहुत है इसलिए उन्होंने 'द' का अर्थ निकाला 'दया' अर्थात—बुरे कर्मों से छूटने के लिए क्रोध और हिंसा छोड़कर दया का व्यापार करें।

सिद्धांत : सब अपनी मनोवृत्ति के अनुसार ज्ञान उठाकर अपनी कमजोरियों पर जीत पाते हैं।

73. याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को ज्ञान दिया (बृहदारण्यक उपनिषद्)

महर्षि याज्ञवल्क्य की दो स्त्रियां थीं—मैत्रेयी और कात्यायनी। दोनों पतिव्रता थीं पर मैत्रेयी को परमात्मा के प्रति प्रेम भाव था और कात्यायनी को सांसारिक भोगों में रुचि थी। एक दिन ऋषि बोले—'मैं गृहस्थ छोड़कर संन्यास लेना चाहता हूं। तुम दोनों मेरे पीछे प्रेम से रहना। घर-सम्पत्ति दोनों में आधी-आधी बांट देता हूं।' मैत्रेयी ने सोचा, धन पाकर मैं

धनवानों जैसा जीवन व्यतीत करूंगी पर मुझे तो अमृतत्त्व चाहिए। उसने कहा—'मुझे वह परम धन दीजिए जिसके आगे आपको यह घर-बार बेकार लगता है।' याज्ञवल्क्य ने कहा—'1. दुनिया में जो कुछ भी प्रिय है, वह आत्मा की वजह से प्रिय है। यह परम प्रेम का स्थान आत्मा है। वास्तव में दर्शन करने योग्य है। इस आत्मा के दर्शन, श्रवण, मनन और साक्षात्कार से ही सब कुछ जाना जा सकता है।

2. जब कुछ द्वैत भाव होता है, तभी तक दूसरा दूसरे को देखता है, सूंघता है, सुनता है, बोलता है या दूसरे के लिए विचार करता है। पर जब सब अपना ही आत्मा है तो कौन किससे कहे, किसे देखे या सूंघे? जिससे वह इन समस्त वस्तुओं को जानता है, उसे वह किस तरह जाने?

3. आत्मा अग्राह्य है, वह असंग, बंधन रहित है। उसे कभी दुख नहीं है, न उसका नाश है। श्रुति ने इसे नेति-नेति कहा है। आत्मा अनिर्वचनीय है। बस तेरे लिए यही मोक्ष का उपदेश है।'

इतना कहकर याज्ञवल्क्य ने संन्यास ले लिया और मोक्ष का उपदेश पाकर मैत्रेयी परम कल्याण को प्राप्त हुई।

74. याज्ञवल्क्य सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मनिष्ठ

एक बार राजा जनक ने यही जानने के लिए कि सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता कौन है, अपनी गौशाला में से हजार गायों के सींग पर 10-10 सोने की मोहरें बांध दीं और कहा—'हे पूज्य

ब्राह्मणों! आप में से जो भी ब्रह्मनिष्ठ हों वे गायों को अपने घर ले जाएं।' कोई नहीं उठा तो याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्य को कहा—'इन्हें अपने घर ले चल।' इसपर सब को क्रोध आ गया कि हमारे सामने याज्ञवल्क्य कैसे कह सकता है कि मैं ब्रह्मनिष्ठ हूं। याज्ञवल्क्य ने कहा—'भई, हम सब को नमस्कार करते हैं। हमें तो गायों की जरूरत थी, इसलिए ली।' उनको नीचा दिखाने के लिए सबने एक के बाद एक बड़े जटिल प्रश्न पूछे जिसका उन्होंने तुरंत उत्तर दिया। अंत में गार्गी ने कहा कि—'मैं दो कठिन प्रश्न पूछना चाहती हूं। अगर इन्होंने उत्तर दिया तो मानना होगा कि कोई भी इस ब्रह्मवादी को नहीं जीत सकेंगे।'

1. प्रश्न—'हे याज्ञवल्क्य, जो ब्रह्मांड के ऊपर और नीचे है और स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में स्थित है, जो भूत, वर्तमान और भविष्य रूप है वह सूत्रात्मा किसमें ओत-प्रोत है?'

उत्तर—'यह अन्तर्यामी रूप आकाश में ओत-प्रोत है।'

2. प्रश्न—'वह आकाश किस में ओत-प्रोत है?'

उत्तर—'वह अन्तर्यामी है, सब का अधिष्ठान है, वह अक्षर है, स्थूल, सूक्ष्म से भिन्न, छोटे-बड़े से ऊपर, सूखे-चिकने से परे, प्रकाश-अंधकार से भिन्न, वायु-आकाश से भिन्न, संग-रस-गंध-चक्षु-कान-वाणी-मन-तेज-प्राण-मुख रहित, देश-काल वस्तु रहित, सर्वव्यापक है। वह कुछ खाता नहीं है न कोई उसे खाता है, वह अद्वितीय है। वह सब का नियंता

है। सूर्य, चंद्र, पृथ्वी सब उसकी आज्ञा से चल रहे हैं। दिन-रात, महीना-ऋतु उसके नियम के अनुसार आते-जाते हैं। सबकी जो पूजा या यज्ञ होता है वह उसी को प्राप्त होता है। उससे भिन्न कुछ नहीं है। उसको जान लेना ही मनुष्य जन्म की सफलता है।'

75. अज्ञान आंख में पड़े धूल के कण जैसी है

एक आदमी Train में कहीं जा रहा था। खिड़की से बाहर देखते हुए उसकी आंख में धूल का कण चला गया। उसे निकालने के लिए वह आंख जोर से मलने लगा और जितना मले उतनी बेचैनी और जलन बढ़े। घर पहुंचा तो मां ने वह कण आंख से गीले रूमाल के कोने से निकाल दिया। आदमी बोला—'आह! मुझे कितना सुख मिल रहा है।'

सिद्धांत : सुख स्वरूप पहले ही था पर बेचैनी हटने पर लगता है नया सुख मिल गया।

76. जो कील से लग जाए वो पिसने से बच जाए

एक आदमी घर के बरामदे में बैठा चक्की पीस रहा था। एक-एक दाने को पिसते देख उसे लग रहा था कि यही उसके जीवन की कहानी है, वह भी हर तरफ से पिसा जा रहा है।

उसी समय वहां से एक संत गुजर रहा था। आदमी को

रोता हुआ देख संत ने उसके दुख का कारण पूछा। आदमी ने अपनी कहानी सुनाई तो संत ने चक्की के ऊपर का पत्थर उठाकर दिखाया कि जो दाना कील से लग जाता है वह पिसने से बच जाता है।

सिद्धांत : यह चंचल जीव स्थिर परमात्मा को अपने जीवन का आधार मान लेता है तो सब सुख-दुख और पीड़ा से बच जाता है।

77. दो चिड़िया एक पेड़ पर

दो चिड़िया एक ही पेड़ पर रहती थीं। एक ने ऊपर की डाली पर घोंसला बनाया था। सूरज की रोशनी आती तो वह उसका ही रूप हो जाती और हवा के झोंकों के साथ-साथ ऊपर उड़ाने भरती रहती। उसके जीवन में आनन्द ही आनन्द था। दूसरी चिड़िया ने नीचे की डाली पर घोंसला बनाया। वह हमेशा चिड़चिड़ी रहती कि आज धूप नहीं मिली। कितनी सीलन और बदबू है। उसका जीवन दुखी और लम्बी दास्तां बन गया था।

उसने ऊपर नजर उठाई तो देखा, पहली चिड़िया आनन्द और शांति का स्वरूप थी।

उसने भी ऊंची उड़ान भरी। अहो! यह क्या, अब दो नहीं एक ही बची। दूसरी वाली पहली से मिलकर एक हो गई थी।

सिद्धांत : जीवन का सुखी-दुखी बनाना हमारे हाथ में है। आत्मा में आनन्द है और एकता है।

78. काजी के नौकर ने तीन सवाल का उत्तर दिया

एक बादशाह ने काजी के ज्ञान की परीक्षा लेनी चाही। काजी को बुलाकर उससे यह तीन सवाल पूछे।

1. ईश्वर कहां बैठता है?
2. ईश्वर अपना मुंह किस दिशा में रखता है?
3. ईश्वर क्या करता है?

काजी ने सवाल का उत्तर देने के लिए एक हफ्ते की मुहलत मांगी। हफ्ता पूरा होने को आया पर काजी को सवाल का उत्तर न समझ आया तो उसने बीमारी का बहाना कर दिया। पर वह बहुत परेशान रहने लगा। एक दिन उसके नौकर ने उससे परेशानी का कारण पूछा तो काजी ने सब बता दिया। नौकर वेदांत पढ़ा हुआ था। वह बोला मैं आपके प्रश्नों का उत्तर कर आऊंगा।

वह गया राजदरबार में और राजा को बताया कि काजी बीमार है इसलिए वह उत्तर दे देगा। राजा ने कहा—'यदि ठीक उत्तर नहीं दिया तो फांसी की सजा होगी।' जो नौकर ने मंजूर की। अब नौकर ने कहा, प्रश्न पूछने वाला शिष्य और उत्तर देने वाला गुरु होता है। राजा ने उसे सिंहासन पर बैठा दिया और स्वयं काजी के स्थान पर बैठ गया।

बादशाह ने पहला प्रश्न पूछा—'ईश्वर कहां रहता है?'

नौकर ने कहा—'एक गाय मंगवाएं।' गाय आई तो नौकर ने पूछा—'क्या गाय में दूध है?' बादशाह—'अवश्य।' नौकर—'कहां?' बादशाह—'थन में।' नौकर—'गलत,

उसके सारे शरीर में व्याप्त है।' फिर नौकर ने दूध मंगवाया। नौकर—'क्या दूध में मक्खन है?' बादशाह—'है।' नौकर—'कहां है?' किसी ने उत्तर नहीं दिया।

नौकर—'जैसे दूध में मक्खन सब जगह व्याप्त है पर दिखाई नहीं देता, ऐसे ही परमात्मा सभी जगह है, पर दिखाई नहीं देता।' बादशाह को उत्तर पसंद आया। अब दूसरा सवाल पूछा—'ईश्वर का मुंह किस ओर है?' नौकर ने एक मोमबत्ती मंगवाई और उसे जलाया। फिर उसने लोगों से पूछा—'मोमबत्ती का मुंह किधर है, उत्तर, दक्षिण, पूर्व या पश्चिम?' बादशाह को दूसरे सवाल का भी उत्तर मिल गया। अब तीसरा सवाल पूछा—'ईश्वर क्या करता है?' नौकर ने काजी को बुलवा भेजा। काजी को बहुत आश्चर्य हुआ कि नौकर सिंहासन पर बैठा है, बादशाह काजी की जगह। वह चुपचाप नौकर की जगह बैठ गया। नौकर ने उत्तर दिया, ईश्वर यही करता है। वह निरंतर परिवर्तन करता है। राजा को रंक बना देता है और नौकर को बादशाह।

सिद्धांत : ईश्वर सर्वव्याप्त है। वह सभी दिशाओं में देखता है। वह ऊपर की नीचे और नीचे की ऊपर करता है।

79. एक हाथ में आग और एक हाथ में जल

एक ब्रह्मज्ञानी संत-स्त्री एक हाथ में आग और एक हाथ में पानी लिए जा रही थी। लोगों के पूछने पर उन्होंने

कहा—'इस आग से मैं आपके स्वर्ग को जला डालूंगी और जल से आपके नर्क को ठंडा कर दूंगी।'

सिद्धांत : जिस व्यक्ति को आत्मज्ञान हो जाता है वह स्वयं ही स्वर्ग और स्वयं ही नर्क है। वह स्वर्ग के आकर्षण और नर्क के भय से ऊपर हो जाता है।

80. दर्पण के टुकड़े-टुकड़े

एक छोटे बच्चे ने पहली बार अपने आपको एक दर्पण में देखा। अपने समान बच्चे को देखकर वह बच्चे की तरफ बढ़ा। उसने सोचा, जैसे मैं इस बच्चे को पसंद करता हूं वैसे ही वह मुझे पसंद करता है और मुझसे मित्रता करना चाहता है। दर्पण के बच्चे से हाथ मिलाने के लिए ज्योंही उसने हाथ आगे बढ़ाया और दर्पण पर रखा, वह नीचे गिरकर टूट गया। टूटने की आवाज सुनकर मां ने डांटकर पूछा—'तुम यह क्या कर रहे हो?' बच्चे ने सहजता से उत्तर दिया—'मैंने एक से दो बना दिए। इस प्रकार शीशे के जितने टुकड़े हुए हैं उतने ही बच्चे पैदा होंगे।' किंतु क्या वास्तव में बच्चों की संख्या बढ़ती है? असली संख्या वही रहती है। यदि वह बढ़ या घट सकता तो सीमित हो जाता।

सिद्धांत : आधार तत्त्व परमात्मा एक-सा रहता है।

81. रानी ने अपने कुत्ते को दर्पण दिखाया

कुत्तों की एक प्रतियोगिता के लिए एक शीशमहल बना

जिसमें मांस का टुकड़ा रखा। जो कुत्ता अंदर जाकर मांस का टुकड़ा हासिल करेगा वह विजयी होगा। बहुत कुत्ते आए और मालिक के अनेक इशारों के बावजूद अंदर नहीं घुसे क्योंकि शीशमहल में अपनी Shadow देखकर समझते, इतने कुत्ते हैं, वहीं भौंकना और लड़ना शुरू कर देते और थककर हार जाते। एक रानी रोज अपने कुत्ते को दर्पण दिखाती कि यह तुम्हारी ही सूरत है। यह कुत्ता आया और सीधा अंदर जाकर मांस ले आया और जीत गया।

सिद्धांत : गुरु अपना स्वरूप पक्का कराता है तो जीवन युद्ध में विजय होती है।

82. ज्ञान की जीत होगी

राजमहल में एक दम से अंधेरा हो गया और साथ में आवाज आई कि राजा तुम्हारा सारा राज-पाट चला जाएगा। राजा ने सोचा वैसे भी सब मिथ्या ही तो है। बोला—'अलविदा।' फिर आवाज आई, आपके सब सगे-सम्बंधी नष्ट हो जाएंगे राजन! उसने सोचा, सभी तो Return Ticket लेकर आए हैं—बोला, 'अलविदा।' तीसरी बार आवाज आई, आपकी सेना, हथियार, अस्त्र-शस्त्र सब नष्ट हो जाएंगे राजन्। उसने सोचा, वैसे भी कोई चीज रह नहीं सकती, बोला—'अलविदा।' चौथी बार आवाज आई—'राजन्! आपका ज्ञान भी नष्ट हो जाएगा।' अब राजा ने सोचा, ज्ञान बिना जीवन व्यर्थ है। ज्ञान चला जाएगा, उसके पहले मैं ही चला जाता हूं। नाशवान शरीर को खत्म करने

के लिए उसने तलवार निकाली और ज्योंही अपने सिर को काटने वाला था कि रोशनी आ गई।

सिद्धांत : जो ज्ञान के लिए जीते हैं वे सदा प्रकाश में हैं।

83. बकरियों के संग शेर भूल गया

एक शेर का बच्चा बकरियों के झुंड के साथ मिल गया। बकरियां उसे कहने लगीं—'तू हमारे जैसा ही है।' शेर अपनी औकात भूल गया और अपने को बकरी मान बैठा। एक दिन एक दूसरे शेर ने उस बच्चे को मैं...मैं करते बकरियों के साथ रहते देखा तो उसे बहुत खराब लगा। वह जल्दी से उसे नदी पर ले गया और अपनी सूरत पानी में दिखाई। फिर कहा, तू भी मेरे जैसा गर्जना कर सकता है। तू भी शेर है। शेर ने गर्जना की तो सब बकरियां भाग गईं।

सिद्धांत : सच्चा गुरु अपने स्वरूप की पहचान करवाता है।

84. राजा जनक के दरवाजे पर शुकदेव खड़े रहे

वेद व्यास ने पुत्र शुकदेव को ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए राजा जनक के पास भेजा। दरबान ने राजा जनक को खबर दी कि शुकदेव उनसे मिलने के लिए आए हैं। राजा जनक ने कहा, थोड़ी देर बार मिलेंगे। सात दिन बाद पता किया कि जो अतिथि आया था वह है या गया। मालूम पड़ा वह सात दिन से यहीं खड़ा है। राजा ने कहा—'सात दिन उसे रनिवास में रखा जाए और सब प्रकार के ऐशोआराम दिए

जाएं।' इस प्रकार 15 दिन बाद राजा जनक शुकदेव से मिले। फिर भरे हुए तेल के कटोरे से उन्हें वैराग्य का सबक पढ़ाया। फिर राजा जनक ने कहा—'तुम परम वैराग्यवान और श्रेष्ठ भाव वाले हो। तुम पूर्ण हो। तुमको कुछ भासा ही नहीं। यह भ्रम निकालो कि मैं पूर्ण नहीं हूं।'

सिद्धांत : आप अपने ज्ञान में कमी मानते हैं इतनी ही कमी है। ब्रह्मज्ञानी के बोध से ही अपने स्वरूप का पता लगता है। गुरु ही हमको अपना जौहरी बनाता है।

85. जिसने पत्थर लगाया उसने हलवा खिलाया

एक आदमी को किसी ने पत्थरों से बहुत मारा। खून सिर से बहने लगा। वह शांत स्वरूप रहा। एक हलवाई ने यह दृश्य देखा तो उसका दिल हुआ इसको हलवा खिलाऊं। कुछ देर बाद हलवाई ने कहा—'पैसे दो।' आदमी ने कहा—'मुझे जिसने पत्थर लगाए उसी ने हलवा खिलाया।' भगवान ही एक रूप में पत्थर मारता है, दूसरे रूप में हलवा खिलाता है। सर्वरूप में भगवान ही व्यापक है।

सिद्धांत : सर्वरूप में भगवान को ही देखने से अच्छे-बुरे फल से हम छूट जाते हैं।

86. तिजोरी से लाख रुपए मिले

एक पिता मरते समय अपने पुत्र को कहा कि—'तिजोरी में लाख रुपया है ले लेना।' पुत्र को तिजोरी में कोई दरवाजा ही नहीं मिला। पिता के मित्र से सलाह ली तो उसने तिजोरी

के ऊपर का रंग निकाल दिया। सारी तिजोरी सोने की थी। वह पल में लखपति बन गया।

सिद्धांत : गुरु देह का पर्दा उतारता है तो अपनी ही आत्मा को प्राप्त करके आनन्द स्वरूप हो जाता है।

87. आत्मा का ऊंट

एक बार खानाबदोशियों का एक परिवार रेगिस्तान में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहा था। रास्ते में पिता की मृत्यु हो गई तो उसका Will निकाल कर पढ़ा गया। उसमें था—'मेरे आधे ऊंट पत्नी को मिलें, 1/4 बड़े लड़के को, 1/5 छोटे लड़के को।' अब उसके पास 19 ऊंट थे तो बड़ी समस्या यह खड़ी हो गई कि 19 का आधा कैसे किया जाए। उधर से एक संत जा रहा था। उन्होंने संत को बुलाकर अपनी समस्या का हल पूछा। संत ने कहा—'इसमें क्या तकलीफ है, तुम मेरा ऊंट अपने में मिला लो, गिनती 20 हो जाएगी, फिर आधा पत्नी को दो 10, 5 बड़े लड़के को, छोटे को 4। 19 ऊंटों का फैसला हो गया तो मैं अपना ऊंट लेकर चल पड़ता हूं।'

सिद्धांत : अपने आत्मा का ऊंट डालने से बस समस्याएं हल हो जाती हैं।

88. संत ने कहा जहां-तहां भगवान है

रामतीर्थ को लोगों ने कहा, तुम्हें ऊपर से नीचे गिरा देंगे। वह बोला, कहां गिराओगे, जहां-तहां भगवान ही भगवान है। यह सुनकर लोग चुप हो गए।

सिद्धांत : निश्चय का जवाब सबको शांत करेगा।

89. अपने ऊपर आशिक होना

एक राजा नर्तकी के पास जाता था जो राजा की बहुत प्रशंसा करती थी कि राजा तुम क्या हो, कितने महान हो। कुछ दिनों बाद उसका शरीर शांत हो गया फिर भी राजा का मन छोटा नहीं हुआ, क्योंकि उसके शब्दों से राजा के दिल में आत्मविश्वास आ गया था। फिर उसकी लड़की राजा का दिल बहलाने लगी, लेकिन इसने अपनी तारीफ करके राजा को अपने ऊपर Depend कर दिया था। कुछ दिन में यह नर्तकी बीमार पड़ गई तो राजा बेचैन हो गया। वह सोचने लगा, पहले वाली नर्तकी मरी तब भी कुछ न हुआ, फिर अब क्यों यह मायूसी? फिर उसकी समझ में आया कि इसकी तारीफ से मैं इस पर आशिक हो गया हूं इसलिए ताकत चली गई है।

सिद्धांत : ऐसा जानो मेरे जैसा न हुआ न होगा।

90. ब्रह्म अशब्दी है

एक ब्राह्मण ने अपने दो पुत्रों को वेद अध्ययन के लिए गुरुकुल भेजा। वहां से 12 साल के बाद लौटने पर पिता ने पूछा—'तुमने ब्रह्म को समझ लिया?' एक ने कहा—'हां पिताजी।' और वह श्लोक के बाद श्लोक सुनाने लगा। दूसरा मौन रहा। पिता ने चार बार पूछा पर वह मौन ही रहा। पिता ने कहा—'मैं तुम्हारी पढ़ाई से प्रसन्न हूं। तुमने ब्रह्म को जान लिया।'

सिद्धांत : ब्रह्म अशब्दी है।

91. दुर्वासा निराहारी कृष्ण ब्रह्मचारी

एक बार दुर्वासा ऋषि लम्बी तपस्या के बाद गोकुल में पधारे। गोपियों को मालूम पड़ा तो उनको भाव आया कि दुर्वासा के लिए भोग बनाकर ले जाएं। उन्होंने बहुत प्रकार का खाना तैयार किया पर जब जमुना पार जाने लगीं तो देखा बहुत बाढ़ आई है। भागी-भागी कृष्णा के पास पहुंचीं कि हम दुर्वासा के पास कैसे भोजन लेकर जाएं।' कृष्ण ने कहा—'यमुना मैया से कहना, यदि कृष्ण ने आज तक एक गोपी का मुंह भी नहीं देखा हो तो, हे यमुना मैया हमें पार कर देना।' गोपियों ने कहा—'कन्हैया तो बावला है। सारे दिन हमारे साथ नाचता रहता है, अभी ऐसा कह रहा है।' पर उनके पास दूसरा साधन ही नहीं था। जाकर ऐसा ही किया और यमुना ने रास्ता दे दिया। गोपियों ने यमुना पार जाकर दुर्वासा को बहुत प्रेम से खाना खिलाया। फिर जाने का समय हुआ तो देखा यमुना तो बाढ़ में है। गईं दुर्वासा के पास और समस्या बताईं। दुर्वासा बोले—'यमुना जी से कहना, यदि दुर्वासा ने कभी एक कौर भी नहीं खाया हो तो हमें रास्ता देना।' उन्होंने ऐसा ही कहा और यमुना ने रास्ता दे दिया।

कृष्ण ने हर एक को अपना आप ही करके देखा था। उनके अन्दर नाम रूप था ही नहीं। दुर्वासा ने स्वेच्छा से या जरूरत के सिवा कभी नहीं खाया था।

सिद्धांत : देखो तो अपना ही आप ही देखो। जरूरत से कुछ भी खाया तो वह सब प्रसाद है। जरूरत के अलावा खाया तो सब इच्छा वासना है।

92. मेंढक क्या जाने मछली को

एक कुएं में मेंढक ने समुद्र की मछली से पूछा—'तुम्हारे समुद्र में कितना पानी है?' फिर उसने एक Jump लगाया और बोला—'इतना है?' मछली ने कहा—'नहीं, इससे बहुत ज्यादा है।' मेंढ़क ने सोचा इतना हो ही नहीं सकता।

सिद्धांत : मनुष्य ब्रह्मज्ञानी से पूछता है, ब्रह्मज्ञान में इतना आनन्द है विषय रस जितना? लाटरी सुख जितना? वो कहता है, बहुत ज्यादा, आदमी को विश्वास नहीं आता पर वे खुद आए डूबे इस रस में।

93. है तो आत्मा

एक आदमी का पर्स गुम गया। रास्ते में याद आया कि Purse नहीं है। दौड़ के घर पहुंचा और सड़क से ही आवाज मारकर पूछने लगा—'है, है?' वह सड़क पर खड़ा होकर—'Purse है' नहीं कहना चाहता था। घरवालों ने पूछा—'क्या है?' आदमी ने फिर इशारे के साथ कहा—'है, है?' घर में अच्छी तरह ढूंढ़ा तो कहा—'हां पर्स है।' फिर सबका दिमाग शांत हुआ।

सिद्धांत : 'हां है' सुनकर सब शांत होते हैं। असल में कुछ भी नहीं है पर जो है Isness, वह परमात्मा की है।

94. भगवान कृष्ण ने आत्मा से आत्मा की एकता बताई

महाभारत युद्ध के समय जब अभिमन्यु मारा गया तब अर्जुन बहुत दुख से भरा कृष्ण भगवान के पास अभिमन्यु का मृत शरीर लेकर गया कि इसे फिर से जिला दें। कृष्ण ने उसकी पीड़ा समझते हुए कहा, मैं इसे जिंदा कर दूंगा पर पहले यह लोटे का पानी नदी में डाल आओ। अर्जुन नदी में डाल आया तो कृष्ण बोले, अभी वही पानी वापस लौटे में भर लाओ। अर्जुन बोला—'जल जल में मिलकर एक हो गया। वही जल कैसे भरकर लाऊं?' तब कृष्ण ने कहा—'आत्मा-आत्मा से मिलकर एक हो गई। अब वही अभिमन्यु कहां से आए?'

95. गान्धारी ने कृष्ण को श्राप दिया

महाभारत युद्ध की समाप्ति पर गांधारी ने कृष्ण को बुलाकर फटकारा कि तेरी वजह से मेरे सौ के सौ पुत्रों का सर्वनाश हो गया। कृष्ण ने कहा—'माता, उन सौ पुत्रों में मैं ही तो मरा, और अब तेरे बेटों के रूप में मैं तेरी आज्ञा का पालन करने को आया हूं।'

सिद्धांत : हर जगह, हर समय केवल अद्वैत सिद्ध करो।

96. ईसा सूखे नारियल जैसे

किसी ने एक महात्मा से एक प्रश्न किया, क्रॉस पर चढ़ते समय ईसा को क्रॉस की अनुभूति क्यों नहीं हुई? महात्मा के

पास कुछ नारियल पड़े थे। उन्होंने एक कच्चा नारियल और एक सूखा नारियल लिया। महात्मा बोले कि—'यदि मैं कच्चे नारियल को खोलूं तो अन्दर का गुद्दा क्या हो जाएगा?' लोगों ने कहा कि—'गुद्दा भी कट और टूट जाएगा।' फिर सूखा नारियल लिया तो पूछा—'यदि इसको तोड़ूं तो गुद्दे का क्या होगा?' लोगों ने कहा—'वह सुरक्षित रहेगा।' तब महात्मा ने कहा—'जब ईसा को क्रॉस पर चढ़ाया तो बाहरी खोल (शरीर) अन्दर के गुद्दे (आत्मा) से बिल्कुल अलग हो चुका था।'

सिद्धांत : आदमी की कमजोरी यही है कि उसे खोल से लगाव है। संसार में जब व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त नहीं होता वह अपने आपको इस खोल से छुड़ा नहीं पाता। इसलिए शरीर को ऐसा बनाओ जैसे इसकी कोई हस्ती नहीं है। जीवन मुक्त परमात्मा में निवास करता है और ऐसा फील करता है मानो उसका शरीर उत्पन्न ही न हुआ हो।

97. अंधे आदमी शीशे का रंग बताते हैं

चार आदमी एक दिन 'खिड़की के शीशे का रंग कौन-सा है' यह बातचीत करने लगे। एक ने कहा—'मेरा बेटा University में पढ़ता है। उसने बताया है कि शीशे का रंग पीला है। इसलिए पीला ही होगा।' दूसरा बोला—'मेरा चाचा Municipality में काम करता है। उसने बताया है कि शीशे का रंग लाल है। इसलिए लाल ही होगा।' तीसरा

बोला—'मेरा भतीजा Professor है। उसने बताया है कि शीश हरा है तो हरा ही होगा।' चौथा बोला—'मेरा भाई प्रोफेसर है वह कहता है कि शीशा नीला है तो नीला ही होगा।' जब मत नहीं मिला तो उन्होंने 4 दूसरी इंद्रियों से खुद जानने की कोशिश की। उन्हें शीशे की चाट से स्वाद जानना चाहा। फिर इकट्ठा कर आवाज से पता लगाना चाहा और उसकी ध्वनि सुनी। उन्होंने शीशे की गंध को सूंघा और छुआ किंतु रस, स्पर्श, शब्द, गंध की इंद्रियों से शीशे का रंग पता नहीं चल पाया।

सिद्धांत : परमात्मा को इंद्रियों द्वारा नहीं जाना जा सकता। उसको केवल आत्मज्ञान द्वारा महसूस किया जा सकता है।

98. भांग का नशा घोटने से चढ़ता है

एक आदमी को भांग पीने का शौक था। पास ही में बनिए की दुकान थी, जिसकी भांग बहुत ही मशहूर थी। वह आदमी अपने लिए भी भांग वहीं से खरीद लाया और अधीरज में भांग को जल्दी-जल्दी रगड़ा और पी लिया। भांग का नशा उसे न चढ़ा तो वह दुकानदार से लड़ने लगा कि तुमने नकली माल दिया है। एक बूढ़ा वहां खड़ा सब सुन रहा था। वह बोला—'अरे भैया! इससे मत झगड़ो, इसका माल हमेशा सही होता है। तुमने ठीक से उसे रगड़ा नहीं होगा।' फिर घर ले जाकर उसी भांग को उसने खूब रगड़कर बनाया। जितनी

बारीक भांग रगड़ी गई उतना तेज नशा हो गया। वृद्ध ने कहा—'कच्ची-पक्की भांग से नशा नहीं चलेगा। खूब घोटी हुई भांग ही नशे वाली होती है।'

सिद्धांत : हम गुरु के वचन लेकर जल्दी से अपनाना चाहते हैं पर बारीकी से विचार नहीं करते इसलिए पूरा निर्णय नहीं हो पाता। गुरु के वचनों को जितना घोट-घोटकर पीएंगे उतना ही नशा चढ़ेगा। वचन में कमी नहीं, हमारे निर्णय में कमी है।

99. विवेकानन्द ने कहा भगवान दिखाओ

विवेकानन्द जब पहली बार रामकृष्ण परमहंस के पास आए तो उन्होंने पहला सवाल पूछा—'आप मुझे भगवान दिखा सकते हैं?' वे बोले—'जरूर, इतनी साफ-साफ जैसे तुम मुझे देख रहे हो, पर उसके लिए ऐसी तड़प चाहिए जैसी एक बच्चे को मां के लिए होती है या डूबता हुआ आदमी जैसे पानी से बाहर निकलने के लिए छटपटा रहा है।'

सिद्धांत : लगन में अगन हो तो दर्शन अवश्य होगा।

100. जैसी निराकार ने प्रेरणा डाली

एक लड़की शादी कर ससुराल आई। वह शांत, सौम्य, धैर्यवान तो थी ही, साथ में कर्मयोगी भी थी। पति का धंधा ठीक नहीं चलता था तो वह घर-घर जाकर Physiotherapy की मसाज देती और परिवार का गुजारा करती। देवर छोटे थे

तो इसने सोचा कि अभी खुद के बच्चे नहीं होने चाहिए। क्योंकि फिर देवरों की संभाल अच्छी नहीं होगी। कई वर्ष गुजर गए यह निष्काम भाव से ससुराल में रहती और सबसे Fit होती। एक दिन देवर ने कहा—'भाभी, आज मेरे कुछ दोस्त आने वाले हैं। हमारे लिए फलानी डिश तैयार कर देना।' इसने कहा ठीक है। By Chance उस दिन कृष्ण जन्माष्टमी थी और काम से जब वह तीन बजे लौट रही थी तो ज्यादातर सभी दुकानें बंद हो चुकी थीं। इसको सब सामान नहीं मिल पाया तो स्त्री ने दूसरी डिश तैयार कर दी। देवर ने देखा तो तपाक से बोल दिया, तुमने वह डिश क्यों नहीं बनाई। तुमको सदा कंजूसी की लगी रहती है। स्त्री ने सहज भाव से कहा—'नहीं भैया, ऐसी बात नहीं है। तुम दो दिन पहले बता देते तो वह डिश भी बना देती। आज बाजार बंद हो जाने से नहीं बन पाई।' अन्दर गई तो पति ने कहा—'इतनी बदतमीजी का जवाब भी तुम इतने धीरज से कैसे देती हो।' वह बोली—'इसमें धीरज की क्या बात है, जैसी प्रेरणा निराकार ने उसको दी वैसे वो बोला जैसी प्रेरणा निराकार ने मुझको दी वैसे मैं बोली।' फिर सब ने भोजन ग्रहण किया। तो देवर ने अपनी भाभी से कहा—'यह उस Dish से भी ज्यादा स्वादिष्ट है।' फिर उसका दोस्त बोला—'तुमने अपनी भाभी से जिस तरह से पहले बात की थी वैसे हमारे घर में होता तो भाभी सारा टोपियां उठाकर नाली में फेंक देती। न वह खाती न और ही कोई खा पाता।' स्त्री

ने पति से कहा—'जब निराकार बैठा है तो यह मुंह अपनी क्यों सफाई दे।'

सिद्धांत : हर रूप में निराकार का दर्शन किया तो सारे विकार खत्म हो जाते हैं।

101. जड़ भरत ने पालकी उठाई

राजा भतृहरि एक जन्म में जड़ भरत हुए थे। राजा भर्तृहरि ने कठिन तपस्या करके साधना की अच्छी स्थिति हासिल कर ली थी पर अंत समय में एक हिरण के बच्चे के मोह में पड़ जाने से एक जन्म हिरण का लेना पड़ा और दूसरे जन्म में फिर मनुष्य शरीर पाया। इस जन्म में वह शुरू से ही सुजाग रहा। वह शांत और मौन में जड़ की तरह बैठा रहता इसलिए उसको सब 'जड़ भरत' कहते थे। यह जंगलों में विचरन करता, कुछ मिलता तो खा लेता, नहीं तो ध्यान में बैठा रहता।

उस देश के राजा राहूगण को ब्रह्मज्ञानी गुरु की बहुत तलाश थी। उसके मंत्री ब्रह्मज्ञानी गुरु को ढूंढ़ न पाए तो वह स्वयं ढूंढ़ने निकला। रास्ते में उसका पालकी उठाने वाला एक आदमी बीमार हो गया। बाकी तीन पालकी वालों ने एक अच्छे तंदुरुस्त आदमी को सड़क के किनारे बैठे देखा तो उसे बुलाकर कहा, पालकी उठाओ। यह आदमी जड़ भरत ही था। इसने पालकी तो उठा ली पर अपनी मस्ती में चलता रहा। कभी एक कंधे पर रखता, कभी दूसरे पर। तो राजा ने पूछा, आप थक गए हैं क्या? इस पर जड़ भरत ने

कहा, थका कौन? पालकी का भार कंधे पर है, कंधे का घुटने पर, घुटने का पैर पर और पैर तो धरती पर है। सब भार ढोने वाली धरती है तो थके कौन? इस एक वाक्य से राजा समझ गया यह ब्रह्मज्ञानी गुरु मिल गया। उसने प्रार्थना की कि वे राजमहल चलकर उसे ज्ञान दें। जड़ भरत बोले, मैं चलने को तैयार हूं पर क्या तुम्हें ज्ञान नहीं हुआ? राजा बोला, आप ठीक कहते हैं, ज्ञान आपने दे ही दिया है।

102. घोड़े के सिर से ज्ञान

दधीचि महर्षि ब्रह्मज्ञानी थे, उनके पास संत कुमार आए। उन्होंने ब्रह्मज्ञान मांगा, ब्रह्मज्ञानी ने चारों को चार दिशाओं में भेजा और कहा, अपनी भूमिका बना के आओ, पीछे ज्ञान दूंगा। कुछ समय बाद इंदु राजा महर्षि के पास आए, जब महर्षि से भोगों की निंदा सुनी। इंदु को यह बात पसंद नहीं आई और महर्षि से कहा, आज से ब्रह्मज्ञान किसी को न देना, अगर देगा तो सिर धड़ से अलग हो जाएगा। दधीचि मौन में रहा। कुछ समय बाद संत कुमार आए और ब्रह्मज्ञान मांगा, महर्षि ने इंदु की बात सुनाई। एक ने कहा, मेरे को विद्या आती है जो आप का सिर उतारकर घोड़े का सिर रखूंगा, आप ज्ञान सुनाना। इंदु आपका सिर काटेगा तो हम वो लगा देंगे। इंदु आया और काटा। महर्षि ने घोड़े के सिर से ज्ञान दिया।

सिद्धांत : निष्कामी ब्रह्मज्ञानी अपने सिर जाने की चिंता न सोचकर ब्रह्मज्ञान ही देगा।

103. देवदत्त को बुलाओ

पिता ने पुत्र से कहा देवदत्त को बुलाओ। पुत्र को पता नहीं था। वह सारा शहर, बाजार ढूंढ़कर आया, सबसे पूछा, देवदत्त कौन है पर उसे नहीं मिला। जब वापस आया तो देवदत्त बाहर ही खड़ा था। मिल गया तो नजदीक था, पता नहीं तो ढूंढ़ रहे थे।

सिद्धांत : नेड़े ते नेड़े भगवंत।

104. अपनी फलक

रामतीर्थ ने एक दिन कहा, जिस प्लेन में एक राजा है, उसमें नहीं चढ़ूंगा। रामतीर्थ के एक पांव में मोजा व बूट दूसरे पांव में, पतलून आधी पर चलता ऐसे था कि मैं राम बादशाह।

105. कांच के पत्थर ने मोर से दिल लगाया

एक पत्थर था, वो ऐसा था जैसे कांच। सब जानवर उसमें आकर अपनी शक्ल देखते थे। एक दिन कांच को इश्क हुआ मोर से कि सब तो दिल लगाते हैं मैं किससे दिल लगाऊं। फिर उसने ऐसा दिल लगाया जो खुद मोर रूप हो गया। सब जानवर उसमें देखते तो मोर ही दिखता। एक दिन मोर उसके सामने आया और उसे अपने में मिलाकर एक कर दिया।

सिद्धांत : जब तक भगवान में पूरे गुम नहीं हुए तो

अपना नाम देह नहीं भूलेगा और जब खुद का वो रूप हो जाएगा, तो सबको भी वो ही रूप दिखेगा और भगवान भी अपने में मिलाकर एक कर देगा।

106. सीटी बजा के भगवान माया ले गया

एक बार इंग्लैंड का एक जहाज और दूसरा इंडिया का जहाज एक ही जगह खड़े थे। इंडिया वाले जहाज में एक के पास पंछी थे जिसे इंग्लैंड वालों ने ऊंचे भाव में खरीदा। जब दोनों जहाज चलने लगे तो इंडिया वाले ने जोर से सीटी बजाई और सब पंछी उनके हाथों में आ गए। इंग्लैंड वाले देखते रह गए।

सिद्धांत : पहले माया में चले गए, ईश्वर ने फिर सीटी बजाकर हमें अपने पास बुला लिया।

107. खोई हुई सूई

एक औरत की सूई घर में खो गई। वह गरीबी के कारण अपने घर में दिया तक नहीं जला सकती थी। इसलिए बाहर निकल गई। गलियों में सूई ढूंढ़ने लगी। किसी ने पूछा, गलियों में क्या खोज रही हो। उसने उत्तर दिया, अपनी सूई। आदमी ने पूछा, सूई कहां खोई थी? नारी ने कहा, घर में, पर घर में चिराग नहीं जला सकती। सड़क पर तो लालटेन है। इसलिए यहां ढूंढ़ रही हूं।

सिद्धांत : आनन्द धाम अपने भीतर है और हम ढूंढ़ते बाहर हैं।

108. मनुष्य का अंतःकरण खाली

एक समय राजा के पास संत कमंडल लेकर आया। राजा ने कहा—'आज तृप्त होकर जाओ तभी यज्ञ सफल होगा।' संत ने कहा—'कमंडल भरो।' राजा भरे तो फिर वो खाली। सारा जेवर डाला इत्यादि। राजा ने कहा—'प्रभु, बताओ क्या करें।' कमंडल में छेद था। संत ने कहा—'मनुष्य के अंदर भी, ऐसा ही अंतःकरण में छेद है, जो कभी तृप्त नहीं होता।'

सिद्धांत : ज्ञान से यही अंतःकरण नहीं रहता।

109. एक जेल में फल लाया एक ने दरवाजा खोला

एक जेल में कैदियों के लिए फल लेकर गया, दूसरे ने उनका दरवाजा खोल दिया तो किसने अच्छा काम किया?

सिद्धांत : सच्चा गुरु प्रकृति बनाकर सुख नहीं देता। वह जन्म के बंधन से हमेशा के लिए छुड़ा देता है।

110. गौतम बुद्ध को किसी ने गाली दी

गौतम बुद्ध को किसी ने गाली दी। बुद्ध ने कहा, कोई उपहार दे तो, मैं चाहूं तो स्वीकार करूं या नहीं। मैं वापिस देता हूं।

सिद्धांत : मनुष्य अपना मालिक खुद है, चाहे कुछ भी स्वीकार करे या नहीं। (Man is the maker of his own destiny. He can either make it or break it.)

111. जेल में भी पृथ्वी वल्लभ

राजा पृथ्वी वल्लभ को दुश्मनों ने बंदी बना कैदखाने में डाल दिया। पर जब उसे खाने देने आए तो आवाज लगाई, राजा पृथ्वी वल्लभ खाना खा लो। राजा ने सोचा शोक किस बात का, मैं तो कैदखाने में भी राजा ही हूं।

सिद्धांत : शरीर रूपी जेलखाने में बंधा हुआ है तो आत्मा ही।

112. राजा को तीन गुड़ियां मिलीं

एक राजा के पास कोई तीन गुड़िया लाया। दिखने में तीनों गुड़ियां सुन्दर और समान थीं। पर सबकी कीमत अलग-अलग थी। पहली 10/- दूसरी 25/- और तीसरी 50/- रुपए की थी। पहली के कान में लकड़ी डाली तो दूसरे कान से निकल गई। दूसरी के कान में डाली तो मुंह से निकल गई। तीसरी के कान में डाली तो बाहर न आई——सीधी पेट में चली गई।

सिद्धांत : तीन प्रकार के जिज्ञासु होते हैं। पहले एक कान से ज्ञान सुनकर दूसरे से निकाल देते हैं, दूसरे सुनकर बक-बक करके ज्ञान के वचन बाहर कर देते हैं, तीसरे ज्ञान सुनकर उसमें पूरे गुम हो जाते हैं।

3. विवेक के दृष्टांतों की सूची

113. तेरा की
114. पच्चीस वर्ष बाद राजाई छूटती थी
115. स्वप्न के बेटों को रोऊं या जाग्रत के बेटो को
116. इच्छा पर, शराब की बोतल का नतीजा
117. जब तक सेठ है तब तक कर्म
118. ऐसा घर कहां, मृत्यु नहीं जहां
119. पांच कोश
120. राख की सम्भाल
121. कड़वी लौकी ने तीर्थ यात्रा की
122. संत ने वाल्मीकि की मत फेरी
123. छाज लेकर अंधेरा निकाला
124. तू है निर्बल, वो है बलवान
125. सतो, रजो, तमो गुणों से ऊपर
126. यह सत्य या वो सत्य
127. संत को जूती दी, उसने वही पहनी
128. हिन्दू करे तो मुसलमान नहीं करे
129. चरित्र की शुद्धि
130. सच्चा चमत्कार
131. अपना शमादान जलाओ
132. राजा संत की कुटिया में न बैठा
133. एक आदमी ने राजा से भूसा मांगा
134. बाप ने दो बेटों को बीज दिए
135. बाप ने बेटों को पत्र लिखा
136. पूरा मूल्य चुकाना पड़ता है
137. राजा की Choice संत या पुत्र
138. गधों ने अपने को बंधा हुआ माना
139. पांच सौ रुपए देकर नौकर उल्टा रखो
140. नौकर मालिक
141. आदमी के चेहरे का Jigsaw Puzzle बनाया
142. सब दरवाजे बंद करो तब संत आएगा

143. रानी ने अवधूत को पेड़ा खिलाया
144. मीरा ने फोटो से विवेक जगाया
145. मीरा संत ने पुजारी का विवेक जगाया
146. बंधे को बंधा मिले
147. यात्री गिनती करने के समय खुद को भूल गए
148. गुरु नानक–खेतों को जल
149. पांच मनचले दोस्त और विवेकी मिनिस्टर
150. बूढ़े जौहरी ने हीरा परखा
151. हीरा मुकुट में
152. औरत का हार खोया
153. तपस्या से पानी पर चला
154. चोर ने गेरुए वस्त्र पहने
155. पिता ने तीनों पुत्रों को परखा
156. सच्चा मित्र कौन
157. आत्मा का प्रत्यक्ष प्रमाण
158. कौन ब्राह्मण, कौन जमादार
159. आशीश भी नहीं देना आता
160. कबीर ने अपात्र को उपदेश दिया
161. Past, Present, No Future-No Present
162. जमींदार अपने पास बंदूक रखता
163. राजा को हंसों ने ज्ञान दिया
164. तीर्थों में भी चोर बसते हैं
165. कृष्ण ने वैकुण्ठ दिखाया
166. गंगा भक्त का विवेक जगा

विवेक के अन्य दृष्टांत

258. मृत्यु को बुलावा
259. संत बिच्छू साथ रखता था
263. आदमी ने मित्र को पत्र लिखा
298. झाड़ वाली ने उपकार किया
284. नदी में दो आदमी बह रहे थे

विवेक जगाना

113. तेरा की

एक औरत को हर समय कुछ खाने की आदत थी। उसके घर में श्राद्ध था। देवरानियों व जेठानियों ने सोचा कि यदि यह रसोई बनाएगी तो सब भोजन जूठा हो जाएगा, तो उन्होंने उससे कहा कि तू नदी पर कपड़े धोने को जा। उनका अनुमान था कि यह कपड़े धोकर आएगी तब तक श्राद्ध की पूजा आदि समाप्त हो जाएगी।

पर आदत से लाचार उस औरत ने कपड़े की गठरी में थोड़ा-सा आटा चुराकर रख लिया। नदी पर गई तो कुछ ही देर में उसे भूख लगी और नदी के पानी से आटा उसन किया। नदी के पास ही श्मशान घाट था। मुर्दे जल रहे थे। औरत ने आटा थपथपाकर रोटी बनाई और मुर्दे की आग पर सेंक लिया। सामने ही देवी का मन्दिर था। मन्दिर में वह औरत ऊपर चढ़ गई और दीपक से थोड़ा घी लेकर रोटी पर लगाकर खाने लगी। उसे ऐसा करते देख देवी माता की गर्दन झुक गई।

पुजारी ने देखा तो सारे गांव में बताया कि किसी ने ऐसा

पाप किया है कि देवी माता की गर्दन टेढ़ी हो गई। सबने मंदिर जा-जाकर प्रायश्चित्त किया पर देवी माता का मुंह सीधा न हुआ। औरत ने जब सुना तो समझ गई और जल्दी से मन्दिर में जाकर देवी माता के कान में बोली—'आटा मैंने चुराया, श्मशान में रोटी मैंने बनाई, घी मैंने लिया वो भी तेरा नहीं था, भक्तों ने भेंट चढ़ाया था तो तू क्यों रंज भई? तेरा की?' उसी समय देवी माता का मुंह सीधा हो गया कि सच्ची बात है, जो करेगा वो भोगेगा, भरेगा, तू क्यों भयो उदास।

सिद्धांत : अपनी करनी हर एक आप भरे, तुम क्यों दूसरों का कर्म देखते हो, तुम्हारा क्या? तेरा की?

आपै बीज आपै खाए नानक दुकमी रहयो समाय।

114. पच्चीस वर्ष बाद राजाई छूटती थी

एक देश में यह कानून था कि हर राजा 25 साल राज्य करे और फिर जंगल में जाकर रहे। सब राजाओं के जंगल जाने का समय आता तो वे बहुत दुखी होते क्योंकि वहां कष्ट से जीवन बिताना पड़ता। फिर एक विचारशील राजा सिंहासन पर बैठा। उसने राज्य का काम बहुत अच्छी तरह से सम्भाला और Side में जंगल के रास्ते भी सुधारे और वहां महल बना लिया। चुपचाप वहां पर खाने-पीने की सब सुविधा कर ली। पच्चीस वर्षों के बाद उसका राजाई छोड़ने का समय आया तो वह बड़ी खुशी से बैण्ड बाजे बजाने

लगा। लोगों को हैरानी हुई कि यह हंसता हुआ कैसे जा रहा है। फिर मालूम पड़ा उसका सब इंतजाम, तैयारी पहले ही हो चुकी है।

सिद्धांत : ज्ञानी पहले ही अपना भविष्य सुधार लेता है। बुढ़ापा, बीमारी, दुख सबके लिए ज्ञानी पहले ही तैयार है।

115. स्वप्न के बेटों को रोऊं या जाग्रत के बेटे को

एक राजा ने सबको बोल रखा था कि मुझे नींद से न उठाना। एक दिन राजा का बेटा जो बहुत बीमार था मरने लगा तो रानी ने कहा कि राजा को उठा दो। राजा को उठाकर खबर दी तो राजा ने कहा अभी सपने में मैं तीन बेटों के साथ खेल रहा था जिनकी मेरे जागने से मौत हो गई तो मैं उन तीन बेटों के लिए रोऊं या इस जाग्रत स्वप्न के एक बेटे के लिए रोऊं।

सिद्धांत : दोनों सपना है, दिन का भी, रात का भी। जगत मिथ्या है।

116. इच्छा पर, शराब की बोतल का नतीजा

एक राजा को शराब पीने की इच्छा हुई, उसने वजीर से लाने के लिए कहा। वजीर लाने गया, सुबह से शाम हो गई पर वह न आया। राजा इंतजार करता रहा। रात हो गई तो वजीर पहुंचा। साथ में एक ट्रक भरकर सामान लाया था।

शराब, वेश्या, मटन, डॉक्टर और कफन। राजा ने कहा—'यह सब क्या है?' वजीर ने कहा—'शराब पीएंगे तो मटन की इच्छा होगी, फिर वेश्या के साथ भोगने की, फिर बीमार पड़ेंगे तो डॉक्टर की जरूरत होगी और मौत भी जल्दी आ जाएगी इसलिए कफन भी लाया हूं।' राजा इतनी सब बात सुनकर सोच में पड़ गया कि एक शराब की बोतल का यह नतीजा? ऐसी शराब कौन पीएगा! हमेशा के लिए शराब पीने का भाव छोड़ दिया।

सिद्धांत : वजीर ने सामने कुछ बोला नहीं पर दिखाया तो राजा को ज्ञान आ गया। इच्छा उठे तो त्याग दो, नहीं तो तुम्हारा सर्वनाश हो जाएगा।

117. जब तक सेठ है तब तक कर्म भी है और कर्म का फल भी

एक सेठ ने कोठी और बगीचा बनवाया, प्याऊ भी चलवाया। एक दिन सेठ के बगीचे में एक बछड़ा घुस आया। कोई नौकर पास नहीं था इसलिए खुद दौड़े और बछड़े को लाठी से मार दिया। लाठी मर्मस्थल पर लग गई और बछड़ा वहीं मर गया। वह गोहत्या सेठ के सामने आकर खड़ी हुई। सेठ जी ने कहा—'मैंने नहीं मारा, लाठी ने मारा।' लाठी ने कहा—'हाथ ने मुझे चलाया।' हाथ ने कहा—'मेरे प्रेरक बुद्धि के देवता ब्रह्म हैं।' ब्रह्म ने कहा—'नारायण भगवान की शक्ति मुझे क्रियाशील करती है।'

अब गोहत्या नारायण के पास गई। नारायण उसे लेकर वृद्ध ब्राह्मण का वेश कर सेठ जी के यहां गए। बोले—'आप बड़े धर्मात्मा हैं, Artist हैं, आपने बड़ा सुन्दर बगीचा लगवाया है।' सेठ जी खुश होकर बोले—'आइए, आपको अपनी रचना दिखाता हूं। मेरी कला-कौशल देखकर आनन्द लीजिए। देखो, कहां-कहां से पत्थर मंगवाकर यह कोठी कितनी मेहनत से बनवाई है। कहां-कहां से वृक्ष-पुष्प मंगवाकर मैंने यह बगीचा लगवाया है।' इतने में बछड़े के शव के पास पहुंच गए। ब्राह्मण ने पूछा—'सेठ जी! यह बछड़ा कैसे मर गया?' सेठ ने कहा—'अपने कर्मों से मर गया।' ब्राह्मण बोला—'वाह, सेठजी वाह! मीठा-मीठा खुद खा लेते हैं, कड़वा-कड़वा थूक देते हैं। यदि आप सब करते हैं तो इसे भी आपने मारा है।' इस प्रकार गोहत्या सेठ को लग गई।

सिद्धांत : जब तक कर्म को स्वीकार या अस्वीकार करने का अहंकार है तब तक कर्म से कोई नहीं छूटता। यह छूटता है स्वरूप ज्ञान से—मैं असंग चेतन हूं, मुझसे कर्म का सम्बंध नहीं है।

118. ऐसा घर कहां, मृत्यु नहीं जहां

बुद्ध भगवान एक गांव से गुजर रहे थे। एक औरत रोती हुई उनके चरणों में गिर गई और विनती करने लगी कि मेरे इकलौते लड़के को जिंदा कर दो। बुद्ध भगवान बोले—'हां

मैं उसे जिला देता हूं, तुम कुछ राई के दाने किसी ऐसे घर से ला दो जहां कभी मौत न आई हो।' औरत तैयार हो गई और घर-घर घूमने लगी पर ऐसा कोई घर न मिला जहां कोई न मरा हो। उसकी आंखें खुल गईं और वह दुख भूलकर बुद्ध भगवान से प्रार्थना करने लगी कि उसे अपने संघ में ले लें।

सिद्धांत : प्रकृति को विकार सहित जानने से दुख नहीं रहता।

119. पांच कोश

एक आदमी पांच मंजिल के मकान में रहता था पर वह सबसे नीचे की मंजिल पर रहता था जहां मच्छर, कीचड़ आदि सब था। उसे सब कहते थे ऊपर रहो पर वह अपने स्वभाव के अनुसार नीचे ही रहता। आखिर उधर रहने से उसे हड्डियों का रोग हो गया। डॉक्टर ने कहा, तुम जितना ऊपर रहोगे उतनी तुम्हारी बीमारी चली जाएगी। डॉक्टर का कहना मानकर वह ऊपर रहने लगा। पहली मंजिल पर गया, वहां मच्छर तो थे पर कीचड़ न था तो उसे थोड़ा आराम हुआ। फिर दूसरी मंजिल पर गया, वहां और ज्यादा आराम हुआ। इसी प्रकार क्रमश: तीसरी और चौथी और अंत में पांचवी पर रहने लगा। वहां खुला आकाश देखकर और ताजी हवा पाकर वो पूरा स्वस्थ हो गया। ऐसे ही मनुष्य के अन्दर पांच कोश हैं——1. अन्नमय, 2. मनोमय, 3. प्राणमय,

4. ज्ञान-विज्ञानमय तथा 5. आनंदमय। मनुष्य अन्नमय में ही रहता है, क्या खाएं, कैसे रहें, किस होटल में जाएं आदि। इसमें रहकर जब खुद थकता है तो सत्पुरुष का संग करता है। सत्पुरुष उसे समझाते हैं——अन्नमय से ऊपर हो जाओ। मन का निग्रह करो। जिधर मन जाए वहां से खींचकर, ज्ञान देकर उसे ऊपर लाओ फिर प्राण शांत होते हैं। अब प्राणमय कोश में आता है। ज्ञान से प्राण सूक्ष्म चलते हैं, अज्ञान में तेज चलते हैं। प्राण सूक्ष्म होने से ज्ञान-विज्ञान के उत्तम विचार निकलेंगे जो किसी को भी एक वचन से संतुष्ट कर सकेंगे। ज्ञान-विज्ञान भी आ गया पर आनन्द नहीं तो कुछ नहीं हुआ। गीता भी कहती है——प्रसन्नचित्त पुरुष की बुद्धि श्रेष्ठ होती है। इसके भी ऊपर है आनन्द क्योंकि आनन्दमय कोष में ही बोलते हैं——'मैं आनन्द में हूं तो मैं जो हूं वह सब से न्यारा हूं।'

सिद्धांत : पांच कोश से ऊपर उठेंगे तो आत्मा में सच्चा आनन्द पाएंगे और सत् में रहेंगे तो सब कोश भी ठीक तरह से चलेंगे।

120. राख की सम्भाल सम्बंधी करेंगे, ज्ञान की सम्भाल गुरु

एक राजकुमारी को दो आदमी प्यार करते थे। एक बार राजकुमारी बीमार हुई तो एक ने उसके देह की सम्भाल की और दूसरा संतों के पास गया और वहां से अमृत लेकर आया

जिसको पीने से वह ठीक हो गई। तो जो अमृत लाया, राजकुमारी उसकी हो गई। ऐसे ही गुरु हमको अमृत देता है।

सिद्धांत : जिसने पैदा किया वह शरीर की सम्भाल करता है पर गुरु हमारे ज्ञान की रक्षा करता है।

121. कड़वी लौकी ने तीर्थ यात्रा की

संत तुकाराम के गांव से कुछ लोग तीर्थ यात्रा के लिए जा रहे थे। तुकाराम उनके पास गए और एक कड़वी लौकी उनको दी कि हर तीर्थ स्थान पर इसको भी पवित्र जल में डुबा देना। उन्होंने ऐसा ही किया। हर स्थान पर जब वे नहाते तो उस लौकी को भी पानी में स्नान करवा देते। लौटने पर उन्होंने वह लौकी वापस तुकाराम को दे दी। तुकाराम ने उसी दिन बड़े प्रेम से उस कड़वी लौकी की सब्जी बनाई और तीर्थ से लौटी हुई मण्डली को भोजन के समय परोसी। सब बोलने लगे, सब्जी तो कड़वी है। तुकाराम ने आश्चर्यचकित हो प्रश्न किया, ऐसा कैसे हो सकता है? यह लौकी तो सब तीर्थों में नहा के आई है।

सिद्धांत : मनुष्य तीर्थों में नहाने से नहीं, ज्ञान गंगा में नहाने से निर्मल होता है।

122. संत ने वाल्मीकि की मत फेरी

वाल्मीकि डाकू था। एक बार नारद उसके दरवाजे के सामने से निकल रहे थे। वाल्मीकि उन पर कूद पड़ा और

उनकी वीणा छीनने लगा। नारद ने कहा, ऐसे चोरी करके वह कितना पाप कमा रहा है। डाकू बोला—'मैं तो अपने परिवार को पेट भरने के लिए चोरी करता हूं।' नारद ने कहा—'जाओ अपनी बीवी-बच्चों से पूछो कि वे तुम्हारे पाप के दंड भोगने को तैयार हैं?' वाल्मीकि के पूछने पर उन्होंने कहा—'हम क्यों भोगेंगे, हमने थोड़ी पाप किया है।' उसी समय उसने निश्चय किया कि आज से वह डाकू नहीं योगी का जीवन जिएगा। निरंतर जप-तप से वह शुद्ध हो गया और एक महान संत हो गया।

सिद्धांत : निश्चय की जय है।

123. छाज लेकर अंधेरा निकाला

एक गांव में रोज रात को लोग छाज लेकर अंधेरा निकालते और सुबह रोशनी होती तो समझते उनकी मेहनत की वजह से प्रकाश हुआ है। फिर दिन में उनको थककर सोना पड़ता। एक बार एक संत वहां आया और उसने जबरदस्ती सबको रात में सुला दिया। अगले दिन उठे तो देखा सूरज निकला है और प्रकाश ही प्रकाश है।

सिद्धांत : ज्ञान का दिया जलाओ तो अज्ञान का अंधकार खुद ही मिट जाता है।

124. तू है निर्बल, वो है बलवान

एक बार एक गांव में एक औरत रहती थी जिसके पास

एक मुर्गा था। रोज सवेरे मुर्गा बांग लगाता था और सूर्य उदय होता था। औरत को अहंकार आ गया कि मुर्गा बांग लगाता है तो सूर्य उदय होता है। वह सारे गांव वालों को यह बोलती और उनसे कुछ न कुछ पैसा वसूल करती। लोग उससे तंग आ गए और एक दिन किसी ने उसे कुछ नहीं दिया। उसे गुस्सा आ गया और वह बोली—'मैं यह शहर छोड़कर कहीं और चली जाती हूं। फिर देखेंगे कौन बांग देगा और सूरज कैसे निकलेगा?' दूसरे दिन सूर्य समय पर निकल आया तो सब खुशियां मनाने लगे कि उस बेवकूफ औरत की गुलामी से छूट गए।

सिद्धांत : अहंकार मत करो।

'करन-करावन आपै आप, मानुष के कुछ नाहीं हाथ।'

125. सतो, रजो, तमो गुणों से ऊपर

एक बार ढलती शाम के समय एक यात्री जंगल से गुजर रहा था। तीन चोरों ने उस पर हमला किया। एक ने उसे रस्सी से बांध दिया। दूसरे ने चाकू लेकर उसे मारने की तैयारी की। तीसरे ने अपने दोनों साथियों से विनती की कि इसे मत मारो, छोड़ दो। फिर वह यात्री को दूसरे शहर की सरहद तक छोड़ने आया। वह बोला—'मैं अंदर नहीं आ सकता क्योंकि मैं भी चोर हूं और वहां पुलिस मुझे पकड़ लेगी इसलिए यहां ही तुमसे विदा लेता हूं।'

सिद्धांत : तीन चोर—सतो रजो तमो गुण हैं। रजो गुण माया के प्रलोभनों से मनुष्य को बांधता है, तमो गुण

नींद और आलस से उसको खतम करने की कोशिश करता है, सतो गुण उन दोनों के फंदे से मनुष्य को बचाता है पर आत्मा की मंजिल तक नहीं पहुंचा सकता। आत्मनिष्ठा के लिए सतो गुण को भी सरहद तक छोड़कर अकेले एकांत का संग करना होगा।

126. यह सत्य या वो सत्य

मिथिला नरेश जनक ने एक रात सपना देखा कि उसके राज्य पर किसी ने चढ़ाई की जिसमें जनक हार गया है। वह पुराने कपड़े पहने है और बिना खाने-पीने के हताश चला जा रहा है। बहुत दूर चलने के बाद वह देखता है कि कहीं प्रसाद हो रहा है। वहां खड़ा हो गया पर जब उसका नम्बर आया तो प्रसाद खत्म हो गया। फिर किसी ने कहा कि तले में थोड़ी-सी खिचड़ी और खुरचन है, उसको दे दो। इतने में एक चील आई और झपट्टा मारकर खुरचन गिरा दी। स्वप्न में भूख और दरिद्रता के कारण वह चिल्ला उठा। उसकी चिल्लाहट सुन रानी और सिपाही दौड़े आए। राजा विस्मय में पड़ गया, यह सच है या वो सच था! एक तरफ इतनी गरीबी और एक तरफ यह राजाई! उसने कहा 'यह सच या वो सच' का जो भी जवाब देगा, उसे मैं आधा राजपाट दे दूंगा और नहीं दे सकेगा तो तहखाने में बंद करा दूंगा। इस तरह बहुत से राज्य के पंडित जेल में बंद हो गए। उसमें अष्टावक्र का पिता भी था। अष्टावक्र के शरीर में आठ वक्र थे क्योंकि

जब वह गर्भ में थे तो उनके पिता ने शास्त्र उच्चारण में गलती की। अष्टावक्र (जिन्होंने अपने नाना के मुख से गर्भ में सब वेद सुने थे) ने अपने पिता की गलती बतलाई तो पिता को गुस्सा आ गया कि अभी पैदा भी नहीं हुआ है तो भी पिता को सिखाता है? उन्होंने श्राप दे दिया कि तेरे में आठ वक्र होंगे। अष्टावक्र बड़े हुए तो उन्होंने कहा—'राजा जनक को जवाब देना और पिता को जेल से छुड़ाना है।' उन्हें देखकर किसी को भी विश्वास न हुआ कि यह जवाब दे सकेगा। पर वह ब्रह्मज्ञानी थे। बोले गुरु किधर बैठता है शिष्य किधर बैठता है? जनक नीचे बैठे अष्टावक्र तख्त पर। अष्टावक्र ने जनक को सीधा जवाब दिया—'न ये सत्य न वो सत्य। सत्य है केवल साक्षी आत्म-द्रष्टा, वो तू है।' राजा जनक को इस उत्तर से शांति आ गई और गुरु से पूरा ब्रह्मज्ञान लेकर सत्य में स्थित हो गए।

सिद्धांत : न दिन का स्वप्न सच्चा है न रात का। आत्मा के सिवाय सब सपना है।

127. संत को जूती दी, उसने वही पहनी

एक संत को किसी ने बढ़िया जूती दी। संत जूती पहन बाजार में गया तो सबने जूती देखकर कहा, जूती तो बढ़िया है पर कपड़े सादे हैं। संत ने कहा—'अभी बढ़िया जूती पहनूं फिर महंगे कपड़े बनवाने पड़ेंगे फिर अच्छी टोपी लेनी होगी। ऐसी जूती ही कौन पहने।'

सिद्धांत : एक चीज के पीछे दस इच्छाएं जुड़ जाती हैं, इसलिए तू पहली इच्छा का ही गला घोट दे।

Nip it in the Bud.

128. हिन्दू करे तो मुसलमान नहीं करे

एक बार एक मुसलमान ने आकर काजी से पूछा कि प्रसाद नीचे गिर जाए तो उसे खाना चाहिए या नहीं। काजी ने कहा—'हिन्दू का प्रसाद गिरे तो वह क्या करता है?' जवाब मिला—'कि वह तो खा लेता है' तो काजी ने कहा—'अगर हिन्दू खाता है तो मुसलमान न खाए।'

सिद्धांत : जो अज्ञानी करता है वो ज्ञानी न करे।

129. चरित्र की शुद्धि

यूरोप में एक डॉक्टर ने प्रयोग किया। कुछ चूहों के लिए ऐसी व्यवस्था की कि उनको इच्छानुसार भरपूर भोजन मिलता रहे। दूसरे कुछ चूहों को समय पर नाप तौल कर खाना-पानी दिया जाता था। पहली श्रेणी के चूहे खूब लम्बे और मोटे हो गए। दूसरी श्रेणी के चूहे दुबले और छोटे बने रहे पर इनकी आयु मोटे चूहों की अपेक्षा 30-40 प्रतिशत ज्यादा रही।

सिद्धांत : अधिक धन, अधिक शिक्षा होने से चरित्र की शुद्धि नहीं होती। मनुष्य का अहंकार बढ़ता है और वह और अनर्थ करता है।

130. सच्चा चमत्कार

एक वजीर का झुकाव परमात्मा की तरफ हो गया और उसने राजा से कहा—'वह अपने कर्तव्य ठीक से नहीं निभा पा रहा है, इसलिए उसका इस्तीफा स्वीकार करें।' इसके बाद वह तप और साधना के लिए जंगल की ओर चला गया। कुछ दिन बाद वापस आया और वहीं पर यज्ञ का बड़ा आयोजन किया। उसकी शक्ल सूरत में काफी परिवर्तन आ गया था और कोई उसे पहचान नहीं पाया। राजा ने भी यज्ञ में आहूति दी, वह नीचे बैठा, संत ऊपर बैठा था। जब सब चले गए तो उस संत ने राजा से कहा—'भगवान का सच्चा चमत्कार हो गया। मैं जब एक वजीर था, नीचे हाथ-जोड़े खड़ा रहता था और आपके हुक्म का पालन करता था। आज खेल उलट गया है।'

सिद्धांत : जो भगवान की शरण लेता है उससे राजा भी झुकते हैं।

131. अपना शमादान जलाओ

कुछ लोग एक गाइड को लेकर जंगल पार कर रहे थे। अंधेरा हो चला था। गाइड के पास शमादान था। उसी रोशनी से सब चल रहे थे। गाइड आगे निकल गया। जिसके पास खुद का शमादान नहीं था वे अंधेरे में भटक गए।

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी गुरु के सामने ही अपने अन्दर की ज्योति जगा लो नहीं तो भटक जाओगे।

132. राजा संत की कुटिया में न बैठा

एक राजा संत की कुटिया में आया। उस समय संत कहीं बाहर गया हुआ था। उसके लड़के ने राजा का हर तरह से स्वागत करने की कोशिश की। उसको बैठने के लिए चौकी दी। वह नहीं बैठा तो उसके लिए कुर्सी लाया कि शायद चौकी Comfortable नहीं होगी। इसीलिए वो टहल रहा है। जब राजा कुर्सी पर भी नहीं बैठा तो पलंग निकाला, पर राजा न बैठा। उसको लगा मेरी वजह से बेटे की विक्षेपता हो रही है इसलिए वो वहां से चला गया। संत वहां आया तो लड़के ने सारा वृत्तांत कह सुनाया। संत ने पूछा, राजा कहां बैठता है? लड़का बोला, सिंहासन पर। संत ने कहा, कि राजा कैसे बैठता।

सिद्धांत : मन रूपी राजा को भी केवल आत्मा की कुर्सी ही पसंद है। जब तक आत्मा की गद्दी नहीं मिलती वह बेचैन रहता है।

133. एक आदमी ने राजा से भूसा मांगा

राजा ने एक आदमी से कहा—'तू जो चाहे मांग ले। सब देने को तैयार हूं।' आदमी ने कहा—'थोड़ा भूसा चाहिए।' राजा ने कहा, अरे मूर्ख, आज तो तेरा दिन था। तूने मांगा भी तो क्या मांगा।

सिद्धांत : जब हम गुरु से टके-टके की चीज मांगते हैं तो भगवान हंसता है कि पूरा आत्म-धन लेने की जगह क्या मांगा। सत्संग तो कल्प वृक्ष है।

134. बाप ने दो बेटों को बीज दिए

बाप ने दो बेटों को बीज दिए, एक ने बीज सम्भालकर रख दिया कि पिता की Gift है। दूसरे ने जाकर बीज बोया और मालामाल हो गया।

सिद्धांत : गुरु का ज्ञान कोई तो अपने पास ही रख लेता है, कोई निष्काम होकर बांटकर मालामाल हो जाता है।

135. बाप ने बेटों को पत्र लिखा

एक पिता ने अपने दोनों बेटों को पत्र लिखा कि तुम्हें Life में क्या करना चाहिए, कैसे रहना चाहिए। एक ने पत्र की रोज पूजा की, उसके आगे अगरबत्ती जलाई और श्रद्धा प्रकट की। उसमें जो लिखा था वैसे-वैसे जीवन में अपनाया और दूसरे ने चिट्ठी पढ़ी और फाड़कर फेंक दी। अब आप बताइए कि पिता अपने किस बेटे से प्रसन्न होगा?

सिद्धांत : कोई ग्रन्थ साहिब की आरती उतारता है, कोई उसका वचन लेकर कमाता है और कोई ग्रन्थ साहिब रख देता है।

136. पूरा मूल्य चुकाना पड़ता है

एक व्यापारी था। उसके पास 1000/- का एक हार था। ग्राहक उसे 750/- में खरीदना चाहता था। व्यापारी अपनी कीमत पर अडिग रहा। ग्राहक ने क्रमश: Offer किया 900,

950, 975, 999 पर व्यापारी देने को तैयार न हुआ। अंत में ग्राहक को पूरी रकम देनी पड़ी।

सिद्धांत : भगवान को पाने के लिए पूरा मूल्य चुकाना पड़ता है। भगवान तो अमूल्य निधि है। उसके लिए कुछ भी देना पड़े तो वह थोड़ा ही है।

137. राजा की Choice संत या पुत्र

एक राजा बड़ी बेसब्री से पुत्र के जन्म के इंतजार में था। जैसे ही पैगाम आया कि पुत्र हुआ है आप जल्दी आइए, उसी समय दूसरा दूत Message लाया कि एक संत द्वार पर आए हैं। राजा ने सोचा, बेटे से तो बाद में भी मिल सकता हूं, संत तो कभी-कभी ही आते हैं। वह सीधे दरवेश के पास चला गया।

सिद्धांत : सब मिला तो क्या मिला जब रब न मिला। है तो भगवान की तरफ ही मुड़ना।

138. गधों ने अपने को बंधा हुआ माना

एक बार एक आदमी सौ गधों को लेकर कहीं जा रहा था। शाम हुई तो उसने पड़ाव किया पर गधों को बांधने चला तो देखा रस्सी नहीं है। केवल दो गधों को बांधने लायक रस्सी थी। उधर से संत निकल रहा था। उससे पूछा, अब क्या करूं? संत ने कहा, तुम दो गधों के आगे खूंटा लगाकर उसे रस्सी से बांध दो, बाकी 98 के आगे केवल खूंटा लगाने और

रस्सी बांधने का Action करो, ये सब भी अपने को बंधा हुआ समझकर शांति से बैठकर रात गुजार लेंगे। ऐसा ही हुआ। दूसरे दिन जिन दो गधों को उसने सचमुच बांधा था उन्हें खोल दिया और बाकी सब को भी हांकने लगा पर वे 98 गधे जगह पर अड़े रहे। उसकी सब कोशिश बेकार गई——वे हिले ही नहीं। वह दौड़ता हुआ संत के पास गया कि क्या करूं। संत ने कहा, जैसे Action करके तूने इन्हें बांधा था वैसे ही खोलने का Action कर, तब ये चल पड़ेंगे। संत की वाणी सत्य सिद्ध हुई।

सिद्धांत : मनुष्य को भी असल में कोई बंधन नहीं है। वह केवल मानकर बैठा है। बंधन का अभिमानी बंधा है मुक्ति का अभिमानी मुक्त है। (योग वशिष्ठ)

139. पांच सौ रुपए देकर नौकर उल्टा रखो

शिष्य ने गुरु के कहने से 500/- देकर भी ऐसा नौकर रखा जो उल्टा चलता था जिससे यह अपने आप को जान सके कि अन्दर शांत हूं या हलचल है।

सिद्धांत : हमारे घर में कोई उल्टा चले तो हम प्रसन्न होएं कि परीक्षा हो रही है। सबक पक्का हो रहा है।

140. नौकर मालिक

मालिक बाहर गया तो पीछे से 24 के 24 नौकर खुद मालिक बन बैठे। कोई किसी का नहीं सुनते। सब अपनी

मनमानी करते और घर में Total Confusion हो गया। मालिक आया तो सब चुप हो गए।

सिद्धांत : इंद्रियों सहित इस शरीर में 24 नौकर हैं। जब तक गुरु नहीं मिलता अराजकता रहती है। गुरु मिलते ही शांति आ जाती है।

141. आदमी के चेहरे का Jigsaw Puzzle बनाया

एक बाप ने अपने बच्चे को World Map का Jigsaw Puzzle बनाने को दिया। बच्चे को बहुत मुकिश्ल पड़ रही थी, लेकिन वह होशियार था। उसको उलटकर देखा तो पीछे आदमी का चेहरा था। यह चित्र उसके लिए आसान था। उसने जल्दी से बना दिया और पिता को खुश किया।

सिद्धांत : अपने को बनाओ जगत खुद बन जाएगा।

142. सब दरवाजे बंद करो तब संत आएगा

एक संत सब जगह से भिक्षा लेता था पर राजा के महल से नहीं। राजा तरसता था कि ये यहां आएं। मंत्री ने कहा, इसके सब दरवाजे बंद करो तो ये यहां आएगा। ऐसा ही हुआ।

सिद्धांत : इंद्रियों के दरवाजे बंद करो। आत्मनिष्ठा खुद व खुद हो जाएगी।

143. रानी ने अवधूत को पेड़ा खिलाया

एक अवधूत था। वह ऐसा दिखता था कि वह हमेशा ज्ञान

के नशे में रहता है। रानी ने उसे बुलाया तो उसकी गोदी में जाकर बैठ गया और उसकी साड़ी पर पेशाब कर दिया। रानी ने सोचा इसके झूठ को खोलना चाहिए। उसने एक पेड़ा लिया और उसके ही पेशाब में डुबोकर मुंह में डालना चाहा। बंद ज्ञानी अवधूत बोला, यह क्या और मुंह फिरा लिया। वह थू-थू करने लगा। सब को मालूम पड़ गया कि इसका नशा झूठा है।

सिद्धांत: ज्ञान स्वरूप हमेशा सुजाग रहता है। वह कभी सोता नहीं है इसलिए झूठा नशा नहीं दिखाना।

144. मीरा ने फोटो से विवेक जगाया

एक लड़का मीरा पर आशिक हो गया और बोला कि—'वह उनसे शादी करना चाहता है।' संत मीरा ने कहा—'आप पहले एक हफ्ते मेरी फोटो से मन लगाकर देखिए कि आप सचमुच मेरे साथ रहना चाहते हैं।' वह आशिक एक हफ्ते में फोटो में पूरा डूब गया और वह चित्र उसके रोम-रोम में समा गया तो मीरा ने कहा कि—'अब तो मीरा अन्दर ही बैठ गई तो शादी क्या करें।'

सिद्धांत : गुरु को पूरा अन्दर समा लेना, फिर कोई जुदाई ही नहीं रहेगी।

145. मीरा संत ने पुजारी का विवेक जगाया

एक बार संत मीरा मंदिर में जाने लगी तो पुजारी जी ने

उन्हें रोक दिया कि यहां पर केवल पुरुषों को आने की ही अनुमति है। मीरा ने कहा—'फिर आप यहां कैसे, क्योंकि पुरुष तो एक ही है बाकी सब स्त्री तत्त्व ही है।'

सिद्धांत : भगवान एक अद्वितीय अकेला है।

146. बंधे को बंधा मिले

एक राजा को संत रोज भागवत सुनाता था। कई दिन हो गए पर राजा को निश्चय नहीं हुआ। एक दिन राजा ने ब्राह्मण से कहा—'आप मुझसे रोज दक्षिणा लेकर जाते हो पर इतने दिन में निश्चय नहीं कराया है। अब अगर सात दिन में मेरे को निश्चय नहीं हुआ तो तुम्हें फांसी की सजा दूंगा।' ब्राह्मण बहुत घबराया और एक सच्चे संत के पास सलाह के लिए गया। संत ने कहा—'कल मैं तुम्हारे साथ राजा के पास जाऊंगा।' वह राजमहल में पहुंचा तो बोला, सिखाने वाला कहां बैठता है? राजा अपने सिंहासन से उतर आया और गुरु बैठ गया। अब उसका हुकुम चलने लगा। संत ने Order दिया राजा को एक खम्बे से बांध दो और पंडित को दूसरे से। अब दोनों को बोला, एक-दूसरे को खोलो। वे बोले—'हम बंधे पड़े हैं तो कैसे खोलें।' संत बोला, पंडित दक्षिणा के लोभ से बंधा पड़ा था तो तुम्हें कैसे मुक्ति दिला सकता था। पंडित का सिर नीचे हो गया।

सिद्धांत : बंधे को बंधा मिले छूटे कोन उपाय, सेवा कर निर्वंध की जो पल में दिए छुड़ाए।

147. यात्री गिनती करने के समय खुद को भूल गए

दस जन कहीं घूमने गए। वापस लौटने के समय सोचा गिनती कर लें कि सब पूरे हैं ना। सब ने बार-बार गिना पर एक कम मिला था। वे अफसोस करने लगे, एक खो गया। उधर से संत जा रहा था। उसने लाइन खड़ा करके सबको गिना तो पूरे थे। संत ने बताया कि तू अपने को ही नहीं गिन रहे हो।

सिद्धांत : अपने आत्मा को नहीं जाना तो दुख ही है।

148. गुरु नानक ने खेतों को दूर से जल चढ़ाकर विवेक जगाया

गुरु नानक कर्मकांड से हिन्दुओं का मन निकालना चाहते थे। उन दिनों पितरों को जल चढ़ाने, सूर्य को अर्घ्य देने की प्रथा बहुत प्रचलित थी। एक आदमी सूर्य को अर्घ्य दे रहा था तो गुरु नानक दूसरी तरफ मुंह करके लोटे पे लोटा जल चढ़ाने लगे।

सबने पूछा, क्या कर रहे हैं? बोले, खेतों को पानी दे रहा हूं। तुम्हारा पानी अगर सूरज तक पहुंच सकता है तो मेरे खेत तो बहुत नजदीक हैं।

सिद्धांत : सूर्योदय के समय पानी के Through सूर्य को देखना आंखों की ज्योति के लिए बहुत लाभप्रद है, पर अंधविश्वास जीवन में पालना भ्रम में जीना है।

149. पांच मनचले दोस्त और विवेकी मिनिस्टर

एक राजा था। उसके पांच दोस्त थे जिनके संग से राजा सब बुरी आदतों में फंस गया था। उसका वजीर सच्चा था और वह उन्हें सलाह देता था कि इनका संग न करो। पर राजा एक न सुनता। अंत में उनकी Company से राजा की इतनी दुर्गति हुई जो राजा का मन उनसे हट गया। राजा ने निर्णय किया कि वजीर की सलाह से वह चलेगा। वजीर की ऊंची दृष्टि से वह भी ज्ञान में निष्ठा वाला हो गया।

सिद्धांत : मन है राजा, पांच मित्र हैं 5 विकार। विवेक रूपी वजीर की सलाह से चलने पर असली आनन्द प्राप्त हो जाता है।

150. बूढ़े जौहरी ने हीरा परखा

एक राजा की इच्छा हुई—मैं हीरे-जवाहरात परखने की कला जानूं। थोड़े दिन में वह निपुण हो गया। फिर उसको धुन सवार हुई हीरे परखने को तो राजकोष के सारे हीरे परख डाले। फिर परम्परा से जो खजाना पूर्वजों के साथ दफनाया हुआ था (जो केवल बुरे समय में इस्तेमाल के लिए रखते थे) वह सब केवल परखने के लिए राजा के सामने रख दिए गए। परखते-परखते एक ऐसा हीरा मिला जिसका मूल्य राजा न बता सका। राजा बोला, राज्य के सारे जौहरियों को बुलाओ, पर वे भी उसका मूल्य न आंक सके क्योंकि इतना बड़ा हीरा उन्होंने कभी नहीं देखा था। अब राजा ने ऐलान

किया कि जो भी इस हीरे को आंकेगा उसको बहुत इनाम दिया जाएगा। राज्य से कुछ दूर पर एक वृद्ध अनुभवी जौहरी रहता था। वह हीरे का मूल्यांकन आंकने आया। जौहरी बोला, इसकी पूरी परख पूर्णमासी की रात को हो सकेगी। पूर्णमासी की रात होते ही उसने परख शुरू की पर मूल्य नहीं बता पाया तो अगले दिन राजा से कहा—'मुझे सौ सच्चे हीरे मंगवा कर दो।' सच्चे हीरे आए और उनकी सहायता से जौहरी ने हीरा परखा। अंत में बोला, इसकी कीमत 11 लाख है। राजा को जौहरी की चेष्टाएं देखकर लगा, यह सच्चा होना चाहिए। उसने कहा—'बताइए कैसे मूल्य किया।' जौहरी बोला, यह हीरा इतना बड़ा था, मैंने पहले सोचा यह चंद्रमणि है इसलिए चंद्रमा के प्रकाश में रखा। पर चंद्रमा की रोशनी से उसकी ज्योति नहीं बढ़ी। तब मैंने सौ हीरे मंगवाए और उनको इसके पास रखा। एक लाख वाले 11 हीरों की ज्योति इस हीरे की ज्योति के बराबर थी। इसलिए मैंने कहा, इसकी कीमत 11 लाख रुपए है।

राजा जौहरी की समझ-बूझ से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने वजीर से कहा कि इसको अच्छा इनाम दे दो। वजीर बोला—'हे राजन, जो इनाम मैं इसको देना चाहता हूं वह शायद आपको पसंद न आए।' राजा ने आश्वासन दिया—'मैं इससे बहुत खुश हूं, तुम इसे कुछ भी दो, मुझे सब मंजूर है।' वजीर फिर बोला—'सोच लीजिए, मैं फिर कहता हूं, हो सकता है वह इनाम आपको अच्छा न लगे।'

राजा ने फिर तसल्ली दिलवाई तो वजीर बोला, बूढ़े जौहरी को 10 जूते लगाओ। राजा दंग रह गया और वजीर से कारण पूछा—'इसको इतनी ऊंची बुद्धि परमात्मा से प्राप्त हुई, लेकिन इसने उसे हीरे की परख में गंवाई। इस परखने के हुनर को सत्-असत् की परख में लगाता तो इसे आत्म-साक्षात्कार हो जाता। इसलिए इसके जीवन के हर साल के लिए इसे एक जूता पड़ना चाहिए।'

यह सुनकर राजा का विवेक भी जग गया।

सिद्धांत : जीवन का धन, शक्ति और समय परमात्मा को जानने में लगाना चाहिए।

151. हीरा मुकुट में

एक राजा मंत्रियों को साथ लेकर नदी पर गया। सबने नदी में झांका तो उन्हें लगा कि राजा का कीमती हीरा नदी में गिर गया है। फिर तो बहुत ढूंढ़ मची पर नहीं मिला। राजा अलग जाकर पेड़ के नीचे बैठ गया। मंत्री राजा के पास आए कि हीरा नहीं मिला। देखा तो राजा के मुकुट में ही लगा है। नदी में गिरा ही नहीं था। परछाईं देखकर भ्रम हो गया।

सिद्धांत : भगवान पास ही है, हम बाहर ढूंढ़ रहे हैं।

152. औरत का हार खोया

एक बार एक औरत अपनी सहेली से मिलने गई। वहां पहुंची तो उसे लगा मेरी सखी आज बहुत परेशान है। उससे

पूछा तो वह बोली—'आज मैंने बहुत कीमती हार पहना था। सवेरे से घर के कामकाज में व्यस्त रही, अभी देखती हूं तो वह गले में नहीं है। मेरा इतना मूल्यवान हार! ढूंढ़-ढूंढ़कर हैरान हूं पर वह कहीं नहीं मिला।' 'अरे यह तो तेरे गले में ही है। चक्की पीसते हुए यह अड़ रहा होगा। इसलिए तूने इसको पीछे फिरा दिया होगा। यह ले, मैं इसे सामने फिरा देती हूं।' और उसने हार सामने फिरा दिया। औरत बेहद खुश हुई और सहेली को गले लगाकर बोली, तुमने मेरा खोया हार लौटा दिया।

सिद्धांत : हार की तरह आत्मा भी प्राप्त की प्राप्त है पर ढकी है पांच विकारों से।

153. तपस्या से पानी पर चला

एक संत ने ऐसी तपस्या की जो पानी पर चलना सीखा 16 साल में। उसने दूसरे को कहा तुम भी सीखो। उसने कहा जब नाव है तो पैदल पानी पर चलने की क्या जरूरत है।

सिद्धांत : करामातों का सार नहीं। सिद्धियों से दूर ही रहना है।

154. चोर ने गेरुए वस्त्र पहने

एक चोर को मालूम पड़ा कि राजकुमारी का स्वयंवर हो रहा है और वह किसी साधु-संत को वरना चाहती है। इस लोभ से चोर ने भी गेरुए वस्त्र पहने और शक्ल-सूरत अच्छी

बनाकर स्वयंवर में बैठ गया। इत्तफाक से राजकुमारी को यह ही पसन्द आया और इसके गले में माला डाल दी और साथ ही इसको आधा राज्य भी मिल गया। अब चोर विचारने लगा कि झूठ-मूठ का संत बना तो इतना मिल गया। सच्चा संत बन जाऊं तो क्या न मिलेगा।

उसमें ऐसा जोश जागा कि वह सीधे वहां से उठकर सच्चे संत की शरण में हो गया। निरंतर संग करके वह स्वयंसिद्ध पुरुष बन गया।

सिद्धांत : कणका जिस जीव बसाए,
ताकी महिमा गणी न जाए।

155. पिता ने तीनों पुत्रों को परखा

एक पिता के तीन पुत्र थे। पिता जब वृद्ध हुआ तो उसने अपनी सारी धन-सम्पत्ति तीनों पुत्रों को बराबर बांट दी। पर उसके पास एक बहुत ही कीमती हीरा था। उसने तीनों को कहा कि जो भी सबसे उत्तम कर्म करेगा उसे ही यह हीरा मिलेगा।

पहले ने आकर कहा, एक आदमी मेरे पास बहुत बड़ी रकम अमानत रखकर गया था। कोई लिखा-पढ़ी नहीं हुई थी। कई सालों बाद वह वापस लेने आया। मैं चाहता तो इनकार कर सकता था पर मैंने सच्चाई से उसको उसकी पूरी रकम वापस कर दी। पिता ने कहा, यह धर्म के काम बराबर था पर यदि वह धन वापस नहीं करते तो दूसरे जन्म में बैल

या घोड़ा होकर उसके पास यह कर्जा उतारते। तुम इन्सान होकर ईमानदारी पर कैसा फक्र कर रहे हो यह तो तुम्हारा कर्ज ही था।

दूसरा लड़का आया और कहने लगा—'आज सैर करके लौट रहा था तो एक छोटा बालक तालाब में गिर पड़ा। उसकी मां चिल्लाने लगी। मैंने कपड़ों की परवाह न करके तालाब में कूदकर उसकी जान बचा ली।' पिता बोला—'बेशक यह अच्छा काम है, पर तुमने इंसानियत का फर्ज निभाया, इसलिए इस हीरे के असल हकदार नहीं हो सकते।'

तीसरा लड़का आया। वह बोला, आज समुद्र के किनारे मैं सैर करने गया तो क्या देखा कि समुद्र का पानी ज्वार में ऊपर बढ़ा आ रहा है और वहां लहरों के बीच मेरा एक बड़ा दुश्मन गहरी नींद में सोया पड़ा है। मैं उसे बिना जगाए ही उठाकर ऊपर सूखी रेत पर ले आया। यदि मैं उसे वहीं पड़ा रहने देता तो अवश्य ही बढ़ता हुआ पानी उसे डुबो देता।

पिता ने कहा, यह अवश्य ही उत्तम कर्म है। दुश्मन की भलाई करना और उसकी जान बचाना श्रेष्ठ कर्म है इसलिए यह हीरा तुम्हारा है। बुरे का भला चाहना—यह गुण इंसान में क्या देवताओं में भी दुर्लभ है। यह सूक्ष्म बुद्धि का फल है।

सिद्धांत : जिसकी सूक्ष्म बुद्धि होती है वह प्राणिमात्र में अपनी ही आत्मा देखता है। फिर दोस्त कहां, दुश्मन कहां।

156. सच्चा मित्र कौन

एक मनुष्य के तीन मित्र थे—धन, कुटुम्ब और धर्म। पहले मित्र से उसका अत्यधिक प्रेम था, दूसरे से साधारण, तीसरे से बहुत कम प्रीत, क्योंकि जब भी मौज करने की इच्छा रहती तो पहले दो 'हां जी' करते, तीसरा विवेक से काम लेता, मना करता। एक बार उसका झगड़ा हुआ, केस कचहरी तक पहुंचा। पहले मित्र ने मना किया, दूसरा कचहरी के द्वार तक गया और तीसरा उसे छुड़ा ले आया।

सिद्धांत : ऐसे ही धन और गृहस्थी हमें फंसाते हैं। धन घर के द्वार तक ही रहता है। जब इंसान मरता है, गृहस्थी श्मशान भूमि तक जाते हैं और तीसरा दोस्त गुरु हमें संसार चक्र से मुक्त करवाता है।

157. आत्मा का प्रत्यक्ष प्रमाण

एक राजा के पास बड़े-बड़े पंडित उसको ज्ञान देते थे पर उनके वजीर नास्तिक थे जो उनको धर्म की राह पर चलने ही नहीं देते। प्रत्यक्ष देखने में आने वाली बातों के सिवाय दूसरी बातों पर ऐतबार करने ही नहीं देते थे।

एक पंडित सयाना और विद्वान था। उसने सोचा, कैसे भी राजा को इन गलत आदमियों के चंगुल से बचाना चाहिए। एक दिन उसने राजा को ज्ञान की बातें बताई पर उन नास्तिकों ने कहा, परमात्मा है तो प्रत्यक्ष दिखाओ। विचारवान पंडित के हाथ में एक डंडा था। जिस वजीर ने अधिक

एतराज किया था उसको तीन-चार डंडे खूब जोर से लगा दिए। वह शिकायत लेकर राजा के पास पहुंचा और कहने लगा बहुत दर्द हो रहा है। राजा ने पंडित से कहा कि आप धर्म बताने आए हैं या झगड़ा करने? और अब जो इसके इतना दर्द हो रहा है तो उसकी सजा आपको भुगतनी पड़ेगी। पंडित बोला कि महाराज, यदि इसके दर्द है तो यह प्रत्यक्ष दिखाए। यह सुनकर राजा समझ गया—दर्द महसूस किया जा सकता है पर देखने में नहीं आता है।

सिद्धांत : आत्मा को प्रत्यक्ष नहीं देख सकते पर उसकी हस्ती प्रमाण से समझ सकते हैं।

158. कौन ब्राह्मण, कौन जमादार

एक जमादार औरत थी, पर परमात्मा से इतना प्यार था कि सवेरे उठकर पहले नदी पर जाकर स्नान करके ठाकुर जी की सेवा, भजन-मनन करती, फिर किसी और चीज को हाथ लगाती। वहीं एक ब्राह्मणी भी रहती थी जो सवेरे ही पोती-पोतों के गंदे कपड़े नदी पर लाकर धोती थी और जब जमादारिन आती तो उसे उलाहना देती कि तेरे हाथ लगाने से सारी नदी अपवित्र हो गई। दोनों में झगड़ा हो गया और बात इतनी बढ़ गई कि राजा तक पहुंची। राजा ने कहा—'मैं स्वयं निरीक्षण करके फैसला दूंगा।' राजा ने दोनों की रहनी देखी और फिर अदालत में कहा—'ब्राह्मणी तो चाण्डालिनी के समान रहती है। सवेरे से जमादारिन का काम करती है।

और यह दूसरी औरत जमादारिन होते हुए भी प्रातःकाल से ब्राह्मणी का काम करती है तो कौन पवित्र हुआ?'

सिद्धांत : मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान होता है।

159. आशीश भी नहीं देना आता

एक स्त्री थी, उसके नौ लड़के थे। एक दिन एक भिखारी आया। स्त्री ने उसे कुछ भिक्षा दी। वह इतना प्रसन्न हो गया कि उसने कहा—'हे देवी! तू सात पुत्रों की मां बन जा।' अब स्त्री को बहुत गुस्सा आया, क्योंकि यह तो आशीश की जगह अभिशाप हो गया।

इस प्रकार हमें मांगना नहीं आता। इसी तरह हम कहते हैं, भगवान बहू ऐसी देना जो बुढ़ापे में सेवा तो करे। इस मांग में हमने बुढ़ापा और बीमारी दोनों ही मांग लिया।

सिद्धांत : क्यों न हम सारे वरदान बिना मांगे उस पर ही छोड़ दें जो हमारा सर्वोच्च हित चाहने वाला करुणानिधान परमात्मा है?

160. कबीर ने अपात्र को उपदेश दिया

कबीर साहब एक बार सैर को निकले तो रास्ते में देखा कि एक सुन्दर नौजवान लड़का है जो दर्पण को सामने रखकर सिर पर पगड़ी बांध रहा है। वह बार-बार खोलकर पगड़ी बांध रहा था और इस तरह बहुत ही समय बर्बाद कर रहा था। कबीर को करुणा आई और उन्होंने उससे बात की

तो मालूम पड़ा वह दो घंटे से इसी कोशिश में है कि पगड़ी बहुत खूबसूरती से उसके सिर पर सज जाए।

कबीर जी ने कहा—'इतना वक्त क्यों गंवाते हो? इस समय में कोई शुभ कर्म या सत्संग कर, राम नाम ले या कोई शास्त्रों की पुस्तक पढ़, किसी की सेवा कर या कोई निष्काम कर्म कर।' किंतु उस नवयुवक ने इस सीख का फायदा उठाने की जगह कबीर से कहा—'अरे कोढ़ी, तुझे क्या मालूम कि खूबसूरत पगड़ी की क्या शान है। तू जाकर कपड़ा बुन।' कबीर को अफसोस हुआ कि बिना अधिकारी को समझाया है—उसका जवाब तो ठीक ही था। जिसको अपने समय की कदर नहीं है उसको अपनी उम्र की क्या कदर होगी क्योंकि उम्र तो समय ही है।

कुछ दिन बाद कबीर साहब किसी और गांव से लौट रहे थे तो रास्ते में देखा एक जवान मरा पड़ा है और कौवा उसको चोंच मार रहा है। ध्यान से देखने पर मालूम पड़ा कि यह वो ही पगड़ी वाला नौजवान था जिसने कबीर जी की सलाह सुनी-अनसुनी कर दी थी।

सिद्धांत : 1. सूअरों के आगे ज्ञान के मोती न बिखेरना।

2. महापुरुषों की सीख न लेने से दुर्गति होती है।

161. Past, Present, No Future-No Present

एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा—'वो

दिखाओ जो 1. पहले का होए, 2. अभी Present का होए, 3. जो न Future का न Present का होए।' यह तीन सवाल बहुत मुश्किल थे इसलिए बीरबल ने उत्तर देने के लिए 8 दिन की मोहलत मांगी।

आठ दिन बाद बीरबल ने दरबार में पहले एक अमीर आदमी को पेश किया और अकबर बादशाह से कहा, जहांपनाह, यह Past की मिसाल है जिसने पहले जन्म में कमाई की है और अब सुख भोग रहा है।

फिर एक तपस्वी को सामने लाया और बोला—'यह Present की मिसाल है जो अभी साधना-उपासना करके अपना जीवन सार्थक बना रहा है और ईश्वर से मिलकर एक हो रहा है।'

फिर एक वेश्या को लाया और कहने लगा कि यह न Present में कोई अच्छा काम कर रही है न ही इसका Futuure अच्छा होगा क्योंकि यह रात-दिन कुकर्म में लगी हुई है।

सिद्धांत : कल की कमाई आज खा रहे हैं पर आज कौन-सी कमाई कर रहे हैं इस पर ध्यान दें—यह ही हमारा Future है।

162. जमींदार अपने पास बंदूक रखता

एक जमींदार रोज गांव से शहर जंगल के रास्ते से जाता था इसलिए वह License के साथ बंदूक अपने साथ रखता

था। एक दिन एक बब्बर शेर सामने आ गया। उसे देख जमींदार का घोड़ा डरकर खड़ा हो गया। जमींदार भी डर के मारे अपने को सम्भाल न पाया। बंदूक की तो बात ही क्या, खुद जमीन पर गिर पड़ा। शेर ने चीर-फाड़ दिया। बंदूक रखना काफी नहीं है। उसको कैसे और कब चलाना चाहिए यह विज्ञान भी आना चाहिए।

ज्ञानियों के लिए शास्त्रों की और ज्ञान-सम्बंधी बातें बुद्धि में रखना काफी नहीं है। उसका जीवन में लाभ नहीं उठा सकेंगे। उल्टे अहंकार आ जाएगा कि मैं जानता हूं और थोथे ज्ञान के बोझ में मरते रहेंगे।

सिद्धांत : ज्ञान का फायदा विज्ञान सहित अपनाने में है।

163. राजा को हंसों ने ज्ञान दिया

ज्ञान श्रोत्री नामक एक राजा था जो दान-पुण्य आदि अनेक धार्मिक कार्य करता था। उसका महल गरीबों के लिए हमेशा खुला रहता था। ऋषि-मुनियों को दान-दक्षिणा मिलती रहती थी। धर्मशालाएं बनी हुई थीं जहां मुसाफिरों के भोजन व ठहरने का अच्छा प्रबंध था। पर ऋषियों को यह देखकर दुख होता था कि इतने धार्मिक कर्म करने पर भी राजा को अभी तक सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है। उसे सही रास्ते पर लाने और सच्चा सुख प्राप्त कराने के लिए उन्होंने हंसों का रूप धारण किया और जहां राजा आराम कर रहा था, महल

की छत पर, वहां पहुंचकर ये हंस आपस में मनुष्य की बोली में बात करने लगे। एक ने दूसरे से कहा—'राजा ज्ञान श्रोत्री की महिमा सूरज जैसी सब ओर फैल रही है।' दूसरा बोला—'भाई तुम बैलगाड़ी वाले ब्रह्मऋषि रैको के तेज को नहीं जानते इसलिए राजा की महिमा कर रहे हो। उसके सामने इसका तेज कुछ भी नहीं है। ब्रह्मऋषि रैको की महिमा शब्दों में बयान नहीं हो सकती। उनसे तो मिलकर ही उनका तेज जाना जा सकता है।' हंसों की बातें सुनकर राजा ने सेवकों को आज्ञा दी कि ब्रह्मऋषि रैको को ढूंढो। उनके मिलने पर राजा सौ गाएं, एक हार और एक रथ लेकर रैको के पास पहुंचा और कहा कि—'आप ये स्वीकार करें और मुझे ज्ञान का उपदेश दें।' रैको बोले—'अरे अज्ञानी, मुझे यह सब कुछ नहीं चाहिए। ये सब अपने पास रख।' राजा निराश होकर महल में लौट आया। सोचने लगा ऋषि ने अज्ञानी कहा—शायद थोड़ा और धन लेकर जाऊं तो ही ब्रह्मज्ञान जैसी उत्तम विद्या मिले। फिर वह और अधिक धन-पदार्थ लेकर पहुंचा पर रैको ने कहा—'अरे अज्ञानी, तुम यह सब फिर लेकर मेरे पास क्यों आए हो? क्या इस सब से ज्ञान खरीद सकते हो?' यह वचन सुनकर राजा की आंखें खुलीं, उसे अपनी भूल मालूम पड़ी। उसने सब सेवकों को धन सहित वापस कर दिया। धन के अभिमान से खाली हो बहुत नम्रता से ऋषि के चरणें में गिरकर कहा—'मैं ज्ञान श्रोत्री आपके चरणों में ब्रह्मविद्या का उपदेश हासिल करने आया

हूं। कृपया मुझे अंगीकार कीजिए।' अब ऋषि ने उचित अधिकारी जानकर उसे ज्ञान का उपदेश दिया और उसका जीवन सफल बनाया।

सिद्धांत : मनुष्य दान-पुण्य, जप-तप आदि कितने भी शुभ कर्म क्यों न करे, उसे ज्ञान-प्राप्ति नहीं होती और बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं है। ज्ञान-प्राप्ति के लिए सद्गुरु के चरणों में अभिमान से खाली हो श्रद्धा से जाना चाहिए।

164. तीर्थों में भी चोर बसते हैं

एक बार कबीर जी की बहुत कद्र करने वाला एक प्रेमी उनसे मिलने काशी आया। सोचा, पहले स्नान आदि करके फिर कबीर जी के दर्शन के लिए उनके पास जाऊंगा।

गंगा किनारे सभी साधु संत लग रहे थे——आंख बंद करके अपने मनन-ध्यान में बैठे थे। उसने सोचा यहां महात्मा ही बसते हैं सो अपने कपड़े उतारकर सामान-अस्बाब आदि सब वहीं गंगा किनारे रख स्नान के लिए चला गया। लौटा तो क्या देखता है कि रुपया पैसा तो गया ही, कपड़े भी न छोड़े। बेचारा परेशान होकर कबीर के पास पहुंचा। उन्होंने प्रेम से भरकर उसे कपड़े दिए और समझाया कि सब बाहर से भक्त बनकर बैठे हैं। अन्दर लोभ-लालच सब पड़ा है। तीर्थों में भी सबकी आंख पर माया का पर्दा पड़ा हुआ है।

सिद्धांत : संत पुरुष किसी का समान लेते नहीं हैं बल्कि उसकी हर जरूरत पूरी करते हैं।

165. कृष्ण ने वैकुंठ दिखाया

एक बार गोपियों ने कृष्ण से कहा कि हमको अपना वैकुंठ तो दिखाओ। सो कृष्ण ने सबको सपने में वैकुंठ दिखाया पर वहां कृष्ण तो था नहीं तो सब व्याकुल हो गए। वापस बज्र-भूमि के लिए जहां कृष्ण का प्यार मिलता था। दूसरे दिन कृष्ण ने पूछा——'वैकुंठ दिखाऊं।' सब बोली——'नहीं, वह तो फीका है।'

सिद्धांत : क्या करूं तेरी वैकुंठ को जहां साध संगत नहीं हो।

166. गंगा भक्त का विवेक जगा

एक ऐसा गंगा प्रेमी था जो हर साल मेले में गंगा-स्नान के लिए जरूर जाता और वहां उन्हीं के हाथ का खाना खाता जो गंगा में नहाता हो। एक बार मेले से लौटते हुए रास्ता भूल गया। रात हो गई, एक संत की कुटिया में रह गया और उसका खाना भी स्वीकार कर लिया क्योंकि उसने सोचा गंगा के पास रहते हैं, जरूर गंगा नहाते होंगे। अगले दिन सवेरे उनसे कहा, गंगा की दिशा बता दीजिए। संत बोला, गंगा की दिशा नहीं मालूम है। चारों दिशाएं बता सकता हूं। भक्त को बहुत आश्चर्य हुआ कि यह गंगा का स्नान नहीं करते और पश्चात्ताप हुआ कि इनकी रोटी खाकर मेरा व्रत टूट गया। इतने में उसने तीन बहुत सुन्दर गायें देखीं जो काले रंग की थीं। वे महात्मा के पास वाले तालाब में गईं और डुबकी

लगाकर निकलीं तो सफेद हो गईं। यह देख भक्त ने उनसे काल पूछा, वे बोलीं—'हम तीन नदियां—गंगा, जमुना, सरस्वती हैं। जब पापी हमारे में नहाते हैं तो हम गंदी हो जाती हैं। फिर सच्चे संतों की चरण धूल जिस तालाब में हो उसमें नहाकर पवित्र हो जाती हैं।' यह सुनकर प्रेमी उल्टे पैर महात्मा की कुटिया पर लौट आया। उनकी शरण में निष्काम सेवा द्वारा अपना जीवन सुधार लिया।

सिद्धांत : गंगा नहाने से नहीं, सतगुरु के सत्संग से शुद्धि होती है।

4. देहध्यास के दृष्टांतों की सूची

167. तुम सब चमार हो
168. नारद और शुकदेव
169. नया चर्च कैसे बने
170. बृहस्पति ने कच से त्याग कराया
171. मन का भुलावा
172. रानी चुड़ाला
173. कुम्हार एक है
174. भिखारी को गाली न लगी
175. बछड़ा मर गया
176. गरुड़ ने पक्षी को दूर छोड़ा
177. देह-व्यास और शुकदेव
178. कष्टदायक बीमारी से पीड़ित
179. वशिष्ठ मुनि भीतर गए
179A. चांडाल की झोंपड़ी

देहध्यास के अन्य दृष्टांत

46. उर्वशी से कहा स्त्री तत्त्व कहां

रहना नहीं देश बिराना है।
यह संसार कागज की पुड़िया,
बूंद पड़े घुल जाना है।।
रहना...

यह संसार कांटे की बाड़ी,
उलझ पुलझ मर जाना है।।
रहना...

यह संसार झाड़ और झांझर,
आग लगे बर जाना है।।
रहना...

कहत कबीर सुनो भई साधो,
सतगुरु नाम ठिकाना है।।
रहना...

देहध्यास मिटाना

167. तुम सब चमार हो

अष्टावक्र मुनि जनक के दरबार में आए। उसके कुरूप शरीर (वह टांग रखते कहां और पहुंचते कहां थे) को देखकर सभी लोग हंस पड़े। अष्टावक्र जी जहां खड़े थे वहीं खड़े हो गए और जब सबने हंसना बंद किया तो स्वयं हंसने लगे। राजा जनक अपने आसन से उठकर नम्रतापूर्वक आए और हाथ जोड़कर कहने लगे—'भगवन्! मैं यह तो समझा कि ये लोग क्यों हंसे पर यह न समझ पाया कि आप क्यों हंसे।' अष्टावक्र बोले, 'राजन! मैं यह सुनकर आया कि जनक के दरबार में विद्वान एकत्र होते हैं, परंतु अब यह देखकर हंस रहा हूं कि यह विद्वानों की परिषद नहीं, चमारों की सभा है।' जनक ने कहा—'भगवन्! इन विद्वानों को आप चमार कहते हैं?' अष्टावक्र ने अल्हड़पन से कहा—'जिसकी नजर चमड़े और हड्डियों पर है वह चमार ही तो हुआ।' सभी विद्वानों के मस्तक झुक गए।

सिद्धांत : नामरूप (Shape) में न अटको। देखो सब में मेरी ही आत्मा है।

168. नारद और शुकदेव में से कौन बड़ा

नारद को अहंकार था कि वह सबसे महान है। वह शुकदेव को साथ लेकर इंद्र के पास गया कि कौन बड़ा है। इंद्र बोला—'मैं नहीं बता सकता, राजा जनक के पास जाओ।' राजा जनक ने उन्हें सुलभारानी के पास भेजा। सुलभा ने दोनों को एक झूले पर थोड़ा अलग-अलग बैठाया और स्वयं सोलह श्रृंगार करके दोनों के बीच आकर बैठ गई। नारद मुनि थोड़ा रानी की तरफ खिसक गए तो रानी उठ गई और बोली, शुकदेव बड़े हैं। नारद को अभी भी स्त्री तत्त्व भासता है।

सिद्धांत : मन की ऊंचाई से ही आदमी बड़ा और छोटा है।

169. नया चर्च कैसे बने

एक गांव का चर्च बुहत पुराना टूटा-फूटा हो गया था। सबको भाव आया कि नया चर्च हो। पर कुछ लोगों ने कहना शुरू किया कि यह चर्च पवित्र है तो इसी की ईंटों से दूसरा बनना चाहिए। फिर दूसरों ने कहा कि पहले नया बने तब पुराना तोड़ें। अन्य लोगों ने आवाज उठाई कि जहां पुराना खड़ा है वहीं नया बनाना चाहिए। इस प्रकार की झूठी भावुकता की वजह से चर्च बन ही न पाया।

सिद्धांत : हम अपने पिछले संस्कार छोड़ने को तैयार नहीं होते तो गुरु कैसे ज्ञान का महलात खड़ा करें?

170. बृहस्पति ने कच से त्याग करने को कहा

देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच वेद अध्ययन करके लौटे तो उन्हें अभिमान हो गया कि अब मैं पिता जी से ज्यादा विद्वान हो गया हूं। बृहस्पति जान गए और बोले—'तुमने समस्त विद्याओं का अध्ययन कर लिया। अब तुम्हें शांति मिल गई होगी।' कच ने कहा—'मुझे शांति नहीं मिली। वह कैसे मिले?' बृहस्पति बोले—'त्याग करने से शांति मिलती है।' कच सब कुछ त्यागकर घर से निकल पड़े। तीर्थों में घूमते रहे। एक वर्ष के बाद लौटे तो पिता ने पूछा—'शांति मिली?' कच ने कहा—'नहीं मिली।' बृहस्पति ने फिर कहा—'पुत्र, त्याग करो तो शांति मिलेगी।' अब उन्होंने दंड कमंडल भी छोड़ दिया, कौपीन तक भी छोड़ दी, फिर भी शांति नहीं मिली। पिता के पास आए तो पिता ने त्याग करने को कहा। अब कच ने अग्नि जलाकर शरीर त्यागने की तैयारी की। बृहस्पति उसी समय वहां पहुंचे और बोले—'ऐसे कहीं शरीर का त्याग होता है? यह शरीर जल जाएगा तो भी वासनानुसार दूसरा शरीर मिल जाएगा। चित्त को त्याग देना ही असली त्याग है। चित्त और चित्त में आने वाले समस्त विषयों का त्याग करो। चित्त के संस्कारों का त्याग करो। यह निश्चय करो—न मैं चित्त हूं, न ही मेरा चित्त।'

सिद्धांत : चित्त में मैं-मेरा की भ्रांति का त्याग ही, वास्तविक त्याग है।

171. मन का भुलावा

एक संत कहीं जा रहा था। बड़ी भूख लगी। मन ने कहा प्रभु से मांग लो। संत ने कहा—'विश्वासी मनुष्य का यह काम नहीं।' जब मन की यह चाल नहीं चली तो उसने दूसरी युक्ति सोची। कहा—'अच्छी बात है, तुम खाने के लिए मत मांगो पर भूख के कारण धीरज मांग लो।' संत ने सोचा ठीक है। धीरज मांगने में हर्ज ही क्या है? इतने में अंदर की आवाज आई, देख धीरज का समुद्र तो मैं सदा तेरे साथ ही हूं। मांग कर अपने विश्वास को क्यों खो रहा है। क्या मैं बिना मांगे नहीं देता? भक्त का योग-क्षेम उठाने की मैंने घोषणा कर रखी है। संत का समाधान हो गया। उसने कहा सच है। मन के भुलावे में आ गया था।

सिद्धांत : प्रभु अपने सारे गुण सहित भीतर ही विराजमान है। बस हमारे ही विश्वास की कमी है।

172. रानी चुड़ाला ने राजा शिखिध्वज को ज्ञान दिया

रानी चुड़ाला और राजा शिखिध्वज एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे। कई साल सर्वसुखों का भोग करने के पश्चात विवेक उत्पन्न हुआ कि अब शरीर कमजोर होता जा रहा है पर हृदय में तृप्ति या शांति नहीं है, तो राज्य के बड़े-बड़े विद्वानों को बुलाया और पूछा—'मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है और तृप्ति और शांति कैसे मिलती है?' उन्होंने कहा—'आत्मज्ञान ही लक्ष्य है। इससे ही परम शांति

मिलती है।' दोनों ने ब्रह्मविद्या का अध्ययन आरम्भ किया। रानी की बुद्धि सूक्ष्म थी। वह विचारवान और पुरुषार्थी थी। उसे शीघ्र आत्मज्ञान प्राप्त हो गया और उसका चेहरा चमकने लगा। राजा को लगा इतनी आसानी से आत्मज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिए लम्बी साधना और तपस्या की जरूरत है। रानी ने अपने स्वामी राजा को आत्मानुभव कराने की बहुत कोशिश की पर राजा ने समझा स्त्री से क्या उपदेश लेना और एक दिन वह आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए जंगल की ओर निकल पड़ा, रानी को मालूम पड़ा राजा महल में नहीं हैं तो वह समझ गई कि राजा राज्य को त्याग कर वन को चले गए हैं। रानी ने सोचा कि अगर यह खबर सबको मिल गई तो राज्य में खलबली मच जाएगी, सो उसने कहा कि राजा किसी काम से थोड़े दिन के लिए बाहर गए हैं और मुझे राज्य का अधिकार सौंप गए हैं। इस प्रकार आठ साल तक रानी राज्य का काम अच्छी तरह से सम्भालती रही। फिर उसे लगा कि पता लगाना चाहिए राजा कहां पर हैं। अपनी योग-माया से उसे मालूम पड़ गया कि राजा बहुत दुखी हैं और वह कहां हैं। उसने ऋषि-पुत्र का वेष धारण किया क्योंकि पत्नी से उसे सुनने में अच्छा नहीं लगता था।

राजा अपने पास एक तेजवान ऋषि को आता देख बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पूछा—'आप कौन हैं?' ऋषि बोला—'नारद का पुत्र कुम्भज हूं। आपको अकेले जंगल में देख आपसे बात करने का दिल हुआ इसलिए धरती पर

चला आया।' अब दोनों में गहरी मित्रता हो गई और राजा ने अपना सब साधन विधियां उसे बताई। रानी रोज अपना राज्य काज भी सम्भालती और कुछ देर के लिए कुम्भज के रूप में राजा के पास भी रहती। एक बार राजा ने गहरा तप किया पर शांति न आई तो अग्नि जलाकर अपना शरीर बोटी-बोटी काटकर उसमें डालने ही वाले थे कि इससे मुझे मुक्ति मिल जाएगी, तब कुम्भज ने उन्हें समझाया कि शरीर के नाश से मनुष्य मुक्त नहीं होता, वासनानुसार फिर से जन्म तैयार है। पर देहध्यास का त्याग ही असली त्याग है।

इस प्रकार धीरे-धीरे राजा आत्मा के ज्ञान में स्थित हो गए।

अब कुम्भज ने परीक्षा ली कि राजा को कुछ भी भासता है क्या? वह बोले, श्रापवश रात को मैं स्त्री हो जाता हूं और आपके साथ भोग करना चाहता हूं। राजा ने कहा, तुम्हारी खुशी।

रात में वह मदनि बन जाती थी। उन्होंने आपस में विवाह कर लिया। रानी ने देखा, सब भोग के बीच राजा न्यारा रहता है।

उसने फिर परीक्षा ली। एक बार राजा नहाने गया तो अपनी योगमाया के बल से एक राजकुमार बनाया जिसके साथ मर्दानि प्रेम-व्यवहार करने लगी। राजा ने देखा पर कुछ न बोला। बस उसके बाद वह मदनि के साथ प्रेम-व्यवहार नहीं करता था। बोला—'तुम मेरा मित्र हमेशा हो।' राजा का

हर स्थिति में समभाव देख रानी ने अपनी असली चुडाल का स्वरूप दिखाया। राजा दंग रह गया। वह बहुत खुश हुआ और उसने अपनी कृतज्ञता प्रकट की। फिर वह अपनी राजधानी लौट आया और जीवन मुक्त रहते हुए बहुत दिन तक राज्य किया।

सिद्धांत : वशिष्ठ राम से बोले, हे राम! स्त्रियों को निरादर से न देखो। वे तो बहुत बार पति को संसार सागर से पार करने में मदद करती हैं।

173. सबको बनाने वाला कुम्हार एक है

महाकवि जायसी बहुत कुरूप थे। एक बार बादशाह के दरबार में गए तो उन्हें देख दरबारी लोग हंस पड़े। जायसी ने एकदम पूछा—'तुम लोग मेरी हंसी उड़ा रहे हो या कुम्हार की? हमारे तुम्हारे सबके शरीर की मिट्टी तो एक ही है और सबको बनाने वाला कुम्हार भी एक ही है। मनुष्य दूसरे के विषय में जब कुछ कहता है तो वह अपनी ही स्थिति की सूचना देता है।'

सिद्धांत : अच्छाई-बुराई अपने ही दृष्टिकोण का भेद है। असल में नहीं है।

174. भिखारी को गाली न लगी

एक भिखारी दर-दर भीख मांगा करता था। लोग उसे खरी-खोटी सुनाते रहते थे। चल हट, दूर हो जा, इतना गंदा

है, यहां क्यों आया है, बाहर हो जा। वह ऐसी बातें सुनकर बड़ा दुखी होता था पर किस्मत का मारा लाचार था।

एक दिन बूढ़ा वजीर उस तरफ निकला तो भिखारी के शरीर के कोई चिन्ह से पहचान गया और बोला—'आप तो राजकुमार हैं। बचपन में आप खो गए थे। आज बहुत भाग्य से मिल गए हैं। राजमहल में चलकर सिंहासन आसीन कीजिए।' फिर क्या था, वह राजमहल में पहुंच गया। राजकीय पोषाक धारण कर राजा की तरह रहने लगा। फिर एक दिन उसके दिल में आया कि गुप्त रूप से राज्य में क्या हो रहा है, इसकी खबर लेनी चाहिए। तो वो अपना पहले का भिखारी का वेष बनाकर निकल पड़ा। लोग वैसे ही उसको गालियां देने लगे। पर आज उसे एक भी गाली नहीं लग रही थी, क्योंकि उसे आज अपनी असलियत मालूम थी।

सिद्धांत : आत्मज्ञान से मान-अपमान, कष्ट-पीड़ा आदि झेलने की ताकत खुद ही आ जाती है।

175. बछड़ा मर गया

एक बार कृष्ण भगवान 8-10 गोपियों के साथ बैठे ज्ञान की मुरली बजा रहे थे। वे चाहते थे कि सब खुलकर लेना-देना, प्रश्न-उत्तर करें, पर गोपियां सब चुप बैठी थीं। इतने में एक गाय का बछड़ा बेहोश हो गया। गोपियों ने पूछा—'यह क्यों बेहोश हो गया?' कृष्ण बोले—'कि सब

अपने मन की छिपी हुई बात बताएंगे तो यह होश में आ जाएगा।' ऐसा ही हुआ।

सिद्धांत : हमारा Knower बेहोश पड़ा रहता है क्योंकि हम उसकी आवाज नहीं सुनते, पर जब गुरु के आगे मन नंगा करते हैं तो बस धूल हट जाती है और Knower जाग जाता है।

176. गरुड़ ने सुन्दर पक्षी को दूर छोड़ा

एक बार विष्णु भगवान अपने वाहन गरुड़ पर सवार होकर शिवजी से मिलने कैलाश पर्वत आए।

वे तो अन्दर चले गए, गरुड़ बाहर दृश्य को निहार रहे थे कि उनको एक खूबसूरत छोटा-सा कोमल-सा पक्षी दिखाई दिया।

इतने में यमराज उधर से आते दिखे। गरुड़ ने देखा, वे इस छोटे-से पक्षी की तरफ घूर रहे हैं। यमराज भी उधर से होकर शंकर जी के पास अंदर चले गए। अब गरुड़ को छोटे पक्षी पर दया आई और उन्होंने सोचा इसको यहां से उठाकर गर्म देश में पहुंचा दूं तो दो फायदा होगा, एक तो यह बेचारा ठंड से बच जाएगा, दूसरा यमराज के हाथ से भी। सो गरुड़ ने उस पक्षी को चोंच में उठाया और दूर की पहाड़ियों पर पहुंचा दिया।

इतने में यमराज निकले और गरुड़ से पूछे, वह पक्षी कहां है? उन्होंने कहा, उसे तो मैं फलानी जगह पहुंचा आया।

यमराज ने कहा, मैं यह ही सोच रहा था कि इसका मरना तो दूर देश में लिखा है फिर इतने कमजोर पंखों से यह इतनी जल्दी वहां कैसे पहुंचेगा जहां मौत इसकी इंतजार में खड़ी है।

सो तुमने आज विधि की मदद कर दी।

सिद्धांत : देह में हैं तो प्रकृति में दोष देखते हैं। आत्म-दृष्टि में सब ठीक ही नजर आता है।

177. देह, व्यास और शुकदेव

बूढ़ा वेदव्यास जा रहा था तो गोपियों ने जल्दी से कपड़े पहन लिए और जब उनका जवान पुत्र शुकदेव जा रहा था तो उन्होंने अपने आप को ढकने की जरूरत नहीं समझी क्योंकि उसमें स्त्री-भाव ही नहीं था।

178. कष्टदायक बीमारी से पीड़ित

एक आदमी को ऐसी घोर बीमारी हो गई थी जिसमें पैर की उंगलियों से दर्द शुरू होता, फिर ऊपर चढ़ जाता। पीड़ा के साथ शरीर ऐंठने लगता और जब तक हृदय तक पहुंचता, वह आदमी मर जाता।

इतना दर्द था कि मरते-मरते आदमी चिल्लाया—'ओह, इस जीवन से कब छुटकारा होगा, प्राण कब मुझे छोड़कर जाएंगे।' अमेरिका में लोग कहते हैं, उसने रूह या जीवात्मा को छोड़ा। भारत में हम कहते हैं उसने शरीर को छोड़ा। माना

अमेरिका में शरीर को सत्य समझते हैं और रूह को उसमें बंधी हुई वस्तु मानते हैं।

भारत में शरीर को आत्मा से भिन्न समझते हैं और आत्मा को तत्त्व मानते हैं। इसलिए युवक ने कहा, ओह प्राण कब मुझे छोड़कर जाएंगे।

सिद्धांत : प्राणों से श्रेष्ठ आत्मा को पता लग गया तो प्राण छोड़ना त्याग नहीं है।

179. वशिष्ठ मुनि भीतर गए

एक बार गुरु वशिष्ठ शिष्यों के साथ बैठे थे। वहां भूकम्प आया तो सब लोग भाग खड़े हुए। केवल वशिष्ठ स्थिरता से बैठे रहे।

कुछ देर बाद जब शांत हुआ तो शिष्यों ने वशिष्ठ से पूछा कि आप क्यों नहीं भागे। वशिष्ठ जी बोले—'मैं भी भागा था। तुम सब बाहर भागे, मैं भीतर भाग गया।'

सिद्धांत : भीतर जाने में ही सब चीजों से छुटकारा है।

179A. चांडाल की झोंपड़ी

राजा परीक्षित ने शुकदेव से कहा कि 6 दिन भागवत सुनते हुए हो गए हैं, लेकिन मुझे अभी तक ज्ञान नहीं हुआ क्योंकि याद है कि सातवें दिन तक्षक नाग मुझे डस लेगा। तब शुकदेव ने कहा कि एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया

और वहीं खो गया। रात पड़ गई तो दूर से बत्ती दिखाई दी। देखा जंगल में एक चांडाल की झोंपड़ी है, दुर्गन्ध, मांस और खून से भरी। उसने सोचा रात तो इधर ही गुजारनी पड़ेगी, सो चांडाल से पूछा। चांडाल मुश्किल से माना कि राजा को अगले दिन सवेरे ही जाना पड़ेगा। अगला सवेरा हुआ। मंत्री राजा को लेने आए पर राजा ने मना कर दिया। परीक्षित ने पूछा यह मूर्ख राजा कौन था। शुकदेव बोले—'वह तुम हो राजन! जो अपने मांस, खून और बदबू से भरे इस शरीर से अपना सम्बंध मान कर बैठे हो।' यह दृष्टांत सुनकर परीक्षित का भ्रम नाश हुआ और वह आत्म निश्चय करके विदेह मुक्त हुआ।

5. आसक्ति मिटाना, वैराग्य दृष्टांतों की सूची

180. ऋषि-कन्या
181. स्वेच्छा, परीच्छा
182. जाने के समय हाथ खाली
183. घोड़ा और बेटा दोनों रुकावट हैं
184. माता मदाल्सा व निर्मोही राजा
185. सपने की स्त्री ने कुएं में गिराया
186. एक औरत के दो लड़के एक साथ शांत हुए
187. महात्मा गांधी गठरी बांधकर रखते थे
188. राजा भर्तृहरि का वैराग्य
189. रानी को फकीर ने भजन सुनाया
190. एक आदमी ने किसी को छाता अमानत दिया
191. एक फकीर ने राजा को रुपया फेंका
192. सेठ अन्न-क्षेत्र चलाता था
193. रंका-बंका सोना मिट्टी एक आत्मा
194. मेरा सो तेरा, तेरा सो मेरा
195. जनक जी ने शुकदेव को तेल का कटोरा दिया
196. राजा जनक के महल में आग लगी
197. संत तुलसीदास का मोह टूटा
198. मीरा ने रमज से आशिक को निराकार पकड़ाया
199. अंत समय बेर में वृत्ति गई
200. संत के कमण्डलु में छेद
201. संत ने राजा को दोगुना नमस्कार किया
202. चांदी के गिलास में आसक्ति नहीं
203. अचिन्त्य वजीर
204. कौवे ने रोटी का टुकड़ा फेंका
205. राजा ने गुलाम को वजीर बनाया
206. Vase खरीदना
207. चांदी की छड़ी खोने का दुख
208. लोभ पाप का बाप

209. आम की दो गुठलियां
210. रोटी से भी आसक्ति निकाली
211 आग से पुत्र को कौन बचाए
212. केशिनी के लिए
213. भगवान के लिए सोना मिट्टी एक है
214. बिलवा मंगल चिंतामणी
215. मणि की प्राप्ति
216. जगत काक महल
217. वैराग्य कैसे लेना

आसक्ति मिटाना, वैराग्य के अन्य दृष्टांत

23. गुरु ने अहं लोभ मोह से बचाया
28. सांसारिक प्रेम क्या होता है
30. मोह है स्वार्थ
31. गोरखनाथ ने सोना फेंका
188. राजा भतृहरि का वैराग्य
252. दो लंगोटी से विक्षेप शुरू

आसक्ति मिटाना, वैराग्य

180. ऋषि-कन्या

एक राजकुमार शादी नहीं करना चाहता था। एक बार वह जंगल में जा रहा था। उसे एक ऋषि-कन्या मिली जो शांति और प्रेम की मूर्ति लग रही थी। राजा उसकी ओर आकर्षित हुआ और उससे पूछा—'तुम्हारे पिता कहां हैं?' उसने कहा—'पिता मिट्टी में मिट्टी डालने गए हैं।' फिर राजा ने पूछा—'माता कहां हैं?' तो वह बोली कि वो मिट्टी से मिट्टी निकालने गईं हैं। राजा ने कहा कि—'अपनी बात स्पष्ट करो।' तो उसने कहा कि—'उसके पिता ऋषि किसी के दाह-संस्कार में गए हैं और माता किसी के प्रसव में अर्थात बच्चा पैदा करने में मदद करने गई हैं।' यह सुन राजा और भी प्रभावित हुए और उन्होंने ऋषि से उनकी कन्या से विवाह करने की बात कही। ऋषि ने स्वीकार किया और कन्या भी अपनी प्रारब्ध प्रभु के हवाले कर शांत रही और शादी हो गई। थोड़े दिनों में राजकुमार राजा बन गया।

कुछ समय बाद उसको बेटी पैदा हुई पर राज्य के सब लोगों को यह बात पसंद न आई कि ऋषि-कन्या से पैदा हुए बच्चे

राजा माने जाएं। उन्होंने द्वेष से कन्या को एक पेटी में बंद कर नदी में बहा दिया। कुछ वर्षों बाद लड़का हुआ, उसे भी उसी प्रकार पेटी में बंद कर बहा दिया। ऋषि-कन्या तो लीला देखकर शांत रही, राजा बहुत दुखी हुआ कि यह क्या हो रहा है। मंत्रियों ने राजा को समझाया कि किसी राजकुमारी से शादी कर लो। राजा ऋषि-कन्या को धोखा नहीं देना चाहता था। इस वजह से उदास रहने लगा। ऋषि-कन्या ने राजा को समझाया कि आपकी खुशी में मेरी खुशी है, आप दूसरी शादी कर लें। वह स्वयं राज-पाट छोड़कर चली गई। जब शादी होने के दिन नजदीक आए तो राजा ने सोचा ऋषि-कन्या को बुलवाया जाए और उसी की सलाह से सब काम-काज हों। ऋषि-कन्या को अपमान न लगा और निष्काम भाव से उसने शादी की सारी तैयारियां की। शादी से पहले राजा ने राजकुमारी से कहा कि एक रात तुम ऋषि-कन्या से शिक्षा लो। बातों में भेद खुला कि यह राजकुमारी इस राजा की ही लड़की थी जिसको मंत्रियों ने द्वेष में बहाया था। ऋषि-कन्या ने यह बात सबको बताई। मंत्री अपनी भूल पर पश्चात्ताप करने लगे कि इतनी अच्छी कन्या को हमने दुख दिया और हमारी वजह से इतना बड़ा पाप हो जाता कि एक पिता की शादी अपनी बेटी से हो जाती। सबने क्षमा मांगी और राजकुमारी की शादी और जगह करवा दी।

सिद्धांत : ऋषि-कन्या निरीच्छा, शांत, धैर्यवती, प्रारब्ध-विश्वासी थी।

181. स्वेच्छा, परीच्छा

एक ब्रह्मज्ञानी, जो बिल्कुल निरीच्छा था, भोर के दो बजे एक जगह से दूसरी जगह जा रहा था। जिस शहर से वह गुजर रहा था। उस शहर के राजा का देहांत हो गया था और मंत्रियों ने निर्णय लिया था कि जो पहले आदमी सुबह यहां से निकलेगा उसे राजा बनाएंगे। यह पहला आदमी यह ब्रह्मज्ञानी ही था।

इसे जबरदस्ती तख्त पर बैठाया गया। ब्रह्मज्ञानी शांत था और सब मंत्रियों की सलाह से राज्य-काज अच्छा चलाता था। कुछ दिनों बाद एक दूसरे राजा ने यहां चढ़ाई कर दी। ब्रह्मज्ञानी ने पूछताछ की कि यह राजा कैसा है। रियासत को सुख देगा अथवा नहीं। पता लगा राजा अच्छा है। ब्रह्मज्ञानी तो निरीच्छा था। उसने सोचा खून-खराबा क्यों करें, उसे सहज ही राज्य दे दें। ब्रह्मज्ञानी ने उसका स्वागत किया और उसे राज्य सौंप दिया। पर कहा—'याद रखना, तुम यह राज्य स्वेच्छा से ले रहे हो इसलिए तुम सुखी-दुखी होगे। हम परीच्छा से बैठे थे इस कारण हम आराम से रहे।' राजा हैरान हो गया और ब्रह्मज्ञानी के पांव पड़ने लगा। बोला—'हमें भी ऐसा ज्ञान दो जो सुख-दुख, मान-अपमान से ऊपर उठें।' ब्रह्मज्ञानी ने ज्ञान देकर उसे भी सदा के लिए सुखी कर दिया।

सिद्धांत : हमेशा पुकारो, भगवान तेरी इच्छा पूरी हो मेरी नहीं।

182. जाने के समय हाथ खाली

महान सम्राट सिकन्दर की ख्वाहिश थी कि सारे संसार का सम्राट वो बने और सारे जग की धन-दौलत उसकी हो। अपने छोटे से जीवन-काल में उसने बहुत सफलता पाई, किंतु उसकी इस हवस ने उसे शक्तिशाली के साथ लोभी और क्रूर भी बना दिया था। 33 साल की उम्र में ही मौत आ गई। मौत के समय वह सोचने लगा, मैंने सारी उम्र कैसे बरबाद कर दी, जाना तो मुझे खाली हाथ ही होगा। यह सोचकर उसने मंत्रियों से कहा, जब मेरा शव शहर में निकले तो मेरे हाथ कफन से बाहर रखना जो सारा जग देख ले कि सिकंदर बादशाह भी खाली हाथ संसार से जा रहा है।

सिद्धांत : धन-दौलत के संग्रह में सच्चा आनन्द नहीं।

183. घोड़ा और बेटा दोनों रुकावट हैं

एक संत के पास एक घोड़ा और एक बेटा था। किसी ने आकर उसको यह खबर दी कि बेटे को सांप ने काट लिया है और उसका शरीर शांत हो गया है। संत ने सोचा—'जब भी ध्यान में बैठता हूं यह घोड़ा और बेटा दो ही रुकावटें आती हैं। जिसने मुझे बेटे के शांत होने की खबर सुनाई है—क्यों न उसको ही घोड़ा Gift में दे दूं तो दोनों बातों से छूट जाऊंगा।'

सिद्धांत : मननशील संत हमेशा तैयार रहता है और जो भी निराकार का खेल आता है उस मौके का फायदा उठाकर अपनी रुकावटें दूर करता है।

184. माता मदाल्सा व निर्मोही राजा

एक राजा को शादी के लिए मदाल्सा पसंद आई पर मदाल्सा को शादी करने की इच्छा न थी। राजा ने बहुत आग्रह किया तो राजकुमारी मदाल्सा तैयार हुई पर उसने एक शर्त रखी। शर्त थी कि जैसे ही कोई भी संतान पैदा होए, उसे गुरुकुल में भेजा जाएगा। राजा ने मंजूर किया। तीन बेटे हुए, तीनों को गुरुकुल भेज दिया गया। चौथा हुआ तो राजा ने बहुत अनुनय-विनय किया कि एक को तो यहां रखें जिस पर राज-काज सौंपकर हम जंगल में जा सकें। मदाल्सा मान गई पर उसने उस चौथे पुत्र को ब्रह्मज्ञान की शिक्षा स्वयं दी। वह लोरी गाती थी—**'शुद्धोसि निरंजनोसि, संसार माया परिवर्जितोसि, संसार स्वप्न दोष निद्रा, मदाल्सा वाक्य उवाच पुत्र।'**

जब चौथा बेटा लायक हुआ तो बेटे को राज्य सौंपकर राजा-रानी जंगल की ओर चले गए। चलते हुए मदाल्सा ने लड़के के गले में एक ताबीज पहनाया कि तकलीफ के समय खोलकर पढ़ लेना, तुम्हारी तकलीफ दूर होगी।

कुछ समय के बाद माता मदाल्सा के मन में आया कि देखें बेटा ज्ञान में रह रहा है या माया में फंस गया है। वह उस गुरुकुल में गई जहां तीनों बेटे रहते थे और उनसे कहा कि तुम अपने चौथे भाई के पास जाकर अपना हक मांगना। देखो वह क्या कहता है। जब तीनों राजमहल में पहुंचे तो चौथा राजकुमार उलझन में पड़ गया। एक तो वह इनको पहचानता

न था, दूसरा मिल्कियत उनको दे दे तो खुद को क्या मिलेगा। उसे ताबीज याद आया। खोलकर पढ़ा तो उसमें तीन बातें लिखी थीं——1. ये तीनों तेरे भाई हैं, 2. यह सब गुजर जाएगा और 3. जगत मिथ्या ब्रह्म सत्य। यह पढ़ते ही राजकुमार को शांति आ गई। तीनों को प्रेम और सत्कार किया और कहा जो चाहिए ले लो। पर उनको तो कुछ चाहिए नहीं था। केवल भाई की आसक्ति निकालनी थी। अपने तीनों भाइयों से ज्ञान सुनकर चौथा भी निर्मोही हो गया और यह ज्ञान अपने घर में व प्रजा को भी दिया।

इस निर्मोही राजा का एक बेटा वन में चलते-चलते एक साधु के निवास स्थान पर पहुंचा। साधु ने पूछा तुम कौन हो। वह बोला मैं निर्मोही राजा का निर्मोही बेटा हूं। साधु को आश्चर्य हुआ——'राजा और निर्मोही?' बोला——'मैं परीक्षा लेता हूं।' वह राजमहल में पहुंचा और रो-रोकर राजा से कहने लगा——'बड़ा अन्याय हो गया, वन में राजकुमार को सांप ने काट लिया और वह शांत हो गया।' राजा ने कहा——'आप तो साधु हैं। क्यों मिथ्या जगत के लिए रो रहे हैं। आना-जाना प्रकृति की लीला है। उसमें शोक करने की क्या बात है।' साधु ने कहा——'पिता को मोह नहीं है, मां के पास जाऊं।' वहां गया तो माता (शांति देवी) हलवा भून रही थी। समाचार सुनकर भी भुनती रही और कहा——'दो पक्षी डाल पर बैठते हैं। सुबह होते-होते एक कहां दूसरा कहां चला जाता है, इसमें शोक क्या करना।' साधु दंग रह गया। फिर सोचा पत्नी को

आजमाऊं। पत्नी (संतोषी देवी) ने सारा वृत्तांत बड़े संतोष से सुना और फिर बोली——'दो कुत्ते थे, एक को किसी ने लाठी लगाई, एक को रोटी दी। दूसरे जन्म में दोनों कुत्ते गर्भ में आए। एक ने मां को सुख दिया, दूसरे ने दुख दिया। जब हिसाब पूरा हुआ तो चले गए। तो प्रारब्ध का चक्कर ऐसा होता ही है——क्यों सोचूं?' फिर साधु ने दासी से कहा। दासी भी शांत रही और बोली——'नदी में दो लकड़ी बहाते हैं, कोई किसी तरफ चली जाती है, कोई किसी तरफ।' ऐसे साधु सबका निश्चय सुनकर वापस अपनी झोंपड़ी में पहुंचा और राजकुमार से कहा——'बेटे, अफसोस की बात है कि तुम्हारे महल में आग लग गई और सब कुछ जल गया। अब कहां रहोगे?' राजकुमार ने कहा——'तुम्हारे पास रहूंगा।' साधु जान गया कि ये सब निश्चय में है।

सिद्धांत : सृष्टि में रहो, पर रहो निश्चय में।

185. सपने की स्त्री ने कुएं में गिराया

एक संन्यासी कुएं की मुंडेर पर लेटा हुआ था। सामने बारात देखी। मन में सोचने लगा——'अब ये शादी करेगा, फिर बच्चे पैदा होंगे।' बस इन्हीं कल्पनाओं को लेकर उसे नींद आ गई। उसे सपना आया, मैंने शादी की है। मैं और मेरी स्त्री सोए हैं। फिर एक बच्चा पैदा हुआ, स्त्री बोलती है, थोड़ा हट जाओ। दूसरा बच्चा पैदा हुआ है तो और जगह बनाने के लिए और हटना पड़ा। उस जगह से खिसकने से आदमी कुएं में गिर जाता

है। हड़बड़ाकर आंख खुलती है तो अपने आप को कुएं म पाता है। वैराग्य आ जाता है कि सपने की स्त्री से तो यह हाल हुआ, सचमुच में होगी तो क्या होगा?

सिद्धांत : माया हमेशा गड्ढे में गिराती है पर कोई-कोई ही जागता है।

186. एक औरत के दो लड़के एक साथ शांत हुए

एक पति-पत्नी दोनों संत थे। उनके दोनों लड़के एक बार घूम रहे थे तो एक सांप ने दोनों को डस लिया और वे दोनों शांत हो गए। स्त्री को मालूम पड़ा तो वह धीरज से उन्हें घर लाई और चादर से ढककर अंदर कमरे में लिटा दिया। सोचने लगी पति को कैसे बताऊं जो उसको अफसोस नहीं हो। शाम को पति घर आया तो उसने कहा—'मेरे आगे एक समस्या है, आप उसका हल बताएं। एक आदमी ने मुझे 20 साल पहले दो हीरे दे गया था। आज वह आ गया है उन्हें लेने। 20 साल तक सम्भालते-सम्भालते मुझे उससे लगाव हो गया है और मैं उस आदमी को वे हीरे वापस नहीं देना चाहती।' संत आदमी ने कहा—'अमानत में ख्यानत है। जल्दी से हीरे वापस कर दो जो तुम्हारा बोझ हल्का हो जाए।' फिर वह स्त्री अपने पति को अन्दर ले गई और बोली—'हमारे दोनों हीरे भगवान की अमानत थे। आज उसने ले लिए।'

सिद्धांत : प्रकृति की हर चीज अमानत है, अपना न समझें।

187. महात्मा गांधी गठरी बांधकर रखते थे

महात्मा गांधी अपना बोरी-बिस्तर तैयार रखते थे कि कभी भी जेल का बुलावा आ जाए तो झट से जा सकता हूं।

सिद्धांत : हमेशा शरीररूपी गठरी बांध के रखो। भगवान कभी भी ले जाए तो शोक न हो।

188. राजा भर्तृहरि का वैराग्य

राजा भर्तृहरि को अपनी रानी पिंगला से बड़ा मोह था। एक दिन गुरु गोरखनाथ ने राजा भर्तृहरि को अमर फल दिया कि तू खा ले, हमेशा अमर रहेगा। राजा ने मोहवश वह रानी को दे दिया। रानी छिपकर सईस (घोड़े वाले) को प्यार करती थी। उसने वह फल सईस को दे दिया। सईस को वेश्या से प्यार था तो फल उसके पास पहुंच गया। वेश्या राजा को अन्दर ही अन्दर प्यार करती थी, उसने वह फल राजा को दे दिया। राजा को वहां बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह फल तो मैंने रानी पिंगला को दिया था। जब सारी कहानी खुली तो राजा को बहुत दुख और बैराग्य आ गया कि मैं जिसके लिए जान कुर्बान करता हूं उसने क्या करके दिखाया। उसके पहले पिंगला ने कहा था—तुम्हारा भाई मुझे बुरी नजर से देखता है तो उसने अपने भाई को निकाल दिया था। उसे इतना वैराग्य आया कि वह लोटा लेकर घर से निकल गया। गुरु गोरखनाथ के पास गया। गुरु ने उसको बहुत तरह से ऊपर-नीचे करके ज्ञान में टिकाया।

अंत में हिरण में मोह रह जाने की वजह से दो जन्म और लेने पड़े। फिर वह ब्रह्म में लीन हुआ।

सिद्धांत : वैराग्य में ज्ञान लगेगा।

189. रानी को फकीर ने भजन सुनाया

एक रानी को कई दिनों से नींद नहीं आती थी। एक फकीर ने उसे ऐसा भजन सुनाया कि वह Total Relax हो गई और उसे नींद आ गई। वह इतनी प्रसन्न हुई कि उसने फकीर को 500 मुहरें दे दीं। दूसरे दिन फकीर लौटा और रानी को मोहरें वापस देने लगा। रानी ने पूछा—'भला क्यों?' फकीर बोला—'इन मुहरों की वजह से मेरी नींद ही उड़ गई—इन्हें कैसे संभालूं, कहां रखूं, इनसे क्या खरीदूं? यह बला मुझे नहीं चाहिए। मेरी नींद मुझे प्यारी है।'

सिद्धांत : माया से नींद हराम है। सुख-चैन चला जाता है।

190. एक आदमी ने किसी को छाता अमानत दिया

एक आदमी ने अपना छाता एक Friend के यहां रख छोड़ा। Friend ने 8 महीने सम्भाला। बरसात का मौसम आया तो उसने सोचा अब Use करूंगा। उसी समय दोस्त वापस आया और अपना छाता ले लिया।

सिद्धांत : कोई भी चीज या बेटा-बेटी हो और उसमें मोह डाला हो तो भगवान वापस ले लेगा।

191. एक फकीर ने राजा को रुपया फेंका

एक फकीर को रास्ते में पड़ा एक रुपया मिला। उसने सोचा जो भी मुझसे ज्यादा फकीर है उसे यह रुपया दे दूंगा। उस देश का राजा अपनी सेना के साथ दूसरे देश पर चढ़ाई करने जा रहा था। एकदम से उसकी पालकी में एक रुपया आ गिरा। वह दंग रह गया कि राजा को किसने रुपया फेंका होगा। रोककर इधर-उधर नजर दौड़ाई तो यह फकीर खड़ा मिला। पूछने पर फकीर ने कहा—'मेरे से ज्यादा तू फकीर है। मैं तो दो रोटी में तृप्त हूं, तू इतना बड़ा राजा होते हुए भी दूसरे देश पर चढ़ाई करने जा रहा है।' यह सुनते ही राजा का विवेक जागा और उसने अपनी सेना लौटा दी।

*सिद्धांत : **Much Wants More.***

192. सेठ अन्न-क्षेत्र चलाता था

एक सेठ पुण्य और नाम कमाने के लिए एक अन्न-क्षेत्र चलाता था पर क्योंकि स्वभाव से कंजूस था, उसके गोदामों में जो अनाज सड़ रहा था वही अन्न-क्षेत्र में रोटी बनाने के लिए भेज देता था। नतीजा यह था कि फकीरों को सड़ी हुई रोटी ही खाने को मिलती थी। कुछ दिन बाद उसके लड़के की शादी हुई और नई बहू घर में आई। यह दयावान और विवेकी थी। इसने सोचा इस भूल को सुधारना चाहिए। तो उसने वही सड़ा हुआ अनाज अन्न-क्षेत्र से मंगवाया और उसकी रोटी बना भोजन के साथ थाली में परोस दी। पहले तो सेठ ने समझा कि

यह मोटी-मोटी काली रोटी कोई Speciality है और बड़े चाव से खाने को उद्यत हुआ, पर चखने पर मालूम पड़ा कि यह सड़े हुए गेहूं की बनी है। बहू से कहा इतना अनाज होते हुए भी ऐसी रोटी क्यों। बहू ने कहा—'अपने अन्न-क्षेत्र में ऐसी रोटी ही बांटी जाती है और हमने बुजुर्गों से सुना है कि जो यहां देते हैं वही परलोक में खाने को मिलता है। इसलिए क्यों न अभी से आदत डालें।' यह सुनकर सेठ की आंखें खुल गईं और उन्होंने अच्छा अनाज देना शुरू किया।

*सिद्धांत : **Do unto others as you would have wished them do unto you.***

193. रंका-बंका सोना-मिट्टी एक आत्मा

अर्जुन को एक बार अहंकार आ गया कि भगवान का सबसे बड़ा भक्त मैं हूं। भगवान ने कहा, मेरे उत्तम से उत्तम भक्त हैं। उसे भगवान वहां लेकर आए जहां दो सच्चे भक्त रंका और बंका भाई-भाई रहते थे। उस समय दोनों लकड़ी काटने गए थे। अर्जुन ने पूछा—'आपने इन्हें झोंपड़ी में क्यों रखा है?' भगवान बोले—'ये ऐसे हैं जो कुछ भी स्वीकार नहीं करते।' अर्जुन को विश्वास नहीं हुआ कि ऐसे लोगे भी होते हैं। भगवान ने रंका और बंका के रास्ते में सोने के सिक्के गिरा दिए। पहले रंका उस तरफ आया। रास्ते में गिरा सोना देखकर जरा भी विचलित नहीं हुआ पर यह सोचकर कि कहीं मेरा भाई आकर्षित न हो जाए, उसे मिट्टी से ढकने लगा। बंका ने रंका को दूर से देखा तो पूछा क्या

कर रहे हो। फिर पांव से मिट्टी हटाकर देखी तो सोना दिखा। उसने कहा—'अरे रंका, तू रंक का रंक ही रह गया? तूने सोना और मिट्टी अलग-अलग देखी तभी तो सोने को मिट्टी से ढका? सोना-मिट्टी एक आत्मा है तो ढकना क्या था?' अर्जुन ने दोनों को नमस्कार किया।

सिद्धांत : सच्चा भक्त वो है जो माया को तिरस्कार करे, Non-Possession रखे।

194. मेरा सो तेरा, तेरा सो मेरा

एक राजा ने यज्ञ किया और सब ब्राह्मणों को दक्षिणा दी। एक संत कोने में बैठ गया और वहां से उठे ही नहीं। राजा ने सोचा शायद इसे ज्यादा दक्षिणा चाहिए। उनसे हाथ जोड़कर पूछा कितनी दक्षिणा चाहिए, पर संत कुछ न बोले। राजा विचार में पड़ गया कि यदि एक ब्राह्मण भी असंतुष्ट रह गया तो यज्ञ सफल न होगा। उसने विनती की कि आप कुछ तो बोलिए।

संत ने कहा—'जो तेरा सो मेरा।' राजा चुप हो गया, सोचने लगा अब तो सब संत का हो गया। संत ने राजा को उदास देखा तो बोला, जो मेरा सो तेरा। राजा को क्या मालूम संत के पास क्या है। फिर संत ने उसे ब्रह्मज्ञान देकर मालामाल कर दिया। संत का सच्चा धन पाकर राजा की आसक्ति राजाई में से निकल गई।

सिद्धांत : संत के पास ही सच्चा धन होता है जिसे पाकर फिर और कुछ पाना न रहता शेष है।

195. जनक जी ने शुकदेव को तेल का कटोरा दिया

शुकदेव जी ने जनक से पूछा कि आप इतनी माया में रहकर वैराग्य में कैसे हैं। राजा जनक ने कहा इसका उत्तर मैं तुम्हें बाद में दूंगा। तुम मेरे लिए यह तेल से भरा कटोरा लेकर सारे महल में घूम आओ। एक बूंद तेल टपका तो फांसी की सजा है। शुकदेव घूमकर आए तो एक बूंद तेल भी नहीं गिरा था। राजा ने पूछा, महल की सब चीजें देखीं? शुकदेव बोले, मैंने कुछ नहीं देखा क्योंकि तेल गिरने का डर था। राजा जनक ने कहा—'तुमको अपने सवाल का जवाब मिल गया।'

196. राजा जनक के महल में आग लगी

एक बार राजा जनक गुरु अष्टावक्र के पास बैठे थे। सूचना मिली कि राजमहल में आग लग गई है। राजा जनक शांत बैठे रहे कि जिसने लगाई है वह ही बुझाएगा। उधर ही सभा में एक संन्यासी ब्राह्मण भी बैठा था। आग का समाचार सुनकर वह भागने लगा। पूछा कि क्या बात है तो वह बोला—'मेरी झोपड़ी महल से सटी हुई है। उसमें एक ही लंगोटी है। वह जल जाएगी तो क्या पहनूंगा।'

सिद्धांत : राजाई में रहते हुए भी अनासक्त होना ही सच्चा संन्यास है।

197. संत तुलसीदास का मोह टूटा

तुलसीदास अपनी स्त्री को दिलोजान से चाहते थे। एक

बार वह मायके गई तो ये उसके बिना रह न पाए। अंधेरी रात थी, वर्षा पड़ रही थी, पर ये नदी पार कर स्त्री के गांव पहुंच गए। घर पहुंचे तो सब बंद था। उसका कमरा दुमंजिले पर था। इन्होंने आवाज लगाना ठीक न समझा। वहां कुछ रस्सी जैसा लटक रहा था। उसी के सहारे ऊपर पहुंचे तो स्त्री ने डांट-फटकार कर कहा—'यह कैसा मोह है जो एक रात भी अकेले न रह सके। जितना प्यार आप मुझे करते हैं उतना ईश्वर से करो तो बेड़ा पार ही हो जाए।' तुलसीदास को बहुत वैराग्य आया कि जिसके लिए इतना कष्ट सहकर मैं सांप को रस्सी समझकर ऊपर चढ़के आया वह मुझे जरा भी प्यार की नजर से नहीं देख रही है। बस उसी क्षण उन्होंने निर्णय किया कि हे प्रभु! अब यह जन्म तुम्हारे लिए है। बाद में ये ही संत तुलसीदास बने जिन्होंने 'रामचरित मानस' लिखा।

सिद्धांत : निर्णय और निश्चय से भोगी भी योगी बन जाता है।

198. मीरा ने रमज से आशिक को निराकार पकड़ाया

एक आदमी मीरा पर आशिक हो गया और बोला—'मुझसे शादी करो।' मीरा ने कहा—'मंजूर है पर मेरी भी कुछ शर्तें हैं। जब मैं खाऊं तो आप न खाएं। जब मैं सोऊं तो आप न सोएं, जब मैं चलूं तो आप न चलें।'

आदमी बोला—'यह कैसी बेतुकी शर्तें हैं।' मीरा जी

बोलीं—'मेरे निराकार भगवान, मेरे प्राणपति तो ऐसा ही करते हैं तो उन्हें छोड़ मैं किसे वरूं?'

सिद्धांत : निराकार अभोक्ता है, अकर्त्ता है, सदा जाग्रत-अचल-स्थिर है।

199. अंत समय बेर में वृत्ति गई

गुरु रामानन्द ने अपने शिष्य कबीर से कहा कि मेरा शरीर छूटेगा तो घंटा बजेगा, तो समझना मुक्त नहीं हुआ। रामानंद का शरीर छूटा और घंटा न बजा। कबीर यहां वहां देखने लगे तो नजर ऊपर गई और बेर में एक कीड़ा दिखाई दिया। कबीर ने कीड़े को मार दिया तो घंटा सुनाई दिया। कबीर समझ गए कि अंत समय रामानंद का ध्यान बेर में चला गया होगा।

सिद्धांत : अंत मते सोई गते। इसलिए लगातार पुरुषार्थ है कि वृत्ति कहां गई।

200. संत के कमंडल में छेद

एक राजा के यहां यज्ञ के उपरांत दान-दक्षिणा चल रहा था। एक संत भिक्षा लेने आया पर उसके कमंडल में राजा जितना डालें, वह खाली हो जाता था। राजा ने कहा—'आप तृप्त हो जाइए नहीं तो यज्ञ सफल नहीं होगा।' वह बहुत कुछ देता गया पर कमंडल भर नहीं पाया तो राजा ने देखा कमंडल में छेद है जिससे सब नीचे बह जाता है जो कभी तृप्त नहीं

होता। संत ने कहा—'मनुष्य का कमंडल भी ऐसा ही है जो कभी तृप्त नहीं होता।'

सिद्धांत : ज्ञान से अंत:करण नाश होता है नहीं तो अतृप्ति में खाली ही रहता है।

201. संत ने राजा को दोगुना नमस्कार किया

एक संत पेड़ के नीचे बैठा था। राजा उधर से निकला तो संत को नमस्कार किया। फिर संत ने राजा को दो बार नमस्कार किया। राजा ने कारण पूछा तो संत ने कहा पहले आप बताइए आपने क्यों नमस्कार किया। राजा बोला—'आप इतना त्याग करके बैठे हैं और कोई धन-दौलत भी नहीं लेते, सुख भी नहीं लेते।' संत ने कहा—'मैं तो सच्चे सुख में हूं तुमको डबल नमस्कार है कि तुम संसार-रूपी गटर में, बदबू में कैसे रहते हो?'

202. चांदी के गिलास में आसक्ति नहीं

एक संत ट्रेन में कहीं जा रहा था। उसको प्यास लगी तो उसने गिलास निकालकर पानी पी लिया। जो यात्री साथ बैठा था उसके मन में शंका आई कि संत तो है पर चांदी में आसक्ति है—चांदी के गिलास में पानी पीता है। संत जान गया कि यात्री के मन में शंका आ गई। इतने में ट्रेन स्टेशन पर रुकी। प्लेटफार्म पर किसी को गिलास की जरूरत थी। संत ने चांदी का गिलास दे दिया। वह पानी पीने लगा, इतने में ट्रेन चल दी। वह दौड़कर आया

गिलास लौटाने के लिए पर संत ने नहीं लिया। बोला—'तुम्हीं रखो।'

सिद्धांत : सच्चे संत को आसक्ति नहीं होती। उसके लिए सब निमित्त मात्र होता है।

203. अचिन्त्य वजीर

एक वजीर बहुत सच्चा था पर बाकी सब उससे ईर्ष्या करने लगे और उसके विरुद्ध राजा के कान भरने लगे। राजा उनकी बातों को सच समझकर वजीर से नाराज हो गया और बोला शाम के 6 बजे तुम्हें फांसी दी जाएगी। वजीर ने शांत भाव से यह हुकुम कबूल किया। उस दिन उसकी Birthday पार्टी थी। सब कौतूहलवश पहुंचे कि देखें वजीर पर क्या असर होता है। वजीर ने सोचा—'6 बजने में बहुत समय है, अभी से क्यों चिंता करूं।' वह पार्टी में ऐसे था, जैसे कुछ हुआ ही नहीं है। सब हैरान थे। 4 बज गए तब भी वह शांत ही शांत था। पांच बजे, फिर 6 बजने में पांच मिनट बाकी थे तब भी वह शांत ही शांत था। राजा ने देखा इसमें Emotion ही नहीं है। उसको लगा वजीर बहुत सच्चा है और उसने फांसी न चढ़ाने का आदेश दे दिया।

सिद्धांत : निरीच्छा और एक रस को भय भी नहीं जीत सकता।

204. कौवे ने रोटी का टुकड़ा फेंका

एक कौवे को कहीं से रोटी का एक टुकड़ा मिला। वह पेड़

की डाली पर एकान्त में बैठ कर रोटी का मजा लेना चाहता था, पर दूसरे कौवों ने उसे देख लिया और रोटी लेने के लिए उसके पीछे हो लिए। वह बहुत तेजी से उड़ने लगा, जिससे कि दूसरे उसे नहीं पकड़ सकें। 2-3 घंटे तीव्र गति से उड़ते-उड़ते वह इतना थक गया कि उसके प्राण निकलने वाले हो गए। उसने विचार किया, इससे अच्छा मैं यह रोटी ही छोड़ दूं। उसने ऐसा ही किया। किसी और ने रोटी उठाई और वही कहानी उसके साथ शुरू हो गई। यह कौवा थककर जो डाल पर बैठा तो इसे सुख-शांति खुद-ब-खुद मिल गई।

सिद्धांत : Quit the rat race and behold, the world is beautiful and tranquil.

205. राजा ने गुलाम को वजीर बनाया

बचपन से राजा के पास एक गुलाम था जो बहुत लायक था। वह भी राजा को बहुत प्यार करता था। धीरे-धीरे उसकी तरक्की होती गई और एक दिन राजा ने उसे प्राइम मिनिस्टर बना दिया।

बाकी सब दरबारियों को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होंने एक साथ राजा के पास जाकर अपना मत प्रकट किया। राजा ने कहा—'आज से एक हफ्ते बाद आप सब ठीक चार बजे हमारे बगीचे वाले विश्राम-गृह में मुझसे मिलिएगा। जो सबसे पहले पहुंचेगा, मालूम पड़ेगा कि उसको ही मुझसे सबसे अधिक प्रेम है।

फिर प्राइम मिनिस्टर को बुलाकर कहा, विश्राम-गृह के रास्ते में एक मील तक दोनों तरफ सुन्दर पदार्थों की दुकानें और स्वादिष्ट खाने के भोजनालय खड़े कर दिए जाएं। Condition थी कि सब लोग पैदल चलकर विश्राम-गृह पहुंचेंगे। सब लोग समय से काफी जल्दी निकले थे पर रास्ते में सब मुफ्त सामान और खाना देखकर सोचने लगे, अभी काफी समय है, यह देख लें, ले लें या खा लें। अंत में कोई भी ऐसा नहीं था जो समय से पहुंचा हो। एक प्राइम मिनिस्टर किसी भी प्रलोभन में न आया और तीन बजे से ही राजा के इंतजार में खड़ा था। सब बहुत शर्मिन्दा हुए और राजा की पसंद का समर्थन सबने किया।

सिद्धांत : माया के खिलौनों में न अटककर सीधा भगवान के पास पहुंचो।

206. Vase के खरीदने के साथ उसका टूटना भी खरीदा

एक आदमी ने अपने दोस्त के घर पर एक बहुत बेहतरीन Chinese Vase देखा। उसके दिल में आया, यह मेरे पास भी हो। इतने महंगे Vase के लिए उसके पास पूरा पैसा नहीं था तो कई वर्षों तक उसने अपनी कमाई में से बचा-बचाकर पूरा पैसा इकट्ठा किया और आखिर वह दिन आ गया जब वह वैसे ही Chinese Vase को खरीद लाया। दुकान से खरीदकर बहुत एहतियात से वह गाड़ी में लाद के ला रहा था, घर के

नजदीक पहुंच गया था कि इतने में वह Vase लुढ़ककर टूट गया। उसे बहुत अफसोस हुआ और वह वहीं बैठकर रोने लगा। उसका भाई आया तो वह भी दुख मनाने लगा। उधर से मां आई और बेटे के साथ रोने बैठ गई। भीड़ इकट्ठी हो गई। उधर से संत जा रहा था। उसे सारी बात मालूम पड़ी तो वह आदमी के पास गया और बोला—'तुम्हें दुख नहीं होता अगर तुम जानते कि जब तुमने यह Vase खरीदा तो साथ में इसका टूटना भी खरीदा।'

207. चांदी की छड़ी खोने का दुख

एक आदमी समुद्र के किनारे सवेरे टहल रहा था। अचानक उसकी नजर एक आदमी की छड़ी पर पड़ी, जो शायद समुद्र में बहकर किनारे आ लगी थी। आदमी बहुत खुश हुआ और उसने वह छड़ी उठा ली। थोड़ी देर बाद उसका समुद्र में नहाने का मन हुआ। वह सोचने लगा कि यदि छड़ी मैं किनारे पर रखकर नहाता हूं तो कोई ले जाएगा, तो इसे हाथ में ही लेकर नहाना चाहिए। सो वह छड़ी हाथ में लिए नहाने लगा, पर एक बड़ी-सी लहर आई और वेग से छड़ी को बहाकर ले गई। अब वह आदमी बहुत अफसोस करने लगा। उधर से एक संत जा रहा था। उसने पूछा, इतने दुखी क्यों हो?

आदमी—'मेरी चांदी की छड़ी समुद्र में नहाते समय बह गई।'

संत—'छड़ी लेकर तुम क्यों नहा रहे थे?'

आदमी—'क्योंकि वह मुझे यहीं पड़ी मिली थी।'

संत—'तो तुम उसे अपने साथ नहीं लाए थे। 5 मिनट पहले यहीं मिली थी और अब यहीं पानी में वापस चली गई।'

सिद्धांत : जो चीज हमारी है ही नहीं उसके जाने का दुख कैसा?

208. लोभ पाप का बाप

गुरु नामदेव एक बार धर्म का प्रचार करते बगदाद पहुंच गए। उस समय वहां जिस खलीफा का शासन था वह बड़ा निर्दयी और अत्याचारी था। जनता को लूटकर अपना कोश बढ़ाता था। एक दिन खलीफा गुरु नामदेव के दर्शन करने आया। उसके आने से पहले नामदेव ने 100 कंकर इकट्ठे करके अपने पास रख लिए। खलीफा वहां आया तो कंकर देखकर पूछा—'ये किस लिए हैं?' नामदेव ने कहा—'इन्हें धरोहर के रूप में आपके पास रखना चाहता हूं।' खलीफा ने पूछा—'वापस कब लोगे?' नामदेव ने कहा—'कयामत के दिन खुदा के दरबार में उपस्थित होऊंगा। उसी समय आप इसे साथ ले आइएगा।' खलीफा बोला—'कयामत के पवित्र दिन यह वस्तु साथ लाई जाती है?' नामदेव ने कहा—'जानता हूं, कयामत के दिन खुदा के सन्मुख खाली हाथ खड़े होकर अपने कर्मों का लेखा देना पड़ता है। पर आपने जो धन अपनी प्रजा पर अत्याचार करके इकट्ठा

किया है, आप उसे यहां तो नहीं छोड़ेंगे। जब इतना लेकर जाएंगे तो साथ में मेरे कंकर भी ले जाना।' खलीफा को अपने किए पर बहुत पश्चाताप हुआ और वह सुधर गया।

सिद्धांत : सच्चा गुरु माया में कीड़ा दिखाकर जगाता है। भगवान के पास धन नहीं कर्मों का लेख पहुंचता है।

209. आम की दो गुठलियां

एक बार एक आदमी ने दो आम खाकर उसकी गुठलियां बाहर फेंक दी। एक सड़क के किनारे जम गई और दूसरी उस आदमी के बाग में। अपने बाग में आम के पेड़ बड़े होते देख वह बहुत खुश होता। वह समझता मैं पेड़ की देखभाल करके उसे बड़ा कर रहा हूं। सड़क वाला पेड़ भी बड़ा हो गया। वह आदमी रोज उस पेड़ को कोसता कि इसकी वजह से मेरे पेड़ को पूरी धूप व हवा नहीं मिलती। एक बार Municipality वाले आए और कहने लगे—'हमें सड़क बड़ी करनी है तो सड़क वाले आम के पेड़ को निकालना होगा।' आदमी बहुत खुश हुआ कि आखिरकार मेरे पेड़ को पूरी धूप मिलेगी। कुछ दिन बाद Municipality वाले फिर आए और कहने लगे—'तुम्हारे बाग का हिस्सा भी सड़क बन जाएगा। तुम्हारा पेड़ भी निकालना पड़ेगा।' आदमी बहुत दुखी हुआ।

सिद्धांत : न कुछ अपना है न कुछ पराया, पर मन जिसको अपना मान ले वह ही जीवन में सुख-दुख का कारण बन जाता है।

210. रोटी से भी आसक्ति निकाली

एक राजा अपनी कन्या का विवाह ईश्वर-विश्वासी लड़के के साथ करना चाहता था। राजा के बहुत खोज करने पर उसे एक ऐसा लड़का दिखा जो बिना कपड़े के था पर चेहरा बहुत प्रसन्न-मुख, त्यागी दिख रहा था। राजा ने भगवान की मूर्ति के सामने उसे भक्तिभाव से मग्न देखा और उससे पूछा—'तुम्हारा घर कहां है?' उसने कहा—'प्रभु जहां रखे।' राजा ने पूछा 'तुम्हारे पास कोई सामग्री है?' उसने कहा—'प्रभु की कृपा ही मेरी सामग्री है।' राजा ने फिर पूछा—'तुम्हारा काम कैसे चलता है?' उसने कहा—'जैसे प्रभु चलाते हैं।' उसकी बातों में राजा को निश्चय हुआ कि यही आदमी उसकी लड़की के लिए ठीक है। राजा के आग्रह करने पर, अपनी कन्या के त्याग-वैराग्य की स्थिति बताकर उससे राजकुमारी का विवाह कर दिया। राजकन्या पति के साथ जंगल पहुंची। उसने देखा, वृक्ष की ओट में एक रोटी का सूखा टुकड़ा है। राजकन्या ने पूछा—'यह रोटी यहां कैसे रखी है?' नवयुवक ने कहा—'आज रात खाने के काम आएगी, इसलिए बचाकर रखी है।' राजकन्या रोने लगी और अपने पीहर जाने के लिए कहने लगी।

नवयुवक ने कहा—'मैं पहले ही जानता था कि तुम राजमहल में पली हुई हो। मुझ गरीब के साथ नहीं रह सकोगी।' राजकुमारी बोली—'मैं आपकी गरीबी के लिए नहीं रो रही, इसलिए कि आपमें प्रभु पर विश्वास की कमी

है। आपने कल के लिए कैसे सोचा? आपको रोटी के टुकड़े जितना भी भगवान पर विश्वास नहीं है।' पत्नी की बात सुनकर युवक शरमा गया। उसने रोटी के टुकड़े को फेंक दिया, जिससे उसके पेट भरने की आसक्ति टूट गई।

सिद्धांत : भगवान पर विश्वास हो तो व्यक्ति जगत की सारी बातों से छूट जाता है और आत्मबोध हो जाता है।

211. आग से पुत्र को कौन बचाए

एक आदमी को Office में खबर मिली कि घर में आग लगी है। वह सब छोड़कर घर भागा। रास्ते में उसे वह मिला जिससे वह कई दिनों से Business Deal करना चाहता था और एक स्त्री भी मिली जिससे वह बात करने के लिए सदा लालायित रहता था, पर उसने उसकी ओर देखा भी नहीं। घर पहुंचा, लपटें और धुआं थीं। सब लोग बाहर खड़े रो-पीट रहे थे पर उसका नन्हा-सा बालक नहीं था। उसने सबसे कहा—'हम अपनी धन-सम्पत्ति जो कुछ भी है सब भेंट कर देंगे, हमारे बच्चे को कोई बचा ले।' अब संत का एक सवाल है। क्या पुत्र आनन्द का मूल साधन है? सब वस्तुएं पुत्र के लिए अर्पण की जा रही हैं, लेकिन अपने आप को बचाया जा रहा है। यह जो बचाने की भावना है, यह आत्मा की वजह से है, क्योंकि वह हमेशा बची ही है, कभी बिगड़ती नहीं है। वह है ही नहीं, लेकिन अज्ञानवश हम अपने देह से वह आत्मा का धर्म लगाना चाहते हैं। हम देह से उस आनन्द को पाना चाहते

हैं जिसका उद्गम स्थान अपनी आत्मा है। कष्टदायक बीमारी से पीड़ित एक आदमी को ऐसी घोर बीमारी हो गई थी जिसमें पैरों की उंगलियों से दर्द शुरू होता है फिर ऊपर चढ़ता जाता है। पीड़ा के साथ शरीर ऐंठने लगता है और जब हृदय तक पहुंचता है, वह आदमी मर जाता है। इतना दर्द था कि मरते-मरते आदमी चिल्लाया—'ओह! इस जीवन से कब छुटकारा होगा, प्राण कब मुझे छोड़कर जाएंगे?' अमेरिका में लोग कहते हैं कि उसने रूह या जीवात्मा को छोड़ा। भारत में हम कहते हैं कि उसने शरीर को छोड़ा। माना अमेरिका में शरीर को सत्य समझते हैं और रूह को उसमें बंधी हुई वस्तु मानते हैं। भारत में शरीर को आत्मा से भिन्न समझते हैं और आत्मा को तत्त्व मानते हैं। इसलिए युवक ने कहा—'ओह! प्राण कब मुझे छोड़कर जाएंगे?'

सिद्धांत : प्राणों से श्रेष्ठ आत्मा का पता लग गया तो प्राण छोड़ना त्याग नहीं है।

212. केशिनी के लिए

प्रह्लाद एक बार प्रश्न लेकर कश्यप महर्षि के पास गए। उन्होंने पूछा—'प्रश्न का उत्तर न देने से, अथवा जानबूझकर ठीक उत्तर न देने से क्या गति होती है?' महर्षि ने कहा—'असत्य का आश्रय कभी नहीं लेना चाहिए। वह सब तरफ से वरूण के सहस्त्र पाशों से बंध जाता है और आगे-पीछे की सात पीढ़ियों के शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं।'

प्रह्लाद ने महर्षि को अपने पुत्र विरोचन की बात बताया जो ऋषि की कन्या केशिनी के साथ विवाह करना चाहता था। प्रह्लाद ने यह भी बताया कि विरोचन कहता है कि अंगिरा पुत्र सुधन्वा भी उसे प्रेम की दृष्टि से देखता है। दोनों ने केशिनी के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा तो केशिनी ने कहा जो श्रेष्ठ होगा उससे विवाह करेगी। विरोचन ने शर्त रखी कि श्रेष्ठ वाला दूसरे का सिर काटेगा। सुधन्वा ने तब कहा, कि—'श्रेष्ठ कौन है, यह प्रह्लाद बताएगा।' तब प्रह्लाद ने कश्यप की आज्ञा लेकर सबको बुलाया।

कश्यप ने सत् का रास्ता बताया था। प्रह्लाद बोला—'सुधन्वा हर तरह से श्रेष्ठ है—अहिंसा, सत्य, त्याग, शांति में और उसके माता-पिता भी उनसे हर तरह से श्रेष्ठ हैं। विरोचन का हृदय आसुरी, कामी है।' फिर बोले कि विरोचन के प्राणों का अधिकार अब सुधन्वा के हाथों में है। सुधन्वा खिल उठा और कहा—'आपका पुत्र सौ वर्ष जीएगा।' फिर कहा—'वह तो केशिनी को बहन रूप में प्रेम करता था।' फिर बोला—'विरोचन को मिथ्याभिमान था कि उसके पिता पुत्र स्नेहवश असत्य का आश्रय लेंगे।' फिर सब प्रेम से एक हो गए।

213. भगवान के लिए सोना-मिट्टी एक है

एक बार विष्णु मंदिर से भगवान के कुछ गहने चोरी हो गए। रामकृष्ण और उनके साथ माथुर बाबू दोनों अंदर देखने

गए। माथुर बाबू ने मूर्ति की तरफ देखते हुए गुस्से से कहा—'भगवान! बहुत शर्म की बात है। तुमको कोई ताकत ही नहीं है। तुम्हारे शरीर से चोर गहने उतार कर ले गए और तुम कुछ नहीं कर सके।' रामकृष्ण ने उसको कहा—'शर्म तुमको आनी चाहिए। यह कैसी वाहियात बात बोलते हो? तुम जिन गहनों की कीमत दे रहे हो, भगवान के लिए वो मिट्टी या पत्थर ही हैं। लक्ष्मी, भाग्य की देवी, जिसकी शक्ति है वो तेरे इन चोरी किए गए गहनों से परेशान होंगे क्या?'

सिद्धांत : सच्ची नजर यह ही बताती है कि सोना मिट्टी समान है।

214. बिलवा मंगल चिंतामणी

बिलवा मंगल एक ब्राह्मण पुरोहित का बेटा था। वह एक वेश्या—चिंतामणी से बहुत प्यार करता था। अपनी पत्नी की भी परवाह नहीं करता था। उसके पिता की जब मृत्यु हुई, उसने सारी सम्पत्ति बहू के नाम की। बिलवा मंगल को दाह संस्कार के लिए चिंतामणी के यहां से बुलवाया गया। बिलवा मंगल ने कुछ समय बाद पत्नी से सारी सम्पत्ति अपने नाम करवा ली और एक तूफान की रात में चिंतामणी के पास गया।

इसी दौरान चिंतामणि को दो ब्राह्मणों ने ज्ञान दे दिया था। चिंतामणी ने बिलवा मंगल से पूछा कैसे आया? जाकर देखा

तो औरत की लाश पर नदी पार की थी। चिंतामणी ने उसे ज्ञान दिया और वह सब कुछ त्याग कर भगवान में लीन हो गया।

सिद्धांत : ज्ञान की शक्ति से जीवन को पूरा मोड़ना आसान है।

215. मणि की प्राप्ति

एक मनुष्य समुद्र के किनारे खड़ा था। उसे जल की तरंगों में एक मणि की चमक दिखाई दी। वह उतावला हो गया और बार-बार डुबकी लगाकर मणि को पकड़ने की कोशिश करने लगा। वह असफल निराश होता, लेकिन फिर-फिर डुबकी लगाता। उधर से एक महात्मा निकले और उसकी हालत देखकर समझाया, थोड़ी देर ठहर। जब पानी शांत हुआ तो कहा—'ध्यान से देख, बीच में पेड़ दिखाई पड़ा?' फिर दिखाया पेड़ जो मनुष्य के पीछे था। उसे कहा कि पेड़ पर चढ़। वह चढ़ा तो सबसे ऊपर टहनी पर वह मणि उसे मिल गई, जिसको वह बाहर समझ रहा था।

सिद्धांत : संसार ही समुद्र है, विषय जल है, विषय सुख-मणि की परछाईं है। जीव डुबकी लगाने वाला मनुष्य है। बार-बार जन्म लेना, मरना डुबकी है। सद्गुरु ही महात्मा है, दृढ़ वैराग ही किनारे का वृक्ष है। साधना उस वृक्ष पर चढ़ना है और परमानन्द रूप परमात्मा का स्वरूप ही उस पर स्थित मणि है।

216. जगत काक महल

एक राजा की बेटी को राजे से इश्क हो गया, राजा ने उसकी परीक्षा ली, एक काक महल बनाया। राजे को बोला—'इसके बीच से होके आओ।' रास्ते में शेर, चीते की आवाजें, उनके बुत थे, वह सबको लकड़ी लगाता पार कर गया, क्योंकि उसे इश्क था, डर नहीं।

सिद्धांत : सारा जगत काक महल है। ज्ञान की लकड़ी से जगत कुछ भी नहीं बचेगा।

217. वैराग्य कैसे लेना

एक बार एक राजा का सिर रानियां धुला रही थीं। उनमें से एक रानी रो रही थी। उसके आंसू राजा पर गिरे तो राजा ने उसके दुख का कारण पूछा। उस रानी ने बताया कि उसका भाई वैराग्य ले रहा है और उसने अपनी बहन को कहलवाया है कि मुझसे आकर मिल जा।

राजा ने कहा—'वैराग्य बताकर नहीं लिया जाता। अचानक कब आ जाता है मालूम ही नहीं पड़ता।' राजा पहले ही वैरागी था। सिर पर साबुन लगा ही पड़ा था कि वह उठकर चल दिया। वैराग्य आ गया। रानियां सब हैरान हो गईं।

सिद्धांत : वैराग्य अपने बस में नहीं होता। वह अन्दर घटित होता है।

6. ब्रह्मज्ञानी के दृष्टांतों की सूची

218. संत अपना स्वभाव नहीं छोड़ता
219. घोड़ा स्मजि में चलता है
220. बिच्छू और संत
221. संत को 108 बार थूक लगाया
222. सच्चा संत
223. ब्रह्मज्ञानी हर बात में सम
224. संत कर्त्ता नहीं बनता
225. सुकरात की सहनशक्ति
226. दादू सोभ्या दास को जो अपना नाम न ले
227. रबड़ की गुड़िया कैसे चलती है
228. सदना कसाई

ब्रह्मज्ञानी पर अन्य दृष्टांत

40. संत को लोहा लगाया
53. ब्रह्मज्ञानी को शिष्य ने छोड़ा
101. जड़ भरत ने पालकी उठाई
191. फकीर ने राजा को रुपया फेंका
194. मेरा सो तेरा, तेरा सो मेरा
296. सिंकदर का गर्व
334. हर बात में भलाई
335. गुण-ग्राहक दृष्टि
336. क्रोध नहीं धन्यवाद
338. लंगोटी बची तो फायदे में
369. राजा जनक ने खोटे सिक्के
433. ब्रह्मज्ञानी लड़का भक्ति में स्थिर
454. सदना कसाई
498. संत पर इल्जाम लगाया

7. समदृष्टि, समवर्तन, समता भाव के दृष्टांतों की सूची

229. समदृष्टि पर समवर्तन नहीं-I

230. समदृष्टि पर समवर्तन नहीं-II

231. गुरु ने कहा तू भगवान है

समदृष्टि के अन्य दृष्टांत

223. ब्रह्मज्ञानी हर बात में सम

221. संत को 108 बार थूक

225. सुकरात की सहनशक्ति

404. भगवान समान रूप से करुणा

8. संस्कार के दृष्टांतों की सूची

232. संत ने चूही को देवी बनाया

233. संत ने कुतिया को रानी बनाया पर वैसे ही रही

6. ब्रह्मज्ञानी के दृष्टांत

218. संत अपना स्वभाव नहीं छोड़ता

एक आदमी माया-व्यवहार से खफा होकर आत्मघात करने नदी के तट पर जा रहा था। रास्ते में संत मिला और उससे उसके दुख का कारण पूछा। सारी बात सुनकर उसने कहा कि—'तुम राजा को बताओ कि अगले महीने नदी में बाढ़ आएगी।' आदमी ने ऐसा ही किया। राजा को बाढ़ की सूचना मिल गई तो उसने सम्भाल की और जब बाढ़ आई तो उसका खास नुकसान नहीं हुआ। इस बात से खुश होकर राजा ने आदमी को काफी इनाम दिया। आदमी के दिल में आया कि संत कहीं बोल न दे कि असल में उसने ही यह बाढ़ की बात बताई थी।

यह सोचकर लोभ में आकर उसने संत को पीछे से नदी में धक्का दे दिया, पर गुरु मरा नहीं, कुछ समय बाद तैर कर बाहर निकल आया।

अपने कुकर्मों के कारण कुछ ही दिनों बाद दुखी होकर यह आदमी फिर आत्मघात करने निकल पड़ा। संत फिर मिला। उसने कहा इस बार राजा को तूफान की सूचना दे दो।

इस बार राजा ने तूफान से बचने के उपाय किए और तूफान से बचत होने पर खुश होकर आदमी को ईनाम दिया।

आदमी खुश हुआ, पर संस्कारवश उसने फिर संत को मारने की कोशिश की। इस बार उसकी झोंपड़ी में आग लगा दी। गुरु तो दूसरे दरवाजे से भाग निकला। उसने समझा गुरु जल गया। ज्यादा दिन बीते भी न थे कि यह आदमी दुख का मारा हुआ फिर से आत्मघात करने लगा। फिर से संत ने उसे बताया कि राजा से कहो कि दुश्मनों के हमले से बचाव करे। ऐसा ही हुआ। और राजा ने फिर से ईनाम दिया। अब तो वह आदमी अन्दर ही अन्दर पानी-पानी हो गया कि संत क्या है। मैंने इस पर कितना जुल्म किया, इसने फिर भी मेरा उपकार ही किया। संत की दिव्यता, सच्चाई और प्रेम से कृत्यकृत्य हो गया और जाकर संत के चरणों में गिरा, संत को नमस्कार किया। संत ने उसे गले से लगाकर आप सम्मान किया।

सिद्धांत : समझने योग्य है संत की करुणा और दिव्यता आगे वाले को पिघला देती है।

219. घोड़ा Left में चलता है

एक बार एक ब्रह्मज्ञानी घोड़े पर कहीं जा रहा था। एक जगह घोड़ा रुक गया और धीरे-धीरे Left की तरफ मुड़ने लगा। ब्रह्मज्ञानी को जाना था Right पर उसने सोचा, घोड़ा भी परमात्मा की प्रेरणा से ही चलता है तो क्यों न वहीं चलें जहां यह ले जा रहा है! वह Left की ओर बढ़ चला। देखा, एक

भक्त रोकर भगवान को बहुत पुकार रहा है कि भगवान अगर तू है तो आ जा। भगवान ब्रह्मज्ञानी के रूप में वहां पहुंच गया।

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी अपनी इच्छा और Will छोड़ देता है तो प्रेरणा से पहुंचता है। वह इतना निष्काम है तो प्रकृति (घोड़ा) भी उसे वहीं पहुंचाती है जहां उसकी जरूरत होती है।

220. बिच्छू और संत

एक संत नदी किनारे बैठा था। उसने देखा, एक बिच्छू पानी की तरफ बढ़ता जा रहा है। वह पानी के इतना पास आ गया कि डूबने वाला हो गया तो संत ने करुणावश उसे उठाकर सूखी जमीन पर रख दिया। इतने संत उसको उठाकर रखता, इतने वह संत को डंक मार देता। इस तरह का खेल तीन बार हुआ। पास में खड़ा एक आदमी यह सारी लीला Observe कर रहा था। उसने संत से पूछा, आप इसकी जान क्यों बचाते हैं जब यह आपको बार-बार डंक मारता है? संत ने कहा—'सबका अपना-अपना स्वभाव होता है।'

सिद्धांत : बिच्छू अपना स्वभाव नहीं छोड़ता तो संत क्यों छोड़े!

221. संत को 108 बार थूक लगाया

एक संत की परीक्षा लेने के लिए एक लड़के ने उन पर

थूक दिया। संत शांत भाव से फिर से नहा लिया। जैसे ही वह नहाकर आया, लड़कें ने फिर थूका। उन्होंने अपना समभाव नहीं त्यागा। फिर स्नान कर लिया। इस प्रकार 108 बार लड़के ने उन पर थूका और 108 बार वे बिना चिढ़े नहा लिए।

सिद्धांत : सच्चा जिज्ञासु और संत मान-अपमान में समान रहता है।

222. सच्चा संत

एक राजा ने घोषणा की कि उसे एक अनुभवी गुरु की जरूरत है। इस घोषणा से बहुत से साधु-संत, बड़े-बड़े महात्मा ज्ञानी पधारे। सबमें से राजा ने पांच को पसंद किया। राजा ने उनसे कहा कि—'उनके नगर के बाहर जितना विशाल क्षेत्र है आप उसमें से जितनी जरूरत हो उतनी जमीन ले लें और एक सप्ताह के अन्दर अपना-अपना सुन्दर क्षेत्र बना लें। इसके लिए जो भी सामग्री चाहिए मेरे कर्मचारियों से बिना मूल्य मिलेगी। जिसका क्षेत्र सबसे आकर्षक तथा सर्वप्रिय होगा वह ही मेरा गुरु बनेगा।' सबने अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार भूमि नाप ली और कार्य तीव्र गति से शुरू हो गया। इसमें से एक संत वृक्ष के नीचे बैठकर चुपचाप भगवान के स्मरण में तल्लीन हो गया। निश्चित समय पर राजा वहां आए और सब के सजे-धजे क्षेत्रों को देखा और उनकी सराहना की। अंत में उस तेजस्वी पुरुष के पास पहुंचे और और उनसे पूछा कि—'आपने क्षेत्र नहीं

बनवाया।' उन्होंने उत्तर दिया कि—'सारा संसार मेरा क्षेत्र है। मेरे क्षेत्र की दीवारें तो वहां हैं जहां धरती और आकाश परस्पर मिलते हैं।' राजा ने प्रसन्न होकर उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया, चरणों में गिर पड़े और कहा—'सत्य है।'

सिद्धांत : हद टपे सो औलिया बेहद टपे सो पीर, हद बेहद दोनों टपे सो पीरों का पीर।

223. ब्रह्मज्ञानी हर बात में सम

एक ब्रह्मज्ञानी का घोड़ा गुम हो गया तो लोग अफसोस करने आए कि लाख रुपए का घोड़ा गुम हो गया। ब्रह्मज्ञानी ने कहा—'मैं तो केवल इतना जानता हूं कि घोड़ा गुम हो गया बाकी लाख दो लाख तुम जानो।' थोड़े दिन बाद वह पंद्रह घोड़े लेकर आया तो लोगों ने कहा, यह पंद्रह लाख ले आया। ब्रह्मज्ञानी फिर बोला—'बस घोड़ा वापस आ गया, मैं इतना जानता हूं।' कुछ समय बाद उनका लड़का घोड़े पर जा रहा था, घोड़ा बिगड़ गया और लड़के को पीठ से गिरा दिया। उसकी हड्डियां टूट गईं। सब अफसोस के लिए आए। ब्रह्मज्ञानी शांत था। दो-तीन दिन बाद ही लड़ाई छिड़ गई और सब तंदुरुस्त नौजवानों को फौज में भरती होना पड़ा। ब्रह्मज्ञानी का बेटा बच गया क्योंकि वह पलंग पर था। लोग बधाई देने लगे पर ब्रह्मज्ञानी तो सम था, खाली था। वह सब लीला देखता था, आए या जाए।

सिद्धांत : समता में अमरता है।

224. संत कर्त्ता नहीं बनता

एक संत किसी के घर गया। घर वालों ने पूछा, आप क्या खाएंगे? संत ने कहा—'आप जैसा ठीक समझें।' फिर उन्होंने पूछा, आप कितने दिन रहेंगे? संत ने फिर कहा—'आप जैसा ठीक समझें।' लोग दंग रह गए कि यह कितना निरीच्छुक है।

सिद्धांत : संत हमेशा अपने Will को मारकर चलता है।

225. सुकरात की सहनशक्ति

एक बार सुकरात अपने शिष्यों के साथ बैठे थे। उनकी स्त्री क्रोध वाली थी, उसे गुस्सा आया और कूड़े वाली बाल्टी उठाकर उन पर फेंकी। इस पर सुकरात बड़े प्रेम से बोले—'मैंने सुना था जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं, पर आज तो उल्टा ही देखने को मिला, जो गरजा वो बरसा भी।' शिष्यों को बड़ा क्रोध आया, कहा—'ये स्त्री आपके लायक नहीं है। इसे निकाल दें।' सुकरात ने कहा—'नहीं, यही मेरे लायक है, यह ठोक-ठोक कर देखती है कि मैं कहीं से कच्चा तो नहीं हूं।'

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी अपना भाव डालकर अच्छा देखता है।

226. दादू सोभ्या दास को जो अपना नाम न ले

दादू सोभ्या ब्रह्मज्ञानी थे। वौ अपने नाम की कीर्ति नहीं

कराते थे। एक समय आदमी मिलने आया, पूछा यहां दादू साहब रहते हैं? दादू साहब ने खुद गाली देकर भगा दिया और कहा यहां कोई दादू नहीं रहता। उसको एक आदमी ने श्रद्धा देखकर सलाह दी, दादू का नाम मत पूछना। जब ऐसे गया तो दादू साहब ने उसको ज्ञान सुनाया। दादू दास, दास की शोभा करते थे पर अपना नाम नहीं।

सिद्धांत : सच्चा ब्रह्मज्ञानी अपना नाम सृष्टि में भुलाकर रहता है।

227. रबड़ की गुड़िया कैसे चलती है

एक ब्रह्मज्ञानी पैदल चल रहा था, किसी ने पूछा, क्या कर रहे हैं? बोला—'देख रहा हूं रबड़ की गुड़िया कैसे चलती है।'

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी शरीर को अलग करके बात करता है।

228. सदना कसाई

एक संत अपने ध्यान में बैठा था, काफी तपस्या की थी। एक बार एक चिड़िया उसे तंग करने लगी। संत ने क्रोध से देखा, चिड़िया भस्म हो गई। संत को अहं आ गया तपस्या का। एक गृहस्थी से भिक्षा मांगी, कहा—'अलख निरंजन!' औरत पति की सेवा कर रही थी, आने में विलंब हो गया। संत को क्रोध आने लगा। औरत ने कहा—'मैं चिड़िया नहीं

हूं जो भस्म हो जाऊं।' संत हैरान हो गया। उसने पूछा—'तुम्हें कैसे मालूम?' कहा—'सदना कसाई के पास जाओ।' संत वहां गया। सदना अपना काम कर रहा था। सदना ने कहा—'तुम्हें गृहस्थी ने भेजा है।' संन्यासी फिर हैरान हो गया। उसकी तपस्या का अहम् जाता रहा। फिर कुछ समय बाद संत ने सदना से पूछा, तुम्हें कैसे मालूम?' सदना ने कहा—'मैं ब्रह्म ही देख पाता हूं। काटने वाला, कटने वाला और शक्ति, सब त्रिपुटी ब्रह्मस्वरूप हैं।' संन्यासी जाग गया। सदना की तपस्या अंदर की थी।

सिद्धांत : गृहस्थ में जो रहे उदास,
ताका नाम संत रामदास।

7. सम-दृष्टि, समवर्तन, समता भाव

229. समदृष्टि पर समवर्तन नहीं-I

गुरु ने शिष्य को उपदेश दिया कि सर्वत्र भगवान है। शिष्य रास्ते में जा रहा था। रास्ते में एक मतवाला हाथी आ रहा था। जो पीलवान उस पर बैठा था, वह चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था—रास्ते से हट जाओ, हाथी Out of Control हो गया है। शिष्य ने सोचा, हाथी में तो भगवान है। वह रास्ते पर चलता रहा। आखिर हाथी ने उसे रौंद दिया। जख्मी शिष्य गुरु के पास गया तो गुरु ने कहा—'तुमने हाथी में भगवान देखा पर पीलवान जो तुम्हें हटने के लिए कह रहा था उसमें नहीं देखा? 'हट जा' बोलने वाला कौन था?'

सिद्धांत : अधूरा ज्ञान मार खाएगा।

230. समदृष्टि पर समवर्तन नहीं-II

एक राजा को गुरु ने ज्ञान सुनाया कि सर्वत्र भगवान देखना। राजा ने सोचा, सब भगवान है तो रानी और दासी में कोई अन्तर नहीं है। वह दासी से प्यार करने लगा। रानी ने गुरु से शिकायत की कि यह कैसा ज्ञान है? गुरु ने राजा को

बताया, समान दृष्टि रखो पर समान वर्तन नहीं। कुत्ते में भगवान है पर उसके साथ खाना नहीं खाना।

231. गुरु ने कहा तू भगवान है

एक लड़के ने चलते-फिरते गुरु से अधूरा ज्ञान लिया कि तू भगवान है। स्कूल जाकर सबको बोला मेरी बात सुनो मैं भगवान हूं और एक लड़के को थप्पड़ लगा दिया। मास्टर ने गुरु को बुलवाया। गुरु ने लड़के को कहा—'तू भगवान तो सामने वाला क्या है? उसमें तूने क्या देखा? जब तक सामने वाले में भगवान नहीं देखा तो हिरण्यकश्यपु और रावण की तरह अहंकार का भगवान हो जाएगा।'

सिद्धांत : To See God is to be God.

8. संस्कार के दृष्टांत

232. संत ने चूही को देवी बनाया

एक बार संत समाधि में बैठा था। वहां एक चूहिया बार-बार संत की समाधि में विघ्न डाल रही थी।

संत ने सोचा, क्यों न इसका जीवन ऊंचा कर दूं और उसे राजकुमारी बना दिया।

कुछ समय बाद संत ने उससे पूछा—'किससे शादी करोगी?'

संत को बोली—'सबसे शक्तिशाली से।' संत ने कहा—'वो तो सूरज हैं।' तो राजकुमारी बोली—'सूरज से बड़ा बादल है क्योंकि वह उसको ढंक लेता है, बादल को भी हवा हिला देती है। हवा से भी बड़ा पहाड़ है।' फिर बोली—'पहाड़ को भी कौन काट सकता है—चूहा। मैं चूहे से शादी करूंगी।' संत ने हाथ रखकर उसे चूहिया बना दिया।

सिद्धांत : गुरु भी किसी का कितना ही संस्कार बदला करे पर जब तक कोई अपने को न बदले कल्याण नहीं होता।

233. संत ने कुतिया को रानी बनाया पर वैसे ही रही

एक संत के पास राजा ज्ञान सुनने आता था। एक दिन एक कुतिया आई, वो बार-बार खुजला रही थी। राजा का मन जर्रे-जर्रे कुतिया में जाता। संत ने कुतिया को राजकुमारी बना दिया। राजा ने उसके साथ शादी कर ली। एक दिन राजकुमारी स्वभाववश मंदिर में दीया चाट रही थी। अब राजा ने सिर पर हाथ रखा कि ये तो कुतिया है पर अगर राजा ने भी उसमें मन रखा तो खुद कुत्ता हुआ।

सिद्धांत : अगर कोई ब्रह्मज्ञानी के पास आए, किसी में मन न रखे, कुतिया अपना संस्कार न छोड़े तो संत क्या करेगा?

9. माया के दृष्टांतों की सूची

माया का पर्दा

234. ग्यारहवीं पीढ़ी कहां से खाएगी
235. वो साहब गधा हम नहीं गधा
236. तेरी औरत विधवा हो गई
237. माया का नशा
238. आदमी, औरत और लड़के ने वर मांगा
239. कामिनी-कंचन-कीर्ति से बचो
240. लड़के ने कल्पना में लड़की से विवाह का निश्चय किया
241. दो किसानों की बातों-बातों में लड़ाई
242. स्वप्न में हार-जीत
243. सूअर ने पूछा स्वर्ग में विष्ठा मिलेगी
244. दो चींटियां
245. सब Jewellery Artificial है
246. जगत शीशमहल है
247. नशे में आदमी
248. समाधि में जूते बेचना
249. चार नशेड़ियों ने व्यर्थ चप्पू चलाया
250. गांधी ब्राह्मण ने माया का स्वरूप देखा
251. मिथ्या जगत
252. दो लंगोटी से विक्षेप शुरू
253. नारद को भगवान ने माया दिखाई
254. लीला ने हार के कारण चैनसर गंवाया

सुख-दुख

255. संत ने सुख और दुख की स्पेज बनवाई
256. सुख-दुख साथ आएगा
257. दुखों की गठरी बदली
258. मृत्यु को बुलाया
259. संत बिच्छू साथ में रखता था

इच्छा-वासना

260. नामदेव ने घोड़ा मांगा
261. राजा ने रानियों से पूछा क्या चाहिए?
262. एक आदमी ने राजा से भूसा मांगा
263. आदमी ने मित्र को पत्र लिखा

वासना

264. संकल्प में काम-वासना आएगी
265. राजा सूअर के जन्म में बोलता है मेरी सुअरी कहां जाएगी
266. बूढ़े ने कहा दुकान पर कौन गया
267. बुढ़ापे में भी वासना
268. बाप-बेटी इकट्ठे न बैठें
269. पाराशर ऋषि मोहिनी पर मोहित हुए

लोभ

270. भर्तृहरि ने पान के थूक में हाथ डाला
271. लोभ में राजा ने कुत्ते के साथ खाया
272. रानी ने लालच में रेस गंवाई
273. जमीन के लिए जान गंवाई
274. निन्यान्बे का फेर
275. हीरों जड़ित नाव
276. पंडित ने महाभारत सुनाया
277. सोने के 2½ (ढाई) मटके
277A. जगत कुत्ते की पूंछ
278. लालों की छोली

मोह

279. राजा भर्तृहरि को मोह के कारण दो जन्म लेने पड़े
280. संत के दूध में तोबा
281. लोहे की हथकड़ियां
282. हम स्वयं बंधन में आते हैं
283. मोह में राजाई दी

क्रोध

284. शांतिनाथ क्रोधीनाथ

रीस ईर्षा

285. रीस
286. रुकमणी ने गर्म दूध पिलाया

माया के अन्य दृष्टांत

माया का पर्दा

492. ब्राह्मण का लड़का बदला चुकाकर

सुख-दुख

इच्छा वासना

116. शराब की बोतल का नतीजा
127. संत को जूती दी
181. स्वेच्छा : परीच्छा
371. बूढ़े को चिंतन चला

लोभ

27. लोभ के कारण मौत

मोह, क्रोध

461. व्रत लिया क्रोध नहीं करूंगा

माया का पर्दा

234. ग्यारहवीं पीढ़ी कहां से खाएगी

एक राजा के खजांची ने उसे बताया कि राज्य की धन-राशि भरपूर है। इतना धन है कि दस पीढ़ी आराम से खाएगी। राजा चिंता में पड़ गया कि दस खाएगी पर ग्यारहवीं का क्या होगा?

सिद्धांत : माया में चिंता छिपी है। संतुष्टि कभी न होगी।

235. वो साहब गधा हम नहीं गधा

एक बार एक शहर में एक अंग्रेज आकर रहा। सामने ही एक एंग्लो-इंडियन कई साल से रहता था। दोनों एक ही धोबी को कपड़े धोने को देते थे। एक बार एंग्लो-इंडियन के कपड़े ज्यादा थे तो धोबी उन्हें गधे पर लाद के ले आया। इसमें अंग्रेज को अपनी बेइज्जती लगी पर उसको हिन्दी अच्छी तरह से बोलनी नहीं आती थी तो वह धोबी से बोला——'वह साहब गधा, हम गधा नही?' धोबी हैरानी से बोला——'नहीं साहब, आप गधा नहीं।' इस पर दोनों में

कहा-सुनी व झगड़ा हो गया। शोर सुनकर एंग्लो-इंडियन बाहर आया और झट से झगड़े का कारण समझ गया। उसने धोबी से कहा कि—'अंग्रेज को बोलो, आप साहब बड़ा गधा।' इस प्रकार पहले अंग्रेज को शांत किया, फिर धोबी को मर्म समझाया।

सिद्धांत : कोई पदार्थ लेकर गधा बनता है तो दूसरा रीस करता है कि मैं उससे भी बड़ा गधा बनूं।

236. तेरी औरत विधवा हो गई

एक नशेड़ी अपने नशे में चूर घूम रहा था। किसी ने आकर उससे कहा—'रो भाई रो, तेरी औरत विधवा हो गई है।' यह सुनकर वह जोर-जोर से रोने लगा। वहां से एक संत गुजर रहा था। उसको रोते देख उसने पूछा, क्या बात है? उसने कहा—'मेरी औरत विधवा हो गई है।' संत ने समझाया, तू जीता है तो तेरी औरत कैसे विधवा हो सकती है? उसकी समझ खुली और वह खुश हो गया।

सिद्धांत : माया के नशे में फिजूल बातें हमें रुला देती हैं।

237. माया का नशा

एक राजा को खेल देखने का बहुत शौक था। एक बार उसने कहीं एक जादूगर का खेल देखा। उसे पसंद आया और उसने उस जादूगर को आमंत्रित किया अपने दरबार में खेल

दिखाने के लिए। शहर के सब लोग इकट्ठे हो गए और जादूगर अपनी जादूगरी के करिश्मे दिखाने लगा। सब लोग उसमें रम गए और एकाग्रता से खेल देख रहे थे। वह कभी गुलाब के फूल की खुशबू सुंघाता, कभी मौसमी का रस पिलाता, कभी सेब का। फिर उसने कहा—'गुलाब जामुन खिलाता हूं।' किसी को दिया, किसी को न दिया। जिसको मिला वह खुशी-खुशी खा रहा था, जिसको न मिला वह दुखी हो रहा था। इतने में एक संत वहां पहुंचा और यह देखकर हैरान हो गया कि जादू को सच मानकर लोग कैसे सुखी-दुखी हो रहे हैं। उसने चिल्लाकर कहा, तुम लोग गुलाब जामुन खाते हो या लीद खाते हो? उसकी आवाज सुनकर सब का नशा उतर गया और देखा कि गुलाब जामुन तो है ही नहीं, फिर सबने संत की शरण ली। राजा पर से भी खेल में सब भूल जाने का नशा उतर गया और वह अपने असली स्वरूप में आ गया।

सिद्धांत : गुरु ही चिल्लाकर माया की झूठी जादूगरी का नशा उतारता है।

238. आदमी, औरत और लड़के ने वर मांगा

एक आदमी, औरत और उनके लड़के ने देवी की बहुत पूजा की। देवी ने प्रसन्न होकर तीनों को एक-एक वर दिया कि जब चाहो मांग लेना। औरत बहुत सुन्दर होना चाहती थी तो उसने सुन्दरता का वर मांगा। वह खूबसूरत हो गई। उधर

से एक राजकुमार जा रहा था। वह उस पर मुग्ध हुआ और वह खुशी-खुशी उसके साथ घोड़े पर बैठकर चल पड़ी। यह देखकर आदमी को बहुत गुस्सा आया और उसने देवी से मांगा कि मेरी पत्नी को कुत्ती बना दो। औरत उसी समय कुत्ती बन गई और राजकुमार के ऊपर भौंकने लगी। राजकुमार उससे तंग हो गया और उसे घोड़े से उतारकर जंगल में छोड़ दिया। बालक यह सब देखकर बहुत दुखी हो रहा था। उसने अपने लिए देवी से वरदान मांगा कि मेरी मां पहले जैसे मेरे पास आ जाए। अब पहले जैसे ही आदमी, औरत और बालक हो गए।

सिद्धांत : माया में ऐसा ही होता है। हम सोचते हैं वर मांग रहे हैं, लेकिन कुछ भी मांगा तो ऐसा ही होगा।

239. कामिनी-कंचन-कीर्ति से बचो

एक गुरु ने शरीर छोड़ते हुए शिष्य को कहा कि—'कामिनी-कंचन-कीर्ति से बचना।' शिष्य आश्रम से जा रहा था तो जंगल में एक सोने की खान मिली। अन्दर झांका, देखा सोना है तो गुरु का वचन याद आया कि सोने से दूर रहना। वहां से हट ही रहा था कि मन में आया गुरु के लिए अच्छा-सा मंदिर बनवाऊं। गुरु का नाम प्रगट करूंगा और सोना लेकर चलने लगा। रास्ते में चोरों ने लूट लिया, मारा-पीटा और पेड़ से बांधकर छोड़ दिया। उसको बहुत पश्चाताप हुआ कि गुरु का वचन नहीं सत्य किया। लोभ की

वजह से सोने में वृत्ति गई, अब कामिनी और कीर्ति से बचकर रहूंगा।

किसी तरह से रस्सी की बंधन से छूटकर आगे चला। जंगल घना था, बारिश हो रही थी, रात पड़ गई। एक झोंपड़ी दिखी तो पूछा कौन रहता है। जवाब मिला वेश्या। वह सतर्क हो गया और रात काटने के लिए चुपचाप झोंपड़ी के एक कोनें में लेट गया। थोड़ी देर में वेश्या का मन चंचल हो गया, उसने कहा—'आप तो साधु हैं, अंदर पलंग पे लेट जाइए, कुछ न होगा।' साधु भी उसकी बात में आ गया। अंदर चला गया फिर मन वहीं लग गया और उसके दो बच्चे भी हो गए। कुछ दिन बाद उसने देखा वेश्या किसी और से बात कर रही है—वेश्या तो आखिर वेश्या ही होती है। दुख में गुरु का वचन याद आया कामिनी-कंचन से बचकर रहना। वह वहां से भाग उठा। उसने अपने से पक्का किया कि कीर्ति से बचके रहूंगा।

वह गंगा तट पर मौन में रहने लगा। मौन की तपस्या से उसमें शक्ति आ गई। उन दिनों वहां के राजा का बेटा बहुत बीमार था और मरने वाला हो गया था। राजा का वजीर कोई संत की तलाश में था कि अंत समय किसी तपस्वी का आर्शीवाद मिले। वजीर ने जब सब बात बताई तो इसने कहा—'मेरे में शक्ति है, मेरे सिर का एक बाल राजकुमार के माथे पर रख देना, वह ठीक हो जाएगा।'

देखते ही देखते सारे शहर में बात फैल गई और सब लोग दूर-दूर से इसके बाल लेने को आने लगे। ये नहीं दें तो वे

लोग नोच कर ले जाएं। आखिर सिर पर एक भी बाल नहीं बचा तो गंजे सिर पर हाथ रखकर ठंडी सांस ली कि कीर्ति ने यह बुरा हाल कर दिया।

सिद्धांत : सच्चा ज्ञान चाहिए तो गुरु से गरीबी और निन्दा लो और कामिनी से दूर रहो।

240. लड़के ने कल्पना में लड़की से विवाह का निश्चय किया

एक लड़के ने कहीं पार्क में एक लड़की देखी। उसने मन में सोचा यह सुन्दर है, मैं इससे विवाह करूंगा और फिर इसके साथ इस प्रकार रहूंगा। इतने में पार्क में एक दूसरा लड़का आया और उस लड़की की ओर देखने लगा। जैसे सुध-बुध भूल गया हो। यह देखकर पहला लड़का दूसरे से लड़ पड़ा और जोर-जोर से चिल्लाने लगा—'मेरी होने वाली पत्नी को क्यों देख रहे हो?'

सिद्धांत : मिथ्या कल्पित वस्तु को सत्य मानना और अपनी समझना ही सब उत्पात का कारण है।

241. दो किसानों की बातों-बातों में लड़ाई

दो किसान एक चौपाल पर बैठे थे। आपस में बातचीत करते हुए एक ने दूसरे से पूछा—'इस वर्ष तुम गन्ना कहां बोना चाहते हो?' दूसरा बोला—'तुम्हारे द्वार के सामने वाले खेत में गन्ना बोने का मन है। अच्छा, तुम क्या करोगे इस

वर्ष?' पहला—'मेरा भैंस खरीदने का मन है।' दूसरा—'देखो, तुम इस वर्ष भैंस मत खरीदना क्योंकि तुम्हारे घर से लगा हुआ मेरा गन्ने का खेत होगा और वह खेत में जाएगी तो व्यर्थ लड़ाई होगी।' पहला—'बस इतनी-सी बात? भैंस तो मुझे खरीदनी ही है। पशु है। कभी भूले-चूके तुम्हारे खेत में जा भी सकती है, इसमें लड़ाई की क्या बात है।' दूसरा—'यदि तुम भैंस खरीदोगे तो वह निश्चित ही मेरा गन्ना नष्ट-भ्रष्ट कर देगी। इसलिए मैं पहले ही कह रहा हूं मैं उसकी टांग तोड़ दूंगा।' पहला—'वाह कमाल है! मैं भी देखूंगा तुम कैसे टांग तोड़ते हो?' देखते-ही-देखते लाठियां उठ गईं और दोनों के सिर फूट गए। दोनों पकड़े गए। कचहरी में मुकदमा गया। न्यायाधीश ने पूछा—'तुमने भैंस कब ली?' पहला—'अभी ली नहीं, लेने वाला हूं।' न्यायाधीश—'तुम्हारा किस चीज का खेत है और तुमने कब बोया?' दूसरा—'अभी बोया नहीं है—बोने वाला हूं।'

सिद्धांत : हम बिना हुई चीज में मैं-मेरा करके झगड़ा कर रहे हैं, पर ब्रह्म-परमात्मा में कोई चीज पैदा नहीं हुई है।

242. स्वप्न में हार-जीत

एक लड़का कुश्ती में किसी से भी नहीं हारता था। एक दिन उसने स्वप्न में देखा कि वह किसी से कुश्ती कर रहा है और दूसरा जीत गया। वह दुखी हो गया कि दूसरा आदमी जीत गया, मैं हार गया। एक संत ने कहा—'शोक क्यों

करता है, स्वप्न में तू अकेला ही था। तुमने अपनी सत्ता से दूसरे को भी देखा, खुद को भी देखा। फिर जो हारा वो भी तू था और जो जीता वो भी तू ही था।' यह सुनकर लड़का हंस पड़ा और उसका दुख दूर हो गया।

सिद्धांत : जब साक्षी स्वरूप मूल परमात्मा को जानेगा तो कम-ज्यादा, छोटा-बड़ा, कोई न देखेगा। सब में ही हूं—जगत में हार-जीत, छोटा-बड़ा, सब मेरी सत्ता से ही सारा जगत है।

243. सूअर ने पूछा स्वर्ग में विष्ठा मिलेगी

एक बार नारद को सूअर पर तरस आया कि कैसे गंदगी में पड़ा है। उसने सूअर से कहा—'चलो मैं तुम्हें स्वर्ग ले चलता हूं।' सूअर ने पूछा—'स्वर्ग में विष्ठा मिलेगी?'

सिद्धांत : वासना का कीड़ा स्वर्ग जैसी जगह में भी कचरा पसंद करेगा।

244. दो चींटियां

दो चींटिया थीं, एक नमक के ढेर पर रहती थीं, दूसरी शक्कर के ढेर पर। शक्कर वाली ने नमक वाली को बुलाया कि आओ, इसका स्वाद भी देखो, पर नमक वाली को अच्छा न लगा, क्योंकि वह नमक का स्वाद मुंह में लेकर आई थी।

सिद्धांत : गुरु के ज्ञान का मजा तब आएगा जब अज्ञान से थकान आएगी।

245. सब Jewellery Artificial है

एक स्त्री की Jewellery चोरी हो गई तो वह बहुत दुखी हुई। फिर पति ने बताया वह सब Artificial थी तो उसे शांति आई।

सिद्धांत : गुरु जब बताता है कि माया झूठी है तो मन में शांति और संतोष आ जाता है।

246. जगत शीशमहल है

एक आदमी ने अपने मनोरंजन के लिए अपने कमरे में हजारों कांच लगवाए जिससे वह हर समय अपना ही प्रतिबिम्ब देखकर अपना आनन्द ले सके। एक दिन उसने भूल से कमरे का दरवाजा खुला छोड़ दिया तो एक कुत्ता अन्दर आ गया और शीशों में अपने आपको दूसरे कुत्ते समझकर सब पर भौंक-भौंककर और सब से लड़-लड़कर थककर चूर हो गया और वहीं मर गया।

सिद्धांत : सब में अपना आपा देखोगे तो जीवन आनन्दमय होगा।

247. नशे में आदमी

एक शराबी नशे में धुत्त गटर में गिर पड़ा, पर उसे एहसास नहीं हुआ कि वह गटर में गिरा पड़ा है। उसे लगा वह जन्नत में पहुंच गया। गटर में तैरते हुए चूहे की पूंछ उसके मुंह में गई तो वह सोचने लगा Chicken खा रहा है। किसी ने कचरा फेंका तो सोचा, परियां फूल बरसा रही हैं,

मैं कितने आनन्द में हूं! जब नशा उतरा तो बहुत शर्मिन्दा हो वह गटर से बाहर निकला।

सिद्धांत : माया के गटर से गुरु ही खींचकर निकालता है।

248. समाधि में जूते बेचना

एक आदमी समाधि में बैठता था। उससे कोई मिलने वाला आया और उस आदमी के लिए पूछा तो पत्नी ने कहा—'वह जूते बेच रहा है।' आदमी चिल्लाकर बोल उठा—'समाधि में बैठा हूं—जूते कैसे बेच रहा हूं!' औरत बोली—'सच बताओ, क्या कर रहे थे?'

सिद्धांत : बाहर ज्ञान ध्यान स्नान,
अंदर व्यापे लोभ स्वान।

249. चार नशेड़ियों ने व्यर्थ चप्पू चलाया

चार नशेबाज एक नाव में बैठे और 4 घंटे तक चप्पू चलाया कि लखनऊ से कानपुर पहुंच जाएं, सवेरा होने के पहले। रोशनी हुई तो देखा, जहां शुरू किया था वहीं के वहीं हैं। असल में नाव खूंटे से बंधी रह गई और उन्होंने एक जगह ही चप्पू चलाया।

सिद्धांत : ज्ञान के सिवा कितना भी ध्यान-समाधि करो पर वहीं के वहीं रह जाते हैं। सारा पुरुषार्थ व्यर्थ जाता है।

250. गांधी ब्राह्मण ने माया का स्वरूप देखा

कोशल देश में शुद्ध आचार-विचार वाला गांधी नामक ब्राह्मण रहता था। भगवान विष्णु उसकी भक्ति से प्रसन्न हो उसे वर मांगने को कहा। उसने कहा—'भगवान, मुझे माया का स्वरूप जानना है।' भगवान ने कहा—'किसी समय ऐसा ही होगा।' और अंतर्धान हो गया। एक दिन गांधी गंगा-स्नान कर रहा था। उसने डुबकी लगाई तो एक विचित्र स्थिति का अनुभव किया। उसका अनुभव इस प्रकार था।

गांधी अपने घर बीमार है। बीमारी में मर गया। मरने का, मृत शरीर छाड़ने का अनुभव—लोकान्तरों में जाने का अनुभव—अपने जीवन की अधूरी तीव्र वासनाओं के अनुसार भोग और दण्ड मिल रहे हैं। फिर वह इस लोक में एक चाण्डाल के गर्भ में प्रवेश करता है। बड़ा होने पर चाण्डाल कन्या से शादी करता है। उसके साथ चाण्डाल वृत्ति से धन पैदा करता है और कई बच्चे होते हैं। एक बार उस देश में बहुत अकाल पड़ता है। सब बच्चे और पत्नी मर जाते हैं। वह दुख में बहुत रोता है और पेट के लिए दूसरी जगह जाता है। रास्ते में अचानक एक हाथी उसे सूंड में उठाता है। वह जिस देश में पहुंचा था वहां का राजा मर गया होता है। यह हाथी इसलिए छोड़ा था कि यह जिसे उठा ले उसे राजा बना देंगे। अब वह राजा बन जाता है। बहुत धन है और सुन्दर रानियां हैं। एक बार हाथी पर इनकी सवारी निकलती है तो पुराने देश से इसके मित्र इसे देखकर दौड़े

मिलने आते हैं। इसका पहले चाण्डाल होने का रहस्य खुल जाता है। यह खबर सुनकर रानियों और ब्राह्मणों को इतना दुख होता है कि वे अग्नि-कुंड में आत्महत्या कर लेते हैं। यह देखकर गांधी भी अग्नि-कुंड में प्रवेश कर आत्महत्या कर लेता है। आग में जलने की पीड़ा से वह बेहोश हो जाता है। जब उसे होश आता है तो वह गंगा से सिर निकाल रहा होता है। देखता है, मेरे कपड़े तट पर रखे हैं। पहनकर घर जाता है। कुछ दिन बाद एक मुसाफिर अतिथि घर आता है। यात्रा के बारे में सुनाता है कि मैं ऐसे देश से आ रहा हूं जहां सब रानियों और ब्राह्मणों ने अग्नि में जलकर आत्महत्या कर ली क्योंकि आठ साल तक चांडाल राजा के साथ जीवन बिताना पड़ा। गांधी को बहुत आश्चर्य हुआ और यात्री के साथ वहीं गया। देखा कि सब वैसा ही हो रहा है जैसा उसने गोते के समय अनुभव किया था।

सिद्धांत : माया को मनुष्य देखता और सुनता है तो बात पक्की हो जाती है पर सपने से जागो तो मैं ज्यों का त्यों आत्मा हूं।

251. मिथ्या जगत

योग वशिष्ठ में एक कथा आती है—एक दासी राजकुमार को कहानी सुनाकर सुला रही थी। वह बोली—'एक शून्यपुर नाम का शहर था। वहां के राजा के तीन राजकुमार थे। उसमें से दो तो गर्भ में ही नहीं आए और

तीसरा पैदा ही नहीं हुआ था। उन पर एक राजा ने हमला किया तो वे घोड़ों पर चढ़कर दौड़ पड़े। उसमें से दो घोड़े तो थे ही नहीं और तीसरे की उम्मीद भी नहीं थी। दौड़ते-दौड़ते तीनों नदी किनारे पहुंचे। तीनों ने तीन नदियों में स्नान किया। उसमें से दो सूखी पड़ी थी और तीसरी में पानी नहीं था। फिर उन्हें भूख लगी उन्होंने तीन टोपियों में खाना पकाया...।'

सिद्धांत : इस कथा की तरह ही संसार भी अर्थहीन है। मिथ्या का मतलब जो आज है पर कल न होगा—Changeable.

252. दो लंगोटी से विक्षेप शुरू

एक चूहे ने संत की दो लंगोटी में से एक कुतर डाली। संत ने चूहे से बचने के लिए बिल्ली रखी। बिल्ली को दूध पिलाने के लिए गाएं रखीं। गाय के लिए जमीन रखी। जमीन के लिए Municipality का बुलावा आ गया। संत ने सिर पर हाथ रखा कि दो लंगोटी के कारण इतना करना पड़ा।

सिद्धांत : छोड़ने से नहीं छूटेगा।

253. नारद को भगवान ने माया दिखाई

नारद ने भगवान से कहा—'मैं शादी करना चाहता हूं।' भगवान ने कहा—'पहले पानी का लोटा भर लाओ।' नारद लोटा भरने नदी में गयां तो वहां उसने गोता लगाया। जितनी देर उसने गोता लगाया उतने में ही भगवान ने उसे माया का

स्वरूप दिखा दिया। उसने देखा कि मैंने शादी की है और बच्चे भी हो गए हैं। एक दिन बाढ़ आई, उसमें सब डूब गया। नारद का विवेक जाग गया।

सिद्धांत : जगत के हर प्रपंच में अंत में दुख है तो शादी करके क्यों प्रपंच खड़ा करें?

254. लीला ने हार के कारण चैनसर गंवाया

लीला और चैनसर का आपस में बहुत प्यार था। शहर में एक लड़की दिल ही दिल चैनसर राजा को चाहती थी। वह राजा से कैसे मिले? उसने सोचा, मैं रानी की दासी बन जाऊं तो कभी तो चैनसर मिल जाएगा! वहां वह दासी बन गई। एक दिन उसने एक नौलखा हार रानी को दिखाया। रानी देखते ही मुग्ध हो गई। दासी से उसका मूल्य पूछा। उसने कहा, एक रात चैनसर के साथ। पहले रानी अवाक रह गई, फिर सोचा, जब चैनसर सोएगा तो दासी को भेज दूंगी, एक रात की ही तो बात है। रात को राजा दासी को लीला समझकर उससे बातें करने लगा। दासी उठकर खड़ी हो गई। दासी ने बताया—'मैंने एक हार से आपको खरीदा है।' चैनसर दुखी हो गया—'मेरी कीमत सिर्फ एक हार जितनी!' राजा लीला-लीला चिल्लाने लगा और कहा—'हमेशा के लिए यहां से चली जाओ।' लीला बहुत पछताई—रो-रोकर उसने जान दे दी। उधर चैनसर ने भी जान दे दी।

सिद्धांत : माया में आके भगवान से भी दूर हो सकते हैं।

255. संत ने सुख और दुख की List बनवाई

एक आदमी दुख से भरकर संत के पास गया और बोला—'मुझे दुख ही दुख है, एक भी सुख नहीं है।' संत ने कहा—'सब दुख लिखकर लाना।' आदमी List बनाकर लाया और उसका मन कुछ हल्का हो गया। अब संत ने कहा, सुखों की List बनाकर लाना।

आदमी शांति से बैठा तो बहुत-सी बातों में सुख नजर आने लगा और सुखों की List दुखों से बहुत लम्बी बन गई।

सिद्धांत : मनुष्य Miser होकर रहता है। जितना दुख Count करता है उतना सुख नहीं देखता।

256. सुख-दुख साथ आएगा

एक आदमी ने घर में कहा कि—'आज एक आदमी खाने पर आ रहा है, वह सूरदास है।' शाम को देखा तो स्त्री ने दो जनों के लिए Extra टेबल लगाई है। आदमी ने पूछा—'जब एक जना ही आ रहा है तो दो मेहमानों के लिए क्यों लगाया है?' स्त्री बोली—'सूरदास है तो अपने साथ दूसरे को भी लाएगा।'

सिद्धांत : सुख अकेला नहीं आता, साथ में दुख को भी लाता है।

257. दुखों की गठरी बदली

एक बार धरती से दुखियों की चीखें इतनी उठीं कि परमात्मा स्वयं उनकी पुकारें सुन, नीचे उतरे और बोले—'जिसको भी अपनी पीड़ा ज्यादा लग रही है वह गठरी बनाकर यहां डाल दे। सबने गठरियां बनाकर वहां छोड़ दी।' फिर परमात्मा ने कहा—'जिसकी दुखों की गठरी तुमको हल्की लगे वह उठा लो।' तो अंधे ने अंधापन देकर लंगड़ापन ले लिया। गरीब ने अमीरी ली, बांझ ने बाल-बच्चे लिए। इस तरह से दुखों की गठरियों का ढेर चंद मिनटों में खत्म हो गया। सब अपने-अपने घर चले गए। अगले दिन और भी जोर की चीखें सुनाई दीं तो परमात्मा वापस आए। सबने कहा अब तो हम पहले से भी ज्यादा दुखी हैं।

हमें अपना ही दुख वापस दीजिए। परमात्मा ने वैसा ही किया और सब खुश होकर चले गए।

सिद्धांत : दुख मिटाने के लिए वह समर्थ है, पर समझ किया है काम। दूसरी बात है—सुख-दुख केवल मन की स्थिति है।

258. मृत्यु को बुलाया

एक आदमी कंधे पर भारी बोझ लेकर जा रहा था। वह बूढ़ा, निर्बल और बुखार से पीड़ित था। थककर पेड़ के नीचे बैठा, बोझ कंधे से उतारकर रखा और सोचने लगा—'मैं जीना नहीं चाहता।' तो उसने रो-रोकर मृत्यु को पुकारना शुरू

किया कि तू आ जा, अब और सहन नहीं होता। मृत्यु आ गई तो वह डर गया। बोला—'मैंने आपको मारने के लिए नहीं, मेरा बोझ उठवाकर मेरे कंधों पर रखने के लिए बुलाया था।'

सिद्धांत : मनुष्य की सारी कठिनाइयां उस की खुद की पैदा की होती हैं।

259. संत बिच्छू साथ में रखता था

एक संत के पास चोर चोरी करने आया। संत ने कहा—'जो जी चाहे लेके जाओ पर गुदड़ी नहीं खोलना।' चोर ने सोचा, शायद माल इसी में है। खोली तो बिच्छू निकला। चोर ने सोचा, मजाक है तो बिच्छू फेंक दिया, संत ने उठाकर फिर रख लिया। चोर ने पूछा, ये क्या? बोला, मैं बिच्छू साथ रखता हूं जो यह काटता रहे और मैं हमेशा भगवान के ध्यान में रहूं।

सिद्धांत : संत दुख का सामान साथ रखता है।

इच्छा-वासना

260. नामदेव ने घोड़ा मांगा

नामदेव रोज मंदिर जाता था। एक दिन विट्ठल महाराज से कहा—'मुझे एक घोड़ा दे दो जो मैं जल्दी-जल्दी तुम्हारे पास आ सकूं। पैदल चल-चल के मेरे पांव कट गए हैं।' भगवान ने उसे कहा कि—'तू घोड़े का क्या करेगा? वह तुझे सुख नहीं देगा।' पर उसने बहुत आग्रह किया तो

भगवान ने उसकी पुकार सुन ली। नामदेव को घोड़ा मिल गया पर पहले ही दिन वह गिर गया और लंगड़ा हो गया। अब उसकी सम्भाल भी नामदेव को ही करनी पड़ी। नामदेव ने निश्चय किया——आगे से कुछ नहीं मांगूंगा।

मांगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख,
मांगन मरन समान है, मत कोई मांगे भीख।

एक माई ने बहुत इच्छा करके भगवान से दो बेटे लिए, एक पागल निकला, एक अंधा पैदा हुआ। दोनों की संभाल करनी पड़ी।

सिद्धांत : मांग कर जो लेगा उससे सुख नहीं मिलेगा।

261. राजा ने रानियों से पूछा क्या चाहिए?

एक राजा की तीन रानियां थीं। राजा बाहर जा रहा था तो तीनों से पूछा क्या चाहिए। एक ने कहा——'नौलखा हार चाहिए।' दूसरी ने कहा——'मोटर गाड़ी चाहिए।' तीसरी ने कहा——'मुझे कुछ नहीं चाहिए, बस आप ही लौटकर आ जाएं।' राजा जब लौटा तो एक के लिए नौलखा हार लाया, दूसरी के लिए मोटर और तीसरी जिसने कुछ न मांगा था उसे राजा ने अपना आप ही दे दिया। जिसे राजा मिल गया उसे बाकी सब तो अपने आप ही मिल गया।

सिद्धांत : भगवान हमें अपना आप देना चाहता है, हम मांगकर अपना प्रारब्ध खराब कर रहे हैं।

262. एक आदमी ने राजा से भूसा मांगा

राजा ने एक आदमी से कहा——'तू जो चाहे मांग ले। सब देने को तैयार हूं।' आदमी ने कहा——'थोड़ा भूसा चाहिए।' राजा ने कहा——'अरे मूर्ख! आज तो तेरा दिन था। तूने मांगा भी तो क्या मांगा?'

सिद्धांत : जब हम गुरु से टके-टके की चीज मांगते हैं तो भगवान हंसता है कि पूरा आत्म-धन लेने की जगह क्या मांगा। सत्संग तो कल्पवृक्ष है।

263. आदमी ने मित्र को पत्र लिखा

एक आदमी बहुत दिनों से अपने मित्र से मिला नहीं था, इसलिए उसे वह बहुत लम्बी चिट्ठी लिख रहा था। एक-डेढ़ घंटे तक वह चिट्ठी लिखता ही रहा। खतम करके सिर उठाया तो देखता है कि मित्र सामने खड़ा है। पूछा कि तुम कब आए। वह बोला——'आधे घण्टे से खड़ा हूं पर तुम इतने तन्मय थे कि तुम्हें Disturb करना ठीक न समझा।'

सिद्धांत : 1. इसी प्रकार जब तक भगवान को पाने की इच्छा करते रहते हैं तब तक वह नहीं मिलता। जिस क्षण इच्छा छोड़ी, वह मिला ही पड़ा है।

2. इच्छा पूर्ति के लिए मूल्य चुकाना पड़ता है और वह है इच्छाओं का त्याग।

वासना

264. संकल्प में काम-वासना आएगी

एक बार शिवजी ध्यान में बैठे थे तो कामदेव ने उन पर

जोर से वार किया। शिवजी ने ऐसा त्रिशूल लगाया कि कामदेव वहीं खत्म हो गए। उनकी स्त्री रति वहां रोती हुई पहुंची और शिवजी से कहा—'मेरा पति वापस दो।' शिवजी बोले—'वह मर गया, अब स्थूल में वापस नहीं आ सकता पर तुम मांगती हो तो सूक्ष्म में देता हूं कि जो इसका संकल्प करेगा उसके पास ही यह आएगा।'

265. राजा सूअर के जन्म में बोलता है मेरी सुअरी कहां जाएगी

एक राजा को भविष्यवाणी हुई कि उसे अगले जन्म में सूअर की योनि प्राप्त होगी। राजा ने अपने बेटे से कहा, तू मुझे Shoot कर देना ताकि मैं जल्दी सूअर की योनि से मुक्त हो सकूं। बेटे को जगह बताई कि मैं इस जंगल में यहां रहूंगा। शीघ्र ही राजा का शरीर शांत हो गया और वह सूअर बना। कुछ समय बीत जाने पर बेटा निश्चित जगह पर पहुंचा। वहां एक सूअर था। उसको शूट करने लगा तो सूअर बोला—'मेरी सूअरी कहां जाएगी?'

सिद्धांत : हर जन्म में मनुष्य वासना की खातिर भटकता रहता है।

266. बूढ़े ने कहा दुकान पर कौन गया

एक बूढ़ा शरीर छोड़ रहा था तो सब बेटे उसके सामने खड़े थे। बूढ़ा एक-एक के लिए पूछ रहा था, नम्बर एक

कहां है? तो नम्बर एक बोला, हां। ऐसे सबका नम्बर Tally हो गया और बूढ़े ने देखा सभी यहीं हैं तो बोला—'फिर दुकान पर कौन गया है?'

सिद्धांत : अंत समय में भी माया की आसक्ति नहीं जाएगी।

267. बुढ़ापे में भी वासना

एक बूढ़ा मर रहा था तो इशारा करने लगा जैसे कि कुछ कहना चाहता हो। मरने के टाइम कई लोगों की बोली चली जाती है। घर वालों ने सोचा, यह शायद बताना चाहता है कि इसने धन-दौलत कहां छिपाई है। उन्होंने उसे 100/- का कीमती Injection दिलवाया जिससे अंतिम क्षण कुछ बोल सके। बोली आई तो उसने कहा कि गाय झाड़ू खा रही है।

सिद्धांत : जितना आदमी बूढ़ा होता है उतनी पदार्थ भावना पक्की होती जाती है।

268. बाप-बेटी इकट्ठे न बैठें

एक गुरु ने शिष्य को बताया कि काम अति बलवान है—पिता-पुत्री को भी संग नहीं बैठना चाहिए। ब्रह्मा भी अपनी बेटी पर आशिक हो गया था। शिष्य को यह बात समझ में नहीं आई। गुरु ने कहा Practical में बताऊंगा। शिष्य रात के समय ध्यान में बैठा था। गुरु स्त्री का वेश बदलकर दरवाजे पर आया और बोला—'दरवाजा खोल दीजिए। मैं अबला बरसात में भीग रही हूं।' मधुर सुरीली

आवाज सुनकर शिष्य ने दरवाजा खोल दिया। गुरु घूंघट के भीतर से कुछ आवाजें करता रहा। शिष्य की काम-वासना जाग गई। वह उसके नजदीक आया, गुरु ने घूंघट उठा दिया, शिष्य दंग रह गया और बहुत शर्मिन्दा हुआ।

सिद्धांत : काम-वासना बलवान है। परहेज अच्छा है।

269. पाराशर ऋषि मोहिनी पर मोहित हुए

पाराशर ऋषि ने बहुत तपस्या की थी पर एक बार नदी पार जाते हुए सत्यवती नाम की मछुआरिन पर मुग्ध हो गए। काम उनके वश में न रहा। दिन के वक्त ही उनकी चाह हुई। सत्यवती ने कहा—'इतना सब तुम्हारे वश में है—तुम्हारे छू करने से बादल आ जाता है, सूरज गायब हो जाता है पर काम पर विजय नहीं पाई?'

सिद्धांत : माया प्रबल है। ऋषि-मुनियों को भी भुला देती है। ब्रह्मज्ञान से ही पूर्ण सावधानी मिलती है।

लोभ

270. भर्तृहरि ने पान के थूक में हाथ डाला

भर्तृहरि कहीं जा रहे थे। रास्ते में कुछ लाल-लाल चमक रहा था। उन्होंने समझा लाल (माणिक) गिरा पड़ा है। उसे उठाने के लिए हाथ लगाया तो मालूम पड़ा पान की पीक है। वह हमेशा के लिए—मायावी बुद्धि कैसी है—जान गया और सुजाग हुआ।

सिद्धांत : माया को जान लो।

271. लोभ में राजा ने कुत्ते के साथ खाया

एक संत के पास एक राजा ज्ञान लेने आता था। संत को किसी ने बढ़िया हीरे की अंगूठी भेंट की। संत ने सोचा देखूं राजा का मोह निकला है या नहीं। राजा ने संत के हाथ में अंगूठी देखी तो सोचा ऐसी अंगूठी तो हमारे खजाने में भी नहीं है। संत ने कहा—'यह अंगूठी मैं उसको दूंगा जो कुत्ते के साथ खाना खाएगा।' राजा ने सोचा—'गुरु और मैं ही तो होंगे और तो कोई नहीं होगा।' राजा ने कुत्ते के साथ खाना स्वीकार किया। गुरु ने खाना सामने रखा। पहले कुत्ते ने मुंह डाला, फिर राजा हाथ से खाने लगा। गुरु ने कहा—'ऐसे नहीं, कुत्ता जैसे मुंह डालकर खाता है वैसे ही खाओ।' राजा जैसे ही खाने लगा, गुरु ने एक चमाट लगाई कि देखो, लोभ कितना गिराता है, मनुष्य होकर कुत्ते के साथ खाने को भी तैयार हो जाता है। ऐसा तो नहीं कि तुम्हारे खजाने में हीरे कम हैं?

सिद्धांत : लोभ पाप का मूल है।

272. रानी ने लालच में रेस गंवाई

एक रानी घोड़े चलाने में बहुत होशियार थी। उससे कोई जीत नहीं सकता था। घुड़सवारी की रेस हुई तो सबका अनुमान था रानी ही जीतेगी। जो अन्य लोग रेस में भाग ले रहे थे उन्हें पता लगा कि रानी को सोने-चांदी का शौक है। रेस शुरू हुई तो रानी सबसे आगे निकल गई पर उसने देखा रास्ते में सोने की ईंटें रखी हैं। वह उन्हें उठाने को रुकी तो दूसरे जन

आगे हो गए। रानी ईंटें उठाकर फिर घोड़े को भगाने लगी तो घोड़ा भाग नहीं पाया क्योंकि ईंटों से वजन बढ़ गया था।

सिद्धांत : लोभ बुरी बला है। लोभी कभी जीत नहीं सकता। दौलत दो लात लगाती है। आए तो अंधा करे, जाए तो कमर चढ़।

273. जमीन के लिए जान गंवाई

एक देश के सिपाही लड़ाई जीतकर आए। उसमें से चार ने बहुत बहादुरी दिखाई थी। राजा उन्हें इनाम देना चाहता था। राजा ने कहा—'तुम सूरज उभरते कल चारों दिशाओं में चारों भागना शुरू करना और सूरज डूबने तक वापस आ जाना। जितनी जमीन तक दौड़ोगे उतनी जमीन तुम्हारी।' चारों दौड़ पड़े पर लालचवश दौड़ते ही रहे। लौटने की नहीं सोची। उनमें से एक हांफता-हांफता वापस पहुंचा, परंतु पहुंचते ही गिर गया और शरीर ही शांत हो गया। बाकी तीन का पता ही नहीं लगा। राजा ने देखा, लालच का क्या नतीजा होता है!

सिद्धांत : माया ऐसी है जो सावधान न होगा तो लालच में मरेगा।

274. निन्यान्वे का फेर

एक गरीब आदमी अपनी पत्नी के साथ छोटी-सी झोंपड़ी में रहता था। दिन-भर मेहनत करता, थोड़ी-सी मजदूरी पाता और सुख-शांति पूर्वक जीवन निर्वाह करता। उसकी झोंपड़ी के सामने एक साहूकार का मकान था। सब धन-दौलत होते हुए भी वह बहुत दुखी और परेशान रहता था। एक दिन एक

संत साहूकार के पास आया। साहूकार ने कहा—'मुझे सुखी होने का राज बताइए।' संत ने कहा कि उसके दुख का कारण उसकी धन-दौलत है। साहूकार संत के वचन Test करना चाहता था। उसने चुपके से एक थैली में 99/- रखकर गरीब के झोंपड़े में छोड़ दी। अगले दिन देखा तो गरीब की झोंपड़ी में चूल्हा नहीं जला और पति-पत्नी आपस में झगड़ रहे थे। साहूकार ने जाकर पूछा—'भाई आज तुम्हारे यहां चूल्हा नहीं जला?' वह बोला—'हमें 99/- की एक थैली झोंपड़ी में मिली तो हमने सोचा हफ्ते में एक दिन खाना नहीं खाएंगे तो कुछ हफ्तों में पूरे सौ हो जाएंगे।'

सिद्धांत : धनवानों को जितना मिलता है वे उतने ही दरिद्र हो जाते हैं। Much Wants More.

275. हीरों जड़ित नाव

एक नदी के किनारे एक अति सुन्दर नाव थी। हीरों से जड़ी सोने से मंढ़ी। एक संत को नदी पार जाना था। वह उस में बैठा और उसका सुख लेकर दूसरे किनारे पहुंच गया। फिर वहां एक साहूकार आया। नाव देखकर वह लुभायमान हो गया। बोला—'इतनी कीमती नाव पानी में खराब हो जाएगी। इसे तो सिर पर रखकर उस पार ले जाता हूं।' उसने उसे सिर पर रख लिया। बीच नदी में पानी गहरा था। उससे नाव न सम्भाली गई और नाव के सम्भालने के चक्कर में वो खुद ही डूब गया।

सिद्धांत : माया को भले प्रयोग में लाओ पर उसके लोभ में न फंसो। ज्ञानवान माया में अटकता नहीं है।

276. पंडित ने महाभारत सुनाया

राजा, रानी, उनके बहू-बेटे एक पंडित से महाभारत सुनते थे। राजा कंजूस था। उसने कहा, महाभारत की कथा पूरी होगी तो पैसे मिलेंगे। पूरी होने पर दक्षिणा मांगी तो राजा ने कहा—'अभी तो कथा सुनी है जब Practical में फायदा होगा तो देंगे। धृतराष्ट्र के 100 पुत्र थे, जब मेरे 100 पुत्र होंगे तब दूंगा।' रानी के पास गया तो रानी बोली, द्रौपदी जैसे जब मेरे भी 5 पति होंगे तब दूंगी। बेटे के पास गया तो बोला—'दुर्योधन ने एक इंच जमीन भी बिना लड़ाई के नहीं दी। मैं भी अपने पिता से लड़ाई करके जब सारा राज्य लूंगा तब दक्षिणा दूंगा।' बहू के पास गए तो बोली—'जैसे कुन्ती ने देवताओं से पुत्र किए, मेरा पति भी पीला है, जब मुझे देवता से पुत्र होगा तब दक्षिणा दूंगी।' पंडित सिर पीटने लगा कि सबने गलत अर्थ उठाया है।

सिद्धांत : गुरु लोभ, शिष्य लालची, दोनों खेलत दांव।
दोनों डूबे बाप रे, बैठे पत्थर की नांव।

277. सोने के 2½ (ढाई) मटके

एक आदमी को जंगल में 2½ मटका सोना मिला। उसने सोचा, थोड़ा बचाऊंगा तो यह आधा मटका भी भर जाएगा और मेरे पास 3 मटका सोना हो जाएगा। मटका भरने की लगन में उसने खाना-पीना बंद कर दिया, सारा धन बचाकर मटके में डालने लगा। इसी चिंता में बीमार हो गया। उधर से दरवेश आया।

बोला—'पहले तो तुम सुखी रहते थे अभी क्या हो गया? तुम्हें 2½ मटके तो नहीं मिले?' आदमी बोला—'हां 2½ मटके को तीन करने की चिंता में ही मेरा यह हाल हुआ है फिर भी वह भरता नहीं है।' दरवेश ने कहा—'वह कभी नहीं भरेगा। जल्दी से 2½ मटके बाहर फेंको।'

सिद्धांत : इच्छारूपी छेद कभी नहीं भरता।

277 A.जगत कुत्ते की पूंछ

जगत कुत्ते की पूंछ या घुंघराले बालों जैसा है जो कभी सीधा नहीं होता।

सिद्धांत : बदले न दुनिया, बदल जाएं हम।

278. लालों की छोली

एक आदमी समुद्र के किनारे बैठे पूजा कर रहा था। समुद्र की लहर के साथ लालों की छोली आई। पर साथ में बहुत मिट्टी और कचरा भी था। आदमी ने सोचा, दूसरी छोली आए तो कचरा उतारूं। दूसरी लहर के साथ सारे लाल वापस समुद्र में चले गए।

सिद्धांत : Time and Tide Wait for None.

मोह

279. राजा भर्तृहरि को मोह के कारण दो जन्म लेने पड़े

राजा भर्तृहरि को ज्ञान और तप से बहुत प्यार था। वह निर्जन वन में रहकर साधना में लगा रहता। एक दिन उस

जंगल में एक शिकारी हिरणी का शिकार कर रहा था। राजा भर्तृहरि की कुटिया के सामने ही एक छोटी-सी नदी थी। हिरणी तेज भागती हुई उस नदी के ऊपर छलांग लगाने लगी तो उसके गर्भ से हिरण का बच्चा गिर गया और वह छलांग लगाते ही मर गई। भर्तृहरि को दया आ गई कि अब बच्चे की संभाल कौन करेगा। सारे दिन उस पर यही चिंतन चलता रहा और वह ही उसको पाल-पोसकर बड़ा करने लगा। एक दिन वह बच्चा खो गया और बहुत ढूंढ़ने पर भी न मिला। भर्तृहरि का शरीर उसकी खयाल में छूटा तो उसे एक जन्म हिरण का भी लेना पड़ा। दूसरे जन्म में वह जड़ भरत के नाम से जाना गया क्योंकि वह जड़ रहता था। हमेशा सुजाग रहने से जड़ भरत पुनः मोह से मुक्त हो गया।

सिद्धांत : मोह है तो 84 का चक्कर तैयार है।

280. संत के दूध में तोबा

एक औरत के यहां संत आए। उसने सत्कार किया फिर कहा भोजन ग्रहण कीजिए। संत ने कहा फलाहारी हूं तो स्त्री ने कहा दूध पीजिए। संत ने कहा ठीक है। स्त्री दूध का गिलास भर लाई तो अन्दर से Wrong Vibration मिली। उन्होंने पूछा—'इसमें क्या डाला है?' स्त्री ने कहा—'थोड़ी शक्कर डाली है।' पर संत को संतोष न हुआ तो संत ने कहा—'और भी कुछ डाला है।' स्त्री ने सोचा तो एहसास हुआ कि दूध गिलास में डाल रही थी तो मलाई गिर गई जिसे वह अपने बेटे के लिए रखना चाहती

थी। तो उसके मुंह से निकल गया तोबा। तोबा वाला दूध संत स्वीकार नहीं करते हैं।

सिद्धांत : मोह वाले हृदय में बैठे हों तो भगवान कैसे बैठेगा।

281. लोहे की हथकड़ियां

एक लोहार था जो बहुत मजबूत लोहे की हथकड़ियां बनाता था। एक बार उसके शहर पर दूसरे राजा ने चढ़ाई की और सब व्यापारियों और काम धंधे वालों को जेल में डाल दिया। लोहार ने सोचा, मैं खुद हथिकड़ियां बनाने वाला हूं, जो भी हथकड़ी मुझे डालोगे मैं उसे खोलकर निकल जाऊंगा पर जब हथकड़ी देखी तो खुद की ही बनाई हुई बहुत मजबूत हथकड़ी थी जो खुल ही नहीं सकती थी। वह रोने लगा और भगवान को पुकारने लगा।

सिद्धांत : ऐसे ही मनुष्य खुद माया में फंसता है और फिर रोता है।

282. हम स्वयं बंधन में आते हैं

एक आदमी ने पेड़ के तने को कसकर पकड़ लिया। इतना जोर से पकड़ा कि उसकी छाल से आदमी के शरीर में घाव होने लगे और वह पीड़ा में आ गया। रास्ते से संत जा रहा था।

आदमी ने उसे पुकारा और कहा—'मुझे इस पेड़ की

जकड़ से छुड़ा दो।' संत ने कहा—'तुमने ही पेड़ को पकड़ा है और हाथ खोल दो।'

सिद्धांत : असल में बंधन है नहीं, सब हमारे मन के बनाए हुए हैं।

283. मोह में राजाई दी

एक राजा का रानी से बहुत ही लगाव था। इश्क में उसने सारी राजाई रानी को दे दी। जोश ठंडा हुआ तो फिक्र हुई कि कैसे वापिस लूं। संत के पास गया। संत बोला—'राग में आकर दी, द्वेष से वापिस आ जाएगी।' अब राजा रानी से द्वेष और क्रोध करने लगा। रानी तंग आ गई और बोली—'मुझे तुम्हारी राजाई नहीं चाहिए।'

सिद्धांत : समय-समय पर सब विकार काम आते हैं।

क्रोध

284. शांतिनाथ क्रोधीनाथ

एक आदमी को बहुत क्रोध था। नाम पड़ गया उसका क्रोधीनाथ।

क्रोध के आवेश में एक दिन उसने अपनी पत्नी का खून कर दिया। वह भागकर एक संत के पास पहुंचा। वहां वह शांतिनाथ के नाम से रहने लगा। कुछ समय बीता। एक दिन शांतिनाथ का लेक्चर होने वाला था। उसके गांव के लोग भी लेक्चर सुनने के लिए आए थे। उन्होंने उसे पहचान लिया कि यह तो वही

क्रोधीनाथ है। सोचा, बात करके देखें कि अब भी वह क्रोधीनाथ ही है या शांतिनाथ हो गया है। एक उसके पास गया और बोला—'आपका शुभ नाम क्या है?' संत ने कहा—'शांतिनाथ।' थोड़ी देर में फिर पूछा—'आपका शुभ नाम क्या है?' संत ने उसकी ओर घूरकर देखा और कहा—'अभी बताया था ना—शांतिनाथ।' 5 मिनट के बाद फिर उस आदमी ने खड़े होकर पूछा—'आपका शुभ नाम क्या है?' अब की संत झल्ला उठा और बोला—'कितनी बार आपको बताना होगा कि मैं शांतिनाथ हूं। आपका दिमाग खराब है क्या?'

सिद्धांत : गेरु वस्त्र से नहीं पर निश्चय से संत होते हैं। द्वेष से संन्यास नहीं होता। सच्चे वैराग्य से आपै संन्यास होता है।

रीस-ईर्ष्या

285. रीस

एक पतिव्रता औरत से पति ने पानी मांगा। वह उस समय धान कूट रही थी। जैसे ही पति ने पानी के लिए कहा, उसका डण्डा जिधर था उधर की हवा में ठहर गया। उसने उसी समय पति को पानी दे दिया। पड़ोस वाले आदमी ने यह दृश्य देखा तो अपनी पत्नी से पूछा तुम ऐसी पतिव्रता हो? पत्नी को जोश आया, उसने कहा—'क्यों नहीं, आज मैं भी धान कूटूंगी, आप मेरे से पानी मांगना।' उसने धान कूटना

शुरू किया, पति ने पानी मांगा, उसने डण्डा आसमान में अधर में छोड़ दिया पर डण्डा वहां टिकने की जगह उसके सिर पर आकर गिर पड़ा। वह चिल्ला पड़ी क्योंकि उसके खून बहने लगा। पति ने कहा, रीस नहीं करना वैसी बन के दिखाना।

सिद्धांत : रीस करने से आई हुई शक्ति भी चली जाती है।

286. राधा को रुक्मिणी ने गर्म दूध पिलाया

रुक्मिणी जी राधा से हमेशा ईर्ष्या करती थीं। एक दिन उन्होंने बहुत गर्म दूध राधा जी को पिला दिया। बाद में रुक्मिणी कृष्ण भगवान से मिलीं तो देखा पांव में छाले पड़े हैं जैसे पांव जल गए हों। यह हुआ क्योंकि राधा के चित्त में कृष्ण के चरणों का वास है।

सिद्धांत : जब भगवान का पूरा शरणागत होते हैं तो वे ही सब दुख उठाते हैं और भक्त सब कष्ट से बच जाते हैं।

10. अहंकार के दृष्टांतों की सूची

287. सब कार्य अरस-परस
288. राजा भर्तृहरि ने अपना अहंकार पहचाना
289. शिवाजी को अभिमान हो गया
290. ब्रह्म ही विजयी है
291. नाम के लिए मंदिर मूर्ति बनवाई
292. लम्बी नाक वाले आदमी पर चींटियां
293. हिटलर कर्त्तापने में पकड़ा गया
294. फुटबॉल का खेल
295. जंवाई के दिन बिन बुलाया मेहमान
296. सिकंदर का गर्व
297. कृष्ण ने गोवर्धन उठाया
298. झाड़ू वाली ने उपकार किया
299. नारद को सुरीली वीणा बजाने का अहं हुआ
300. नारद को बंदर का मुंह मिला
301. पांच नम्बर मेहमान नहीं गया

अहंकार के अन्य दृष्टांत

124. तू है निर्बल वो बलवान
168. नारद और शुकदेव में कौन बड़ा
483. सत्संग की आधी घड़ी

11. मरना-मिटना के दृष्टांतों की सूची

302. रामतीर्थ ने चिट्ठी लिखी
303. मैं मर गया
304. संन्यासी कैसे रहें, गृहस्थ कैसे रहें
305. संत ने कहा प्रलय करता हूं
306. त्रिलोकी का नाश हो जाएगा
307. मन की पूरी मौत करना है
308. कब्र की शरण ली

मरना-मिटना के अन्य दृष्टांत

1. गुरु वाक्यं सत्यं कर
2. गुरु ने कहा हट जा
3. गुरु नानक ने शिष्य से कहा थल्ला बनाओ
4. गुरु नानक ने लहणा को कहा कितना बजा है
5. गुरु ने अपने शिष्यों को कहा अपना खून दो
6. रामतीर्थ ने शिष्यों से कहा पैसा नदी में फेंको
7. अधिक मूल्यवान गुरु आज्ञा
8. गुरु नानक ने लहणा को कहा मुर्दा खाओ
9. गुरु ने शिष्य से कहा रुमाल शराब में डुबा लाओ
10. गुरु ने कहा पीठ पर लात रख
11. मैं मुआ तो खुद खुदा हुआ
54. गुरु-शिष्य परीक्षा, नहर वाला
118. ऐसा घर कहां, मृत्यु नहीं जहां

12. कर्मयोग के दृष्टांतों की सूची

309. कर्मयोग की शक्ति
310. कर्म में अकर्म, अकर्म में कर्म

कर्मयोग के अन्य दृष्टांत

304. संन्यासी कैसे-गृहस्थ कैसे

10. अहंकार

287. सब कार्य अरस-परस होता है, अहंकार कैसे

एक बार हाथों को अहंकार हुआ कि मैं सेवा करता हूं, पेट तो केवल खाता ही खाता है। उसने पेट को कह दिया कि तू तो सिर्फ खाता ही है। हाथों का ऐसा कहना था कि पेट ने खाना बंद कर दिया। अब तो हाथों की ताकत क्षीण होने लगी। फिर हाथों ने समझा सब कार्य अरस-परस होता है, अहंकार कौन करे।

सिद्धांत : कोई भी कार्य तब पूरा होता है जब हजार हाथ लगते हैं। कौन अहंकार करे मैंने किया?

288. राजा भर्तृहरि ने अपना अहंकार पहचाना

राजा भर्तृहरि जब गुरु के पास ज्ञान ले रहे थे तब गुरु ने उन्हें अपने घर से भिक्षा लाने को कहा। राजा महल गया, भिक्षा मिली, पर जब वो वहां खड़ा था तब आया ने ऊपर से कचरा फेंका जो सीधे राजा के सिर पर पड़ा। राजा ने एकदम से ऊपर देखा—उसकी दृष्टि में था कि मैं राजा हूं और बोला—'तूने आया होकर मेरे ऊपर कचरा फेंका है।'

तो आया ने कहा—'अभी तक मान-अपमान लगता है तो साधु होना दूर है।' राजा का सिर नीचे हो गया कि ठीक कहती है यह। अहं को चोट लगी तो वह सुजाग हो गया।

सिद्धांत : सच के रास्ते में चोटें-ठोकरें सुधारती हैं।

289. शिवाजी को अभिमान हो गया

शिवाजी को अभिमान हो गया कि मैं लोगों को भोजन देता हूं। मैं बड़ा उदार हूं, बड़ा दाता हूं। संत रामदास ने उन्हें बुलवाया, कहा—'अभिमान से सब चौपट हो जाता है। एक चट्टान उठाकर लाओ और इस हथौड़े से उसको फोड़ो।' जब चट्टान फटी तो देखा उसके भीतर एक जगह बनी हुई है और उसमें एक कीड़ा है और कीड़े के मुंह में चावल है और वहां थोड़ा-सा पानी भी है। फिर संत रामदास ने पूछा—'क्यों शिवा, कीड़े के मुंह में चावल तुमने रखा और पानी तुमने रखा? तो भगवान कहां नहीं है?'

सिद्धांत : सबको खिलाने वाला भगवान है।

290. ब्रह्म ही विजयी है

एक बार देवताओं ने परमात्मा के प्रताप से असुरों पर विजय प्राप्त की पर देवता भगवान को भूलकर समझने लगे हमारी विजय हुई है। भगवान ने देखा, इनका अभिमान अगर दृढ़ हो गया तो असुरों की तरह इनका भी सर्वनाश हो

जाएगा। उन पर उपकार करने के लिए ब्रह्म ने एक कौतुहल प्रकट किया जिसको देखकर देवताओं की बुद्धि चक्कर खाने लगी और उन्होंने अपने अगुवा अग्निदेव से कहा कि यह यक्ष सदृश पुरुष का पता लगाइए। अग्निदेव वहां गए पर उसमें से ऐसा तेल निकल रहा था कि वह कुछ बोलने का साहस ही न कर पाए।

अंत में यक्ष रूपी ब्रह्म ने ही पूछा—'तू कौन है और तू क्या कर सकता है?' अग्नि ने बताया कि वह कौन है और कहा—'इस पृथ्वी में जो कुछ जड़-चेतन है उसे जलाने की ताकत मुझमें है।' ब्रह्म ने सोचा इसका अहंकार मिटाना चाहिए।

फिर ब्रह्म ने उसमें से अपनी शक्ति खींच ली और एक घास का तिनका वहां डालकर बोले—'इस तिनके को तू जला।' अग्नि ने अपना सारा वेग लगा दिया पर तिनके का कुछ न कर सके, अंत में नत-मस्तक हो लौट आए कि मैं कुछ पता न लगा सका। फिर वायु देवता वहां गए और उनका भी अग्नि जैसा ही हाल हुआ।

अब देवताओं ने अपने अधिपति इन्द्र से कहा कि आप ही जाइए। देवराज को अभिमान में भरा देख यक्षरूपी ब्रह्म वहां से अंतर्धान हो गए, उसका अहं चूर करने के लिए उससे बात तक नहीं की।

पर इन्द्र ने हिम्मत न हारी। वे ध्यान करने लगे। इतने में उन्होंने देखा, स्वयं पार्वती जी शोभा से युक्त वहां हैं। इन्द्र ने

विनयपूर्वक उनसे पूछा कि ये यक्ष कौन थे? पार्वती ने बताया—'हे इन्द्र, इस ब्रह्म ने ही असुरों को पराजित किया। तुम लोग तो केवल निमित्त मात्र हो। ब्रह्म की विजय से तुम्हारी महिमा बढ़ी और तुम्हारी पूजा होती है। अपने मिथ्या अभिमान का त्याग करो।'

सिद्धांत : जो कुछ होता है, केवल ब्रह्म की ही सत्ता से होता है।

291. नाम के लिए मंदिर मूर्ति बनवाई

एक आदमी ने रास्ते में देखा पत्थर तराशे जा रहे हैं। पूछने पर मालूम पड़ा मंदिर बन रहा है। उसने सोचा, बहुत उदार हैं यहां के लोग। आगे चला, देखा मूर्तियां बन रही हैं। और आगे बढ़ा तो देखा पत्थर पर नाम की खुदाई हो रही है। असलियत समझ में आई।

सिद्धांत : मूर्ति, मंदिर लोगों की भलाई के लिए नहीं, नाम के लिए बनाए जाते हैं।

292. लम्बी नाक वाले आदमी पर चींटियां

एक लम्बी नाक वाला आदमी सो रहा था। चींटियों ने सोचा, देखें कौन इसकी नाक के ऊपर पहले चढ़ पाता है। अलग-अलग दिशाओं से पांच-छः एक साथ ऊपर पहुंच गईं। अब उनमें तू-तू, मैं-मैं होने लगी कि कौन पहले पहुंची। इस हलचल से आदमी को नाक पर बेचैनी हुई और उसने

नाक पर एक उंगली फेर दी। ऊपर पहुंची चींटियां एक क्षण में गायब हो गईं।

सिद्धांत : हम हैं निर्बल वो है बलवान। फिर भी हम अहंकार करते हैं तो भगवान एक पल में हमें नष्ट कर देता है।

293. हिटलर कर्त्तापने में पकड़ा गया

दूसरे महायुद्ध के समय हिटलर को भय था कि विरोधी दल उसे ढूंढ़कर मार डालेंगे। अपने दुश्मनों को Confuse करने के लिए हिटलर ने अपने हमशक्ल 12 आदमी बनाए थे। Allied Forces का एक अत्यंत सुजाग Secret Agent इस Situation का सामना कर रहा था। उसको केवल हिटलर को पकड़ने के Order थे। उसने कहा—'हिटलर तुमने बहुत अच्छे हमशक्ल बनाए हैं, लेकिन एक गलती रह गई।' ऐसा सुनते ही जो असल में हिटलर था वह बोल पड़ा—'कौन-सी गलती?' और वह पकड़ा गया।

सिद्धांत : कर्त्तापन में आवाज निकल ही आती है और भूल होती रहती है। इस कारण हम पकड़े जाते हैं।

294. फुटबॉल का खेल

एक मैदान में कुछ लड़के फुटबॉल खेल रहे थे। एक गुरु और शिष्य वहां से गुजरे। शिष्य ने गुरु से पूछा—'यह जो फुटबॉल मार खाकर इधर-से-उधर जा रहा है इसमें

दोष फुटबॉल का है या लड़कों का।' गुरु ने कहा—'दोष उस हवा का है जो फूटबॉल में भरी है। वह यदि निकल जाए तो न लड़के इसे मारेंगे न यह इधर से उधर लुढ़केगी।'

सिद्धांत : अहंकार रूपी हवा जो हमारे मस्तक में है उसी के कारण हम संसार के थपेड़े खा रहे हैं और इधर-उधर भटकाए जा रहे हैं। अहंकार समाप्त तो सब शांत।

295. जंवाई के दिन बिन बुलाया मेहमान

एक आदमी ने अपने जंवाई को न्यौता दिया कि कुछ दिन हमारे यहां आकर रहें। जब यह चिट्ठी जंवाई के घर पहुंची तो एक आदमी (जो वहां रह रहा था) को मालूम पड़ गया कि जंवाई अपने ससुराल जा रहा है। वह जिस ट्रेन में जा रहा था, यह आदमी भी उसी में बैठ गया। जो गाड़ी जंवाई को लेने आई, यह पहले ही उसमें जा बैठा। जंवाई के ससुराल पहुंचकर ये पहले ही खाने की टेबल पर बैठ जाता और जंवाई के कमरे में घुसकर उसके कपड़े आदि भी आराम से उठाकर पहन लेता। ससुर यह सोचकर कि जंवाई का कोई मुंह लगा दोस्त है, चुप रहता और जंवाई समझता कि ससुर के यहां यह सब से हिला-मिला है, सब कुछ सह लेता। एक दिन दोनों तंग आ गए और आपस में बातचीत की तो मालूम पड़ा कि दोनों को धोखा हुआ है। इस आदमी ने जब

इन्हें बात करते देखा तो समझ गया कि इसके बारे में ही Discussion हो रहा है तो पिछले दरवाजे से खिसक गया।

सिद्धांत : अहंकार भी बिना बुलाए मेहमान है। इसको पहचान लो तो यह नहीं रहता।

296. सिकंदर का गर्व

सिकंदर अनेक राजाओं को हरा अपनी विशाल सेना के साथ एक दिन बड़े अभिमान से जा रहा था। रास्ते में सब उसे झुककर सम्मान करते जिससे सिकंदर का अभिमान और बढ़ रहा था। उसी समय कुछ महापुरुष वहां से गुजरे। वे अपनी मस्ती में थे। उन्होंने सिकंदर की तरफ देखा तक नहीं। सिंकदर यह अपमान सह न सका। उसने सैनिकों को भेज उन संतों को बुलवाया और पूछा—'तुम्हें किस बात का गर्व है जो विश्व-विजेता सिकंदर का सम्मान नहीं किया?' एक ज्ञानवान बोले—'कुछ धरती को जीतकर अपने को वैभवशाली मानने लगे? यह मिथ्या अभिमान है क्योंकि संसार की सब चीज Changeable है। संतों की दृष्टि में तेरा यह मान, धन, बनावटी व्यक्तित्व तुच्छ है। उनकी दृष्टि में असली धन भगवान को तत्त्व से जानना है और उसकी भक्ति है।' ये तपे हुए वचन सिकंदर के अंदर गोली की तरह चले गए और उसका अहंकार टूट गया।

सिद्धांत : मन को दुनिया से मोड़कर भगवान से जोड़ दो। यही सच्चा धन है।

297. कृष्ण ने गोवर्धन उठाया

जब कृष्ण ने ब्रज वासियों को बचाने के लिए गोवर्धन उठाया तो जितने ग्वाल बाल वहां थे उन्होंने भी अपना-अपना डण्डा पर्वत के नीचे लगा रखा था। थोड़ी देर में उन्हें अहंकार आने लगा कि हम भी कुछ हैं और हमने भी गोवर्धन उठाया है। कृष्ण को मालूम पड़ गया और उन्होंने क्षण भर के लिए अपनी चितली उंगली जो कि गोवर्धन पर्वत धारे थी, हटा ली। पर्वत गिरने लगा। गोपालों को अपनी भूल का अहसास हुआ।

सिद्धांत : एक अकेला सब करे।

298. झाड़ू वाली ने उपकार किया

एक साधक किसी महात्मा के पास गया ब्रह्म-विद्या लेने के लिए। उसने प्रार्थना की कि मुझे आत्म-साक्षात्कार का उपाय बताएं। महात्मा ने एक मंत्र दिया और एक साल बाद आने को कहा। शिष्य एक साल बाद आया तो झाड़ू वाली ने उस पर गर्दा उड़ा दिया। वह उसे मारने दौड़ा। नहाकर गुरु के पास गया तो गुरु ने कहा—'अभी तो तुम सांप की तरह काटने दौड़ते हो। साल-भर और बैठकर मंत्र का जाप करो।' दूसरे साल जप करके फिर आया तो झाड़ू वाली ने उसके पैर से झाड़ू छुआ दिया। इस बार वह मारने नहीं दौड़ा पर कुछ पांच-दस कठोर वचन कह दिए। नहाकर फिर गुरु के पास गया तो संत ने कहा—'अभी तुम सांप की तरह काटते

तो नहीं पर फुंकारते हो। ऐसी अवस्था में साक्षात्कार कैसे होगा, जाओ एक साल और जप करो।' तीसरी बार आया तो झाड़ू वाली ने संत के कहने के अनुसार कचरे की बाल्टी उस पर उड़ेल दी। साधक ने झुककर उससे कहा कि—'तुमने मुझपर बड़ा उपकार किया है जो मेरे अन्दर के बड़े भारी दोष को निकाल दिया। तुम्हारी कृपा से आज मेरे मन में जरा भी निक्षेप नहीं आया। आज मेरे गुरु मुझे जरूर उपदेश देंगे।' इतना कहकर वह फिर गुरु के पास गया और चरणों में गिर पड़ा। गुरु ने गले लगाकर प्यार किया। ब्रह्म के स्वरूप का उपदेश किया। शुद्ध अंत:करण में तुरंत ही उपदेश के अनुसार धारणा हो गई। अज्ञान मिट गया। साधक निहाल हो गया।

सिद्धांत : ज्ञान तो था ही। आवरण दूर होने से उसकी अनुभूति हो गई।

299. नारद को सुरीली वीणा बजाने का अहं हुआ

एक बार नारद को अहंकार आया कि मैं कितनी अच्छी वीणा बजाकर भगवान को रिझाता हूं। भगवान सैर करते-करते नारद को ऐसी जगह ले गए जहां कुछ औरतें बैठी थीं। नारद ने देखा, वे सब परम सौंदर्यमयी थीं पर हर एक का एक-एक अंग भंग था। नारद ने पूछा—'आप सब की यह दशा कैसे हुई?' वे बोलीं, हम सातों सात स्वर वाली थीं, पर हमको एक-एक स्वर का अहंकार आ गया, उसकी वजह से हमारा एक-एक अंग भंग है। नारद को अपने सातों

स्वरों—'सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सा—का अहंकार है। पता नहीं उसकी क्या दशा होगी।'

यह सुनकर नारद प्रभु चरणों में गिर पड़ा और अपना अहंकार मिटाकर क्षमा याचना करने लगा।

सिद्धांत : अहंकार सब दुखों की जड़ है।

300. नारद को बंदर का मुंह मिला

नारद को अहंकार आया कि मैं भगवान का सच्चा भक्त हूं तो भगवान मेरी हर बात पूरी करेंगे। उधर राजकुमारी का स्वयंवर था तो नारद ने सोचा, भगवान से हरि रूप मांग लेता हूं तो राजकुमारी मुझे ही वरमाला पहनाएगी। संस्कृत भाषा में बन्दर को हरि कहते हैं, सो भगवान ने नारद का अहंकार मिटाने और काम-वासना से बचाने के लिए उन्हें बंदर की शक्ल दे दी। नारद खुशी-खुशी स्वयंवर में राजकुमारी के सामने जाकर खड़े हो गए। राजकुमारी पीछे हट गई और सब हंसने लगे। नारद ने जाकर शीशे में देखा तो बहुत गुस्सा हुए और भगवान को जाकर बोल दिया—'आपको भी मेरी जरूरत पड़ेगी।'

सिद्धांत : भगवान भक्त को बचाने के लिए सब लीला करते हैं।

301. पांच नम्बर मेहमान नहीं गया

एक आदमी के पास पांच मेहमान आए। पहले तो आदमी

ने खातिरदारी की, पीछे देखा ये जाते नहीं, सोचा, क्या करूं? संत के पास गया, उसने कहा—'बेइज्जती करो ये चले जाएंगे।' उस आदमी ने कहा—'मुझे काम है।' एक मेहमान बेइज्जती समझकर चला गया। दूसरे दिन खाना कम बनाया, दूसरा भागा। तीसरे दिन बिस्तर नहीं दिया, चौथा भागा। पांचवां नहीं गया। उस पर पानी डाला, सर्वेंट क्वार्टर में रखा और कहा—'जब जरूरत पड़ेगी तभी बुलाऊंगा।'

सिद्धांत : 5 मेहमान—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं। चार विकार बेइज्जती से चले जाते हैं, पर पांचवां नहीं जाता, उसे बाहर रखते हैं पर उसकी जरूरत नहीं पड़ती।

11. मरना-मिटना

302. रामतीर्थ ने चिट्ठी लिखी

रामतीर्थ ने एक समय अपने बाप को चिट्ठी लिखी, तीर्थ मर गया, औरत को लिखा, राम मर गया।

303. मैं मर गया

एक आदमी ने देखा सामने से शव जा रहा है। सब उसे कंधे पर उठाए हैं और उस पर फूल चढ़े हुए हैं। उसने सोचा, जीते जी कोई कदर नहीं, मर जाता हूं, तो शायद आदर मिले। वह कब्रिस्तान में रहने लगा। कोई उसके लिए करुणा से खाना लाया पर ये बोला मरा हुआ क्या खाएगा? अब सब सोचने लगे यह कोई महात्मा है जो निराहारी है। सब उसे फूल चढ़ाने लगे और प्रणाम करने लगे।

सिद्धांत : कदर चाहिए तो जीते जी मरना होगा। वही अमरता है।

304. संन्यासी कैसे रहें, गृहस्थ कैसे रहें

एक राजा ने संत से पूछा, संन्यासी कैसे रहें, गृहस्थ कैसे?

संत सच्चा था, उसने कहा—'तुम्हें अनुभव कराऊं या बताऊं?' राजा ने कहा—'अनुभव कराओ।' संत राजा को एक स्वयंवर में लेकर गया। राजा का मन चलने लगा कि यह मुझे यहां क्यों लाया है, पर वह चुप रहा।

स्वयंवर में राजकुमारी ने किसी भी राजा को पसंद नहीं किया और संत के गले में माला डाल दी। संत उसी समय राजा को लेकर भागने लगा। राजकुमारी भी पीछे-पीछे भागी। भागते-भागते जंगल में आ पहुंचे और वहीं तीनों थककर बैठ गए। जिस वृक्ष के नीचे वे बैठे उसी पर कबूतर-कबूतरी रहते थे। उन्हें भाव आया, हमारे घर मेहमान आए हैं, इनको भोजन देकर तृप्त करें। कबूतर गया और चोंच में एक लकड़ी लेकर आया। फिर आग लाया और कबूतर-कबूतरी ने अपने आप को उस आग में भून डाला। फिर बच्चों ने भी खुद को भून दिया। इस प्रकार गृहस्थ कबूतर-कबूतरी ने राजा, संत और राजकुमारी के लिए भोजन तैयार किया। ऐसे में संत ने राजा को दिखाया कि गृहस्थ होवे तो औरों को जलकर भी तृप्त करे और संन्यासी होवे तो कोई सुख ग्रहण न करे।

सिद्धांत : निष्काम सेवा में ही सुख है।

305. संत ने कहा प्रलय करता हूं

एक नव-दम्पती कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक संत बैठा कह रहा था—'मैं दुनिया का प्रलय करता हूं।' उन्होंने पूछा—'अरे अभी तो हमारा विवाह हुआ है, आप प्रलय क्यों

कर रहे हैं?' उसने कहा—'तुम्हारे लिए नहीं, मैं अपने लिए अपने अन्दर से दुनिया का प्रलय करता हूं।'

सिद्धांत : अपनी मौत करना है दूसरे की नहीं।

306. त्रिलोकी का नाश हो जाएगा

एक राजा शिकार खेल रहा था। ज्यों ही जानवर को मारने चला, जानवर बोला—'हे राजन! मेरा वध न करना, त्रिलोकी का नाश हो जाएगा।' राजा बोला—'मैं तो तेरा वध कर रहा हूं, त्रिलोकी का नाश थोड़े ही कर रहा हूं।' वह बोला—'मेरे लिए तो त्रिलोकी का नाश हो जाएगा ना।'

सिद्धांत : खुद को मिटाया तो जगत खुद मिट जाएगा।

307. मन की पूरी मौत करना है

एक मतवाला हाथी जंगल में मस्त होकर घूमता रहा था। एक महावत ने उसे फंसाया और जंजीर में बांध दिया। हाथी जंजीरों से बंध गया तो उसने सोचा, थोड़ी देर चुपचाप पड़ा रहता हूं। थोड़ी देर के बाद हाथी ने डबल जोर लगाया और जंजीरें तोड़ दीं। महावत और भी जोर से हाथी के साथ लड़ा और उसे बेहोश करके छोड़ा। वह समझा हाथी मर गया है। कुछ देर बाद हाथी ने आंख खोली तो महावत जान गया कि इसको मारें बिना चैन नहीं है। उसे ऐसा जोश आया कि हाथी को खलास करके ही छोड़ा।

सिद्धांत : मन रूपी हाथी को पूरा मारना है।

308. कब्र की शरण ली

एक चोर चोरी करके भाग रहा था। पुलिस पीछे लगी हुई थी। चोर के पास बचने का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। रास्ते में कब्रिस्तान पड़ा। वह एक कब्र में कूद गया और मिट्टी ऊपर डाल ली। ताजी खुदी हुई मिट्टी देखकर पुलिस उधर ही आ पहुंची। पुलिस ने तलवार डाली, खून से लथपथ होकर निकली। चोर के कंठ तक चीख आई पर उसने बाहर न निकलने दी क्योंकि उसने सोचा, कब्र की शरण ली है तो आवाज कैसे करूं।

सिद्धांत : गुरु का ज्ञान कब्र की शरण लेने जैसा है। घर वाले तलवार लगाते हैं तो मौन रहना है।

12. कर्मयोग

309. कर्मयोग की शक्ति

एक योगी पेड़ के नीचे समाधि लगाए बैठा था। ऊपर बैठी चिड़िया ने उस पर बीट कर दी।

उसे बहुत गुस्सा आया और उसने नजर ऊपर कर जो चिड़िया की तरफ देखा तो वह उसी समय जल कर नीचे गिर पड़ी।

संन्यासी में अहंकार आ गया कि मैं सिद्ध हो गया हूं। अहंकार के मद में वह भिक्षा लेने निकल पड़ा और जिस घर के दरवाजे पर भिक्षा के लिए खड़ा हुआ, उस घर की स्त्री को इसके लिए भिक्षा लाने में देर हो गई।

संन्यासी गुस्से से आग बबूला होने लगा तो स्त्री ने दरवाजे पर आकर कहा—'मैं कोई चिड़िया नहीं हूं जो तुम्हारे गुस्से से जल जाऊंगी।' संन्यासी दंग रह गया कि यह बात इसे कैसे मालूम पड़ी।

स्त्री ने कहा—'सच्चाई से सास-ससुर और पति की सेवा का धर्म पालने से दिव्य-दृष्टि खुद आ जाती है। उस समय भी मैं बीमार पति और सास-ससुर की सेवा करने में

लगी थी। तुम्हें और जानना हो तो तुम सदना कसाई (जो इसी गांव में रहता है) के पास जाओ।'

संन्यासी सदना कसाई की दुकान पर पहुंचा तो सदना बोला—'तुम पतिव्रता स्त्री के दरवाजे से आ रहे हो?' संन्यासी फिर दंग रह गया। उसे मालूम पड़ा कि सदना माता-पिता की सेवा में और अपने पारम्परिक व्यवसाय में सच्चाई बरतता है इसलिए उसमें भी अद्‌भुत शक्तियां आ गई हैं।

सिद्धांत : गृहस्थ आश्रम सबसे ऊंचा है।

310. कर्म में अकर्म, अकर्म में कर्म

एक दिन भगवान कृष्ण और राधा जी जंगल में घूम रहे थे।

वहां एक संन्यासी की कुटिया देखी•तो राधा जी को आकर्षण हुआ कि संत कैसे सारी दुनिया छोड़कर एकांत में परमात्मा का ध्यान लगाता है। यह भ्रम मिटाने के लिए भगवान कृष्ण ने राधा जी से कहा—'तुम अन्दर जाओ मैं बाहर ठहरता हूं।' राधा अन्दर गई और संन्यासी के पास बैठ गई।

कुछ ही देर में संन्यासी में राधा को देखकर वासना उठी और वह उसके नजदीक हो गया। राधा चिल्लाकर कृष्ण के पास बाहर आ गई।

फिर कृष्ण राधा को एक राजा के दरबार में ले गए। राजा

के यहां नृत्य हो रहा था। राधा-कृष्ण के वहां पहुंचते ही राजा ने सबको भेज दिया और भगवान के पास बैठकर उनके पांव दबाने लगा।

वह भगवान में लीन होकर ज्ञान की चर्चा करने लगा। इस प्रकार भगवान कृष्ण ने राधा को प्रत्यक्ष दिखाया कि संन्यासी बाहर से त्याग करता है पर अन्दर से इच्छा रह जाती है, किंतु गृहस्थ बाहर से भोगी दिखता है पर अन्दर से भगवान में लीन है।

सिद्धांत : गृहस्थ में जो रहे उदास,
ताका नाम संत रामदास।

13. भावी के दृष्टांतों की सूची

311. परीक्षित की भावी
312. सीता की भावी
313. लक्ष्मण जी की भावी
314. रामचंद्र जी की भावी
315. हनुमान जी की भावी
316. कैकेई की भावी
317. द्रौपदी की भावी
318. सुदामा की भावी
319. नल-नील की भावी
320. यदुवंशियों की भावी
321. वरुण देवता की भावी
322. अर्जुन देव-भाई भिखारी
323. राजा हरिश्चन्द्र
324. रावण की लड़की की भावी
325. शिवजी की भावी
326. सूर्य-वाहन अरुण की भावी
327. राजा जन्मेजय की भावी
328. इंद्र की भावी : समुद्र मंथन
329. गलत शब्द के कारण रीछ का जन्म
330. मजाक में कौरवों और पांडवों का युद्ध बना
331. दुर्वासा ऋषि से बच्चों ने मजाक किया
332. धृतराष्ट्र अपने पिछले जन्म में 100 तीतर दिए
333. महात्मा माण्डव्य

अरे मन किस पै भूला है, बता दे कौन तेरा है।
तेरे मां बाप और भाई, सभी स्वार्थ के हैं साथी।
तेरे क्या संग जाएगा, जिसे कहता तू मेरा है।
पड़ी रहे महल महलायत, धरी रहे लाख की दौलत।
यह बिस्तर खाक में होंगे, सदा जंगल में डेरा है।
जिनके घर घूमते हाथी, उन्हीं के लख थे साथी।
पता उनका नहीं पाया, बता किस जा में गेरा है।
गुरु नानक महाज्ञानी, जिन्होंने गौर कर देखा।
जगत धोखे की दुनिया है, न तेरा है न मेरा है।

महापुरुषों की भावी के दृष्टांत

311. परीक्षित की भावी

एक दिन राजा परीक्षित जंगल में शिकार खेलने गया तो भटक गया।

बहुत प्यास लगी। एक ऋषि समाधि में बैठे थे। परीक्षित ने उनसे पानी मांगा पर समाधि में लीन ऋषि को सुनाई नहीं पड़ा। मुकुटधारी राजा, राजाई के दम्भ में गुस्से में आ गए और उनके गले में मरा हुआ सांप डाल दिया। उस समय ऋषि के पुत्र स्नान करने गए हुए थे।

उनको वहां ही किसी ने यह समाचार सुनाया तो ऋषि-पुत्र ने जल अंजलि में भरकर श्राप दे दिया कि राजा की मौत सातवें दिन तक्षक नाग के काटने से हो जाएगी।

312. सीता की भावी

सीता जी ने लक्ष्मण जी के प्रति शंका की कि राम जी की आवाज सुनकर यह क्यों नहीं जा रहे हैं, इसलिए उनकी भावी बनी और रावण के यहां कष्ट सहना पड़ा।

313. लक्ष्मण जी की भावी

शबरी के बेर खाते हुए उनका भाव था कि यह जूठे बेर क्यों दे रही है। इसलिए उनको भी वनस्पति की जरूरत पड़ी। संजीवनी बूटी के लिए प्राण तरसे।

314. रामचंद्र जी की भावी

श्रृंगी ऋषि पत्नी वियोग में व्याकुल थे। विष्णु भगवान हंस दिए तो ऋषि ने कहा—'एक जन्म में तुम्हें भी पत्नी के वियोग में पीड़ा सहन करनी पड़ेगी।'

315. हनुमान जी की भावी

हनुमान जी बचपन में भी बहुत शक्तिशाली थे। उनको मजाक सूझता तो जाकर ऋषि-मुनियों को सताते और उन पर अपना जोर आजमाते। ऋषियों ने उन्हें श्राप दे दिया कि तुम अपनी शक्ति भूल जाओगे, फिर कोई तुम्हें याद दिलाएगा तभी याद आएगा। जब उन्हें लंका जाना था, समुद्र पार करके, तब जामवंत ने उन्हें याद दिलाया कि वे पवन-पुत्र हैं। तब वे उड़कर जा सके।

316. कैकेई की भावी

बचपन में कैकेई ने किसी संत के मुंह पर, जब वह सो रहा था, काले रंग से मूछें बना दीं। संत उठा और मुंह पर हाथ फेरा तो सारा चेहरा काला हो गया। जब मालूम पड़ा, यह

कैकेई ने किया है तो उसको श्राप दिया कि—'तुम्हारा मुंह ऐसा काला होगा कि तुम किसी को मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहोगी, और जिस हाथ से तुमने यह मूंछें बनाई हैं वह वज्र का हो जाएगा।' वज्र का हाथ दशरथ की लड़ाई में रथ का पहिया सम्भालने के काम आया और राम को वनवास भेजने की वजह से मुंह काला हुआ।

317. द्रौपदी की भावी

दुर्योधन पर शीशमहल में हंसने से चीर-हरण की भावी बनी जब सारी सभा में उसकी दुर्दशा हुई। दूसरी भावी—जब एक गाय पांच बैलों के साथ जा रही थी तो द्रौपदी हंस दी। इसलिए उसे भी पांच पति मिले।

318. सुदामा की भावी

एक बार जंगल में भूख लगने पर सुदामा ने कृष्ण के हिस्से के चने खा गए तो गुरु माता के श्राप से सुदामा की दरिद्रता भावी बन गई।

319. नल-नील की भावी

बचपन में दोनों भाई ऋषि-मुनियों को बहुत सताते थे और सामान समुद्र में फेंक देते थे। उन्होंने श्राप दिया कि तुम्हारी फेंकी हुई चीज नहीं डूबेगी तो पत्थर भी तैर गए।

320. यदुवंशियों की भावी

एक बार यदुवंश के बालकों ने दुर्वासा के साथ मजाक

किया। एक बच्चे के पेट पर कपड़े रख दिए और उनसे आकर पूछा कि आप तो ज्ञानी जाननहार हैं, बताइए लड़का होगा कि लड़की। तंग आकर उन्होंने कहा, इस पेट से मूसल पैदा होगा जो यदुवंशियों के नाश का कारण बनेगा। लड़कों ने जब कपड़े हटाए तो सचमुच एक मूसल निकला। वे डर गए और उसका चूर्ण बनाकर नदी में बहा दिया। उसका एक टुकड़ा मछली ने निगल लिया। उसी से बाद में तीर का नोक बना जो कृष्ण भगवान के पैर में हिरण के भ्रम में एक शिकारी ने मार दिया। उस चूर्ण की वजह से नदी के तट पर अत्यंत पैनी तलवार के धार जैसी घास उग गई और नशे में चूर एक रात सारे यदुवंशी सरदार उसी घास पर आपस में लड़ते हुए समाप्त हुए।

321. वरुण देवता की भावी

समुद्र को अभिमान आ गया कि सब देवता और दैत्य मेरे वश में हैं क्योंकि समुद्र मंथन के समय सबको कुछ-न-कुछ भेंट दी थी।

अहंकार में वे ऋषि-मुनियों को सताने लगे और उनकी कुटी में पहुंचकर कइयों को डुबाया-सताया। अगस्त्य मुनि को क्रोध आ गया। अपने इष्ट विराट देव का स्मरण करके बोले कि ढाई चुल्लू में तेरा पानी खत्म करूंगा। ऐसा ही हुआ और समुद्र में रहने वाली 42 लाख योनियां तड़पने लगीं। समुद्र ने देवताओं से सहायता मांगी। देवताओं ने अगस्त्य ऋषि से प्रार्थना की तो उन्होंने इंद्रिय द्वारा लिया हुआ जल बाहर निकाल दिया और कहा कि अब तू खारा ही रहेगा।

322. गुरु अर्जुन देव के शिष्य भाई भिखारी ने भावी की शक्ति प्रकट की

गुरु अर्जुन देव के पास एक शिष्य आकर बोला—'दुख-सुख में सम रहने वाला और ईश्वर की रजा में प्रसन्न रहने वाला कोई शिष्य दिखाओ।' गुरुजी ने उसे गुजरात में अपने शिष्य भाई भिखारी के पास भेज दिया। वह उन्हें घर ले गया और खूब सत्कार किया। वहां एक तरफ हलवाई, सुनार, दर्जी सब विवाह की तैयार में थे और दूसरे कमरे में कफन की तैयारी हो रही थी। तो पूछा, यह क्या काम आएगा।

वे बोले, बाद में बताएंगे। जब उनके पुत्र का विवाह सम्पन्न हुआ और वह घर आया तो लड़के के पेट में दर्द हुआ और सुबह होते ही वह मर गया। अर्थी पर उसे श्मशान ले गए।

भाई भिखारी ने धैर्य रखा, ईश्वर इच्छा में प्रसन्न रहा। शिष्य ने पूछा—'आपको पता था कि लड़का मर जाएगा तो शादी क्यों की? गुरु से बेटे की लम्बी आयु मांग लेते!' उन्होंने कहा—'मैंने क्या किया? यह भावी का खेल है, भावी अमिट है।'

323. राजा हरिश्चन्द्र

राजा हरिश्चन्द्र बड़े दानी महात्मा थे। उन्हें इस बात का गर्व था कि उनके द्वार से कोई खाली हाथ न जाता था। पर

प्रकृति की ऐसी लीला हुई कि उनके पास बेटे के कुन (कफन) तक के लिए पैसे न रहे।

सिद्धांत : परमात्मा को आगे रखो, छोटीआई का अहंकार न करो। निरंकार बहुत बड़ा है वो ही सब को देता है। होवन हार होवत सो जाने।

324. रावण की लड़की की भावी

राज़ा जनक एक दिन राज्य में भेष बदलकर घूम रहे थे। उन्होंने देखा कि एक औरत मां के स्तन से दूध पीने की कोशिश में बच्चे को देखकर हंस रही है। राजा जनक ने पूछा—'तू क्यों हंस रही है?' उसने कहा—'ये औरत रावण की बेटी बनेगी और जो आज इसका लड़का है वह एक जमादार का बेटा होगा। फिर इन दोनों की शादी हो जाएगी।' जनक जी ने पूछा—'तू कैसे जानती है?' तो वह बोली—'मैं पतिव्रता हूं तो यह सिद्धि है। अभी मैं पानी भरकर घर जाऊंगी तो मेरे ऊपर छत गिर जाएगी और मैं मर जाऊंगी।' राजा जनक ने सोचा देखूं ऐसा होता है क्या? अगर होगा, तो रावण की बेटी की बात भी सच होगी। वैसा ही हुआ। राजा जनक ने रावण को उसकी बेटी की भावी की बात कहला भेजी। अब भावी को टालने के लिए रावण ने जमादार के बेटे को पैदा होते ही मारने की कोशिश की। पर राज्य में सब बोलने लगे कि इसने कोई गलती नहीं की तो इसे न मारें। तो उसके पैरों का अंगूठा कटवाकर उसे जंगल में छोड़ दिया। वहां एक आदमी ने उसे देखकर उठाया, पाला-पोसा और वह

हर बात में निपुण हो गया। फिर निकट के एक राजा का शरीर शांत हुआ तो उन्होंने Decide किया था कि जो पहला आदमी दरवाजे से निकलेगा उसे राजा बनाएंगे। दैवयोग से जमादार का बेटा ही सबसे पहले उस दरवाजे से गुजरा और राजा बना। निपुण होने के कारण चर्चा सब जगह फैल गई कि बहुत अच्छा राजा है। रावण की बेटी का विवाह इसके साथ सम्पन्न हो गया। रावण ने समझा उसने भावी टाली, पर जूता उतारकर देखा तो वो ही जमादार का अंगूठा कटा बेटा निकला।

325. शिवजी की भावी

ब्रह्मा अपनी बेटी शतरूपा पर मोहित हो गए तो शिवजी को बहुत खराब लगा और उनका एक सिर काट दिया। वह कपाली उनकी बांह में आकर लटक गई। ब्रह्माजी ने श्राप दिया—'यह कपाली हमेशा तुम्हारी बांह में लटकी रहेगी और तुम भीख मांग कर खाओगे।'

326. सूर्य-वाहन अरुण की भावी

बचपन में तितली और भ्रमरी को पकड़कर टांगें तोड़ने की वजह से वे पिंगले हैं।

327. राजा जन्मेजय की भावी

जन्मेजय अर्जुन का पौत्र था। उसे गुरु महाभारत सुना रहे थे कि युधिष्ठिर कैसे जुए में द्रौपदी को हारे। युधिष्ठिर इतने धर्मात्मा होते हुए भी द्रौपदी को दांव पर कैसे लगा

सके——यह बात सोचकर जन्मेजय को हंसी आ गई। गुरु ने कहा——'यह भावी है, टले नहीं टलती।' जन्मेजय ने पूछा——'क्या मेरी भी भावी है?' गुरु ने कहा——'हां, तुम्हारी भावी इस प्रकार है——तुम्हारे पास एक सुन्दर घोड़ा आएगा, तुम उसे खरीद लोगे और उस पर सवार होकर जंगल जाओगे, वहां एक सुन्दर लड़की से शादी करोगे। उसके साथ यज्ञ कराओगे। यज्ञ में गलत उच्चारण ब्राह्मण करेंगे तो तुम्हें क्रोध आ जाएगा और तुमको श्राप लगेगा, उससे तुम्हारे शरीर में कोढ़ हो जाएगा। फिर भागवत से तुम्हारा कोढ़ दूर होगा पर एक जगह तुम शंका करोगे तो थोड़ा कोढ़ रह जाएगा।'

अब जन्मेजय को सारी भावी मालूम पड़ गई थी इसलिए उसने ऐलान करवा दिया कि कोई घोड़ा बेचने वाला न आए। पर एक सौदागर आया कि मैं बेचने नहीं दिखाने आया हूं। एक घोड़ी बहुत सुन्दर लगी। राजा का मन खरीदने का हो गया। सोचा, खरीद लेता हूं पर चढ़ूंगा नहीं। फिर एक दिन सोचा चढ़ जाता हूं पर दूर नहीं जाऊंगा। पर वह घोड़ी उसे जंगल की ओर ले भागी। वहां एक अति रूपवती कन्या को देखकर विवाह का मन हो गया। विवाह के बाद इसने यज्ञ करवाया। गलत मंत्रोच्चारण सुनकर राजा क्रोध में आ गया और ब्राह्मणों को श्राप दे दिया। उसे कोढ़ हो गया, भागवत सुनने से सारा कोढ़ जाता रहा, पर जब ब्राह्मण ने कहा कि भगवान ने हाथी उठाकर फेंक दिए जो आज भी अंतरिक्ष में

घूम रहे हैं तो जन्मेजय को हंसी आ गई जिससे अंगूठे में थोड़ा कोढ़ बाकी रह गया।

सिद्धांत : भावी शरीर में है, आत्मा में कोई भावी नहीं है।

328. इंद्र की भावी——समुद्र मंथन

इंद्र को एक बार दुर्वासा ने माला पहनाई जिसको उसने निकालकर फेंक दी और वह हाथी द्वारा कुचली गई। दुर्वासा ने क्रोध में श्राप दे दिया कि तू दरिद्र हो जाएगा। श्राप से उसका ऐश्वर्य खत्म हो गया तो वह दुखी होकर विष्णु भगवान के पास गया कि मेरा कष्ट निवारण करें। भगवान ने कहा, कभी किसी का तिरस्कार नहीं करें, प्रेम से भले वापस करें, पर कोई चीज फेंकें नहीं।

विष्णु भगवान ने कहा, धन-दौलत और अमृत-मंथन करें। पर तुम अकेले नहीं कर पाओगे, दैत्यों के प्रति द्वेष मिटाना होगा उनकी तारीफ कर-करके। मन रूपी समुद्र का मंथन ज्ञान से होता है। उस समय भी पहले संबंधियों से या किसी से भी द्वेष मिटाना पड़ता है प्रेम और प्रशंसा से। अब मंथन शुरू हुआ। मंदराचल पर्वत मथनी बनी, वासुकी सर्प रस्सी। इसको धारण करने के लिए भगवान ने कच्छप रूप लिया जिसके ऊपर डण्डा टिकाया गया। (भगवान के सिवा मथानी टिक नहीं पाती।) समुद्र मंथन में पहले जहर निकला जो शिवजी ने पिया और किसी में जहर पीने की ताकत ही

न थी। उन्होंने भी पेट में नहीं लिया, कंठ तक ही रखा। (ब्रह्मज्ञानी गुरु ही सब का जहर पीने की क्षमता रखते हैं।) फिर मंथन हुआ तो उच्चै:श्रवा नामक कीर्ति का घोड़ा निकला जो दैत्यों ने लिया। जो भी कीर्ति में खुश होता है वह दैत्य-बुद्धि का होता है। उसके बाद ऐरावत हाथी निकला। हाथी की आंखें छोटी, अर्थात सूक्ष्म बुद्धि वाला, होती हैं (जो ज्ञान ग्रहण कर सकता है)। वह देवों को मिला। घोड़े से पहले कामधेनु गाय निकली जो ऋषि-मुनियों को दी गई। ऋषियों को ही मालूम है कौन-सी इच्छा पूरी करनी चाहिए। हाथी के बाद अप्सरा निकली जो देवताओं को मिली। पारिजात वृक्ष निकला जो दैत्यों ने लिया। फिर मदिरा निकली जो दैत्यों ने ली। उसका पान कर वे नशे में चूर हो गए। फिर लक्ष्मी निकली जिन्हें देखकर उन पर दोनों, देव तथा दैत्यों का मन आया पर लक्ष्मी दैत्यों के पास नहीं गई क्योंकि वो क्रोधी हैं, देवताओं के पास भी नहीं क्योंकि वो कामी हैं, ऋषियों के पास भी नहीं क्योंकि वो श्राप देने में देरी नहीं करते, मार्कण्डेय मुनि के पास भी नहीं क्योंकि वो मौनी हैं, आंख बंद करके बैठे हैं, अभी मुझे नहीं देखते तो बाद में क्या देखेंगे! शिवजी के पास भी नहीं क्योंकि उनकी वेशभूषा कैसी है! आखिर नारायण भगवान के चरणों में बैठी कि यहीं शांति और आराम है। नारायण भगवान ने फिर चारों तरफ नजर डालकर देखा कि लक्ष्मी के मेरे पास आने से किसी को असंतुष्टि तो नहीं। (इसी प्रकार कोई भी वस्तु आए तो

जो भी वहां मौजूद है उन्हें तृप्त करना चाहिए।) (जो मायापति ब्रह्मज्ञानी होते हैं उनको सब सुख-सुविधाएं प्राप्त हो जाती हैं क्योंकि चरणों में माया बैठती है।) बाद में अमृत का घड़ा निकला। दोनों की आंखें उसी पर ही थीं। सब उस पर टूट पड़े तो नारायण भगवान मोहिनी स्वरूप धारण करके आए। दैत्य तो मोहिनी स्वरूप देखकर उस पर मुग्ध हो गए बोले, जैसा मोहिनी कहे। (माया ऐसी है जो मनुष्य उसी में फंस जाता है।) विष्णु भगवान ने अमृत देना शुरू किया। देवताओं की लाइन में एक दैत्य राहू आकर बैठ गया। अब पंक्ति भेद कैसे किया जाए? तो उसे मिल गया। देवताओं को अमृत पिलाकर कलश खाली कर दिया अर्थात देव बुद्धि वाले ज्ञान रूप अमृत का पान कर लेते हैं, पर असुर बुद्धि वाले आत्मज्ञान सुनकर भी आत्मा में नहीं टिक पाते।

329. गलत शब्द के कारण रीछ का जन्म

एक सज्जन काम पर जा रहा था। रास्ते में गुरु के घर प्रसाद बंट रहा था। उन्होंने प्रसाद बांटने वाले से कहा कि मुझे जल्दी प्रसाद दे दो तो उसने जवाब दिया कि क्या रीछ के जैसे मेरे ऊपर चढ़ता जा रहा है! वह पुरुष जमीन पर गिरे हुए प्रसाद को लेकर घर चला गया। प्रसाद बांटने वाले का जब शरीर शांत हो गया तो उसका बेटा एक बार श्राद्ध कर रहा था। वहां से गुरुजी निकले तो उन्होंने पूछा कि तू किसका श्राद्ध कर रहा है? तेरा बाप तो रीछ के जन्म में

तीन दिन से भूखा है। उस लड़के ने कहा कि मेरे पिता ने तो आपके यहां इतनी सेवा की इतने वर्ष, फिर ऐसा क्यों? तो गुरु जी ने कहा—'इसमें मेरी बात नहीं है, यह इसके ही कहे शब्द का फल है।'

सिद्धांत : तोलो फिर बोलो।

330. मजाक में कौरवों और पांडवों का युद्ध बना

पांडवों ने एक शीशमहल बनाया था जिसे दुर्योधन देखने गया। जहां पानी था वहां जमीन दिखती थी, जहां जमीन थी वहां पानी। दुर्योधन ने पानी को सूखा समझकर पांव रखा और पानी में चला गया। द्रौपदी ऊपर छज्जे से दृश्य देखकर हंस दी और बोली, अंधे का लड़का अंधा। उस समय दुर्योधन को इतना गुस्सा आया कि उसने निश्चय किया कि एक इंच जमीन भी लड़ाई के बिना नहीं दूंगा। बाद में इतनी लड़ाई और खून-खराबा हुआ।

सिद्धांत : शब्द से बहुत विकार हो जाता है। मजाक में भी गलत शब्द न निकले।

331. दुर्वासा ऋषि से बच्चों ने मजाक किया

दुर्वासा ऋषि को यादव कुल के बच्चे मजाक में तंग किया करते थे। एक दिन मजाक में एक बच्चे के पेट पर कपड़े बांधकर गर्भवती स्त्री बनाकर दुर्वासा ऋषि के पास ले गए और पूछने लगे—'इसे लड़की होगी या लड़का।'

दुर्वासा ने कहा—'बच्चो! मजाक मत करो।' पर बच्चों ने नहीं माना। दुर्वासा ने कह दिया इससे ऐसा मूसल निकलेगा जो यदु कुल का नाश कर देगा। बच्चे हैरान हो गए, जब कपड़ा हटाए तो बड़ा मूसल निकला जिसको उन्होंने नदी में फेंक दिया। उस मूसल ने ही नदी किनारे कांटे वाली घास का रूप धारण किया। बाद में उसी घास पर आपस में लड़ते हुए यह यदुवंशी मर गए।

सिद्धांत : हंसी-मजाक में सब गलत बातें होती हैं।

332. धृतराष्ट्र अपने पिछले जन्म में 100 तीतर दिए

धृतराष्ट्र अपने पिछले जन्म में एक राजा था। एक दिन उसके पास एक व्यापारी आया और बोला—'मुझे दूर देश में जाना है। मेरे पास यह सौ तीतर हैं। इन्हें आप रख लें। लौटकर आऊंगा तो ले लूंगा।' राजा ने कहा, ठीक है। उसने अपने Kitchen सम्भालने वाले को बुलाया और कहा कि—'यह सौ तीतर हैं, रख लो।' कुछ दिन बाद वह व्यापारी वापिस आया और राजा से सौ तीतर मांगने लगा। राजा ने Kitchen वाले को बुलवाया और कहा—'वह जो सौ तीतर मैंने तुम्हें दिए थे वे वापस करो।' वह बोला—'हे राजन, वो तीतर अब कहां हैं? मैं रोज उनमें से एक आपको खिला देता था।'

सिद्धांत : Instruction पूरी नहीं देते तो उसका अंजाम बड़ा गंभीर होता है। प्रकृति तो फल देती ही है।

333. महात्मा माण्डव्य

महात्मा माण्डव्य के श्राप से साक्षात धर्मराज ही विदुर रूप में उत्पन्न हुए।

कथा इस प्रकार है—'एक बार बहुत चोरों ने भागकर महर्षि माण्डव्य के आश्रम में धन छुपा दिया। राजपुरुषों ने महर्षि को पकड़ लिया। सबको फांसी की सजा हुई, लेकिन महर्षि सूली के अग्रभाग में बैठे तप करते रहे। राजा ने देखा तो माफी मांगी। महर्षि को धर्मराज पर क्रोध आया और उससे पूछा कि किस फल के कारण उन्हें ये पाप भोगना पड़ा। धर्मराज ने कहा, आपने बाल्यावस्था में एक पतंगे के पुच्छ भाग में सींक घुसेड़ दिया था। ऋषि ने कहा—'वह तो बाल्यावस्था थी और इतने थोड़े अपराध के लिए इतना फल! मैं तुम्हें शाप देता हूं।' धर्मराज ने कहा—'अगर तुम श्राप देना ही चाहते हो तो राजा, दासी-पुत्र और चाण्डाल को श्राप न देना।' मुनि ने क्रोध में तीनों को श्राप दे दिया। धर्मराज इस श्राप से राजा हरिश्चन्द्र, दासी-पुत्र विदुर एवं चाण्डाल के रूप में जन्मा। माता सत्यवती की आज्ञा होने पर वेदव्यास ने अम्बिका की दासी के गर्भ से विदुर रूप में जन्म लिया।

विदुर का एक कथन—'कुल के हित के लिए एक व्यक्ति को त्याग दें, गांव के हित के लिए कुल को छोड़ दें, देश के हित के लिए गांव को त्याग दें और आत्म कल्याण के लिए सारे भू-मण्डल को त्याग दें।'

14. भावना के दृष्टांतों की सूची

334. हर बात में भलाई
335. गुण-ग्राहक दृष्टि
336. क्रोध नहीं, धन्यवाद से भरे रहो
337. हर समय में भलाई
338. लंगोटी बची तो भी फायदे में हूं
339. सारा जगत Echo है
340. आधा गिलास पानी
341. जुराब नहीं तो भी शुक्राना
342. तीन हंसते हुए संत
343. धीरज का फल मीठा
344. जेल में एक ने सितारे देखे दूसरे ने कीचड़
345. संत और जमादार
346. समुद्र तट पर दो आदमी
347. हर चीज में भलाई है (बैल, कुत्ता, तोता वाला)
348. लोटे में लाल रंग
349. सांप न मारे सांप का डर मारे
350. संत वेश्या के पत्थर गिनता था
351. सूर्य-पुत्र और दासी-पुत्र
352. ट्रेन के डिब्बे में एक आदमी आया
353. दुर्योधन और युधिष्ठिर बुरे आदमी की तलाश में
354. ये कपड़े मेरे हैं
355. भावना का फल
356. जिसने तेरे कान में कहा उसने मेरे कान में कहा
357. जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि
358. गाय है तो दूध पिया नहीं तो गोबर से बचा
359. हे प्रभो, तेरा शुक्र है
360. साधु ने दस हजार की चोरी क्यों की
361. स्वपच मुनि
362. बुराई करे उससे भलाई
363. जहाज में बहुत-सी कपास आई

भावना : गुण ग्राहक दृष्टि, ख्याल पर अन्य दृष्टांत

72. तीन बार 'द'
173. सबको बनाने वाला कुम्हार एक

मरना और मारना केवल शरीर तक ही सीमित है। आत्मा न मरता है न मारा जाता है। जो शरीर को ही अपना स्वरूप समझता है, वही मरने-मारने की बात कहता है।

हर बात में भलाई, खयाल, शुक्राना

334. हर बात में भलाई

एक ब्रह्मज्ञानी संत गांव में रहता था। कोई भी उससे बात करे तो कहता था, हर बात में भलाई है। एक समय गांव में प्लेग की महामारी फैल गई और उसी से बहुत से कुत्ते मर गए। रात में बत्ती भी बुझ गई और गांव वाले बहुत परेशान हो गए। उन्होंने संत से कहा—'इसमें कौन-सी भलाई है जो कुत्ते भी नहीं हैं और बत्ती भी चली गई? गांव की रक्षा कैसे होगी?' संत ने कहा—'इसमें भी भलाई है।' उसी रात एक राजा रात के अंधेरे में गांव को जीतने निकला था। वह जब इस गांव के नजदीक पहुंचा तो कोई बत्ती या कुत्तों की आवाज न सुनकर समझा कि यहां शायद कोई बस्ती ही नहीं होगी। ऐसा सोचकर वह चला गया और हमला नहीं किया।

जब सबको यह बात मालूम पड़ी तो जय-जयकार करने लगे और संत के शुक्राने किए कि आप सच ही कहते हैं कि हर बात में भलाई है। हम छोटी बुद्धि वाले नहीं जानते हैं।

सिद्धांत : हर बात में भलाई है।

335. गुण-ग्राहक दृष्टि

एक ब्रह्मज्ञानी के पास एक आदमी आया ज्ञान लेने। ब्रह्मज्ञानी ने कहा—'पहले उस किसान से गुण-ग्राहक दृष्टि सीखकर आओ। तुम उससे कैसा भी उल्टा चलोगे, वह उसमें से गुण ही निकाल लेगा।' किसान हल जोत रहा था। वह सीधे जाकर उसके रास्ते में खड़ा हो गया। किसान ने खुश होकर कहा—'शुक्र है मैं कभी बैलों को आराम नहीं देता, इतनी धूप है, गर्मी है, आपने इन्हें आराम दिलवाया।' फिर उसने पानी का पाइप जो खेतों को सींच रहा था, उठाकर बंजर धरती की तरफ फिरा दिया। किसान बोला—'आप कितने अच्छे हैं जो बंजर धरती की भी प्यास मिटाते हैं।'

किसान जिस छड़ी से बैलों को हांकता था, वह छड़ी उठाकर उस आदमी ने किसान को ही मारना शुरू कर दिया। किसान बोला—'आपने मेरी आंखें खोल दीं कि बैलों को कितना दर्द होता होगा।' आदमी किसान के चरणों में गिर पड़ा और गुण-ग्राहक दृष्टि का पक्का सबक लेकर गया।

सिद्धांत : गुण-ग्राहक दृष्टि से हालत हालत नहीं रहती, वह और ऊंचा करके जाती है।

336. क्रोध नहीं, धन्यवाद से भरे रहो

एक महात्मा जा रहे थे। किसी ने उनके ऊपर राख डाल

दी। शिष्य बिगड़े। महात्मा बोले, आज मेरे ऊपर आग बरसने वाली थी। इन्हें धन्यवाद दो कि उन्होंने उसे राख कर दिया।

सिद्धांत : गुरु ऐसी दृष्टि देता है कि हर सूली कांटा हो जाती है।

337. हर समय में भलाई

राजा और वजीर दोनों शिकार के लिए जा रहे थे। चलते-चलते राजा को भूख लगी। राजा ने सेब काटा तो छुरी हाथ में लग गई और खून बहने लगा। वजीर ने कहा, इसमें भी भलाई है। राजा को गुस्सा आया कि इसमें कौन-सी भलाई है और वजीर से बोला—'अभी मेरी आंखों से दूर हो जाओ।' जंगल में राजा अकेला रह गया। उसी समय दो-चार जने देवी पर बलि चढ़ाने के लिए कोई अच्छा-सा आदमी ढूंढ़ रहे थे, वहां से गुजरे। सामने राजा को देखा तो उसे बलि के लिए उठा लाए, किंतु बलि के लिए अंग पूर्ण होना चाहिए। राजा का ताजा जख्म देखा तो उसे छोड़ दिया। उस समय राजा को वजीर की बात याद आई कि हर बात में भलाई होती है। वजीर को निकाल देने का उसे बड़ा दुख हुआ। सिपाहियों द्वारा वजीर को ढूंढ़वाया और बड़े प्यार से मिला। फिर पूछा कि—'मेरी उंगली कटने में भी भलाई थी पर तुम्हें जो मैंने निकाल दिया उसमें क्या भलाई थी?' वजीर बोला—'यदि मैं उस समय आपके साथ होता तो बलि चढ़ाने वाले मेरी बलि चढ़ा देते।'

शिक्षा : प्रकृति के हर खेल में छिपी हुई भलाई है।

338. लंगोटी बची तो भी फायदे में हूं

एक संत के घर में पदार्थ, खाना-पीना, कपड़े सब अच्छे थे पर वह अपने ज्ञान में ही मस्त रहता था। जब उससे लोग पूछते कि आप हमेशा खुश कैसे रहते हैं, तो वह कहता, बड़े आनन्द में हूं और सबको आनन्द में रहना सिखाता हूं। शहर वालों ने सोचा, इसके पास सब कुछ है तभी आनन्दमय रहता है। रात में उसके घर में जाकर उन्होंनें सब चुरा लिया, उसके कपड़े तक उतार लिए। केवल एक लंगोटी छोड़ दी। संत उसी समय बाहर जाकर नाचने लगा कि अभी भी फायदे में हूं। लोगों ने सोचा घर में और कुछ छुपाया होगा। दीवारें भी तोड़ डाली पर कुछ न मिला। फिर जाकर पूछा—'आखिर किस बात से कहते हो फायदे में हो?'

संत ने कहा—'सृष्टि में आया था तो कुछ भी साथ नहीं लाया था। एक लंगोटी है तो भी शुक्र है, तो फायदे में हूं।' सब हैरान हो गए। संत को नमस्कार किया कि यह हर बात में संतुष्ट है।

सिद्धांत : Happiest Man Without Shirt Without Money.

339. सारा जगत Echo है

एक लड़के को स्कूल जाने के लिए जंगल में से गुजरना पड़ता था। उस डरावने जंगल में से जाते हुए कभी-कभी उसे बहुत भय लगता था। एक दिन अंधेरा-सा था तो वह अपनी

ही परछाईं देखकर डर गया। वह जंगल बहुत शांत था और उसमें अपनी ही आवाज लौटकर आती थी। उसे लगा वहां कोई और भी है, क्योंकि उसकी ही पदचाप लौटकर आ रही थी। उसने आवाज दी तुम कौन हो? मैं तुम्हें मारूंगा। सामने से आवाज आई, मैं तुम्हें मारूंगा। लड़का डर गया और भागता हुआ मां के पास पहुंचा और सारी बात कह सुनाई। मां समझ गई और उसने कहा, वह भूत नहीं है। कल तुम उससे प्यार से बात करो तो वह भी तुमको प्यार करेगा। दूसरे दिन वह डरा नहीं। उसे याद था जो मां ने कहा था, इसलिए उसने मीठे स्वर में कहा—'आ जाओ।' वहां से भी आवाज लौटकर आई तो वह बड़ा खुश होकर घर लौटा। मां को कहा—'भूत ने मुझे बहुत प्यार किया।' मां ने कहा, वह भूत नहीं है तुम्हारी आवाज लौटकर आती है। वह Echo है। ऐसी ही सारी सृष्टि Echo है—जैसी आवाज दो वैसी ही आवाज आती है।

सिद्धांत : Love Wins Love.

340. आधा गिलास पानी

दो आदमी आए। टेबल पर दो गिलास रखे थे जो दूध से आधे भरे हुए थे। एक ने गुस्से में कहा—'यह आधा गिलास दूध क्यों रखा है?' और बिना पिए आग बबूला होकर चला गया।

दूसरे ने कहा—'शुक्र है आधा गिलास तो है!' और संतोष से स्वीकार किया।

सिद्धांत : हर बात में शुक्र करने से अंदर तृप्ति आती है।

341. जुराब नहीं तो भी शुक्राना

एक आदमी बहुत दुखी था कि वह इतना गरीब है कि पांव के लिए मोजे भी नहीं खरीद सकता। एक दिन वह कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे एक आदमी मिला जिसकी टांगें ही नहीं थीं। यह देखकर अन्दर ही अन्दर शुक्राना करने लगा कि मेरी टांगें तो सही सलामत हैं।

सिद्धांत : दूसरे की हालत देखकर अपनी सब हालत छोटी लगती है।

342. तीन हंसते हुए संत

तीन संत थे, हमेशा हंसते ही रहते थे। लोग सोचते थे, इनके ऊपर कोई हालत आए तो मालूम पड़े कि ये टिके हुए हैं या नहीं। तीनों में से एक बीमार पड़ा, लोग देखने गए तो दो संत बाहर आपस में हंसते हुए कह रहे थे, यार, मालूम होता है तीन में से दो ही रह जाएंगे। तीसरे संत ने मरने के पहले कहा, मुझे कपड़ों सहित जलाना। उसने कपड़ों में पटाखे और फुलझड़ियां भर रखी थीं। श्मशान में उसे जलाया तो आतिशबाजी होने लगी और सब लोग हंस पड़े। ऐसे भी महात्मा होते हैं जो जीते भी सब को हंसाते हैं और मर कर भी।

सिद्धांत : खुश रहो, खुश रखो।

343. धीरज का फल मीठा

एक बार एक किसान ने बड़ा खेत खरीद लिया। किसान

अन्दर से बड़ा संतोष और धीरज वाला था। बीज डालने के लिए खेत की खुदाई की तो सांप ही सांप निकलने लगे। पर वह धीरज से रहा और एक संत का संग किया। संत ने कहा—'हर बात में भलाई होती है। सांप कुछ दिन में चले जाएंगे और गर्मी में तुम्हें मणियां मिलेंगी।' ऐसा ही हुआ। बहुत मणियां मिलीं।

किसान मालामाल हो गया।

सिद्धांत : अपने अन्दर की खुदाई करेंगे तो पहले विष निकलेगा फिर अमृत।

344. जेल में एक ने सितारे देखे दूसरे ने कीचड़

दो कैदी जेल में थे। एक सोचता था, कहां गंदे में फंस गया, मेरा क्या जीवन है!

इस तरह खयाल करने से उसका जेल का समय बीतना बहुत मुश्किल हो गया। दूसरे ने सोचा, शुक्र है छोटी खिड़की तो है जिसमें से हमें चांद, सितारे दिखते हैं, सूरज की रोशनी आती है!

सिद्धांत : भलाई देखो तो कष्ट कम Feel होता है।

345. संत और जमादार

सुबह के समय एक संत नाव में बैठा। एक जमादार भी उसी नाव में बैठ गया। जमादार ने सोचा—'वाह! मेरा

सौभाग्य है संत के दर्शन हुए।' संत ने सोचा, आज क्या काला मुंह है! सुबह-सुबह जमादार को देखना पड़ा। इतने में तूफान आया, नाव डूब गई। संत को गलत भावना के कारण नर्क का चक्कर लगाना पड़ा। जमादार की उत्तम भावना से उसके लिए स्वर्ग के दरवाजे खुल गए।

346. समुद्र तट पर दो आदमी

दो आदमी समुद्र तट पर बैठे थे। एक सोच रहा था, जो लहर आती है उसको जाना पड़ता है। कितनी दुख की बात है! दूसरा लहरों का मजा ले रहा था कि इनके आने-जाने में कितनी सुन्दरता है, कितना आनन्द है!

सिद्धांत : किसी को मौज लूटना आए तो लूट सकता है। चिंता वाला स्वर्ग में भी चिंता करता है।

347. हर चीज में भलाई है (बैल, कुत्ता, तोता वाला)

एक भक्त अपनी पत्नी के साथ जंगल के किनारे पर रहता था। उसके पास एक बैल था जो कि उनकी जीविका का साधन था। वह भक्त उस पर सामान लादकर इधर-उधर ले जाता था और अपना धंधा चलाता था। रखवाली के लिए कुत्ता था और मन बहलाने के लिए एक तोता था जो रोज सवेरे उन्हें उठाता था यह बोलकर कि उठो, जागो, हरि भजन गाओ। एक दिन एक बाघ उधर आया और बैल को मार दिया। उन्होंने डरकर कुत्ते को घर में बांध लिया। संयोगवश

तोते का पिंजरा खुला रह गया और कुत्ते ने उसे खा लिया। जब बैल मरा तो भक्त बोला—'भगवान की हर बात में राज होती है। इसमें भी कुछ भलाई है।' तोता मरा भी तो बोला—'वाह! प्रभु तेरी हर लीला में भलाई है।' औरत को पति का ऐसा कहना जरा भी नहीं सुहा रहा था, पर वह मौन थी। दुख हमेशा एक साथ आते हैं। कुछ ही देर में उन्होंने शोर-गुल सुना और मालूम पड़ा कि कुत्ता किसी गाड़ी के नीचे दब गया और आखिरी सांस ले रहा है। अब स्त्री से न रहा गया और वह बोली—'यह लो, देखा अपने भगवान की भलाई करने का ढंग!' संत बोला—'जो हमारे ऊपर आया है उसे बदला नहीं जा सकता तो क्यों न स्वीकार करें भगवान का प्रसाद मानकर।'

रात बीती, अगला सवेरा हुआ। सारी प्रकृति स्तब्ध थी। मालूम पड़ा रात में गांव में डाकू आए थे। गांव के हर आदमी को मारकर उनका सारा सामान लूटकर ले गए, बर्तन तक तोड़ गए। इस घर में नहीं आए क्योंकि कोई कुत्ता नहीं था तो सोचा यह उजाड़ है। बैल होता तो भी अवश्य अंदर आ जाते और तोते की आवाज से भी उन्हें मालूम पड़ जाता कि घर में कोई है। अब भक्त ने अपनी पत्नी से पूछा—'तुम्हें विश्वास हुआ कि भगवान की हर बात में भलाई है?'

348. लोटे में लाल रंग

एक गरीब परिवार था। घर में नल नहीं था। आदमी अपने

लिए एक लोटा पानी भरकर पलंग के नीचे रख देता था कि सवेरे काम आएगा। होली वाले दिन बच्चों ने पानी में लाल रंग घोल दिया। आदमी ने वही लाल रंग का पानी लोटे में भरकर रख लिया। सवेरे बाथरूम गया तो समझा इतना खून बह गया। इस खयाल ने उसे कमजोर कर दिया, वह बेहोश हो गया। डॉक्टर आया तब भेद खुला कि यह तो लाल रंग का पानी था। यह सुनते ही उसकी तबियत ठीक हो गई।

सिद्धांत : खयाल में बहुत ताकत है तो क्यों न अच्छे खयाल करें।

349. सांप न मारे सांप का डर मारे

दो लड़के जंगल में से जा रहे थे। उनको बहुत प्यास लगी हुई थी। एक झोपड़ी दिखी तो वहां जाकर बुढ़िया से पानी मांगा। बुढ़िया ने उन्हें छाछ पिलाया और वे गांव चले गए। छाछ वाली मटकी खाली हुई तो बुढ़िया ने देखा उसमें सांप पड़ा है। उसने सोचा दोनों लड़के मरे हुए सांप के जहर से मर गए होंगे। देखने के लिए गांव में गई तो उन दोनों को स्वस्थ पाया। खुशी-खुशी उसने सारी बात उनको बता दी। मरे हुए सांप की बात सुनते ही दोनों उसी समय बेहोश हो गए और बाद में चल बसे। बुढ़िया ने जाना कि उन्हें सांप ने नहीं सांप के डर ने मार दिया।

सिद्धांत : मनुष्य का खयाल उसे मारता है, न कि हालत।

350. संत वेश्या के पत्थर गिनता था

किसी वेश्या के घर के सामने एक संत आकर रहने लगा। वेश्या के पास जो कोई आता तो संत एक-एक पत्थर उठाकर रखता जाता और बाद में गिनता था कि आज कितने लोग वेश्या के पास आए हैं।

उधर वेश्या संत को देख-देखकर खुश होती है कि देखो मेरे कितने अच्छे भाग्य हैं। मुझे संत के दर्शन मिलते हैं। यह कैसे संयम में रहता है, महान योगी है। दोनों का शरीर शांत हुआ तो वेश्या स्वर्ग गई, संत नरक।

सिद्धांत : जैसी मति वैसी गति।

351. सूर्य-पुत्र और दासी-पुत्र

कर्ण कुन्ती-पुत्र था और सूर्य के वरदान स्वरूप उसके विवाह के पहले ही जन्मा था, इसलिए कुन्ती ने इसे नदी में टोकरी में रखकर बहा दिया था। यह एक सारथी को मिला और उसी ने इसे पाल-पोसकर बड़ा किया था, इसलिए यह दासी-पुत्र कहलाता था। इसे जब-जब लड़ाई में कोई दासी-पुत्र कहता तो यह अपने को छोटा समझने लगता और इसकी शक्ति क्षीण हो जाती। सूर्य-पुत्र कहता तो इसकी शक्ति बढ़ जाती और मनोबल भी बढ़ जाता।

सिद्धांत : गुरु शिष्य को उसकी असलियत बताकर आत्मा-परमात्मा की शक्ति उसमें डाल देता है। दुनिया वाले गंदा-गंदा जीव कहकर शक्ति गंवा देते हैं।

352. ट्रेन के डिब्बे में एक आदमी आया

प्रात:काल का समय था। ट्रेन में कई यात्री शांति से बैठे, कोई अखबार पढ़ रहे थे, कोई बाहर का दृश्य देखने में लीन थे।

इतने में एक आदमी आया और सीट पर बैठ गया। उसके साथ 3-4 बच्चे भी थे जिन्होंने आते ही उधम मचाना शुरू कर दिया।

वे किसी का अखबार खींचते या अन्य तरह से सब को Disturb करते। वह आदमी गुम-सा बैठा रहा। बच्चों को कुछ न बोला। एक सहयात्री तंग आकर इस आदमी से कहने लगा—'देखिए बच्चे सब यात्रियों की शांति भंग कर रहे हैं। आप उन पर थोड़ा तो नियंत्रण रखिए।' जैसे कोई नींद से उठा हो, वह आदमी अपने बच्चों की हरकतों को देखकर बोला—'हां आप ठीक ही कहते हैं। बच्चे बहुत उधम मचा रहे हैं। पर एक घंटे पहले अस्पताल में मेरी पत्नी का शरीर शांत हो गया और मैं अपने आप को संभाल नहीं पा रहा हूं। मुझे लगता है बच्चे भी खुद को Control नहीं कर पा रहे हैं।' उसकी यह बात सुनते ही सब यात्रियों के दिल में जहां Judgement और Resentment थी, वहीं सहानुभूति और करुणा उमड़ पड़ी।

सिद्धांत : सत्गुरु बिना पूछे ही सब के प्रति करुणा से ओत-प्रोत रहते हैं और उनके हर श्वास, हर वचन से अनेक के दुख मिट जाते हैं।

353. दुर्योधन और युधिष्ठिर बुरे आदमी की तलाश में

एक बार कृष्ण भगवान ने युधिष्ठिर से कहा कि—'कोई भी बुरे आदमी को उनके लिए ढूंढ़ लाओ।' युधिष्ठिर ने हर जगह ढूंढ़ा पर उन्हें कोई बुरा न मिला। फिर कृष्ण ने दुर्योधन को बोला—'तुम मेरे लिए किसीं बुरे आदमी को ले आओ।' दुर्योधन बोला—'मुझे तो सारे ही बुरे लगते हैं। एक भी अच्छा आदमी दिखाई नहीं देता।' अच्छे को अच्छाई ही अच्छाई दिखती है। ऐसे अच्छाई पर नजर रखते-रखते स्वयं में से बुराई खत्म हो जाएगी। दूसरों में अच्छाई है। दुनिया की हर अच्छाई देखना ही भगवान देखना है क्योंकि भगवान की अच्छाई है। दुनिया की हर अच्छाई भगवान से है।

सिद्धांत : तुम साध बनो कोई चोर नहीं।

To See God is to be God.

354. ये कपड़े मेरे हैं

एक लड़के ने अपने गरीब दोस्त को बहुत जोर देकर अपने नए कपड़े पहना दिए। पार्टी में गए तो सब गरीब दोस्त के कपड़ों की तारीफ करने लगे। अब लड़के के मन में निराशा हुई कि कपड़े मेरे हैं, तारीफ इसकी हो रही है। आगे निकले तो नए लोगों से अपने दोस्त का परिचय करवाते हुए बोला—'यह मेरा बहुत अजीज दोस्त है, बहुत होनहार और

कुशाग्र बुद्धि है पर ये जो इसने कपड़े पहने हैं, ये मेरे हैं।' गरीब दोस्त ने धीरे से कान में कहा—'ऐसे क्यों कहा कि ये कपड़े मेरे हैं?' और मेहमानों से Introduce करते हुए लड़का सचेत होकर बोला—'यह मेरा बहुत बचपन का मित्र है। मुझे जान से भी प्यारा है और जो कपड़े इसने पहने हैं उनके बारे में मैं नहीं कहना चाहता कि ये मेरे हैं।' दोस्त ने कहा—'तुम कपड़ों के बारे में बात ही क्यों करते हो?' वह बोला आगे से कपड़ों का जिक्र नहीं करूंगा। और लोगों से मिलने पर दोस्त को Introduce कराया और अंत में कह ही दिया—'और कपड़ों के बारे में तो मैं कुछ बोलता ही नहीं हूं।'

सिद्धांत : जब 'मैं' याद है तब तक हर सत्कर्म दुष्कर्म है क्योंकि यह अहंकार बढ़ाता है। पहले अपना आप भुलाओ पीछे दान करो।

355. भावना का फल

एक राजा राज्य के खेतों को देखने गया। चलते-चलते थक गया। एक बाग में आराम करने की सोचकर रुक गया। माली ने बड़ा आदर सत्कार किया और जल्दी ही अनार का रस ले आया। राजा ने पूछा—'कितने अनार का रस है?' माली ने कहा, एक अनार का। राजा ने कहा, एक और लेके आना। माली लेने गया तब राजा के मन में आया कि माली तो बड़े साहूकार हो जाएगा। इस पर टैक्स लगाना चाहिए। अब अन्दर माली रस निकाल रहा था। एक, दो, तीन अनार

के दाने निचोड़ डाले पर गिलास भरे नहीं। आखिर आधा गिलास ले आया। राजा को बड़ा गुस्सा आया कि आधा गिलास ही क्यों? माली ने कहा—'हमने कुछ नहीं किया। तीन अनार से आधा ही गिलास भरा। आपने ही कोई संकल्प किया होगा।' राजा को उसी समय अपनी भूल का एहसास हो गया कि मेरा ही गलत संकल्प धरती पर असर करता है।

सिद्धांत : लाख कोस तक भी अच्छा-बुरा संकल्प असर करेगा, इसलिए सोचकर संकल्प करना।

356. जिसने तेरे कान में कहा उसने मेरे कान में कहा

एक नई बहू और सास एक जगह से दूसरी जगह जा रहे थे।

रास्ते में रात हो गई और जंगल पड़ा तो सोच में पड़ गए कैसे पहुंचेंगे।

एक पठान वहां से घोड़े पर गुजर रहा था। उसके अंदर भाव आया कि इन दोनों औरतों की सेवा करूं। उसने पूछा आपको छोड़ दूं? दोनों प्रेम से बैठ गईं। थोड़ी दूर चलने के बाद पठान के मन में खोट आ गई। उसने सोचा एकांत है, शून्य देश है, इनके जेवर निकाल लूं और इन्हें रास्ते में ही छोड़ दूं। उसी समय बुढ़िया ने कहा—'साहब हमें यहां छोड़ दो, अब हम अपने आप चले जाएंगे, नजदीक ही है।' पठान ने कहा—'क्यों, क्या बात है?' बुढ़िया ने कहा—'जिसने

तेरे कान में कहा, उसने मेरे कान में भी कहा।' और वे दोनों उतर गईं।

सिद्धांत : सृष्टि सारी उत्तम है, बांढ़िया है। हम संकल्प-विकल्प करके खेल बिगाड़ देते हैं।

357. जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

एक राजा के महल के नजदीक एक लकड़हारा रहता था जो चन्दन की लकड़ियां बेचा करता था।

उसकी लकड़ियां नहीं बिकती थीं जिससे वह बहुत गरीब था। एक दिन उसे खयाल आया कि अगर राजा मर जाए तो मेरी सब लकड़ियां बिक जाएंगी।

इधर उसने संकल्प किया उधर राजा के मन में आया, क्यों न महल को बड़ा बना दें। उसने वजीर को बुलवाया और कहा कि लकड़हारे की झोंपड़ी तुड़वा दो। वजीर ने जाकर लकड़हारे को बताया कि राजा का आदेश है कि उसकी झोंपड़ी तुड़वा दी जाए। लकड़हारा रोने लगा। वजीर समझदार था, उसने पूछा—'सच बताओ, तुमने राजा के लिए कोई भी बुरा खयाल मन में किया था?' लकड़हारे ने सच-सच बता दिया। वजीर फिर बोला—'तुमने ये क्यों नहीं सोचा कि राजा यज्ञ करे या उसके घर में शादी हो तो मेरी लकड़ियां बिकें।' उसी समय लकड़हारे ने अच्छा संकल्प किया। थोड़ी देर के बाद वजीर राजा के पास पहुंचा तो वह कहने लगा, लकड़ाहारे की झोंपड़ी छोड़ दो। हमने

महल बढ़ाने का खयाल छोड़ दिया है। वजीर को प्रयत्क्ष अनुभव हो गया कि कैसे संकल्प-विकल्प सृष्टि में काम करते हैं।

सिद्धांत : As You think so it becomes.

जैसी मति वैसी गति। सब अपना संकल्प ही Return होता है।

358. गाय है तो दूध पिया नहीं तो गोबर से बचा

एक संत हमेशा खुश रहता था। लोगों ने पूछा—'क्यों इतना खुश हैं?' कहने लगा—'मेरे पास गाय है, दूध-मलाई खाता हूं, हमेशा खुश रहता हूं।' लोगों को इतनी जलन थी कि उन्होंने उसकी गाय चुरा ली और सोचा, देखें अब यह कैसे रहता है खुश। थोड़े दिन बाद गए तो देखा संत बहुत खुश है। संत बोला—'गाय थी तो गोबर साफ करना पड़ता था, मच्छर भी होते थे। अब उस सबसे छूट गया और वैसे ही बाजार से दूध-मलाई लेता हूं। अब पहले से भी ज्यादा खुश हूं।'

सिद्धांत : ज्ञानी हर बात से भलाई उठा लेता है और खुश रहता है।

359. हे प्रभो, तेरा शुक्र है

एक वृद्ध भिखारी मार्ग के एक ओर बैठा रहता था और मुख से हर समय भगवान का शुक्र किया करता था। एक

सज्जन पुरुष वहां से ही गुजरा करते थे। उसने एक दिन देखा कि बूढ़े बाबा की आंखें नहीं हैं। हाथ पांव भी कटे हुए हैं फिर भी वह शुक्र कर रहा है। आश्चर्य के साथ सोचा कि इसके बावजूद भी किस बात का शुक्र कर रहा है? एक दिन उसने पूछ ही डाला कि—'बाबा आप किस बात का शुक्राना करते हैं? भगवान ने शुक्र करने योग्य कौन-सी वस्तु तुम्हें सौंप रखी है?' भिखारी ने जोर से आवाज करके कहा—'तुम तो आंखें होते हुए भी अंधे हो। कृपालु भगवान की दया तुम्हें दिखाई नहीं देती? उस करुणा के सागर ने पाप करने के मुख्य अंग मुझसे छीन लिए ताकि मैं सदा पापों से बचा रहूं? यह क्या कम अनुकम्पा है? फिर मैं शुक्रिया ना करूं?' इस उत्तर से वह युवक सहमत हो गया और वह भी सदा के लिए हर अवस्था में भगवान का शुक्र मनाने लगा।

सिद्धांत : हर बात में भलाई है, इसलिए हर बात में प्रभु का शुक्राना है।

360. साधु ने दस हजार की चोरी क्यों की

एक बहुत अमीर सेठ ने साधु को खाने पर बुलाया। साधु को उस कमरे में भोजन कराया जहां बहुत से रुपए रखे थे। रात को जब साधु सोया तो सोचा, क्यों न एक बंडल रुपयों का उठा लूं, जिंदगी आराम से बीतेगी। अगले दिन वह बंडल लेकर चला गया।

इधर सेठ ने पैसे कम पाए, सोचा, नौकर ने लिए हैं। उधर साधु को बहुत दस्त आए। फिर उसने सोचा, मैंने चोरी क्यों की, नींद भी गायब हो गई। उसने सेठ के पास जाकर पैसे वापिस दिए।

सेठ को विश्वास न हुआ। साधु ने बताया, उसने चोरी क्यों की। उसने कहा, पाप की कमाई का खाना खाने से उसकी विचारधारा भ्रष्ट हो गई थी और जब वह दस्त के रूप में निकल गई तो सब ठीक हुआ। गलती का एहसास हुआ। सेठ ने अपनी गलती अपनाई कि वास्तव में वह पाप की कमाई थी।

सिद्धांत : जैसा अन्न वैसा मन।

361. स्वपच मुनि

धर्मराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया, जिस समय इंद्रप्रस्थ को राजधानी बनाया। सभी ऋषि-मुनियों को नम्रता से भोजन कराया जाना था। कृष्ण ने कहा—'प्रेमपूर्वक यज्ञ सफल होगा तो घंटा बजेगा।', लेकिन सबको खिलाने के बाद घंटा नहीं बजा तो कृष्ण ने कहा—'कहीं कोई मुनि रह गया है।' पता कराया गया तो जंगल के किसी कोने में स्वपच मुनि थे, जो फटे वस्त्र में रहते थे। इसलिए पांडवों ने न्यौते के समय उन्हें ऋषि नहीं समझा था। अब युधिष्ठिर खुद गए तो निमंत्रण दिया, मगर मन में फटे कपड़े आ गए, तो जैसे द्वेष हो गया। फिर द्रौपदी को भेजा गया, वह नंगे पांव गई,

भक्ति की माला डाली तब कहीं मुनि माने। मुनि ने एक शर्त रखी कि राजसूय यज्ञ का फल उसे मिले, तब वह जाएगा। द्रौपदी समझदार थी, उसने मुनि से इस दोहे का अर्थ पूछा—

'संत मिलन को जाइए, तज माया अभिमान,
एक-एक पग जो धरे, सौ-सौ यज्ञ समान।'

जब मुनि ने अर्थ समझाया और कहा, तुम नंगे पांव आई हो तो एक-एक कदम सौ-सौ राजसूय यज्ञ समान है। तो द्रौपदी ने कहा—'वह आप ले लीजिए, अर्थात मेरे आने का फल, एक कदम का।' मुनि द्रौपदी को समझ गए और प्रेमपूर्वक चल पड़े। फिर उन्हें वहां प्रेमपूर्वक भोजन कराया, लेकिन घंटा न बजा तो कृष्ण ने द्रौपदी से पूछा—'खिलाने के समय क्या भाव आया था?' द्रौपदी ने बतलाया कि मुनि ने इतने बढ़िया पदार्थ जब सब इकट्ठे मिलाए तो मन में लकीर आई। मुनि से कृष्ण ने पूछा—'ऐसा क्यों किया?' तो मुनि ने कहा कि खाने से पहले वह भगवान को भोजन अर्पण करता था। इतने सारे पदार्थ थे, इसलिए सब एक साथ मिला दिए। द्रौपदी ने क्षमा मांगी तो घंटा बजा। यज्ञ पूर्ण हुआ।

सिद्धांत : सही भाव से ही कर्म सही होता है।

362. बुराई करे उससे भलाई

मर्दाने ने एक बार गुरु नानक से पूछा—'साईं! अगर कोई बुराई करे तो क्या करें?' गुरु नानक ने कहा—'आनन्द

में रहें और उसके बदले कोई बुराई का खयाल भी न करें।' मर्दाना बोला—'साईं! संसार में सीधे-साधे को सदा सताते हैं। जैसे वृक्ष को सब लकड़ियों के लिए काट लेते हैं।' फिर भी गुरु नानक बोले—'मर्दाना! तब भी चुप रहें।' मर्दाना ने फिर अर्ज किया, साईं! फिर भी वह शत्रुता कर के दुख दे तो क्या करें? गुरु बोला—'तीसरी बार वह जालिम होगा ही नहीं। इसलिए बुराई करने वाले से भलाई ही करनी चाहिए तभी प्रारब्ध अच्छी बनेगी। प्रारब्ध को अच्छा या बुरा बनाना भी अपने हाथ में है। सुकर्म करके सूली को कांटा बनाया जा सकता है।'

सिद्धांत : गुलाब का फूल बनो, जिसे मसलो फिर भी वह खुशबू ही देता है।

363. जहाज में बहुत-सी कपास आई

एक दिन एक बड़े जहाज में बहुत-सी कपास की गठरियां बंदरगाह पहुंचीं। उन दिनों कपास हाथ से ही काती जाती थी। एक बुढ़िया माई ने इतनी गठरियां देखीं तो एकदम उसके मन में इस चिंता ने घेर लिया कि इतनी कपास कौन कातेगा। इस खयाल को लेकर उसका मगज बहुत भारी हो गया और वह पागल-सी यही सवाल सब से पूछती रहती थी। सबने समझाने की कोशिश की कि यह कपास यहां के लिए नहीं आई है। दूसरी जगह जा रही है। पर वह इतनी धुन में एक ही बात पकड़े रही और पागल हो गई। बहुत

दवा-दारू हुई पर वह ठीक न हुई। आखिर उसे शहर के बड़े डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर ने सारा वृत्तांत सुना और बूढ़ी माई से कहने लगा, अम्मा वहां सर्दी पड़ रही थी तो हाथ सेंकने के लिए सब ने आग जलाई। उसकी एक चिंगारी कपास के लग गई और सारी कपास जलकर राख हो गई। माई ने पूछा—'हां, सब कपास जल गई?' डॉक्टर ने कहा—'सबकी सब जलकर खाक हो गई, थोड़ी-सी भी नहीं बची।' यह सुनकर माई का भ्रम दूर हो गया और वह ठीक हो गई।

सिद्धांत : हम फिजूल के खयालों से भ्रमित हो दुखी होते रहते हैं। गुरु संसार की सारी आग बुझाकर हमको ठंडक में ले आते हैं।

15. सच्ची समझ के दृष्टांतों की सूची

364. लकड़ी को बिना छुए छोटा-बड़ा करना
365. पांच वचन
366. शेर से नहीं डरता, संध्या माई से डरता है
367. राजा ने कहा कोयल की आवाज तो कोयल ही कर सकती है
368. एक सतोगुणी ने घर को स्वर्ग बनाया
369. राजा जनक ने खोटे सिक्के लिए
370. जो Part मिले उसे पूरा निभाओ
371. बूढ़े को चिंतन चला, जवान ने काम किया
372. साहूकार ने तीनों बेटों को सौ रुपए दिए
373. अजीब सुख देने वाला जूता घर
374. मैनेजर ने जमादार का काम किया
375. रामजी कुत्ता क्यों उठाया है
376. हारमोनियम सिखाने वाले के पास तीन शिष्य आए
377. टाइम पूछा
378. छोटी रानी राजा को सही मार्ग पर लाई
379. राजा रणजीत सिंह और कुरान
380. बुढ़िया को सड़क के एक तरफ से दूसरी तरफ
381. नेवला कैसे सांप को जीतता है
382. मास्टर ने Student को नमक मुंह में रखना सिखाया
383. गाय घास खाती है—कुत्ता भौंकता है

384. आपका ही खाते हैं
385. समुद्र तट पर औरत को नीचे-ऊपर कर रहा था
386. राजा का असावधानी का यज्ञ
387. मछली वाली और फूल वाली
388. आदमी-औरत-बैल
389. हंसी-मजाक में राजाई गंवाई
390. शिक्षा का प्रभाव
391. भीम ने विजय नगाड़ा बजाया
392. एक ही रास्ता
393. कुम्हार को धूप चाहिए किसान को बरसात
394. जो होता है, ठीक है
395. चोर के तकिए में पैसा
396. मेंढक पूरा पिस गया
397. प्रतिज्ञा पालने का समय
398. मनुष्य का जीवन
399. चोर की दाढ़ी में तिनका
400. घोड़े को पानी पीना सिखाओ

सच्ची समझ पर अन्य दृष्टांत

339. सारा जगत echo है
340. जेल में एक ने सितारे देखे
341. समुद्र तट पर दो आदमी

सच्ची समझ

364. लकड़ी को बिना छुए छोटा-बड़ा करना

एक दिन अकबर बादशाह ने दरबार में एक लकड़ी रखी और सबसे कहा इसे बिना छुए छोटा और बड़ा करना है। किसी की समझ में न आया पर बीरबल समझदार था। पहले उसने उस लकड़ी के सामने एक उससे लम्बी लकड़ी रखी तो वह छोटी लगने लगी, फिर छोटी रखी तो वह बड़ी हो गई।

सिद्धांत : औरों की बड़ी हालत देखेंगे तो अपनी छोटी हो जाएगी। अपने को हर बात में ताकत में लाओ।

365. पांच वचन

एक भक्त था। वह सारा दिन ध्यान-भजन में मस्त रहता था। काम-धन्धा कुछ न करता था। स्त्री ने समझा-बुझाकर एक दिन उसे पचास रुपए दिए कि कुछ सौदा करो और कुछ काम शुरू करो। रुपए लेकर वह सौदा करने निकल पड़ा।

रास्ते में एक जगह लिखा था——एक वचन दस रुपए में। उसके मन में आया कि पचास रुपए हैं पांच वचन ले लूं। सच्चा सौदा तो यही है। तो उसने पांच लिए।

1. कभी भी पांच जने मिलकर अच्छी सलाह दें तो जरूर मानना।

2. अपनी स्त्री को सच न बताना।

3. राजा या गुरु को हमेशा सच बताना।

4. किसी के भी पाप पर पर्दा डालना।

5. हजार काम छोड़कर पहले सत्संग करना।

वचन लेकर चला तो देखा कुछ लोग खड़े आपस में बात कर रहे हैं। उन्होंने इसे बुलाकर कहा——'हमारा एक आदमी मर गया है। हमें व्यापार के लिए जल्दी जाना है। तुम इसका आखिरी क्रिया-कर्म कर दो।' क्रिया के लिए उन्होंने रकम दी। आदमी को पहला वचन याद आया और उसने कहना मान लिया। फिर देखा, मुर्दा सोने के गहने पहने हुए है। इसको कहा——'यह जेवर और इसकी बाकी सब चीजें भी आप ले लेना।' सो उसने मुर्दा जला दिया और जेवर तथा अन्य सामान अपने घर ले आया। स्त्री ने पूछा, यह कहां से मिला? उसको दूसरा वचन याद आया। उसने कहा कि पहाड़ से सिर टकराया तो यह मिला। यही बात सबको बता दी। अब तो सब जा-जाकर पहाड़ से सिर टकराने लगे। खून बहाकर किसी को कुछ न मिला। राजा को खबर पहुंची कि इस तरह लोग पहाड़ से सिर टकरा रहे हैं। खोज-खबर

निकाली गई और यह आदमी राजा के सामने लाया गया। उसे तीसरा वचन याद आया और उसने राजा को सब सच-सच बता दिया। राजा उसकी सच्चाई देखकर प्रसन्न हो गया। उसे एक कोतवाल की जरूरत थी तो इस आदमी को ही कोतवाल बना दिया। कुछ दिन बाद राजा किसी कारणवश बाहर गया। एक रात कोतवाल ने देखा, रानी सईस के साथ सोई है। उसे चौथा वचन याद आया और उसने पाप पर पर्दा डालने के हिसाब से उन पर अपना दुशाला डाल दिया। रानी ने जान लिया कि कोतवाल को उसका पाप मालूम हो गया सो उसे मरवाने की सोची। रानी ने कोतवाल को बुला भेजा और कहा कि तुम सवेरे मटन लाना। मटन वाले को कहलवाया, जो पहले आवे उसका सिर काटना, जो बाद में आवे उसे सिर दे देना। कोतवाल मटन लेने जा रहा था कि देखा सत्संग हो रहा है। उसे पांचवां वचन याद आया और वह मटन भूलकर सत्संग में बैठ गया। इधर रानी ने सोचा, अब मटन वाले ने कोतवाल का सिर काट लिया होगा, सो भाई को भेजा सिर लाने के लिए। भाई पहले पहुंचा तो उसी का सिर कट गया। कोतवाल सत्संग से आया तो उसे भाई का सिर देकर रानी के पास जाने को कहा। रानी कोतवाल को देखकर हैरान हो गई और राजा को सब सच-सच बताकर बोली——'मैं झूठी, कोतवाल सच्चा।'

सिद्धांत : गुरु के वचनों पर चलने से कष्ट टल जाते हैं और बाल भी बांका नहीं होता।

366. शेर से नहीं डरता, संध्या माई से डरता है

एक धोबी रोज अपने गधे पर कपड़े लादकर ले जाता था। वह गधे को कहता, जल्दी चल नहीं तो संध्या आ जाएगी। एक दिन गधा नहीं था और शेर को वहां खड़े देख धोबी ने उस पर ही कपड़े लाद दिए और बोला—'जल्दी-जल्दी चल नहीं तो संध्या आ जाएगी।' शेर ने सोचा—'मैं शेर हूं पर यह आदमी मुझसे नहीं डरता, फिर भी यह संध्या माई से डरता है। संध्या माई जरूर कोई बहुत डरावनी राक्षसी होगी। मैं इस धोबी की बात नहीं मानूंगा तो संध्या माई मुझे मार देगी।' ऐसा सोचकर वह चुपचाप रोज उसके कपड़े ढोने लगा। एक दिन एक दूसरे शेर ने देखा तो उसे कुएं पर ले जाकर अपनी सूरत दिखाई और तब उसका भ्रम दूर हुआ।

सिद्धांत : शेर अपने भ्रम से आजाद हो गया और निज स्वरूप में स्थित हो गया।

367. राजा ने कहा कोयल की आवाज तो कोयल ही कर सकती है

राजा के पास एक आदमी आया जो हर प्रकार के जानवरों की आवाज करना जानता था—कोयल, शेर, गीदड़, हाथी। सुनकर राजा कुछ देर चुप रहा और मनन करता रहा। फिर उसने कहा, कोयल की आवाज तो कोयल ही कर

सकती है। सब जानवरों की आवाज तुमने Immitate की पर अपनी क्या बात की? Don't be Immitative but Creative.

सिद्धांत : अपने से अपने को जगाओ।

368. एक सतोगुणी ने घर को स्वर्ग बनाया

एक घर में छः बहुएं थीं पर हमेशा झगड़ती रहती थीं। कभी काम पर, कभी कपड़ों पर, कभी घूमने पर। सबके आसुरी-सम्पदा के लक्षण थे जिससे सब परेशान थे। सातवीं बहू जो घर में आई वह दैवी-सम्पदा वाली थी। उसने सोचा बिगड़े घर को बनाना है। वह सब काम करती और सब को कहती, आप घूमने जाओ। मैं खाना बनाकर रखूंगी। एकाग्रता के कारण उसके हाथों का खाना और अच्छा और स्वादिष्ट बनता। अपने अच्छे कपड़े दूसरों को पहनाती और खुद सादे पहनती। सबके Vibrations अच्छे हो गए। एक दिन उससे पूछा—'तुम प्रेम में कैसे रहती हो?' वह बोली—'मैं समझती हूं घर की सेवा आत्म-पूजा है।' सबने उससे सीखा और आत्म-पूजा समझकर प्रेम से रहने लगे।

सिद्धांत : एक ज्ञानी दीया बनकर जलता है तो उसके Vibration का असर सब पर पड़ता है।

369. राजा जनक ने खोटे सिक्के लिए

राजा जनक के राज्य में एक बार किसी ने खोटे सिक्के

दिए। राजकीय खजांची ने उस पर बहुत क्रोध किया और राजा जनक को इत्तला दी। जनक जी ने कहा—'इसके खोटे सिक्के स्वीकार करो।' खजांची दंग रह गया तो राजा ने बताया—'यदि हम इसके खोटे सिक्के न लेंगे तो यह किसी और को ठगेगा। हममें तो इसकी ठगी झेलने की सामर्थ्य है। दूसरा कोई तो डूब जाएगा।'

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी गुरु गलत आदमियों को अपने नजदीक इसलिए रखता है कि दुनिया में जाएंगे तो औरों को भी डुबाएंगे। फिर सिद्ध पुरुष के संग से तर कर सबको वे ही तारते हैं।

370. जो Part मिले उसे पूरा निभाओ

राजा का एक बालक था। वह सब तरह का पार्ट प्ले कर सकता था।

एक बार उसने शेर का पार्ट प्ले किया। बिल्कुल शेर की तरह दहाड़ता और उसी की तरह अकेला घूमता रहता। उसी समय राजकुमार की शादी थी। राजकुमार को मजाक सूझा और वह शेर को छेड़ने लगा। शेर के रूप में बालक ने कहा—'मेहरबानी करके ज्यादा कुछ न करना नहीं तो शेर का पार्ट पूरा प्ले करना पड़ेगा।' पर राजकुमार ने नहीं सुनी। वह मजाक करता ही गया तो बालक बिल्कुल शेर की तरह दहाड़ मारकर झपट पड़ा और राजकुमार को मार डाला। सारे शहर में हल्ला मच गया पर किसी ने बालक को दोषी नहीं

ठहराया, क्योंकि वे जानते थे कि ये हर पार्ट पूरा प्ले करता है। फिर सबने सोचा इसे अब वेद विद्या पढ़ाने वाला ब्राह्मण का पार्ट देते हैं, देखें यह पक्का है क्या? ब्राह्मण बना तो समय पर कथा करता था। अद्वैत का पठन-पाठन होता था। कथा के बाद लोग पैसा रखते यह देखने के लिए कि यह पैसा उठाता है क्या?

पर उसने एक पाई न उठाई कि जब इस पद पर हूं तो सच्चा ब्राह्मण होकर चलूं, जो पैसे को हाथ न लगाता हो और स्वयं पर विश्वास रखता हो।

सिद्धांत : जिस समय जो पार्ट मिले उसमें पूरा रहें। जिज्ञासु हैं तो गुरु भक्त होकर रहें।

371. बूढ़े को चिंतन चला, जवान ने काम किया

एक गुरु के पास दो शिष्य बारह महीने तक रहे। एक बूढ़ा था, एक जवान। गुरु ने उन्हें परीक्षा के लिए जगत में भेजा। रास्ते में एक नदी पड़ी। उसमें देखा कि एक औरत डूब रही है।

जवान झट से नदी में कूदा और डूबती हुई औरत को कंधे पर लादकर डूबने से बचाया। किनारे पर लाकर उसका पानी निकाला और उसे घर तक पहुंचाया।

बूढ़े के अंदर आया, गुरु ने कहा है कामिनी से बचना चाहिए। कुछ समय बीत गया। बूढ़े ने जवान को याद दिलाया गुरु का वचन। जवान ने कहा, मुझे तो याद भी नहीं है कि

मैंने कोई औरत को बचाया। कर्म सामने आया और हो गया। तुम्हारे मन में औरत पड़ी है। बारह महीने बीत गए, दोनों गुरु के पास गए। उस समय भी बूढ़े को औरत के डूबने की बात याद थी।

सिद्धांत : भोगने से भोग का चिंतन खराब है।

372. साहूकार ने तीनों बेटों को सौ रुपए दिए

एक साहूकार ने तीन बेटे थे। उसने सोचा, देखूं लायक कौन है, जायदाद किसको दूं। उसने तीनों को सौ-सौ रुपए दिए और कहा, सौ रुपए में जो आए उससे कमरा भरो। तो एक ने सोचा, सौ में तो कुछ नहीं आएगा, जुआ खेलकर यह रुपया बढ़ाता हूं ताकि कुछ तो कमरा भरेगा? वह सौ रुपया उसने जुए में गंवा दिया।

दूसरे ने सोचा, सौ रुपए में तो भूसा ही आएगा जिससे कि कमरा भरे। तो उसने भूसे से कमरा भरा।

तीसरे ने सौ रुपए के Scent और अगरबत्ती लेकर कमरे को सुगंध से भर दिया।

सिद्धांत : गुरु का ज्ञान सबको समान मिलता है, पर कोई Use कैसे करता है, कोई कैसे।

373. अजीब सुख देने वाला जूता घर

चार दोस्त एक Exhibition में गए। वहां एक Stall पर लिखा था—'दुनिया का सबसे बेहतरीन सुख'। सब इसी

Stall में जाकर बेहतरीन सुख का मजा लूटना चाहते थे और जो बाहर आता वह बोलता, इस Show में जरूर जाओ। इनमें से एक दोस्त पहले गया। Stall में घुसते ही सिर पर तड़ातड़ा जूते बरसने लगे। उसने सोचा, यह तो बुरे फंसे। फिर बाहर निकला तो सोचा, मैं अकेले ही जूते की मार क्यों खाऊं? बाकी तीनों दोस्तों को भी मार पड़े। यह सोचकर वह सबसे बोला—और किसी Show में जाओ न जाओ, इसमें जरूर जाना, बहुत मजा आता है। ऐसे तीनों Show में गए। वापस आए तो वो भी औरों को बोलने लगे, इस Show में जाओ।

सिद्धांत : सब जानते हैं दुनिया में शादी करके, बच्चे पैदा करके, जूते खाने पड़ते हैं पर सब दूसरों को इसके लिए भेजते हैं।

374. मैनेजर ने जमादार का काम किया

एक मैनेजर ने जमादार के न आने पर उसका काम किया और समझा मैंने बड़ी बात की। मालिक ने कहा, अब तुम्हें जमादार की Pay मिलेगी।

सिद्धांत : गुरु भगवान के पास आकर निष्काम कर्म न करके छोटी-छोटी बातों में मन रखेंगे तो हमारी उतनी ही Value होगी।

375. रामजी कुत्ता क्यों उठाया है

रामजी नाम का एक आदमी कंधे पर बकरा लिए घर जा

रहा था। रास्ते में तीन ठग खड़े थे। उन्होंने आपस में इसको ठगने का उपाय सोचा। एक ने राम जी से कहा—'रामजी, तुम यह कुत्ता लेकर कहां जा रहे हो?' वह बोला—'कुत्ता थोड़ी है, यह तो बकरा है।' आगे बढ़ा तो दूसरा ठग हंसकर बोला—'अरे भाई, यह कुत्ता कहां से ले आ रहे हो?' रामजी सकपकाया और शंका करने लगा कि यह कुत्ता ही तो नहीं! थोड़ी देर बाद तीसरा ठग रास्ते में खड़े होकर बोला—'बड़ी विचित्र बात है कि तुम इस कुत्ते को उठाकर लिए जा रहे हो।' राम जी आत्मविश्वास खो बैठा। ठगों की बात में आकर बकरा वहीं छोड़कर भाग गया।

सिद्धांत : संसार ठगने को बैठा है। केवल गुरु निश्चय कराता है—सत्य क्या, असत्य क्या।

376. हारमोनियम सिखाने वाले के पास तीन शिष्य आए

एक हारमोनियम सिखाने वाले के पास एक लड़का आया। वह बोला मुझे बजाना आता है, पहले सीखा हुआ हूं, अब पूरी तरह सीखना चाहता हूं, आप सिखा दीजिए। मास्टर बोला, ठीक है, शुल्क 50/- होगा। दूसरा आया, बोला—'थोड़ा आता है, स्वर का ज्ञान है, बाकी आप सिखा दीजिए।' मास्टर बोला—'शुल्क 25/- होगा।' तीसरा बोला—'कभी पहले नहीं सीखा। शुरू से सब सीखना है।' मास्टर बोला—'10/- शुल्क है।' अब पहले-दूसरे लड़कों ने पूछा—'ऐसा क्यों?'

मास्टर बोला—'जो ज्यादा जानता है उसके ऊपर बहुत मेहनत है क्योंकि पहले वाली जानकारी मिटानी पड़ेगी, फिर नया सिखा सकता हूं। इसी हिसाब से पहले का शुल्क 50/- दूसरे का शुल्क 25/- है।'

सिद्धांत : ज्ञान में कोई ज्यादा शास्त्र पढ़कर आता है तो गुरु को डबल मेहनत पड़ती है। जो नहीं जानता वह हर बात सत्-सत् करके उठाता है।

377. टाइम पूछा

बस स्टॉप पर किसी ने टाइम पूछा। जिज्ञासु ने सोचा, अभी टाइम बताऊंगा तो पीछे और सवाल करेगा और पूरे रास्ते मौन की जगह दुनिया की बातें होंगी।

यह विचार कर उसने पहले प्रश्न का ही उत्तर नहीं दिया।

सिद्धांत : जब-जब हो सके मौन का सहारा लो। मौन है सोन।

378. छोटी रानी राजा को सही मार्ग पर लाई

किसी राजा का लड़का बचपन से बुरी संगत में पड़ गया और संखिया लेने लगा। शुरू थोड़े से किया पर धीरे-धीरे बहुत लेने लगा।

इसके साथ-साथ सुख भोगी, इच्छुक और आलसी हो गया।

थोड़े दिन बाद पिता का देहांत हो गया और यह राजा बन

गया, पर राज्य-काज नहीं देखता था। वजीर सम्भालते थे पर बिना राजा के Discipline खत्म हो गया था।

राजा के कई रानियां थीं, पर छोटी रानी बहुत होशियार थी और उसका राजा भी कहना मानता था। बूढ़ा वजीर रानी के पास जाकर बोला—'राजा को सही रास्ते पर लाने की समस्या का हल आप करें।' रानी ने कहा, आप निश्चिंत रहिए। जो मुझसे बनेगा मैं करूंगी।

रानी ने विचार किया कि राजा की दुर्दशा संखिया लेने से हुई है।

एकदम से संखिया बंद होगा तो शरीर पर उल्टा असर होगा। इसलिए यह काम सावधानी से मुझे अपने हाथ से ही करना होगा। यह निर्णय कर रानी महाराज के पास गई। उसने कहा—'स्वामी, मैं हृदय से चाहती हूं कि संखिया आप मेरे हाथ से ही लें, ताकि इस सेवा का सौभाग्य मुझे मिले।' राजा ने हंसकर कहा—'अवश्य, इससे अच्छा क्या हो सकता है?'

अब रोज रानी संखिया की मात्रा थोड़ी-थोड़ी घटाने लगी और कभी-कभी राजा को दरबार में भी भेजने लगी। एक दिन आया कि राजा का संखिया बिल्कुल छूट गया और वह राज्य-काज में पूरा ध्यान देने लगे।

फिर एक दिन अच्छा मौका पाकर रानी ने हंसते-हंसते कहा—'महाराज, अपने अपराधों के लिए क्षमा चाहती हूं।' राजा ने कहा—'तुमने कौन-सा अपराध कियां है?' रानी ने

कहा—'कई महीनों से आपको संखिया खिलाना बंद है। यह बस मैंने आपकी दृष्टि बचाकर किया था। इसलिए क्षमा प्रार्थी हूं।' राजा बहुत प्रभावित हुआ और खुश होकर हर बात में छोटी रानी की सलाह लेने लगा।

इस प्रकार सूझबूझ से रानी ने बुरी आदतें छुड़वाकर राजा को नियमानुसार जीना सिखाया।

सिद्धांत : मन विषयों से हटता है तो जीवन में नियम आता है। उसकी वजह से शांति आती है तो मन-इंद्रियां अंतरमुखी होती हैं और भगवान की तरफ कदम बढ़ता है।

379. राजा रणजीत सिंह और कुरान

एक मुसलमान युवक ने बहुत सुन्दर कुरान लिखी। उसने वह कुरान सब सेठ साहूकारों को दिखाई। सबने उसकी प्रशंसा की पर कोई लेने को तैयार न हुआ क्योंकि वह दूसरे मजहब की पुस्तक थी। फिर वह राजा रणजीत सिंह के पास गया।

उन्होंने मंत्री से एक हजार मुहरें देकर कुरान लेने को कहा। मंत्री से रहा न गया। वह बोल पड़ा—'यह तो कुरान है!'

रणजीत सिंह ने कहा—'यह धर्म-ग्रंथ एक ही बात कहते हैं। भगवान ने मुझे एक आंख इसलिए दी कि मैं सबको एक दृष्टि से ही देखूं।'

सिद्धांत : परमात्मा एक ही है—नाम अनेक हैं।

380. बुढ़िया को सड़क के एक तरफ से दूसरी तरफ

स्कूल मास्टर ने बच्चों को समझाया कि कोई-न-कोई सत्कर्म जरूर करना चाहिए।

बच्चे क्लास से निकले तो सत्कर्म की तलाश में सब इधर-उधर देख रहे थे। एक बच्चे ने देखा, एक बुढ़िया सड़क के नजदीक खड़ी दूसरी तरफ जाना चाह रही है।

वह तुरंत उसे दूसरी तरफ हाथ पकड़कर ले गया और फिर अपने रास्ते पर चल दिया। इतने में दूसरा लड़का आया और यह सोचकर कि बुढ़िया सड़क के पार होना चाहती है—उसका हाथ पकड़कर उसे सड़क पार करवा दी।

इस प्रकार कई बच्चों ने बुढ़िया को मदद के नाम से उल्टा परेशान कर दिया।

सिद्धांत : दुनिया में सब सत्कर्म करना चाहते हैं पर असल मदद नहीं।

381. नेवला कैसे सांप को जीतता है

जब-जब सांप लड़ाई के दरम्यान नेवले को डसता है तो नेवला दौड़कर झाड़ियों के पास जाता है, वहां एक जड़ी-बूटी होती है जिसे वह जल्दी-जल्दी खाता है, उससे जहर दूर होता है और नेवले में नई ताकत आ जाती है। ऐसे हर बार नई ताकत लेकर वह फिर लड़ाई में उतर पड़ता है।

अंत में थककर सांप शक्तिहीन हो जाता है और नेवला जीत जाता है।

सिद्धांत : इस प्रकार जब-जब माया का डंक जिज्ञासु को असहनीय होता है तो वह संतों का संग करके फिर आता है और एक दिन संसार की पकड़ से मुक्त हो परमानन्द में लीन हो जाता है।

382. मास्टर ने Student को नमक मुंह में रखना सिखाया

एक मास्टर ने Student से कहा—'जैसा मैं करूं वैसा तुम करना तो तुम्हारा सबक पक्का हो जाएगा।' मास्टर ने नमक में अपनी उंगली डुबाई (यह नमक एक तेज Chemical Salt था) और जीभ पर रख ली। अब Students को कहा, तुम भी ऐसा ही करो। मास्टर 15 मिनट उंगली रख पाया, उसे कोई विक्षेपता नहीं आई। लड़कों से उंगली न रखी गई। जीभ दो मिनट में ही जलने लगी। मास्टर ने कहा—'तुम कहना मानने में तो पक्के हो गए पर Observation में कमजोर हो। मैंने पहली उंगली नमक में डुबाई पर दूसरी उंगली जीभ पर रखी। तुमने यह सूक्ष्म Observation नहीं किया तो सबको जलन सहनी पड़ी।'

सिद्धांत : Observation is the Key to Wisdom.

383. गाय घास खाती है—कुत्ता भौंकता है

गाय घास खाती है, वह उसका स्वभाव है। कुत्ता उसको

देखकर भौंकता है जबकि वह घास खाता भी नहीं। हमारे अंदर भी कितना कुत्ते का स्वभाव पड़ा है जिसे हमको पहचानना है।

384. आपका ही खाते हैं

एक मेहमान किसी के घर कई दिनों तक रह गया। वो घर वालों को कहता, पैसे लीजिए तो वह कहते आप ही का तो खाते हैं। जब मेहमान जाने लगा तो उसने देखा कि उसका घोड़ा नहीं है। मालूम पड़ा कि उसे ही बेचकर खा गए। तभी कहते थे कि——साईं, आपका ही खाते हैं।

सिद्धांत : मेहमान को अपने से ही खुश कर दो।

385. समुद्र तट पर औरत को नीचे-ऊपर कर रहा था

एक आदमी ने दूर से देखा कि समुद्र तट पर कोई एक औरत के पास बैठा उसे ऊपर-नीचे कर रहा है। उसे शंका आई कि यह औरत को खराब कर रहा है। पास पहुंचा तो देखा, हाय! औरत डूब रही थी, इससे पानी निकाला और Artificial Respiration देकर अब इसको बचा रहा है।

सिद्धांत : Don't Misjudge People. हर बात में सही Observation से कर्म के मर्म को जानो।

386. राजा का असावधानी का यज्ञ

दक्ष राजा ने यज्ञ किया। ऋषियों-मुनियों के लिए जो प्रसाद

(खीर) बना उसमें चील के मुख से सांप गिर गया। ब्राह्मणों ने खीर खाई और सब मर गए। राजा को स्वयं इसकी जानकारी न थी। खीर भी दूसरे ने बनाई थी पर, चूंकि राज़ा के द्वारा यज्ञ आयोजित था तो उसका दण्ड राजा को मिला——उसके शरीर में कोढ़ हो गया। यज्ञ में खीर खुद चख के फिर सबको परोसनी चाहिए थी।

सिद्धांत : कोई भी यज्ञ हो तो सच्चे दिल से सावधानी से हो अन्यथा दण्ड भोगना पड़ेगा।

387. मछली वाली और फूल वाली

मछली वाली की नाक में मछली की सुगंध इतनी बस जाती है कि उसके बिना उसे नींद नहीं आती और फूल वाली मछली वाली के साथ उठ-बैठ ही नहीं सकती क्योंकि उसको वह दुर्गन्ध सहन नहीं होती। जो एक के लिए सुगंध है वही दूसरे के लिए दुर्गन्ध है।

सिद्धांत : कुछ भी सुन्दर या असुन्दर नहीं है पर मन जिसको जैसा मान ले उसके लिए वह वैसा ही हो जाता है।

388. आदमी-औरत-बैल

एक आदमी और औरत बैल पर चढ़कर जा रहे थे। लोग बोलने लगे, देखो, एक बैल पर दो-दो जा रहे हैं। बेचारे बैल की परवाह नहीं है इनको। यह सुनकर आदमी उतर गया,

औरत बैल पर सवार रही। फिर लोग हंसने लगे कि देखो, बेचारा आदमी चल रहा है और औरत मजे से ऊपर बैठी है। तो औरत उतर आई और आदमी बैठ गया। लोग फिर हंसने लगे तो आदमी और औरत दोनों ने सोचा, लोगों की बात में नहीं आना चाहिए।

सिद्धांत : लोगों को बिना सोचे-समझे कहने से मतलब है।

389. हंसी-मजाक में राजाई गंवाई

एक राजा स्वभाव से मजाकिया था। मजाक करके एक दिन कोतवाल से कहा—'तू मेरे कपड़े पहन।' राजा ने ऐसे तीन-चार बार किया। एक दिन कोतवाल को मजाक सूझी कि सच में ही क्यों न राजा बन जाऊं? उसने राजाई कपड़ों में—सच्चे राजा की, कोतवाल के कपड़ों में—तलवार से सीस काट दिया। जब राजाई पर खुद बैठा तो एक दिन सब को बताया—'मैं राजा नहीं था पर मजाक की वजह से राजा बना।'

सिद्धांत : मजाक में राजा की तरह बुरी गति।

390. शिक्षा का प्रभाव

एक लड़का पाठशाला से कापी चुराकर लाया तो उसकी मां खुश होकर बोली—'अच्छा किया, और लाया कर।' धीरे-धीरे वह बड़ा होकर डकैत बन गया। अंत में उसको

फांसी की सजा होने लगी तो उसने मां को बुलवाया और कान में कुछ कहना चाहा और कान काट दिया। पूछने पर बोला कि जब मैंने पहली बार चोरी की, तो डांट पड़ी होती तो आज फांसी न मिलती।

391. भीम ने विजय नगाड़ा बजाया

एक बार युधिष्ठिर राजसभा में कृष्ण के साथ बैठे थे। एक ब्राह्मण आकर याचना करने लगा। युधिष्ठिर ने कहा—'कल आना'। उसी समय भीम बाहर जाकर नगाड़ा बजाने लगा। युधिष्ठिर ने भागकर पूछा—'भाई, किस विजय के लिए बजाया है?'

भीम ने कहा—'महाराज, आपने कल तक मौत पर विजय पा ली है। ये काम कम है?' महाराजा युधिष्ठिर लज्जित हो गए और ब्राह्मण को वापिस बुलाया।

सिद्धांत : कल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में प्रलय होएगी, बहुरी करेगा कब।

392. एक ही रास्ता

एक गधे के ऊपर मालिक ने चीनी लादी। रास्ते में नदी पड़ी। गधा उसमें बैठ गया, उठा तो बोझ हल्का लगा। गधा खुश हो गया। अगली बार मालिक ने रुई रखी। फिर गधा नदी में बैठ गया, लेकिन अबकी बार बोझा बढ़ गया।

सिद्धांत : सदैव एक ही रास्ता काम नहीं देता।

393. कुम्हार को धूप चाहिए किसान को बरसात

एक बार नारद जी भगवान के पास जा रहे थे तो किसान ने कहा—'भगवान को कहना खूब बरसात बरसाए।' आगे बढ़े तो एक कुम्हार की औरत ने कहा—'भगवान को कहना खूब धूप करे।' नारद ने मन-ही-मन बोला, अभी भगवान को क्या बोलूंगा, भगवान ने जो किया अच्छा ही किया। कुम्हार का करूंगा तो किसान नाराज होगा और किसान का करूंगा तो कुम्हार। इसलिए सृष्टि में जो होता है, ठीक होता है।

394. जो होता है, ठीक है

एक बार दो आदमी जंगल में पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे। वहां एक बेर का पेड़ ऊपर और तरबूज का पेड़ नीचे था। एक ने कहा—भगवान ने बेर का पेड़ ऊपर और तरबूज का नीचे क्यों बनाया? बेर खाने का दिल होए तो ऊपर चढ़ना पड़ता है। थोड़ी देर बाद बेर नीचे गिरे तो उसको दर्द हुआ बोला, शुक्र है भगवान का कि तरबूज ऊपर नहीं था नहीं, तो खोपड़ी टूट जाती।

सिद्धांत : प्रकृति में हर बात ठीक है।

395. चोर के तकिए में पैसा

एक दिन चोर ट्रेन में बैठा था, सामने साहूकार था। चोर की नजर साहूकार पर थी। साहूकार जब गुसलखाने में

गया तो चोर ने ऊपर-नीचे सारा सामान ढूंढ़ निकाला पर कुछ न मिला। जब आदमी वापिस आया तो चोर ने पूछा, चोर तो मैं हूं, पर तुमने माल कहां छुपाया? तुम कमाल के आदमी हो। आदमी ने चोर के तकिए के नीचे से अपना पैसा निकाला।

सिद्धांत : भगवान तुम्हारे अंदर है, तुम बाहर ढूंढ़ते हो तो कहां मिलेगा?

396. मेंढक पूरा पिस गया

एक बार एक मेंढक पानी में रहता था। किसी को पानी गर्म करना था, वो मेंढक उसी पानी में आ गया। स्टोव में पानी थोड़ा गर्म हुआ तो मेंढक ने सोचा, गर्म पानी मेरे को लगता नहीं है। खुद को छोड़ दिया, आलस किया और पानी गर्म होता गया, आखिर मर गया।

सिद्धांत : माया में मनुष्य ऐसे ही अविवेक के कारण अपने को समझ नहीं पाता। फिर माया में पड़ता जाता है। फिर पूरा ही पकड़ा जाता है, आखिर मर जाता है।

397. प्रतिज्ञा पालने का समय

महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपना गांडीव धुनष किसी को नहीं दूंगा। अगर कोई मांगेगा तो उसका वध कर दूंगा।

उसका भाव था कि युद्ध में कोई वैरी धोखे से चापलूसी

करके उससे गांडीव लेकर न चला जाए, इसलिए पहले से ही मन में दृढ़ता कर ली। फिर लड़ाई के दौरान ऐसा समय आया जब युधिष्ठिर का रथ टूट गया और उसके पास कोई हथियार न रहा।

अर्जुन पास ही था, उसने उससे गांडीव मांगा तो अर्जुन अपनी प्रतीक्षा याद करके उसी को मारने लगा। कृष्ण भगवान ने कहा यह क्या कर रहे हो? प्रतिज्ञा तुमने किस मतलब से की थी?

वह याद करो। उस प्रण के कारण तुम अपने ही भाई को थोड़े मारोगे, जिसके लिए तुम अपनी जान की परवाह न करके लड़ाई के मैदान में उतरे हो?

सिद्धांत : Rules are made for man not man for the rules.

398. मनुष्य का जीवन

सुष्टि रचने के बाद भगवान ने सब जीवों को 40-40 वर्ष की आयु दी। मनुष्य सामने आया और कहा, इतनी अल्प अवस्था? आयु बढ़ा दीजिए। भगवान ने कहा—'आयु मैंने सारी बांट दी, हां अगर कोई वापिस देगा तो तुमको दे देंगे।' चालीस वर्ष का तुम सुख भोगो। समय बीता। एक दिन गधा आया और कहा—'इतनी लम्बी आयु तक मैं बोझा ढोता रहूंगा, कम कर दीजिए। भगवान ने गधे के बीस वर्ष मनुष्य को दे दिए। फिर भगवान के पास एक कुत्ता आया और

कहा, इतनी लम्बी आयु तक बच्चे मारेंगे, दुत्कारा जाऊंगा, आयु घटा दीजिए।' भगवान ने उसके भी 20 वर्ष मनुष्य को दे दिए। फिर उल्लू आया और बोला—'इतनी आयु तक रात में भोजन ढूंढूं। लोग अपने मकान पर बैठने नहीं देंगे।' तब उसकी भी 20 वर्ष आयु मनुष्य को दे दी। इस तरह मनुष्य को 100 वर्ष की आयु मिल गई। चालीस वर्ष तक वह हृष्ट-पुष्ट और सुखी रहता है। फिर अगले 20 वर्ष बच्चों का बोझा ढोने में बिताता है। गधे की आयु का काम करने लगा, नमक, तेल, लकड़ी जुटाने में, फिर कुत्ते की आयु भोगता है, घर की देख-रेख में, कुत्ते की तरह भौंककर। कुत्ता भौंकता है पर कोई सुनता नहीं। फिर उल्लू की आयु भोगता हैं आंखों में मोतिया बिंद, दिखाई नहीं देना, कान बहरे, परिवार अब बूढ़े की खाट अलग रख देते हैं, लेकिन फिर भी बूढ़े की तृष्णा बलवती ही रहती है।

399. चोर की दाढ़ी में तिनका

एक राजा की सुई चोरी हो गई। सबसे पूछा पर किसी ने कबूल नहीं किया तो सबको कचहरी में बुलाया गया। राजा ने कहा—'चोर ने सुई तो सफाई से चुरा ली पर उसकी दाढ़ी में तिनका अभी भी लगा हुआ है।' जो असल में चोर था उसका हाथ झट दाढ़ी पर चला गया और वह पकड़ा गया।

सिद्धांत : जो बुरा कर्म करेगा, उसका कर्म उसे खुद ही फंसाएगा।

400. घोड़े को पानी पीना सिखाओ

एक राहगीर घोड़े पर जा रहा था। रास्ते में घोड़े को बहुत प्यास लगी। सामने रहट (नार) से पानी निकल रहा था। घोड़े का मुंह पानी में डाला पर रहट में से टक-टक आवाज निकलती थी जिस वजह से घोड़ा बिदक रहा था और पानी न पीता था। राहगीर ने रहट वाले से कहा कि आवाज बंद करो तो वह पानी पी लेगा। वह बोला—'आवाज बंद होगी तो पानी आना ही बंद हो जाएगा। घोड़े को सिखाओ कि आवाज के साथ पानी पी सके।'

सिद्धांत : माया के बीच में ही भगवान को पाना है।

16. श्रद्धा-भक्ति, उदारता-प्रेम इलाही-हकीकी दृष्टांतों की सूची

401. दुश्मन भी प्यारा हो
402. एक आदमी भगवान को ज्मेज करता है
403. भगवान को आमंत्रण दो
404. भगवान सब पर समान रूप से करुणा बरसाता है
405. बैल का रूप
406. सब राम ही राम
407. मुर्गे का चित्र बनाया
408. फकीर की झोंपड़ी बड़ी होती गई
409. एक ब्राह्मण नंगी तलवार लेकर घूमता था
410. एकनाथ को खिलाना हजार को खिलाने के बराबर
411. भगवान सबको खिलाकर फिर खाता है।
412. सूरदास ने कृष्ण को हृदय के तार से बांधा
413. लक्ष्मी का भक्त सच्चा कि नारायण का
414. राम का तीर
415. भगवान तुम्हारे हृदय में
416. राजा का रहस्य खुल गया
417. पक्षियों को मुक्त करा
418. चैतन्य महाप्रभु ने अपना ग्रंथ फेंका
419. बुद्ध भगवान और अंगुलिमाल डाकू

420. बिना जाने महान उपकार
421. देवताओं और दैत्यों को भोजन
422. कबीर ने बेटे को कहा—'चोरी करो'
423. सच्चा मजनूं कौन
424. केवट को प्रेम से तृप्ति आई
425. राम से राम-नाम बड़ा
426. विश्वास का रूप
427. महापुरुष की महिमा
428. महात्मा गांधी की परख
429. भगवान को पग-धूलि कौन देगा
430. तमोगुणी भक्ति
431. विश्वास पर क्राइस्ट
432. परमेश्वर बचाने वाला हो तो कोई मार नहीं सकता
433. ब्रह्मज्ञानी लड़का भक्ति में स्थिर
434. एक आदमी पेड़ पर छिपकर बैठा कि भगवान कैसे खिलाता है
435. अपने कर्म खुद ही भोगने हैं
436. प्रीतम को बहुत भाजी दी
437. गोबर के उपले
438. तीन बेटों की संभाल
439. वैर-विरोध रहित कबीर
440. पम्पा सरोवर में कीड़े पड़े
441. विवेकानन्द की अटूट श्रद्धा

श्रद्धा, उदारता, प्रेम पर अन्य दृष्टांत

289. शिवाजी को अभिमान

श्रद्धा-भक्ति, उदारता-प्रेम

401. दुश्मन भी प्यारा हो

1857 के गदर के समय जब भारतीय सिपाहियों ने अंग्रेजी सरकार पर धावा बोला था, अंग्रेजों ने उन्हें दबाने के लिए सख्त कार्यवाही की। एक गांव के लोग डरकर अपना गांव छोड़कर भाग रहे थे कि उन्हें एक संत उस गांव की ओर जाता हुआ मिला। उन्होंने संत से कहा उधर नहीं जाओ, सरकारी सिपाही मार डालेंगे। संत सुनी-अनसुनी कर सौम्य भाव से बढ़ता गया। आखिर उसे एक सिपाही ने मौत के घाट उतार दिया। मरते दम भी संत ने उसकी आंखों में प्रेम से झांकते हुए कहा—'तुम भी वो ही हो।'

सिद्धांत : संत की दृष्टि में सदा भगवान बसता है।

402. एक आदमी भगवान को Test करता है

एक आदमी को विश्वास नहीं आता था कि भगवान सबको खिलाता है तब आराम करता है। वह एक घने जंगल में पेड़ पर जा बैठा कि देखूं कैसे खिलाता है। कुछ समय बाद वहां एक डाकुओं का दल आया और लूट का सामान

आपस में बांटा। फिर उनकी नजर एक टिफिन पर पड़ी। किसी लकड़हारे ने पेड़ के नीचे रखा था कि लकड़ी काटने के बाद भोजन करूंगा।

चोर सोचने लगे किसी ने जान-बूझकर जहर का खाना तो यहां नहीं छोड़ा कि हम खाकर मर जाएं? इधर-उधर देखा तो ऊपर बैठा यह आदमी नजर आया। सोचा, हो न हो यह इसी आदमी का काम है। इसको जबरदस्ती पेड़ पर से उतार लाए और बोले—'तू पहले खा, हमें विश्वास होए कि यह खाना ठीक है। पीछे हम खाएंगे।' आदमी अचरज में आ गया कि भगवान कैसे हर एक को खाना खिलाता है।

सिद्धांत : भगवान सारी सृष्टि का पालनहार है।

403. भगवान को आमंत्रण दो

एक आदमी का बहुत मन था कि राजा उसके घर में पधारे पर वह बहुत गरीब था। फिर भी उसने राजा को बुलावा दिया तो राजा ने बिना हिचक उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। राजा के ही आदमी आए और सब Furniture, माला और आव-भगत की तैयारी करके चले गए। फिर राजा पधारे।

सिद्धांत : हम भगवान को अपने अन्दर बैठने का न्यौता देंगे तो वह खुद हमारे अंतःकरण की सफाई और सजावट कर देगा।

404. भगवान सब पर समान रूप से करुणा बरसाता है

एक पादरी चर्च में Sermon दे रहा था। संगत में सब प्रकार के लोग थे, गरीब-अमीर, अंधे-लूले-लंगड़े। पादरी कह रहा था, भगवान की करुणा सब पर समान रूप से बरसती है।

इतने में उसकी नजर एक मोमबत्ती पर पड़ी जो जमीन पर गिरी हुई थी। वह टूटी हुई और दबी हुई थी। पादरी ने उसे उठाकर माचिस से जलाया तो ज्योति जोर से चमक उठी।

सिद्धांत : जो कोई अपने हृदय का दरवाजा भगवान के लिए खोलता है उसे भगवान भरपूर कर देता है।

405. बैल का रूप

एक क्लास में मास्टर ने देखा एक बच्चे का ध्यान इधर-उधर जा रहा है। उसने बुलाकर कारण पूछा। लड़का बोला—'घर पर एक बैल है, मेरा मन बार-बार उसके पास जा रहा है।' मास्टर ने कहा—'जाओ उस पेड़ के नीचे बैठकर पूरी तरह से बैल के बारे में सोचो। जब मन पूरा भर जाए तब क्लास में आना।' लड़का एक हफ्ते बैल का चिंतन करता रहा। जब उसे लगा अब और कुछ सोचना बाकी नहीं रहा वह क्लास की तरफ आया और बाहर से ही मास्टर को पुकारा।

मास्टर ने कहा अन्दर आओ तो लड़का बोला—'सिर पर सींग हैं, दरवाजा छोटा है, मैं अन्दर नहीं आ सकता।'

सिद्धांत : जिसका मनन-चिंतन होता है, मनुष्य उसी का रूप बन जाता है तो क्यों न भगवान का मनन हो।

406. सब राम ही राम

रामचन्द्र जी और रावण के बीच जो युद्ध चल रहा था वह एक ऐसे मोड़ पर था कि बानर सेना बुरी तरह राक्षसों द्वारा तहस-नहस हो रही थी। राम जी ने अपनी दिव्यशक्ति से ऐसा कर दिया कि सारे बानर और राक्षस राम का ही रूप दिखने लगे। जो बंदर थे वे राम को देखकर प्रेम से आलिंगन करते और जो राक्षस थे वे राम, अपने दुश्मन को देखकर आपस में लड़ने लगे और एक-दूसरे को नष्ट कर दिया।

सिद्धांत : हर रूप में श्रद्धा और विश्वास के साथ राम को ही देखें तो जीवन अमृतमय हो जाएगा।

407. मुर्गे का चित्र बनाया

एक राजा ने सोचा सिक्के पर मुर्गे का चित्र हो। उसने कहा, ऐसा चित्र बनाओ जिसे देखकर लगे जीता जागता मुर्गा ही खड़ा है। बहुत लोगों ने कोशिश की पर राजा को पसंद न आया। फिर एक ने कहा—'मैं बनाऊंगा पर साल-भर मुहलत चाहिए।' राजा ने मंजूर किया तो यह आदमी ऐसी जगह जाकर रहने लगा जहां मुर्गे ही मुर्गे थे। उसने हर समय

उन्हें Observe किया इतना कि उसकी नस-नस पहचान गया। चित्र बनाया तो जैसे सजीव मुर्गा ही नाच उठा। राजा के पास लेकर गया तो राजा ने खुश होकर पुरस्कार दिया।

सिद्धांत : ज्ञान का जीता-जागता स्वरूप वो होगा जो बिल्कुल भगवान गुरु में गुम होकर तदरूप हो जाएगा।

408. फकीर की झोंपड़ी बड़ी होती गई

बरसात की रात थी। एक यात्री भीगने लगा तो सोचा कहीं रात गुजार लूं। झोंपड़ी देखी तो वहां चला आया। एक पति-पत्नी सोए हुए थे और झोंपड़ी भी इतनी ही बड़ी थी कि दो सो सकते थे। यात्री को आया देख, गृहस्थ बोला—'हां आपका स्वागत है। हम सटकर लेट जाएंगे।' इतने में एक दूसरा यात्री भी बरसात की वजह से वहीं आ पहुंचा तो गृहस्थ बोला—'कोई बात नहीं, बैठकर रात गुजार लेंगे।' फिर तीसरा भी कुछ समय बाद वहीं आ पहुंचा तो सब खड़े हो गए कि एक रात खड़े रहेंगे तो क्या हुआ।

सिद्धांत : दिल बड़ा होना चाहिए, घर बड़ा हो न हो।

409. एक ब्राह्मण नंगी तलवार लेकर घूमता था

एक बार अर्जुन को अहंकार आ गया कि मैं भगवान का ऊंचा भक्त हूं। रास्ते में जा रहा था कि एक ब्राह्मण से पूछा—'तू उच्च कोटि का ब्रह्मण होकर नंगी तलवार क्यों हाथ में उठाए है।' वह बोला—'मुझे अर्जुन पर गुस्सा है कि

उसने लड़ाई के मैदान में भगवान को तंग किया। दूसरा द्रौपदी पर जो भगवान को पुकार कर तक़लीफ देती है, तीसरा प्रह्लाद भक्त पर, चौथा नारद पर जो हर समय वीणा बजाकर भगवान की नींद खराब कर देता है। इनमें से कोई मुझे मिले तो मैं उसका शीश इस तलवार से उतार फेंकूं।'

सिद्धांत : ऐसा भक्त विरला ही है जिसे भगवान के सुख की फिक्र हो।

410. एकनाथ को खिलाना हजार को खिलाने के बराबर

एकनाथ भगवान के सच्चे भक्त थे जो जन-साधारण को मराठी में ज्ञान बताते थे और सब सुनकर प्रसन्न होते थे। उनका पुत्र वेद-शास्त्रों की पढ़ाई करके आया और आग्रह करने लगा कि संस्कृत में ही ज्ञान बताया जाए। एकनाथ ने कहा—'वह अपनी भाषा में सुनकर प्रसन्न होते हैं।' पर उसने नहीं माना। वह अपनी चलाकर वेद पढ़ने लगा। धीरे-धीरे संगत कम होने लगी। बस गिने-चुने लोग बच गए।

वहां एक बुढ़िया थी जिसका भाव था कि वह 1000 ब्राह्मणों को भोजन कराए। पर 1000 को जिमाना उसके बस की बात न थी तो लोगों ने कहा, तुम एकनाथ को खिलाओगी तो हजार को खिलाने का फल पाओगी। वहां गई

तो बेटा आगे खड़ा था। बुढ़िया ने कहा—'मैं यहां भोजन लाऊंगी।' उसने बड़े भाव से एकनाथ को खिलाया। जब एकनाथ भोजन खाकर उठे तो बुढ़िया भी उसी पत्तल में बचा हुआ खाने लगी। यह देख पुत्र ने पत्तल फेंक दी। वहां पर भोजन से भरी दूसरी पत्तल प्रकट हो गई। इस प्रकार 1000 बार हुआ। अब बेटे का अहंकार चूर-चूर हो गया और वह एकनाथ के चरणों में गिर गया।

सिद्धांत : पढ़ाई से अधिक प्रेम और नम्रता की जरूरत है।

411. भगवान सबको खिलाकर फिर खाता है।

एक बार नारद ने भगवान से कहा कि—'मुझे अपनी सेवा का अवसर दीजिए। सृष्टि के सब लोगों को खिलाने का काम मुझे दीजिए।' भगवान बोले ठीक है पर तुम सबको खिलाकर पीछे खाना। नारद ने मंजूर किया। उसने सबको भोजन दिया—चोर, डाकू, पापी। फिर वह एक जगह पहुंचा जहां एक आदमी एक मृत औरत के साथ सम्भोग कर रहा था। नारद को बहुत घृणा आई और उन्होंने इस आदमी को खाना न दिया। प्रभु ने पूछा, तुमने सबको खिलाया? उसने बोला—'हां।' प्रभु ने दोबारा, तिबारा पूछा तो नारद बोला—'बस एक को नहीं दिया।'

सिद्धांत : भगवान ही सबको भोजन देता है और कोई भी दृष्टि-दोष के कारण सब को खिला नहीं पाता।

412. सूरदास ने कृष्ण को हृदय के तार से बांधा

एक बार सूरदास गड्ढे में गिर गए। कृष्ण ने अपने भक्त को गिरा देखा तो शीघ्र एक छोटे बच्चे के रूप में आए और बड़े प्रेम से उन्हें बाहर निकाल दिया। सूरदास उनका हाथ पकड़ना चाहते थे पर लड़का हंसता हुआ दूर भाग गया। संत सूरदास बोले—'स्थूल में आप मुझसे दूर चले गए पर अन्तर में मैंने आपको हृदय की डोर से बांध रखा है। वहां से छूटकर भागना आपके लिए भी आसान नहीं है।'

सिद्धांत : हमको भी भगवान के साथ अंदर से एक होना है।

413. लक्ष्मी का भक्त सच्चा कि नारायण का

एक बार लक्ष्मी-नारायण में वाद-विवाद हो गया कि किसका भक्त सच्चा है। उन्होंने कहा आजमा कर देख लेते हैं। पहले नारायण एक बूढ़े का वेश बनाकर एक सेठ के पास गए और बोल मुझे समाधि के लिए जगह चाहिए। सेठ ने समझा सत् के रास्ते में लगा ब्राह्मण है तो उसे एक अच्छा कमरा, जहां एकांत था, दे दिया और वह आदर सत्कार के साथ वहां रहने लगा। कुछ दिन बाद लक्ष्मी आई तो उनका तो बहुत ही स्वागत हुआ। बहुत आवभगत हुई क्योंकि जिस थाली में लक्ष्मी खाना खाती थीं वह सोने की बन जाती थी। अब लक्ष्मी ने कहा—'मेरे को वो ही कमरा चाहिए जिसमें नारायण रह रहे हैं।' तो सेठ उनके पास गए और कहा—'आपको जाना

पड़ेगा।' नारायण वहां से निकलकर अपने भक्त कबीर के पास आए। दो दिन बाद लक्ष्मी वहां पहुंची तो कबीर दूर से ही पहचान गए और बोले—'लक्ष्मी जी, अभी यहां से चली जाइए नहीं तो ना-कान काटने पड़ेंगे।' लक्ष्मी जी उसी समय वहां से चली गईं।

अब नारायण ने लक्ष्मी से कहा—'तुम्हारे भक्त ने मुझे सात दिन रहने दिया, मेरे भक्त ने तुम्हें खड़ा भी नहीं होने दिया।'

सिद्धांत : जिन्हें भगवान चाहिए वे लक्ष्मी को दूर ही रखते हैं।

414. राम का तीर

एक जानवर को अचानक राम का तीर लगा। उसे बहुत पीड़ा हुई पर वह शांत रहा। खून भी बह रहा था। उसने सोचा—'पीड़ा अच्छी है जो राम जी ज्यादा याद आते हैं और फिर राम ही पीड़ा दें तो कहें किसे?'

सिद्धांत : हर रूप में राम ही देखो तो दोष किसको दें।

415. भगवान तुम्हारे हृदय में

एक भक्त कृष्ण के दर्शन के लिए व्याकुल था। उसने और भक्तों से पूछा दर्शन कैसे हों। उन्होंने कहा—'हमें भी नहीं हुआ। तुम वृन्दावन जाओ, शायद दर्शन हो जाएं।' वह

वृन्दावन गया, वहां से मथुरा, गोकुल, द्वारिका, उत्तर, दक्षिण, जहां-जहां भी कृष्ण के मंदिर थे, पर दर्शन नहीं पाया। आखिर थककर बैठ गया तो अन्दर से आवाज आई——'हे बालक, मैं तेरे हृदय में विराजमान हूं। मेरी ओर मुड़ जा और दिव्यता के दर्शन अपने ही अन्दर पा ले।'

सिद्धांत : शरीर भक्त है, भगवान हृदय में विराजमान है।

416. राजा का रहस्य खुल गया

एक राजा और रानी सुख से रहते थे। रानी भगवान की बड़ी भक्त थी। वह हर प्रकार से संतुष्ट थी। केवल एक दुख था उसके मन में कि राजा कभी भगवान का नाम नहीं लेता था। एक दिन नींद से वह करवट बदलते हुए जागी तो उसने सुना राजा बैठकर राम-राम कह रहा है। वह अत्यंत प्रसन्न हुई और दूसरे दिन उसने बड़ी दावत का आयोजन किया। राजा को मालूम हुआ तो उसे अफसोस हुआ कि उसकी सारी भक्ति सारे में प्रकट हो गई।

सिद्धांत : भगवान के लिए अपना प्रेम हृदय की तिजोरी में बंद ही रखना चाहिए।

417. पक्षियों को मुक्त करा

एक आदमी को युद्ध में बंदी बनाया गया था और पन्द्रह साल के बाद आज वह रिहा किया गया था। रिहा होने के

पहले एक दोस्त ने उसे 250/- दिए। वह जेल से बाहर आया तो देखा एक आदमी पिंजरे में बंद पक्षी बेच रहा था। उसने सब पक्षी खरीद लिए और फिर उन सबको छोड़ दिया। उससे पूछा ऐसा क्यों तो वह बोला——'मुझे ही मालूम है बंदी रहना कितना दुखदायी है। मुझसे इनकी पीड़ा नहीं देखी गई।'

सिद्धांत : संत को ही मालूम है कि माया की पकड़ कितनी दुखदायक है। इसलिए वह जल्दी से सबको मुक्त करना चाहता है।

418. चैतन्य महाप्रभु ने अपना ग्रंथ फेंका

चैतन्य महाप्रभु एक बार नौका से कहीं जा रहे थे। उनके साथ कुछ सिपाही और एक रघुनाथ पंडित भी थे। उनके हाथ में उनका एक हस्तलिखित ग्रंथ था——न्याय पर टिका। नाव में बैठे-बैठे ग्रंथों की बात चली तो चैतन्य महाप्रभु ने अपने द्वारा लिखित ग्रंथ के बारे में बताया। रघुनाथ पंडित ज्यों-ज्यों उस ग्रंथ के बारे में सुनते गए, उनका विक्षेप बढ़ता गया।

प्रभु ने पूछा——'क्या बात है?' उसने कहा——'मैंने बड़ी मेहनत के साथ दधीचि नामक पुस्तक लिखी थी और मैं समझता था कि यह दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक कहलाएगी। पर आपके ग्रंथ के आगे मेरे लिखे हुए ग्रंथ को कौन पूछेगा?' निताई ने कहा——'बस इतनी-सी बात? साधारण पोथी से

तुम्हें क्लेश हो रहा है। तुम्हारे लिए मैं प्राण दे सकता हूं, यह ग्रंथ क्या चीज है।' उन्होंने एक-एक पन्ना फाड़कर नदी में फेंक दिया, निताई की ग्रंथ में भी आसक्ति न देखकर रघुनाथ हैरान हो गए।

सिद्धांत : जिसने असली धन पा लिया उसके लिए दुनिया की हर चीज तुच्छ हो जाती है।

419. बुद्ध भगवान और अंगुलिमाल डाकू

एक लड़के का हाथ देखकर ज्योतिषियों ने कह दिया कि यह बड़ा होकर एक डाकू बनेगा। अब सब उससे नफरत करने लगे। गुरुकुल में भी गुरु भाई उससे दुर्व्यवहार करते थे। गुरु ने भी द्वेष करके उसे निकाल दिया। आखिर वह डाकू बन गया——बड़ा खूंखार था——लोगों की उंगलियों को काट लेता और फिर उनको माला में पिरोकर पहन लेता। एक बार गौतम बुद्ध वहां से गुजर रहे थे। सबने कहा, इस जंगल में से मत जाओ, अंगुलिमाल यहीं रहता है, पर बुद्ध भगवान प्रेम और सद्‌भावना साथ लिए उसी ओर निकल पड़े। अंगुलिमाल की आवाज सुनी तो बड़े प्रेम और धीरज से बोले——'जाओ मेरे लिए उस पेड़ से टहनी तोड़ लाओ।' वह टहनी लाया तो बोले——'अब इसे जोड़ दो।' वह बोला——'यह कैसे सम्भव है?' तो बुद्ध भगवान बोले——'जिसे तुम जोड़ नहीं सकते उसे तोड़ते क्यों हो।' अंगुलिमाल ने इतना शांत, प्रेम-भरा, निडर स्वर जीवन में

पहली बार सुना था। वह बुद्ध की शरण में आ गया और उसने अपने पूर्व पापों का पश्चात्ताप करके शरीर छोड़ दिया।

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी के प्रेम से पापी भी पिघल जाते हैं। संत के संग से निंदक भी तर जाते हैं।

420. बिना जाने महान उपकार

एक बहुत ऊंची कोटि का संत हमेशा मुस्कराता रहता था। क्षमा, करुणा और उदारता उसके हर कार्य में नजर आते थे। स्वर्ग के देवताओं का भाव हुआ कि वे इसे कोई वरदान दें। वे महात्मा के पास गए और उन्होंने पूछा——'क्या आप अपने स्पर्श से रोगियों को चंगा करना चाहते है?'

'नहीं।' महात्मा ने उत्तर दिया——'मैं चाहता हूं भगवान उन्हें चंगा करे।'

देव——'क्या आप पापियों को सन्मार्ग पर लाना चाहते हैं?'

संत——'नहीं, यह कार्य स्वर्गीय दूतों का है। मैं धर्म परिवर्तन नहीं कराता।'

देव——'अच्छा, आप संतोष की मूर्ति बन, सदगुणों के प्रकाश से लोगों को अपनी तरफ खींचना चाहते हैं जो वो आपको देख भगवान की ओर बढ़ें?'

संत——'नहीं, लोग मेरी तरफ खिंचेंगे तो भगवान से दूर हो जाएंगे।'

देव——'तब आप क्या चाहते हैं?'

संत (मुस्कराते हुए)—'मुझे किसी चीज की इच्छा नहीं है।'

देव—'कोई चीज आप जरूर मांग लें, नहीं तो कोई भी सिद्धि आप पर थोप दी जाएगी।'

संत—'अच्छा तो यह वरदान दीजिए कि मैं बिना जाने महान उपकार करता रहूं।'

देवताओं ने बहुत सोचने के बाद यह युक्ति निकाली कि इस संत की छाया जिधर पड़ती उधर उपकार हो जाता और इसे मालूम ही न पड़ता। सूखी धरती हरी-भरी हो जाती, सूखे पेड़ हरे-भरे हो जाते, तालाबों में जल भर जाता, कमजोर बच्चे शक्तिशाली बन जाते। सब लोग उसका आदर्श देख सन्मार्ग पर चलने लगते। धीरे-धीरे उसका नाम भी सब भूलने लगे और उसे पवित्र छाया के नाम से पुकारने लगे।

सिद्धांत : जो इच्छा से ऊपर हो जाता है वह भलाई ऐसे बिखेरता है जैसे अनजाने ही फूल से खुशबू और सूरज से प्रकाश फैलता है।

421. देवताओं और दैत्यों को भोजन

एव बार दैत्य प्रजापति के पास पहुंचे और कहने लगे—'आप हमेशा देवताओं का पक्ष लेते हैं।' ब्रह्मा ने कहा—'मैं सबको समान अवसर देता हूं पर देवता उसमें से भलाई ले लेते हैं।' फिर बोले—'मैं सबको खाने का न्यौता देता हूं।' अगले दिन देवता और दैत्य भोजन के लिए

आए तो प्रजापति ने सबके हाथों पर बड़े लम्बे चम्मच बांध दिए और फिर 56 प्रकार का भोजन परोसकर बोले—'सब भोजन ग्रहण करें।' दैत्य बहुत क्रोधित हुए कि हाथ तो मुड़ ही नहीं सकता, खाना मुंह में कैसे डालें। देवताओं ने खूबसूरत युक्ति निकाली। दो पंक्तियों में सब देवता आमने-सामने बैठ गए और बड़े प्रेम से सामने वाले के मुंह में खाना खिलाने लगे। सबके पेट में भोजन भी गया और आपस में प्रेम का मौका भी मिला।

सिद्धांत : दैत्य बुद्धि से उलझन होती है, क्रोध आता है। देवता बुद्धि से प्रेम बढ़ता है।

422. कबीर ने बेटे को कहा—'चोरी करो'

एक बार कुछ संत कबीर के यहां आ गए। घर पर थोड़ा भी अनाज नहीं था। पड़ोस में साहूकार का गेहूं का गोदाम था। बेटे से कहा—'वहां से एक गोनी (टाट का थैला) गेहूं चुराकर लाओ पर सवेरे उसे बता देना—ऐसे गेहूं की गोनी ली है।'

कबीर ने एक बार औरत को गिरवी रखकर भी संतों को खाना खिलाया।

सिद्धांत : निष्काम प्रेम।

423. सच्चा मजनूं कौन

मजनूं को लैला से सच्चा इश्क था। लैला की याद में वह खाना-पीना छोड़कर बैठ गया था। लैला ने सब जगह बोल

दिया कि मजनूं कभी भी खाना खाने आए तो कोई भी उसे दे दे। इस तरह झूठे मजनूं बहुत बन गए। खाना खाने आ जाते थे। राजा को पता लगा कि ऐसे ही खाना खाने आ जाता है तो उसने सोचा सच्चे मजनूं की पहचान करें। उन्होंने मुनादी करवा दी कि अगर मजनूं को लैला से इश्क है तो उससे मिलने आए।

नीचे जलते हुए अंगारे बिछा दिए, ऊपर लैला को रखा। झूठे सब भाग गए, सच्चा आया, वह बढ़ता ही गया। उसे अंगारों की परवाह नहीं थी। ऊपर लैला के पास पहुंच गया। फिर उनकी शादी हुई।

सिद्धांत : माल भाई सब मिलेंगे हाल भाई नहीं।

424. केवट को प्रेम से तृप्ति आई

एक गरीब केवट था। उसके पास जो यात्री आता था उसे वह प्रेम से पार उतार देता था। एक दिन एक आदमी उसकी नाव में बैठा। केवट ने उसे बहुत प्रेम दिया। जो भी उसके पास था वह उसने भाव से यात्री को खिलाया। फिर उसे पार ले गया। यात्री उसके प्रेम से बहुत पिघल गया। उसने देखा केवट अत्यंत गरीब है। उसने उसे एक कागज दिया और कहा—'इसमें जो लिखा है वह तुम करना, तुम्हें बहुत धन मिल जाएगा।' कई दिनों बाद उस यात्री का फिर यहीं आना हुआ। उसने देखा केवट पहले के जैसा ही गरीब है। उसने पूछा—'तुमने उस कागज पर जो लिखा था वह नहीं

किया?' केवट ने कहा—'मैं ऐसे ही बहुत प्रसन्न हूं, तृप्त हूं, मेरे अन्दर बहुत शांति है। अधिक धन से मैं शायद इस प्रेम और शांति से वंचित हो जाऊंगा।'

सिद्धांत : संतोष और अन्दर की तृप्ति ही सबसे बड़ा धन है। यह धन ही औरों पर बरसाएं।

425. राम से राम-नाम बड़ा

रामचन्द्र जी पत्थर नदी में डाल रहे थे और वे डूबते जा रहे थे। पत्थरों ने कहा, प्रभु जी, राम से बढ़कर राम के नाम की महिमा है। भक्त श्री राम कहकर पत्थर डालते हैं तो वे तैर जाते हैं।

सिद्धांत : दिल से प्रभु का नाम लिया तो बहुत शक्ति आ जाती है।

426. विश्वास का रूप

एक बार एक शहर में बारिश न होने के कारण अनाज की कमी से अकाल पड़ गया। लोगों ने पोप के पास जाकर प्रार्थना की कि भगवान से बारिश मांगो।; पोप ने कहा—'अच्छा कल आना, मिलकर भगवान से प्रार्थना करेंगे।' दूसरे दिन जब सब आए तो पोप ने कहा—'तुम सबको विश्वास नहीं कि बारिश होगी, केवल एक लड़के को विश्वास है, क्योंकि वो छाता लाया था, उसी को विश्वास था कि बारिश होगी तो वापिस कैसे जाऊंगा।'

427. महापुरुष की महिमा

एक समय नारद जी घूमते-घूमते मृत्यु लोक में आए। वहां एक गृहस्थ ने बहुत उपाय किए किंतु पुत्र नहीं हुआ था। नारद जी ने दया में आकर कहा—'अच्छा तुम्हें पुत्र होगा कि नहीं, मैं विष्णु भगवान ने पूछकर आता हूं।' भगवान से पूछने पर मालूम पड़ा कि उसको सात जन्म तक पुत्र नहीं। नारद ने गृहस्थ को आकर बताया, तो वह निराश हो गया। एक बार उसी गांव में एक त्यागी-वैरागी संत आए। वह भूखे थे। उस गृहस्थ ने प्रेम में आकर तीन रोटी खिलाई, तो संत ने तीन पुत्र का आशीर्वाद दिया। नारद जी कुछ समय बाद वहां आए तो उसी गृहस्थ के पास तीन पुत्र देखकर हैरान हो गए। वह गृहस्थ भी नारद से कहने लगा—'आप क्या कहते थे?' नारद सीधे विष्णु भगवान के पास गए। भगत्रान सब जानते थे। वह पीड़ा में रुदन करने लगे और कहने लगे किसी भक्त का कलेजा काटकर लगाओ तो मैं ठीक होऊंगा। नारद भागे-भागे जगह-जगह गए, किंतु सभी ने कहा, तुम तो भक्त हो, अपना कलेजा क्यों नहीं काट कर दे देते? फिर वही त्यागी-वैरागी संत मिला जो खुशी-खुशी साथ आ गया। उसने कहा—'भगवन्! यदि मेरा कलेजा आपके काम आ सके तो इसे तुरंत काट लीजिए।' विष्णु ने नारद से कहा—'देखो नारद ऐसे महापुरुष ही निपूत को पुत्र दे सकते हैं, हमारे तुम्हारे जैसे नहीं।'

सिद्धांत : भक्त और भगवान, दोनों की महिमा अपरम्पार है।

428. महात्मा गांधी की परख

एक बार महात्मा गांधी किसी शहर में गए। लोग उनको तरह-तरह के फूल और धन आदि देश सेवा के लिए देते थे। एक औरत ने चार आने दिए। तब महात्मा गांधी ने बताया यह चार आने मुझे चार हजार से प्यारे हैं, क्योंकि गरीब औरत की वो पूरी जायदाद थी। तुमने करोड़ से दस हजार दिए, बड़ी बात नहीं पर इसने अपना पूरा धन दे दिया।

सिद्धांत : परमात्मा दिल देखता है कर्म नहीं।

429. भगवान को पग-धूलि कौन देगा

एक बार नारद बैकुंठ गए तो देखा भगवान विष्णु के पेट में दर्द था। विष्णु ने कहा, अगर कोई भक्त अपनी पग-धूलि देगा तब मैं ठीक होऊंगा। नारद ने सारी सृष्टि खोज मारी, लेकिन कोई भक्त भगवान को पग-धूलि देने को तैयार न हुआ कि भगवान को अपनी चरण-धूलि देकर कौन नर्क जाएगा। वह निराश लौटे। विष्णु ने कहा—'ब्रजभूमि जाओ।' नारद केवल वहां जाना भूल गए थे। वहां गए तो गोपियों ने अपनी चरण-धूलि दी कि उनके भगवान ठीक हो चाहे उसके लिए उन्हें नर्क मिले।

430. तमोगुणी भक्ति

एक स्त्री बड़े भाव से ठाकुर जी की पूजा करती, नहलाती, भोग लगाती, लेकिन वह बाकी सबसे बहुत बुरा

बर्ताव करती। एक दिन एक वैष्णव उसके घर आए और बोले, आपके ठाकुर मेरे स्वप्न में आए और कहा—'मैं भूखा हूं, अपने घर ले चलो।' स्त्री ने कहा—'मैं तो उन्हें हर रोज छप्पन भोग खिलाती हूं।' वैष्णव बोले—'भगवान ने जवाब दिया कि मैं उस नारी की ओर ताकता भी नहीं हूं, वह मेरे बच्चों से लड़ती है और गाली देती है, इसलिए उसका भोजन नहीं सुहाता। तुम्हारे बच्चे को कोई गाली दे तो क्या तुम उसका भोजन स्वीकारोगे?' स्त्री समझ गई और उस दिन से अनन्य भक्ति में लीन हो गई।

431. विश्वास पर क्राइस्ट

क्राइस्ट के पास एक आदमी आया, बोला मेरे बेटे को जिंदा कर सकते हो? क्राइस्ट ने कहा—'मैं नहीं कर सकता।' दूसरा व्यक्ति गया, श्रद्धा से बोला—'आप भगवान हैं, आप मेरे बेटे को जिंदा करेंगे।' उसके विश्वास से वो ठीक हो गया। क्राइस्ट ने कहा—'तुम्हारा विश्वास, था, मैं कुछ नहीं कर सका।'

सिद्धांत : मुसलमान बोलते हैं पीर बड़ा या विश्वास, तो विश्वास बड़ा—'Faith Performs Miracles.'

432. परमेश्वर बचाने वाला हो तो कोई मार नहीं सकता

एक वृक्ष पर कबूतर-कबूतरी बैठे थे। नीचे एक शिकारी

तीर लगाए दोनों को मारने लगा और ऊपर एक बाज ने सोचा यह दोनों उड़े तो झपट्टा मारूं। दोनों ने सोचा ऊपर-नीचे हर तरफ मौत। कबूतरी घबरा गई, कबूतर ने कहा—'भगवान को याद करो।' नीचे सर्प ने शिकारी को काटा, तो दर्द से वह मर गया और तीर छूटकर बाज को लगा।

सिद्धांत : दैव की विचित्र गति है। परमात्मा का स्मरण ही सहायक होता है।

जाको राखे साईंयां मारि सके न कोये
बाल न बांका करि सके जो जग बैरि होये।

433. ब्रह्मज्ञानी लड़का भक्ति में स्थिर

एक बार शिव-पार्वती सैर करने गए। रास्ते में एक ब्रह्मज्ञानी लड़का ध्यान में लीन बैठा था। पार्वती ने देखा अपने ध्यान में इतना लीन है कि नमस्कार नहीं किया। सारी दुनिया भगवान को नमस्कार करती है। शिव ने कहा—'ये ब्रह्मज्ञानी है इसे कुछ न कहो।' पर पार्वती ने श्राप दिया, अभी तू साईस बनकर घोड़ों की संभाल कर। वह वहां भी अपनी धुन में रहता। पार्वती ने फिर उसे अपना बेटा बना लिया। वह फिर भी शांत, अपनी मौज में रहा।

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी को सब हालत में सब्र है, कोई ऊंट की तरह बोझ उठाए, गधा बनाए या बच्चा, ब्रह्मज्ञानी को इसलिए नमस्कार है।

434. एक आदमी पेड़ पर छिपकर बैठा कि भगवान कैसे खिलाता है

एक आदमी को विश्वास नहीं आता था कि भगवान सबको खिला के पीछे आराम करता है। वह घने जंगल में जाकर वृक्ष के ऊपर बैठ गया, देखंता हूं यहां भगवान कैसे खिलाता है।

वहां लकड़ियां काटने वाला आया। नीचे खाना रखा कि लकड़ी काटकर खाऊंगा और चला गया। कुछ समय बाद चोर आए, खाना देखा, सोचा किसका होगा? ऊपर ध्यान गया। सोचा पहले इसे खिलाकर देखें, कहीं जहर न हो और जोर से जूते लगाकर उतारा और खिलाया।

सिद्धांत : हम बेकार में अहं करते हैं, मैं खाता-खिलाता हूं। सब भगवान करता है।

435. अपने कर्म खुद ही भोगने हैं

एक बार सूरदास को बीमारी आई, वो आंख से देख नहीं सकता था। भगवान कृष्ण ने उसकी सेवा की। जब सूरदास को इस बात का पता चला कि खुद भगवान ने मेरी सेवा की, तो रोकर कहने लगा, आप सर्व-समर्थ हैं, मेरी बीमारी क्यों नहीं उतारते? भगवान ने कहा—'ऐसा करूंगा तो तुम्हारे कर्म कैसे कटेंगे। मैं नहीं चाहता तुमको कर्म काटने के लिए दूसरा जन्म लेना पड़े।'

436. प्रीतम को बहुत भाजी दी

एक औरत भाजी बेच रही थी। एक ग्राहक ने उससे 1 पैसे की भाजी खरीदी तो उसने एक सेर तोलकर दी। फिर दूसरा आया और एक पैसे की भाजी मांगी। इसको उसने एक ही जगह दो सेर दी और ऊपर से कई प्रकार की भाजियां झोली में भर दीं। पहला वाला पूछने लगा—'यह क्या?' तो भाजी वाली बोली—'वह तो मेरा प्रीतम है, उससे कोई लिखा-पढ़ी नहीं है। सब ले जाता तो भी ठीक था।'

सिद्धांत : मनुष्य प्रेम की दीवानगी में सब लुटाता है तो क्या भगवान अपने सच्चे भक्त को सब कुछ न देगा?

437. गोबर के उपले

जमुना बाई भगवान की बड़ी भक्त थी। पूरे दिन घर का काम-काज करते हुए उसके अंतर्मन से भगवान का नाम—विट्ठल ही निकलता रहता था। जब वह गोबर के उपले बनाती तब भी विट्ठल-विट्ठल की धुन अन्दर चलती रहती।

एक दिन उसके उपले चोरी हो गए। संत नामदेव उधर से आए, वे बोले मुझे मालूम पड़ जाएगा इसके कौन से उपले हैं। अड़ोसी-पड़ोसी के उपले जाकर देखें। उन्हें कान से लगाया तो जो जमुना बाई के उपले थे, उनमें से विट्ठल-विट्ठल की ध्वनि लगातार निकल रही थी। इस

तरह उसके उपलों की पहचान हो गई और वे उसे वापस मिल गए।

सिद्धांत : भक्त का हर कार्य पूजा होता है और भगवान को प्रकट करता है।

438. तीन बेटों की संभाल

एक पिता अपने तीनों बेटों को मेले में ले गया। पहला नौजवान हो गया था। पिता को उसकी कोई चिंता न थी क्योंकि वह पिता समान ही हो गया था। दूसरा 6-7 साल का था तो पिता उसका हाथ पकड़े उसे भीड़ से बचा रहा था और तीसरा अभी बिल्कुल छोटा था तो उसे गोदी में लिए प्रेम से सम्भाल रहा था।

सिद्धांत : ऐसे ही पिता परमेश्वर का बड़ा पुत्र ज्ञानी है जो स्वयं पिता के समान है, दूसरा श्रद्धालु भक्त है जिसे वह गलत संग से बचाता है और तीसरा नया जिज्ञासु है जिसे वह सब तरफ से संभालता है।

439. वैर-विरोध रहित कबीर

कबीर के घर रोज सत्संग होता था और आस-पास के लोग उसका फायदा उठाते थे। पर पड़ोस में एक तामसी बुद्धि वाला भी रहता था, जिसको सत्संग से वैर था। सत्संग में विघ्न डालने के लिए उसने अपने घर में वेश्याएं और आदमी बुलाए जो सत्संग के समय ही नाच-गाना और हल्ला-गुल्ला करते थे।

कबीर जी फिर भी मस्त रहते। एक दिन उसने कबीर जी के घर में सत्संग के समय आग लगा दी। सत्संगियों ने कबीर जी को कहा——'आग तेजी से बढ़ रही है।' कबीर शांत रहे और बोले——'मालिक आपै रक्षा करेगा।'

सिद्धांत : जब भगवान देखता है भक्त ने सारा भार उस पर रखा है तो वह आपै योगक्षेम उठाता है।

440. पम्पा सरोवर में कीड़े पड़े

एक बार एक ब्रह्मऋषि पर शबरी की छाया पड़ गई तो उसने क्रोध में आकर शबरी को बहुत मारा। फिर वह पम्पा सरोवर में नहाया तो उसमें कीड़े पड़ गए। रामचन्द्र जी वहां आए तो सबने कहा——'अपने चरण सरोवर में डालिए तो कीड़े खत्म हो जाएं।' रामचन्द्र जी ने पैर डाले पर कीड़े खत्म नहीं हुए। फिर लक्ष्मण जी ने डाले पर सरोवर गंदा ही रहा। फिर रामचन्द्र जी ने शबरी को डालने को कहा। उसके डालते ही सरोवर का जल साफ हो गया। रहस्य——राम के मन में रावण के प्रति द्वेष था, लक्ष्मण के मन में मेघनाद के प्रति, वहां के ऋषियों में आपस में वैर-रीस था। शबरी राग-द्वेष रहित थी।

सिद्धांत : सच्ची सफाई राग-द्वेष रहित होना है।

441. विवेकानन्द की अटूट श्रद्धा

जब स्वामी विवेकानन्द World Religious Conference

के लिए अमेरिका पहुंचे तो Steamer से उतरते समय उनका सामान-अस्बाब, रुपया-पैसा सब खो गया पर भगवान में उनका अटूट विश्वास बना रहा। अजनबी देश में उसी श्रद्धा का सहारा लिए सड़क पर एक Lamp Post के नीचे बैठे थे। उधर से एक अमेरिकन महिला निकली जो कि स्वामी विवेकानन्द के तेजस्वी चेहरे को देख इनकी ओर आकर्षित हुई। बातों के दौरान उसे सब मालूम पड़ गया। फिर क्या था, भगवान के इस श्रद्धावान भक्त के लिए कपड़ों-लत्तों की क्या कमी हुई? किसी ने बड़े प्रेम से खाना भी खिलाया और वे निश्चित समय पर World Religious Conference में पधारे जहां उनके जोशीले Lecture ने सारे संसार को प्रभावित किया और भारतीय आध्यात्मिकता को सबसे उच्च स्थान मिला।

सिद्धांत : जो ईश्वर इच्छा से निराकार के हाथ का हथौड़ा बनकर चलता है, प्रकृति उसकी सेवा में रहती है। निराकार को ऐसे सच्चे भक्तों की जरूरत होती है।

17. गुण-हिम्मत, क्षमा, धीरज/मौन, सच्चाई/निर्भयता, जो कहो सो करो, नम्रता, व्रत-एकाग्रता, युक्ति-युक्त, शरण दृष्टांतों की सूची

हिम्मत

442. हनुमान भक्त की गाड़ी फंसी
443. अनल पक्षी का Will Power
444. हिम्मते मर्दां तो मददे खुदा
445. क्राइस्ट ने कहा सब को माफ कर दो
446. क्षमा का आदर्श
447. संत हमेशा क्षमावान होता है
448. मेरा रखवाला भगवान मौजूद है

धीरज/मौन

449. क्यों बोला
450. मौन में कार्य होगा

सच्चाई/निर्भयता

451. युधिष्ठिर की स्वर्ग यात्रा
452. राजा भर्तृहरि ने सच्चाई और निश्चय दिखाया
453. रामकृष्ण ने रानी को चाखरी लगाई
454. सदना ने राजा को जवाब दिया
455. ऊंट वाले का साफ मन
456. जो बोलें उस पर चलें

नम्रता

457. दांत कठोर जिह्वा नरम
458. भृगु ऋषि ने लात लगाई
459. रामकृष्ण ने नम्रता का सबक पढ़ाया
459। भगवान बड़ा कि उसका भक्त

व्रत/एकाग्रता

460. सती अनसूया
461. व्रत लिया क्रोध नहीं करूंगा
462. बुद्ध भगवान ने व्रत लिया
463. दीया जलाने वाला, दीया बुझाने वाला
464. एकाग्रता में शक्ति

युक्ति-युक्त

465. पार्वती का अगस्त्य मुनि को भोजन कराना
466. द्रौपदी दुर्वासा ऋषि को लाई
467. देवताओं ने दैत्यों के
ऊपर विजय पाने की युक्ति पाई
468. नारद को भगवान ने नर्क जाने का श्राप दिया
469. मोह में राजाई दी

शरण

470. भगवान की रजा से
471. बकरी सिंह के
चरण-चिन्ह की शरण में
472. दुनिया में कौन-सी चीज

गुणों पर अन्य दृष्टांत

हिम्मत

447. मेरा रखवाला भगवान मौजूद है

क्षमा

40. संत को लोहा लगाया
218. संत स्वभाव नहीं छोड़ता
220. बिच्छू और संत
362. बुराई करे उससे भलाई

धीरज/मौन

171. मन का भुलावा
221. संत को 108 बार थूक
223. ब्रह्मज्ञानी हर बात में सम
225. सुकरात की सहनशक्ति
343. धीरज का फल मीठा

सच्चाई-निर्भयता : जो कहो सो करो

192. सेठ अन्न क्षेत्र चलाता था

नम्रता : व्रत-एकाग्रता

309. कर्मयोगी की शक्ति

युक्ति-युक्त

12. गुरु ने रमज़ से दही खाना छुड़ाया।

13. गुरु ने कहा रबर की चप्पल पहनो
14. संत ने गुड़ खाना छुड़वाया
15. राम कहे बंधन छूटे नहीं, सतगुरु मिले तो बंधन छूटे
23. दो साधु
283. मोह में राजाई दी
485. सत्संग की घड़ी ने नर्क बचाया

शरण

419बुद्ध भगवान और उंगलिमाल

गुण

हिम्मत

442. हनुमान भक्त की गाड़ी फंसी

हनुमान का एक भक्त बैलगाड़ी में कहीं जा रहा था। रास्ते में गाड़ी का पहिया कीचड़ में फंस गया। वह गाड़ी से उतर गया और सड़क पर एक किनारे बैठ गया। लोगों ने कहा—'बैठे क्यों हो, पहिया कीचड़ से निकालो?' वह बोला—'भाई मुझे हनुमान जी पर भरोसा है, वे ही निकालेंगे।' ऐसे ही वह अपने विश्वास की शान बघारता हुआ एक तरफ बैठा रहा। सवेरे से शाम हो गई पर हनुमान न आए। अब इसने सोचा, रात होने वाली है अब तो मुझे ही निकालना होगा। वह खड़ा होकर पहिए पर जोर लगाने लगा कि इतने में हनुमान जी पीछे से आकर धक्का देने लगे। भक्त बोला—'आप अब आए हैं? मैं पूरे दिन आपका इंतजार करता रहा।' हनुमान जी ने कहा—'तुम जब एक कदम उठाओगे तब ही मैं साथ देता हूं।'

सिद्धांत : हिम्मते मर्दां मददे खुदा।

443. अनल पक्षी का Will Power

एक अनल पक्षी का जोड़ा अपने बच्चों को समुद्र तट पर रखकर समुद्र से बोले—'इनकी संभाल करना जब तक हम वापस आएं।' लौटने पर देखा बच्चे नहीं हैं, समुद्र उन्हें ले गया। अनल पक्षी ने दावे से समुद्र से पूछा—'तुमने हमारी अमानत क्यों ले ली।' जब समुद्र ने उसके बच्चे नहीं लौटाए तो हिम्मत से वह बोला—'मैं तुम्हें सुखाकर छोड़ूंगा।'

वह इधर पानी चोंच में उठाता और रेत पर गिराता। फिर उधर से रेत लेकर समुद्र में डालता। पक्षियों में उत्साह जाग गया कि इसमें इतनी हिम्मत है, तो सब ने साथ दिया। गरुड़ को भी मालूम पड़ा तो वह भी वहां आ गया। अब इतने पक्षी समुद्र को सुखाने में लग गए तो समुद्र डर गया और अनल पक्षी के बच्चे लौटा दिए।

सिद्धांत : Will Power से मनुष्य सब हासिल कर सकता है। दृढ़ निश्चय काम आता है।

444. हिम्मते मर्दां तो मददे खुदा

एक बार किसी देश के राजा पर दूसरे राजा ने चढ़ाई की। घमासान युद्ध हुआ जिसमें उस देश का राजा हार गया और हताश होकर बैठ गया कि सब चला गया। रानी आई तो राजा ने कहा—'बहुत खराब खबर है कि हम युद्ध में हार गए हैं।' रानी ने कहा—'इससे भी दुखदायक खबर यह है कि आप हिम्मत हारकर बैठे हैं।' राजा की आंखें खुल गईं कि

सच्ची बात है। लड़ाई में हारे तो क्या हुआ, दोबारा जीता भी जा सकता है। पर बंद हिम्मते तो खुदा भी बेजार।

सिद्धांत : Strength is life, Weakness is Death.

445. क्राइस्ट ने कहा सब को माफ कर दो

क्राइस्ट को जब सूली चढ़ाई तो अनेक तरह से उन्हें कष्ट दिए गए। उनके दोनों हाथों और पांवों में कीलों से लकड़ी पर ठोक रखा था। उनको कांटों का मुकुट पहनाया था। उनको चिढ़ाने के लिए पूछा, तुमको प्यास लगी है? और फिर सिरका पिलाया जिससे प्यास और बढ़ जाती है। इतना सब होते हुए भी अंतिम क्षणों उनके मुख से निकला, हे प्रभु, ये बेगुनाह हैं, इन्हें माफ कीजिए, इन्हें मालूम नहीं ये क्या कर रहे हैं।

सिद्धांत : उनकी अद्‌भुत सहनशक्ति और प्रेम से आज भी वे हजारों के हृदय में राज्य कर रहे हैं। वे अमर हैं।

446. क्षमा का आदर्श

ब्रह्मर्षि वशिष्ठ ने अपनी पत्नी अरुंधती से कहा—'विश्वामित्र के यहां जाकर जरा-सी नमक की भीख मांग लाओ।' वह हैरान रह गई कि जिसने उनके सौ पुत्रों को मारा, उससे भीख मांगें? ऋषि ने कहा—'मुझे उससे प्यार है।' अरुंधती ने कहा—'प्यार होता तो ब्रह्मर्षि कह

देते।' जवाब मिला—'मैं उसे ब्रह्मर्षि नहीं कहता, इसलिए उसके ब्रह्मर्षि होने की आशा है।' उधर विश्वामित्र क्रोध से अपने आश्रम से निकले थे कि आज भी वशिष्ठ ने ब्रह्मर्षि नहीं कहा तो वध कर देंगे। विश्वामित्र ने बाहर सारी बात सुन ली और शर्म से झुककर वशिष्ठ से माफी मांगी। फिर वशिष्ठ ने कहा—'उठो महर्षि।' विश्वामित्र ने उससे ब्रह्मज्ञान मांगा, तो वशिष्ठ ने कहा—'शेषनाग के पास जाओ।' शेषनाग ने कहा—'मैं तुम्हें ब्रह्मज्ञान तभी दे सकता हूं जब तुम इस पृथ्वी का भार धारण करो।' विश्वामित्र ने अहंकार से कहा—'मैं अपनी सारी तपस्या का फल देता हूं, 'पृथ्वी रुक जा'।' लेकिन पृथ्वी नहीं रुकी। शेषनाग ने पूछा—'तुमने साधु संग नहीं किया?' विश्वामित्र को वशिष्ठ का साथ याद आ गया, तो उसका फल दिया तो पृथ्वी रुक गई। शेषनाग ने कहा—'मूर्ख विश्वामित्र, जिसके क्षणभर सत्संग का फल देकर तृम पृथ्वी को धारण कर सके उसे छोड़कर तुम मुझसे ब्रह्मज्ञान मांग रहे हो?' विश्वामित्र क्रुद्ध हो गए और वशिष्ठ के पास गए कि तुमने धोखा किया। वशिष्ठ ने कहा—'उस समय ब्रह्मज्ञान देता तो तुम्हें विश्वास न होता। इस अनुभव के बाद तुम विश्वास करोगे।' फिर वशिष्ठ ने विश्वामित्र को ब्रह्मज्ञान दिया।

447. संत हमेशा क्षमावान होता है

एक बार समर्थ रामदास अपने भक्तों के साथ शिवाजी के

पास जा रहा था। रास्ते में वे लोग एक बड़े पेड़ के नीचे विश्राम के लिए रुक गए। भक्तों को भूख लगने लगी थी तो वे सामने के गन्ने के खेत में घुस गए और कुछ गन्ने तोड़ लाए जो उन्होंने चूस लिए और गुरु रामदास को भी दिए। खेत के मालिक को मालूम पड़ गया और बिना जाने कि ये कौन है, उसने एक गन्ना उठाया और उसी से गुरु और भक्तों की अच्छी तरह पिटाई की। संतों ने यह मार चुपचाप सही। कुछ देर में वे लोग अपने रास्ते पर निकल गए और शीघ्र ही शिवाजी के महल में पहुंच गए। शिवाजी ने अपने हाथों से समर्थ रामदास को नहलाया और उनकी पीठ पर मार के लाल निशान देखकर सारा किस्सा मालूम किया। खेत के मालिक को तुरंत बुलवाया गया। समर्थ रामदास ने खेत के मालिक को देखकर कहा—'इसने कोई गलती नहीं की। भूल हमारी थी जो बिना पूछे गन्ने काटा। उस गन्ने के बदले में और जो यहां आने का कष्ट इसको उठाना पड़ा है और जो इसके मन में रास्ते भर विक्षेप आया होगा कि मुझे दण्ड मिलेगा, इन सबके लिए इसे चार गांव दे दिए जाएं।'

सिद्धांत : संत क्षमावान ही नहीं, दाता भी होते हैं।

448. मेरा रखवाला भगवान मौजूद है

एक पेड़ के नीचे एक संत सो रहा था। चुपके से एक आदमी, जो उससे द्वेष करता था, वहां पहुंच गया। तलवार हाथ में थी और वह चिल्लाया—'देखो अब तुम पकड़े गए। यहां

तुम्हें बचाने वाला भी कोई नहीं है।' संत शांत भाव से खड़ा हुआ और निर्भयता से बोला—'भगवान मेरा स्वामी, मेरा रखवाला, मेरी मदद के लिए तैयार खड़ा है।' यह सुनकर वह आदमी हक्का-बक्का-सा इधर-उधर देखने लगा। इतने में संत ने उसके हाथ से तलवार ले ली और पूछा—'अब बोलो तुम्हें कौन बचाएगा?' आदमी ने हताश स्वर में कहा—'यहां कोई नहीं, तुम मुझ पर दया करो।' संत ने तलवार फेंक दी और कहा—'आगे से अपने साथ तलवार नहीं, क्षमा और दया रखना।' आदमी संत के चरणों में गिर गया।

सिद्धांत : संत क्षमा करके सब में क्षमा भाव जगाते हैं।

धीरज/मौन

449. क्यों बोला

एक संत था, राजा-रानी उसकी बहुत सेवा करते थे। संत ने प्रसन्न होकर वर मांगने को कहा। उन्होंने बेटा मांगा तो संत ने कहा तथास्तु। बाद में देखा रानी के तो कोई बेटा नहीं था प्रारब्ध में, तो संत को अपना वर निभाना पड़ा। संत ने रानी के गर्भ में प्रवेश किया, बच्चा पैदा हुआ पर मौन था। बहुत इलाज हुआ पर फल न निकला। एक बार वजीर के साथ बालक शिकार खेलने गया। वहां एक तोता हरे पत्तों में छिपा था, लेकिन जब टां-टां किया तो वजीर ने तीर निकाला। बच्चे ने कहा—'क्यों बोला?' वजीर बच्चे को बोलते देख खुश हुआ और आकर बताया, लेकिन राजमहल में सबके कहने

पर भी वह न बोला। राजा ने समझा वजीर ने मजाक उड़ाया और उसे फांसी की सजा दे दी। उस समय वजीर बच्चे के कदमों में गिर पड़ा, फिर बच्चा बोला—'क्यों बोला, बोला तो फंसा।' फिर उसने राजा को सारी पिछले जन्म की कथा सुनाई कि वह अब तक क्यों मौन रहता था, क्योंकि पिछले जन्म में बोलने के कारण, एक जन्म और लेना पड़ा।

सिद्धांत : बोलने में विकार है।

450. मौन में कार्य होगा

एक जगह एक नौकरी के लिए Interview था। बहुत से Applicants आए थे। इंतजार लम्बी थी। सब आपस में बातचीत करने में लग गए। एक लड़का मौन, चुपचाप कोने में खड़ा था। अचानक घंटी बजी तो मौन लड़के ने सुनी, वह अन्दर चला गया और उसे नौकरी मिल गई। बाकी सब लड़कों ने बातचीत में लगकर मौका खो दिया।

सिद्धांत : Lips Closed Heart Open. मौन है सोना, बात करना चांदी।

सच्चाई/निर्भयता

451. युधिष्ठिर की स्वर्ग यात्रा

जब युधिष्ठिर स्वर्गारोहण को चले तो उनके भाई और द्रौपदी पिछड़ गए। यद्यपि पिछड़े लोग पुकारते रहे, फिर भी सत्य की खोज में युधिष्ठिर चुपचाप आगे बढ़ते गए। उनके

साथ एक कुत्ता था। राजा को सत्य के शिखर पर पहुंचा देखकर इंद्र सत्य बनकर प्रकट हुए और सदेह स्वर्ग चलने का निमंत्रण दिया। युधिष्ठिर ने कहा—'इस कुत्ते ने हमेशा हमारा साथ दिया, इसको भी ले चलें तो मैं चलूं।' इन्द्र ने मना किया तो युधिष्ठिर ने कहा—'अन्याय करके मुझे स्वर्ग जाना पसंद नहीं। न्याय और सत्य के लिए यदि नरक में रहना पड़े तो अच्छा है।' ऐसा सुनते ही कुत्ते ने सत्य धर्म का रूप धारण कर लिया और उन्हें स्वर्ग ले गया।

452. राजा भर्तृहरि ने सच्चाई और निश्चय दिखाया

राजा भर्तृहरि कई दिनों से साधना में लगे हुए थे। एक दिन उनका लड़का आया और उन्हें समझाने लगा कि आइए अब आप राजपाट सम्भालिए। आप इतने बड़े देश और इतनी शक्तिशाली सेना के स्वामी हैं। वापस सिंहासन सम्भालिए। राजा भर्तृहरि उस समय अपनी फटी हुई गुदड़ी सी रहे थे। उन्होंने हाथ की सुई नदी में फेंकते हुए कहा कि यदि सेना शक्तिशाली है तो उसे कहो इस सुई को खोज निकाले। फिर क्या था, सारे सैनिक पानी में उतर गए और हाथ डाल-डालकर सुई खोजने लगे। आखिर हारकर हताश होकर बाहर आ गए। उसी समय राजा भर्तृहरि ने भक्ति भाव से भरकर अपने हाथ पानी में डाले और जब बाहर निकाले तो हाथों में एक मछली थी और उस मछली में वही सुई घुसी हुई थी।

सिद्धांत : सच्चाई हो तो प्रकृति भी रास्ता देती है।

453. रामकृष्ण ने रानी को चाखरी लगाई

एक बार रामकृष्ण के सत्संग में रानी बैठी थी, पर उसके मन में कोर्ट के केस के संकल्प-विकल्प चल रहे थे। रामकृष्ण ने किसी का लिहाज न करते हुए चाखरी उठाकर रानी के माथे पर मार दी। वे बोले, तुम्हारी दुनियावी Vibrations का असर सब पर पड़ता है।

सिद्धांत : गलत खयाल से न केवल अपना, अपितु दूसरे का भी नुकसान होता है। जो आत्मा में है उस का सिर किसी के आगे नीचा नहीं होता।

454. सदना ने राजा को जवाब दिया

सदना कसाई अपना धंधा सच्चाई से चलाता था और वह परमात्मा के प्रेम में डूबा रहता था। एक बार राजा का दूत दुकान बंद होने के बाद बकरी की टांग लेने हो गया। सदना ने सोचा, राजा को अभी टांग देने से बकरी पूरी रात पीड़ा में तड़पती रहेगी। उससे यह दर्दनाक बात नहीं हो सकी। उसने राजा को गोश्त देने से इंकार कर दिया।

सिद्धांत : व्यवहार सच्चाई में चले तो कोई तकलीफ नहीं। जो सत्य में टिका है, वह राजा के आगे भी सिर नहीं झुकाता।

455. ऊंट वाले का साफ मन

एक आदमी अपनी लड़की की शादी की Shopping

करने गांव से मुम्बई आया। सामान-अस्बाब के साथ वह वापस जा रहा था। गांव पहुंचने के लिए थोड़ा रास्ता ऊंट पर तय करना पड़ता था। ऊंट पर सब सामान लाद कर वह गांव की ओर निकल पड़ा। दैव वश वहीं उसकी मृत्यु हो गई। अब ऊंट वाला सोचने लगा, यह सब सामान मैं इसके घर पहुंचा देता हूं। इतने में ऊंट वाले का मित्र वहां पहुंचा और कहने लगा, यहां किसे मालूम पड़ेगा? तू सब सामान लेकर भाग जा, मालामाल हो जाएगा।

ऊंट वाले ने नम्रता पूर्वक मित्र से कहा—'यह मेरे मन की ही कमी होगी, जो ऐसी बात भी तू मेरे सामने कह सका। अब तू भी मेरे साथ चल। हम सब सामान इस आदमी के घर पहुंचा देते हैं।' वे लोग सामान लेकर उस आदमी के घर पहुंचे तो उन्होंने इनका बहुत उपकार माना कि सारा सामान सही सलामत लेकर आ गए और उन्होंने ऊंट वाले को इनाम देना चाहा। ऊंट वाले ने कहा—'आप जो इनाम देना चाहते हैं, मेरे मित्र को दीजिए जिसने मुझे मेरे मन का मैल दिखाया।'

456. जो बोलें उस पर चलें

(Practise What You Preach)

एक राजा ने अपने राज्य में ऐलान किया कि सब स्वर में बात करें। जो स्वर में बात न करेगा उसे कैद कर दिया जाएगा। एक परदेसी वहां आया, उसे कानून का पता न था। उसने सादी

बात की तो उसे कैद कर लिया गया और उसकी कोई बात न मानी गई। उसने राजा से बहुत माफी मांगी पर उसकी एक न सुनी गई। एक दिन उसने सोचा कि देखूं राजा खुद इस बात पर चलता है? उसने कहा कि राजा से मुलाकात करनी है। राजा के सम्मुख पहुंचा तो गाकर बात करने लगा। राजा-जी-आ-प-का-स्वा-ग-त-है। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ तो फिर बोला रा-जा-जी-म-ह-ल-में-आ-ग-ल-गी-है। राजा बड़ा गुस्सा हुआ और बोला जल्दी क्यों नहीं बोलता है। किस तरफ आग लगी है? फौरन बोल पड़ा—'राजा को कैद करो क्योंकि यह स्वर में न बोला।' अब राजा समझा यह मेरी परीक्षा थी।

सिद्धांत : पहले करो पीछे बोलो। पहले रहनी फिर कहनी।

नम्रता

457. दांत कठोर जिह्वा नरम

एक संत बुढ़ापे में शिष्यों से पूछ रहा था, दांत क्यों जल्दी चले गए। कोई बता नहीं सका। गुरु ने बताया, दांत कठोर होते हैं तो ज्यादा दिन नहीं चलते। जीभ नरम होती है, अपने को मोड़ सकती है, इसलिए जीवन-पर्यन्त रहती है।

सिद्धांत : नम्रता हमेशा जीती रहती है।

458. भृगु ऋषि ने लात लगाई

एक बार सब ऋषियों का सम्मेलन हुआ तो उन्होंने कहा—'ब्रह्मा, विष्णु, महेश, तीनों ही ज्ञानी कहलाते हैं लेकिन सच्चा ज्ञानी कौन है इसका पता लगाते हैं।' भृगु ऋषि ने कहा—'परीक्षा लेने मैं जाता हूं।'

पहले भृगु ऋषि ब्रह्मा जी के पास गए और सीधे उनके आसन पर जा बैठे।

ब्रह्मा जी ऐसा निरादर देखते ही श्राप देने लगे। फिर उनकी पत्नी ने समझाया तभी शांत हुए। भृगु ऋषि ने कहा—'रजोगुण तो गया नहीं।'

अब वे शंकर जी के पास गए। ज्यों ही शंकर जी ने उन्हें देखा, वे उनको गले लगाने लगे तो भृगु ऋषि कह पड़े, दूर हटो, तुम्हारे अंग में विभूति लगी है। तुमसे कौन गले लगेगा? यह सुनते ही शंकर जी ने क्रोध से कहा—'अभी चक्र चलाकर तुमको नाश कर दूंगा।' भृगु ऋषि ने कहा—'तुम्हारा तमोगुण तो अभी तक गया नहीं।'

भृगु ऋषि अब विष्णु जी के पास गए। नारायण भगवान अपनी शेष शैया पर लेटे थे और लक्ष्मी जी उनके पांव दबा रही थीं। भृगु जी जोश में गए और उनकी छाती पर जोर से लात मारी। नारायण भगवान शांत भाव से उठे और जल्दी से उनके पांव पकड़ लिए कि मेरी छाती तो वज्र जैसी है, आपके सुकोमल चरणों को चोट तो नहीं लगी! इतनी नम्रता

और प्रेम देखकर भृगु जी पानी-पानी हो गए और जाकर सबको बताया कि नारायण भगवान ही ब्रह्मज्ञानी हैं।

सिद्धांत : सच्चे ज्ञान का पता परीक्षा के समय ही होता है कि उस समय कितनी नम्रता और प्रेम रहता है।

459. रामकृष्ण ने नम्रता का सबक पढ़ाया

एक बार राकृष्ण परमहंस के पास केशव चंद्र सेन आए और बताने लगे कि अभी उन्होंने एक धार्मिक ड्रामा किया था जिसमें मुख्य पार्ट उनका था। केशव चंद्र के शिष्य ने कहा कि उन्होंने बहुत अच्छा पार्ट किया था। केशव चंद्र ने मजाक में रामकृष्ण जी से पूछा, आप भी पार्ट लेंगे? रामकृष्ण बोले—'हां, मुझे अपने चरण की धूल का पार्ट देना।' सब लोग स्तब्ध रह गए।

सिद्धांत : नम्रता में अमरता है।

459A. भगवान बड़ा कि उसका भक्त

एक बार भगवान राम भक्त हनुमान से कह रहे थे कि यह विजय तुम्हारे कारण ही मिली क्योंकि तुमने पत्थर डाले जो तैरते गए और हम लंका पहुंच सके। इस पर हनुमान जी बोले—'हे स्वामी! उन पत्थरों पर श्री राम लिखा था तभी तो वे तैर सके थे।' तो राम जी ने कहा—'लाओ एक मैं डालता हूं, देखें वह तैर सकता है क्या?' पत्थर फेंका, वह तत्काल डूब गया तो भक्त शिरोमणी हनुमान बोल

पड़े—'जिसे आप अपने से दूर करते हैं, वह भला कैसे तैरेगा? वह तो डूब ही जाएगा।'

सिद्धांत : इस प्रकार भक्त और भगवान दोनों अपनी नम्रता का परिचय देते रहते हैं। नम्रता में ही अमरता है। ज्ञान को यदि तीन शब्दों में बताना हो तो वे तीन शब्द हैं : नम्रता, नम्रता, नम्रता।

व्रत/एकाग्रता

460. सती अनसूया

एक बार ब्रह्मा, विष्णु, महेश, तीनों की स्त्रियों को अहंकार आ गया कि हमारे जैसी पतिव्रता इस दुनिया में और कोई नहीं है। पर उनके पतियों ने कहा, सती अनसूया पतिव्रत-धर्म में सबसे ऊपर हैं। पर उनकी पत्नियों को विश्वास न आया और निर्णय हुआ कि परीक्षा लेकर देखा जाए। ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों सती अनसूया के घर साधु वेश बनाकर पहुंचे और कहा कि जो हम मांगें भिक्षा दीजिए। अनसूया पहचान गई और कहा कि—'मांगो।' तो उन्होंने कहा—'हमको आपके स्तनों का दूध चाहिए।' अनसूया नहीं घबराई और एक नजर से तीनों को बालक बना दिया और दूध पिलाकर झूले में रख दिया। बहुत समय बीत गया, वे तीनों वहीं बालक रूप में रहते रहे। उनकी पत्नियों को चिंता हुई और वे अनसूया की कुटिया में आईं और अपने पतियों को वापस देने को कहा। अनसूया ने कहा—'अन्दर हैं ले जाओ।' तीनों ने देखा वहां

तीन बच्चे पड़े हैं। वे तीनों बहुत हैरान हुईं। उन्होंने माफी मांगी और सती अनसूया से कहा कि—'कृपा कर इन्हें वापस असली रूप में ला दें।'

सिद्धांत : कोई भी व्रत धारण करने से सच्ची शक्ति आ जाती है।

461. व्रत लिया क्रोध नहीं करूंगा

एक भक्त ने व्रत लिया कि क्रोध नहीं करूंगा। लोगों को पता चला और राजा तक बात पहुंची तो उसने कहा परीक्षा ली जाए। राजा ने एक आदमी से कहा 500/- इनाम दूंगा—इसको क्रोध दिलवाओ। वह आदमी कीचड़ से भरकर समाधि करते हुए भक्तजन की गोद में जा बैठा। भक्त की आंखें खुलीं और उस आदमी को प्यार की नजर से देखते हुए औरत से कहा—'अरे तुम्हारा बेटा गंदगी से भर गया। इसे साफ कर दो।' आदमी ने सोचा इसके साथ कुछ भी करो तो यह गुस्सा नहीं होता। दूसरी बार इसकी औरत को तंग करूं। फिर कीचड़ से लथपथ हो औरत की पीठ पर चढ़ बैठा जब वह अपने पति को भोजन परोस रही थी। भक्त ने कहा, रमेश की मां, रमेश बेटा तुम्हारे कंधे पर बैठ गया है। गंदगी से भरा हुआ है, उसे साफ कर दो। आदमी के दोनों प्रयास बेकार गए।

सिद्धांत : व्रत लो कि मुस्कराता ही रहूंगा तो क्रोध नहीं आएगा।

462. बुद्ध भगवान ने व्रत लिया

साधना काल में बुद्ध को लगा कि यह शरीर विकारी है। इससे ऊपर उठने के लिए इसको कड़े व्रत में रखना पड़ेगा——खाना-पीना बिना खिलाए। धीरे-धीरे उनका शरीर बहुत कमजोर हो गया। उधर एक छोटा बालक वीणा से खेल रहा था।

जब उसका तार ढीला करता तब स्वर खराब निकलता और अधिक कसता तो भी स्वर बिगड़ जाता। इससे उन्हें एहसास हुआ कि शरीर भी वीणा की तरह है, इसको बीच के रास्ते चलाना चाहिए, न ज्यादा खाना, न ज्यादा सोना, न ज्यादा चलना।

उन्होंनें जाना कि व्रत अन्दर का हो, शरीर को भूखे मारने का नहीं।

आगे कथा है कि एक बूढ़ी औरत ने बुद्ध को खीर दी जिसको ग्रहण करके उन्हें आत्मबोध हुआ।

सिद्धांत : मध्यम रास्ता सबसे उत्तम रास्ता है।

463. दीया जलाने वाला, दीया बुझाने वाला

दूर एक मंदिर था। वहां पर रोज एक आदमी दीया जलाने जाता था और दिन होने पर दूसरा आदमी दीया बुझाने आता था।

एक दिन मूसलाधार पानी बरसा तो दीया जलाने वाला नहीं पहुंचा पर दीया बुझाने वाले ने बरसात की परवाह नहीं की।

वह मंदिर समय पर पहुंचा और उस दिन उसने भगवान के दर्शन किए।

सिद्धांत : नियम की बड़ी महिमा है।

464. एकाग्रता में शक्ति

एक बार विवेकानन्द ने घूमते-फिरते हुए एक स्थान पर देखा कि कुछ युवक बंदूक के साथ निशानेबाजी का अभ्यास कर रहे थे।

लक्ष्य भेदने के लिए उन्होंने कुछ दूर पर अंडों के खाली खोल लटका रखे थे। इन युवकों ने कई बार निशाना लगाया पर चूक गए। विवेकानन्द यह दृश्य शांत मुद्रा में देख रहे थे। लड़कों की इस असफलता को देखकर वे मुस्करा दिए। लड़कों को उनका मुस्कराना अखरा और वे गुस्से से बोले कि आप जो हमारा मजाक उड़ा रहे हैं, तो आप निशाना लगा के दिखाओ।

स्वामी जी ने कभी बंदूक पकड़ा भी न था। फिर भी पूर्ण निश्चय के साथ उन्होंने चुनौती के साथ स्वीकार कर बंदूक हाथ में थाम ली और पूछा कि कहां निशाना लगाना है।

उनके बताए हुए खोल पर उन्होंने फायर किया और उसे उड़ा दिया।

यह देखकर सब हैरान हो गए कि प्रथम बार में ही निशाना लगा दिया। उन्होंने इसका रहस्य पूछा तो विवेकानन्द

जी ने जवाब दिया, यह केवल मन की एकाग्रता का चमत्कार है।

सिद्धांत : जब तक लक्ष्य और मन एक नहीं हो जाते तब तक किसी भी क्षेत्र में सफलता का प्राप्त होना असम्भव है।

युक्ति-युक्त

465. पार्वती का अगस्त्य मुनि को भोजन कराना

एक बार पार्वती ने अगस्त्य मुनि को न्यौता दिया। भगवान शिव ने कहा—'यह क्या किया? उन्हें तृप्त करना आसान नहीं।'

लेकिन पार्वती ने सोचा, वह तो अन्नपूर्णा है, आसानी से मुनि को तृप्त कर देगी। जब मुनि खाने बैठे तो बहुत तेजी से खाते गए।

पार्वती घबरा गई, घबराकर शिवजी के पास गई। भगवान ब्रह्मचारी का रूप लेकर भोजन के लिए आए और जिद करके अगस्त्य के साथ बैठे, जल्दी खाकर उठ गए।

पार्वती ने पूछा जल्दी क्यों, तो कहा मैं ज्यादा नहीं खाता, आलस होता है, पूजा में विघ्न होता है और दूसरी बात, मैं इन ब्राह्मण अगस्त्य की तरह भूखा थोड़े हूं कि पूर्ण ही न होऊं। उधरी अगस्त्य ने सुना और खाना बंद कर दिया। पंक्ति में एक खाता रहे दूसरा उठ जाए नियम के विरुद्ध है। दूसरे, वह

बाद में आकर पहले उठ गया। उठकर उन्होंने क्रोध से कहा—तुमने पानी भी पीने नहीं दिया। भगवान ने कृपा करके दर्शन दिए और कहा—पानी द्वापर में पिलाऊंगा। जब इंद्र ने यज्ञ बंद होने पर क्रोध में ब्रज डुबोने की वृष्टि की तब भगवान ने जल का शोषण करने के लिए अगस्त्य को नियुक्त किया।

466. द्रौपदी दुर्वासा ऋषि को लाई

एक बार पांडव यज्ञ करना चाहते थे पर दुर्वासा ऋषि ने आने से इंकार कर दिया। वे बोले—'जिसने 100 यज्ञ किए हों उसी के पास मैं जाता हूं।' पांडवों का मन छोटा हो गया तो द्रौपदी ने कहा—'मैं बुला लाती हूं।' वह दुर्वासा के पास गई और विनम्रता से बोली—'हे मुनिवर, आपके पास आने के लिए जो मैंने सौ कदम बंढ़ाए हैं वे 100 यज्ञ से क्या कम हैं? आपको इस यज्ञ में पधारना ही होगा।' दुर्वासा ऋषि यज्ञ में आ गए।

सिद्धांत : सत्संग की तरफ जितने कदम उठाओ, उतने यज्ञ हो गए, सत्संग महान यज्ञ है।

467. देवताओं ने दैत्यों के ऊपर विजय पाने की युक्ति पाई

एक बार देवता दैत्य से हार गए तो भगवान के पास गए कि सलाह दीजिए कैसे जीतें। भगवान ने कहा—'जब दैत्य

जीतें तो उनकी प्रशंसा करो। प्रशंसा से अहंकार आ जाएगा और सुजागी नहीं रहेगी। और जब वे हारें तो निंदा करो। हार से हताश वे लोग निंदा सुनकर क्रोध में आ जाएंगे और उनमें सोचने की शक्ति ही नहीं रहेगी। इस प्रकार वे कमजोर हो जाएंगे और तुम उन पर विजय प्राप्त कर पाओगे।'

सिद्धांत : कहीं भी विजयी होना है तो मान-अपमान से ऊपर हो जाओ।

468. नारद को भगवान ने नर्क जाने का श्राप दिया

एक बार नारद ने गुस्ताखी की और भगवान ने श्राप दिया कि नर्क में जाओ। नारद भी भगवान के नजदीक रहकर होशियार हो गए थे। भगवान के चरणों के पास बैठकर नर्क और स्वर्ग का नक्शा जमीन पर बना दिया। फिर नर्क के नक्शे पर लेट गए और बोले—'हो गया नर्क में जाना। अब मेरा श्राप पूरा हुआ।'

सिद्धांत : भगवान के चरणों में ही रहो। भगवान के वचनों में श्रद्धा और इश्क है तो अक्ल खुद आ जाती है।

469. मोह में राजाई दी

एक राजा का रानी से बहुत ही लगाव था। इश्क में उसने सारी राजाई रानी को दे दी। जोश ठंडा हुआ तो फिक्र हुई कि

कैसे वापिस लूं। संत के पास गया। संत बोला राग में आकर दी, द्वेष से वापिस आ जाएगी। अब राजा रानी से द्वेष और क्रोध करने लगा। रानी तंग आ गई और बोली—'मुझे तुम्हारी राजाई नहीं चाहिए।'

सिद्धांत : समय-समय पर सब विकार काम आते हैं।

शरण

470. भगवान की रजा से

एक जुलाहा सादगी से जीवन निर्वाह के लिए कपड़ा बुनता और हरिनाम लेता रहता था। कपड़ा तैयार होता तो वह सच्चाई से बाजार में बेच देता। गांव वाले उसका कपड़ा जल्दी से खरीद लेते क्योंकि सबको मालूम था कि वह भला आदमी है, भगवान का भक्त है। सामने एक धनवान का घर था।

एक रात दो चोर अमीर के घर में घुसे और बहुत धन चोरी करके बाहर आ गए। रात गहरी थी। अंधेरे में बंटवारा नहीं कर सकते थे तो जुलाहे के घर में घुसकर उसे जगाया और कहा कि यह गठरी लेकर चलो। जुलाहा सदा मदद के लिए तैयार रहता था सो गठरी उठाकर चल पड़ा। आगे-आगे जुलाहा पीछे दोनों चोर। सामने से पुलिस आई तो चोर भाग गए और जुलाहा सामान के साथ पकड़ा गया। रात जेलखाने में बितानी पड़ी और सवेरे जज के सामने खड़ा किया। जज

ने पूछा, यह सामान तुमने चुराया? उसने कहा, नहीं। जज ने पूछा कल रात क्या हुआ, खोलकर बताओ। वह बोला—'बीच रात भगवान की रजा से दो आदमी मेरे घर पर आए। भगवान की रजा से उन्होंने मुझे गठरी उठाने को कहा। भगवान की रजा से पुलिस ने मुझे पकड़ा, भगवान की रजा से जेल में गया। भगवान की रजा से आपके सामने खड़ा हूं। भगवान की रजा से आपने सवाल पूछा। भगवान की रजा से उत्तर दे रहा हूं।' जज ने उसकी बात सुनकर जान लिया कि यह चोर नहीं हो सकता और उसे छोड़ दिया।

सिद्धांत : भगवान को आगे रखने से हर बात से छूट जाते हैं।

471. बकरी सिंह के चरण-चिन्ह की शरण में

एक बकरी चरते-चरते झुण्ड से अलग हो गई और घूमते-घूमते एक सरोवर के पास पहुंची।

वहां गीली मिट्टी प्रर सिंह के पैर के निशान बने हुए थे। रात हो चली थी। वह उन चरण-चिन्ह की शरण होकर बैठ गई।

रात में जंगली जानवर भेड़िया, बांघ आदि बकरी को खाने के लिए आए तो वह बोली, पहले देख लेना कि मैं किसकी शरण में हूं तब मुझे खाना। वे चिन्ह देखकर बोले—'अरे यह तो शेर के हैं, सिंह आ जाएगा तो हमें मार देगा।' इसी प्रकार

सब डर कर भाग गए। अंत में सिंह खुद आया और बकरी से बोला—'तू जंगल में अकेली क्या कर रही है?' बकरी ने कहा—'पहले यह चरण-चिन्ह देख लेना फिर बात करना। मैं इसी की शरण होकर बैठी हूं।' सिंह ने देखा यह तो मेरे ही शरण है तो आश्वासन दिया, तुम डरो मत निर्भय होकर रहो।

रात में जल पीने के लिए हाथी आया तो सिंह ने हाथी से कहा—तू इस बकरी को अपनी पीठ पर जंगल में घुमाया कर और कोमल पत्तियां खिलाया कर। अब वह बकरी हाथी पर सवारी करती और मस्त रहती।

ऐसे ही जब मनुष्य सत्गुरु की शरण हो जाता है और उनके चरणों का सहारा ले लेता है तो सब रुकावटों से ऊपर हो जाता है और उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

सिद्धांत : भगवान के साथ सम्बंध जुड़ गया तो उद्धार हो गया।

472. दुनिया में कौन-सी चीज भगवान की शरण नहीं है

एक उच्च कोटि के संत महात्मा थे। उनकी नब्बे वर्ष की उम्र थी, पर जब वह दौड़ते थे उनके शिष्य उनको छू नहीं सकते थे। सब उनको चमत्कार की तरह देखते थे। एक दिन एक शिष्य ने उनसे कहा—'बाबा! मुझे भगवान की शरण

में कर दो।' वो बोले—'तुम कल आना और यह निश्चय करके आना कि ऐसी कौन-सी चीज है दुनिया में जो भगवान की शरण में नहीं है। पानी, तेज, हवा या आकाश, कोई भी ऐसा है जो भगवान की शरण में नहीं है?' शिष्य सोचने लगा पांचों महाभूत जो भगवान की शरण में हैं, तो क्या साढ़े तीन हाथ का शरीर भगवान की शरण में नहीं है? हमारा यह मन क्या भगवान की शरण में नहीं है? क्या ये नन्हा-मुन्ना जीव भगवान की शरण में नहीं है? दूसरे दिन बाबा की शरण में गया और बोला—'हमें कुछ ऐसा नहीं मिला जो भगवान की शरण में न हो।' तब उन्होंने बताया—'मैं भगवान की शरण में नहीं हूं, यह एक भ्रम है। यह जीव का अज्ञान है जो यह समझता है कि मैं उनसे अलग हूं। तुम्हारा रग-रग, कण-कण, तुम्हारे जीवन का क्षण-क्षण, एक-एक जन, एक-एक मन, ये सब भगवान की शरण में हैं।'

सिद्धांत : भगवान की शरण से बाहर कुछ भी नहीं है।

18. त्याग और ग्रहण, त्याग-भावना, दान दृष्टांतों की सूची

473. मालगुजारी की माफी
474. अपूर्ण दान
475. प्रेम से त्याग
476. लोटा दान किया
477. अंदर वाले कमरे से बाहर वाले कमरे में दान
478. सच्चा दान
479. त्याग और ग्रहण
480. ब्राह्मण ने राजा को गुरु बनाया
481. कर्ण का दान
482. आग से पुत्र को कौन बचाए

त्याग भावना, त्याग, ग्रहण, दान के अन्य दृष्टांत

170. बृहस्पति ने कच से कहा त्याग
180. ऋषि कन्या
408. फकीर की झोंपड़ी बड़ी

प्राप्ति होती है उन्हीं जीवों को मेरे धाम की।
प्रेम से माला जपा करते जो मेरे नाम की॥
जो शरण आता है मेरी तज कर जग जंजाल को।
उसको कुछ बाधा नहीं फिर क्रोध मद और काम की॥
मुझको जाने मुझको माने मुझको पूजे हर समय।
बस यही सूरत है मन के शांत और विश्राम की॥
दे दिया अपना सब कुछ जिसने मेरे हाथ में।
उसकी कुछ ख्वाहिश नहीं किसी कर्म के परिणाम की॥
शरण में रहकर रहे निर्लेप जो संसार से।
मिलती है सत्गुरु उसी को राह मुक्ति धाम की॥

त्याग-ग्रहण, दान

473. मालगुजारी की माफी

एक राजा एक गुरु को बहुत मानता था। देखा-देखी राज्य के लोग भी उस गुरु को मानने लगे। सत्संग मंडली बन गई। भूमि-कर देने के समय लोगों ने कहा हम तो गुरुभाई हैं, क्या अब आप हमसे मालगुजारी लेंगे? राजा ने माफ कर दिया। समय बीतता गया, सब निकम्मे हो गए, राज्य कर्जदार हो गया। इसी बीच गुरुजी आए। वह सब समझ गए। उन्होंने ढिंढोरा पिटवाया कि राजा को एक भयानक बीमारी लग गई है। उसे दूर करने के लिए गुरु भाई का तेल काढ़ना आवश्यक है। सब भाग खड़े हुए। केवल एक सामने आया और प्रेम से गुरु को समर्पित किया—'मेरा शरीर काढ़ लें।' इससे गुरुजी प्रसन्न हुए और राजा को केवल इस मनुष्य की मालगुजारी माफ करने की सलाह देकर चले गए।

474. अपूर्ण दान

कबीर एक समय डोरी से बुनाई कर रहे थे। एक फकीर आया दान लेने को, कबीर ने डोरी दान दे दी। फकीर ने

उसका जाल बनाया और मछलियां फंसाई। कुछ समय बाद कबीर को कोढ़ हुआ, उसे आकाशवाणी हुई कि गलत दान करने का फल है।

सिद्धांत : देश, काल, पात्र देखकर दान करना चाहिए।

475. प्रेम से त्याग

स्वामी रामतीर्थ जी ने अपनी औरत को कहा—'तुम सोलह श्रृंगार करके आओ।' जब वो श्रृंगार करके आई, तो आकर सो गई। रामतीर्थ ने देखा वह सो गई, तो वह घर छोड़कर चले गए।

सिद्धांत : द्वेष से त्याग नहीं होना चाहिए पर सहज समता से।

476. लोटा दान किया

एक व्यापारी के पास कोई दान लेने के लिए आया। उस समय व्यापारी नहा रहा था। उसको भाव उठा कि इसे यह लोटा दे दूं। उसने नहाते-नहाते ही लोटा दान कर दिया अन्यथा कहीं मन न बदल जाए।

सिद्धांत : जब प्रेरणा आए उसी समय पूरी करना। मन बदलते देर नहीं लगती।

477. अंदर वाले कमरे से बाहर वाले कमरे में दान

एक जगह आगे-पीछे दो कमरे थे। जो अंदर वाले कमरे में

रहता था वह साहूकार था और बाहर वाला गरीब था। पिछले कमरे वाला दान-पुण्य करता था लेकिन सब सामान निकलता तो बाहर के कमरे से ही था। लोग समझते बाहर के कमरे वाला बड़ा दानी, पुण्यात्मा है। और वह भी सबको यह ही बताता था। पर लोगों ने सोचा, यह तो गरीब है तो कैसे देगा? जाकर देखा तो मालूम पड़ा अंदर वाला साहूकार है। ऐसे होता सब अंदर वाले परमात्मा से है पर हम बाहर वाले मैं-मैं करते हैं।

सिद्धांत : अंदर वाले ज्ञान स्वरूप को जगाएंगे तो मौन आ जाएगी।

478. सच्चा दान

लड़ाई के बाद युधिष्ठिर ने एक बड़ा यज्ञ किया। यज्ञ में सब को खुले दिल से दान दिया तो सब बहुत तृप्त हुए। इससे युधिष्ठिर को थोड़ा अहंकार आ गया। अब कृष्ण ने सोचा इसे अहं से कैसे छुटकारा दिलवाऊं। उसी समय वहां पर एक नेवला आ पहुंचा जिसका आधा शरीर सोने का था, आधा सादा था। युधिष्ठिर ने पूछा, आपका ऐसा स्वरूप कैसे? नेवला बोला—'मैं एक ऐसे शहर से आ रहा हूं जहां बहुत अकाल पड़ा था। एक पति-पत्नी पुत्र के परिवार ने कहीं से थोड़ा-सा भोजन इकट्ठा किया था और वे लोग खाने को बैठे ही थे कि उधर से एक बहुत भूखा आदमी गुजरा जिसने कहा—'मुझे कुछ खाने को दो।' पति ने अपना खाना उसे दे दिया पर उसकी भूख न मिटी तो स्त्री ने भी अपने हिस्से का दे दिया। फिर भी वह तृप्त न हुआ तो

बेटे ने भी दे दिया। वह आदमी चला गया। बाद में परिवार के तीनों जने बिना भोजन के मर गए। वहां दो तीन दाने अन्न के पड़े थे। उन्हीं पर लोटने-पोटने से मेरा आधा शरीर सोने का हो गया। उसके बाद जहां-जहां भी बड़े यज्ञ हुए मैं उन सभी यज्ञों में बहुत घूमता हूं पर मेरा आधा शरीर सोने का नहीं हुआ। आज इतने बड़े यज्ञ में भी इसलिए ही आया हूं कि कुछ फल मिलेगा पर यहां भी निराश हो गया।'

युधिष्ठिर ने प्रभु की ओर देखा और वह चरणों में गिर पड़ा। वह समझ गया कि उसका अहंकार तोड़ने के लिए प्रभु ने लीला की है।

479. त्याग और ग्रहण

एक त्यागी महात्मा थे। वे सबसे अलग ढंग का जीवन व्यतीत करते थे। वे कुटिया में नहीं रहते, वस्त्र नहीं पहनते, एक दिन बासी रोटी खाते, मार्ग छोड़कर कंटीले रास्ते पर चलते। इस प्रकार वे अपना जीवन विशेष बनाने में लगे रहते। एक दिन एक संत उनके पास गए और बोले—'पहले तो तुम बड़े भोगी थे।' महात्मा ने कहा—'हां, मेरे जैसा भोगी कोई नहीं था, अब मेरे जैसा त्यागी इस तरफ शायद ही कोई होगा।' संत ने कहा—'सुनते हैं तुम पहले वीणा बहुत अच्छी बजाते थे। यदि वीणा के तार ढीले छोड़ दें तो स्वर ठीक निकलेंगे?' महात्मा बोले—'कोई स्वर ठीक नहीं निकलेगा।' संत ने पूछा—'वीणा के तारों को कसते जाएं तो स्वर ठीक निकलेंगे?' महात्मा बोले—'तब तो तार ही टूट जाएंगे।' फिर

संत ने पूछा—'महात्मा, तुम यह सब क्या कर रहे हो?' इस सवाल से महात्मा की आंखें खुल गईं कि वीणा के तार की जो मध्यम स्थिति होती है, जीवन की भी वही मध्यम स्थिति ठीक होती है। त्याग और ग्रहण से उसी वस्तु का चिंतन बढ़ जाता है।

सिद्धांत : त्याग और ग्रहण का चिंतन हो ही नहीं। आत्मा का ही चिंतन हो।

480. ब्राह्मण ने राजा को गुरु बनाया

एक ब्राह्मण एक प्रतापी तेजस्वी राजा के पास आया। उसने देखा राजा इतना सच्चा, इतना ईमानदार है कि राजकोश से एक कौड़ी भी नहीं लेता। खुद खेती करके अपना और रानी का निर्वाह करता है। ब्राह्मण बोला—'तुम राजाई में भी संन्यासी की तरह रहते हो। मैं संन्यासी होकर भी इतनी सच्चाई से नहीं रहता। आज से तुम मेरे गुरु हो।'

सिद्धांत : गृहस्थ में त्याग-भावना हो तो संन्यास से कहीं अच्छा फल देने वाला है।

481. कर्ण का दान

कर्ण बहुत ही दानवीर था। कथा प्रचलित है कि एक बार बहुत बारिश हो रही थी। उधर से एक ब्राह्मण सूखी लकड़ी की मांग करता हुआ गुजरा। कर्ण को मालूम पड़ा तो उसी समय अपने घर की लकड़ी की बीम कंधे का जोर लगाकर छत से उखाड़ डाली और ब्राह्मण को दान दे दी। दूसरी बार जब कर्ण घायल होकर लड़ाई के मैदान में पड़ा था, मौत

बहुत निकट थी क्योंकि शरीर गहरे घावों से भरा हुआ था, उस समय एक ब्राह्मण स्वर्ण दान के लिए पुकारता हुआ उधर आ पहुंचा। कर्ण को याद आया कि मेरे दांत में सोना है। उसने एक सैनिक से कहा—'एक पत्थर उठा और मेरा दांत तोड़ दे।' फिर उस दांत को अपने आंसुओं से धोकर कर्ण ने ब्राह्मण को भेंट किया।

सिद्धांत : खुद को लुटा दो तो मालामाल हो जाओगे।

482. आग से पुत्र को कौन बचाए

एक आदमी को Office में खबर मिली कि घर में आग लग गई है, वह सब कुछ छोड़कर भागा। रास्ते में उसे वह मिला जिससे वह कई दिनों से Business Deal करना चाहता था और एक स्त्री भी मिली जिससे बातचीत करने के लिए वह सदा लालायित रहता था पर उसने उनकी ओर देखा भी नहीं। घर पहुंचा तो बड़ी लपटें और धुआं उठ रहा था। सब लोग बाहर खड़े रो-पीट रहे थे पर उसका नन्हा बालक नहीं था। उसने सबसे कहा—'हम अपनी धन-सम्पत्ति जो कुछ भी है सब भेंट कर देंगे, हमारे बच्चे को कोई बचा ले।'

अब संत का सवाल है—क्या पुत्र आनन्द का मूल साधन है? सब वस्तुएं पुत्र के लिए अर्पण की जा रही हैं, लेकिन अपने आप को बचाया जा रहा है। यह जो बचाने की भावना है यह आत्मा की वजह से है क्योंकि वह हमेशा बची ही है, कभी बिगड़ती नहीं है। वह है ही नहीं, लेकिन अज्ञानवश हम अपने देह से आत्मा का धर्म लगाना चाहते हैं।

19. सत्संग की महिमा के दृष्टांतों की सूची

483. सत्संग की आधी घड़ी हजार वर्ष की तपस्या से अधिक
484. नदी में दो आदमी बह रहे थे
485. सत्संग की एक घड़ी ने नर्क से बचाया
486. सत्संग की महिमा
487. विक्रमादित्य का तख्त
488. सूली का कांटा सत्संग से हो जाता है

सत्संग की महिमा के अन्य दृष्टांत

466. द्रौपदी दुर्वासा को लाई

20. प्रारब्ध के दृष्टांतों की सूची

489. संत तुकाराम को प्रारब्ध में विश्वास
490. प्रारब्ध में टिकाया
491. तोते को शिकारी से बचाया
492. ब्राह्मण का लड़का बदला चुकाकर मर गया
493. ऐसा भी होता है

प्रारब्ध के अन्य दृष्टांत

65. भोजयिता, भोक्ता, भोग्य
176. गरुड़ ने पक्षी को दूर छोड़ा

180. ऋषि-कन्या
402. एक आदमी भगवान को Test

21. निन्दा-कीर्ति के दृष्टांतों की सूची

494. एक मुट्ठी निन्दा को एक प्रशंसा को
495. राजा भोज ने धैर्य से अपनी निंदा सुनी
496. राजा ने निंदा कराई तो गोबर खत्म हुआ, थोड़ा बचा सो खाया
497. बुद्ध भगवान ने निंदक को क्षमादान किया
498. संत पर इल्जाम लगाया
499. मेमने ने फूल खाया

निंदा/कीर्ति के अन्य दृष्टांत

221. संत को 108 बार थूक
225. सुकरात की सहनशक्ति
291. नाम के लिए मंदिर मूर्ति

19. सत्संग की महिमा

483. सत्संग की आधी घड़ी हजार वर्ष की तपस्या से अधिक

वशिष्ठ और विश्वामित्र में विवाद चल रहा था कि बड़ा कौन? जब आपस में निर्णय नहीं हो सका तब दोनों धरनीधर भगवान शेषनाग के पास पहुंचे। उनके विवाद का कारण जानकर भगवान शेषनाग ने कहा—'मेरे सिर पर पृथ्वी का बोझ है, आपमें से कोई क्षण-भर के लिए धारण कर लें तो मैं निर्णय दे दूं।'

विश्वामित्र को बड़ी जल्दी थी। उन्होंने अपने जीवन भर के यज्ञ, जप, तप, व्रत द्वारा पैदा हुई शक्ति के द्वारा क्षण-भर पृथ्वी को धारण करना चाहा पर वह डगमगा कर गिरने लगी। शेष ने उन्हें रोक दिया।

वशिष्ठ ने अपने जीवन के थोड़े से भाग में किए हुए सत्संग का अंश लगाया। उसकी शक्ति से पृथ्वी अधर में स्थित हो गई। दोनों को उत्तर मिल गया।

सिद्धांत : सत्संग शक्तियों का खजाना है।

484. नदी में दो आदमी बह रहे थे

न्याग्रा नदी में दो आदमी बहे जा रहे थे। एक को लकड़ी का एक बड़ा लट्ठा मिल गया। उसने उसे पकड़ लिया। दूसरे को पतली-सी रस्सी दिखी जो किनारे पर खड़े लोगों ने बचाने के लिए डाली थी। लट्ठे के मुकाबले रस्सी बहुत कमजोर दिख रही थी, पर उसकी सहायता से वह बच गया। जिसने लट्ठ पकड़ रखा था, वह न्याग्रा फॉल में गिरकर मर गया।

सिद्धांत : मनुष्य जब तक दुनिया के पदार्थों—धन मान आदि का सहारा लेता है तो डूब जाता है। सत्संग की डोर पतली रस्सी जैसी है जो आदमी को भगवान तक पहुंचा देती है।

485. सत्संग की एक घड़ी ने नर्क से बचाया

एक आदमी ने सारी उम्र गलत काम किया, फिर अंत में सत्संग सुना। गुरु ने कहा कि—'जब यमराज पूछे कि बुरे कर्मों का फल पहले चाहिए कि अच्छे कर्मों का, तो बोलना अच्छे कर्मों का। उससे तुम्हें सत्संग मिलेगा और सत्संग में जाने से तुम्हारे पाप धुलते जाएंगे।' ऐसा ही हुआ। वह हमेशा सत्संग में ही बैठा रहा और नरक से छूट गया।

सिद्धांत : सत्संग की महिमा अनन्त है, पापों से बचा लेती है।

486. सत्संग की महिमा

एक बाप-बेटा दोनों चोर थे। बाप बेटे को समझाता था कि साधु संगत में नहीं बैठना, नहीं तो चोरी नहीं कर पाओगे। एक दिन लड़का चोरी करके आ रहा था, पुलिस पीछे लगी थी। सत्संग हो रहा था तो पुलिस से बचने के लिए थोड़ी-सी देर के लिए वह सत्संग में एक कोने में बैठ गया। वहां उसने सुना देवताओं की परछाईं नहीं होती। कुछ दिन बाद उस गांव में एक आदमी देवी का स्वांग बनाकर आया और कहने लगा—'यहां पर बड़ी विपत्ति आने वाली है। तुम अपनी आधी सम्पति दो तो तुम्हारी रक्षा करूं।' बहुत-से लोग उसकी बातों में आ गए और उसको बहुत धन-दौलत मिल गई। वह जा रहा था तो चोर के लड़के ने देखा इसकी परछाईं पड़ रही है। एकदम जाकर उसका सामना किया, उसको मारकर भगा दिया और उससे सारा धन लेकर सबको लौटा दिया। बेटे ने सोचा, एक घड़ी सत्संग सुनने से जब इतना ज्यादा लाभ है तो क्यूं न मैं रोज सुनूं। वह रोज सुनने लगा और पाप-कर्म से बच गया।

सिद्धांत : सत्संग की महिमा अपरम्पार है।

487. विक्रमादित्य का तख्त

एक औरत विक्रमादित्य के तख्त पर बैठकर बोलती थी, मैं अपनी बेटी की शादी राजा के लड़के से करूंगी। फिर जब उतरती थी तो वैसे जोश में बात नहीं निकलती थी।

सबने जाना कि तख़्त की महिमा ऐसी थी जो वो शब्द उससे कहलवाती थी।

सिद्धांत : सत्संग के तख़्त की ऐसी महिमा है जो ज्ञान के वचन ही निकलेंगे। इसलिए जिज्ञासु को बार-बार सत्संग के किले में ही रहना चाहिए।

488. सूली का कांटा सत्संग से हो जाता है

दो दोस्त थे, एक भक्त था, दूसरा घूमने वाला। भक्त जा रहा था, कांटा चुभा। दूसरा जा रहा था—उसे सोने की गिन्नी मिली। भक्त को संशय आया, वह गुरु के पास कारण पूछने गया, 'ऐसा क्यों हुआ, वह तो भक्त था! गुरु कांटे वाली जगह ले गया, खुदाई की, नीचे फांसी का फंदा था। फिर बताया, सत्संग की महिमा से सूली कांटा हो गई। फिर उसे वहां ले गया, जहां गिन्नी मिली थी। खुदाई की तो गिन्नियों का डिब्बा था। उसके प्रारब्ध में बहुत पैसा था, परंतु बुरे रास्ते पर चलने के कारण, एक ही गिन्नी मिली।

सिद्धांत : सत्संग की महिमा से बुरे कर्म कट जाते हैं।

20. प्रारब्ध

489. संत तुकाराम को प्रारब्ध में विश्वास

संत तुकाराम मिर्ची बेचता था पर वह किसी से कुछ न कहता था, बस अपनी ही मस्ती में रहता था। कोई एक किलो का आठ आना दे जाता, कोई एक रुपया दे देता। एक आदमी ने जब यह खेल देखा तो उसने सब कम देने वालों से हिसाब की रकम लेकर तुकाराम को दे दी।

सिद्धांत : निरीच्छा के लिए भगवान सोचता है।

490. प्रारब्ध में टिकाया

एक बार एक फकीर मुहम्मद साहब के पास गया और भीख मांगने लगा।

उस समय मुहम्मद साहब खाना खा रहे थे। उन्होंने कहा—'ठहरो' और अपना भोजन पहले समाप्त किया, फिर फकीर को बाजार ले गए। वहां पर उसका कमण्डलु बेचकर कुल्हाड़ी खरीदवाई और थोड़े-से चने खिलाकर उसका पेट भर दिया, फिर उसे जंगल में ले गए जहां उसे लकड़ी काटनी सिखाई जो कि वो लकड़ी बेचकर अपनी

उदरपूर्ति कर सके। इस प्रकार हमेशा के लिए उसे मांगने से छुड़ाया।

सिद्धांत : मदद सच्ची करो। Help a Man to Help Himself.

491. तोते को शिकारी से बचाया

एक आदमी ने दया करके तोते को शिकारी से बचाया पर तोते ने कहा—'क्यों बचाया, मुझे मनुष्य-जन्म मिलने वाला था।'

सिद्धांत : प्रकृति में जो होता है, ठीक होता है। हम क्यों Interfere करें?

492. ब्राह्मण का लड़का बदला चुकाकर मर गया

एक राज्य में एक बहुत बड़ा विद्वान पंडित था। उसने बहुत यज्ञ करके एक पुत्र प्राप्त किया। उसने अपनी पत्नी को समझाया कि उसे कभी बाहर न जाने देना। दक्षिणा नहीं लेने देना। एक बार ब्राह्मण बाहर गया। पीछे से दूसरे देश का विद्वान शास्त्रार्थ के लिए आया। राजा ने पंडित को बुला भेजा, लेकिन पंडित घर में नहीं था। पुत्र ने बाप की इज्जत के लिए मां को मना लिया और चला गया। दरबार में उसने अपने प्रतिरोधियों को हरा दिया। राजा ने दक्षिणा देनी चाही, लेकिन उसने इनकार कर दिया। राजा ने चार लड्डुओं में लाल

रखकर कहा—'यह तो प्रसाद है।' वह लड्डूओं को लेकर घर आ गया। कुछ दिन बाद वह मर गया। पंडित घर आया तो सब समझ गया। उसने अपनी पत्नी को बताया कि पूर्व जन्म में उसको लाल चुकाना था और वह हिसाब पूरा करके मर गया।

493. ऐसा भी होता है

एक संत के पास उसका शिष्य आया और बोला—'मेरे बेटे का शरीर शांत हो गया है।' संत ने कहा—'ऐसा भी होता है।' शिष्य को दुख हुआ कि संत ने दिल से ही नहीं लिया। कुछ दिन बाद उसकी स्त्री मर गई और उसने आकर गुरु को बताया। गुरु ने कहा—'ऐसा भी होता है।' वह फिर हैरान हुआ। तीसरी बार गुरु के पास आया और बोला कि उसका धन चला गया। गुरु ने फिर कहा कि—'ऐसा भी होता है।' अब तो उसे बहुत गुस्सा आया और उसने जोर से गुरु को थप्पड़ लगाया। गुरु ने कहा—'ऐसा भी होता है' और वह मुस्कराता रहा। अब शिष्य की समझ में आया कि गुरु की हर बात में राज है। उसे नमस्कार किया।

सिद्धांत : Nothing New Under the S:.n.

21. निन्दा-कीर्ति

494. एक मुट्ठी निन्दा को एक प्रशंसा को

एक संत किसी शहर में अपने भक्तों को लेकर गया। वहां उन लोगों ने संत की बहुत निन्दा की, संत लोगों का घर-बार छुड़वाते हैं।

उन्होंने संत को बहुत गालियां दीं फिर भी संत ने प्रेम से उन्हें ज्ञान सुनाया। जब शहर से बाहर पहुंचे तो संत ने एक मुट्ठी मिट्टी ली और फेंक दी। शिष्यों ने देखा पर कुछ कहा नहीं।

फिर वे लोग दूसरे शहर में गए। वहां पर लोगों ने संत का बहुत आदर-सत्कार किया।

संत ने भक्तों को और भक्तों ने संत को बहुत प्रेम किया। जब वहां से बाहर निकले तो संत ने फिर एक मुट्ठी मिट्टी से भरी और वहीं फेंक दी। अब शिष्यों ने पूछा, आप यह क्या करते हैं? संत ने कहा—'जिन्होंने निंदा की वह भी उनके ही पास, जिन्होंने प्रशंसा की वह भी उनके पास, मैं तो ज्यों का त्यों हूं।'

सिद्धांत : संत के लिए निंदा-स्तुति समान है।

495. राजा भोज ने धैर्य से अपनी निंदा सुनी

राजा भोज जब विक्रमादित्य के तख्त पर बैठा तो आवाजें आने लगीं कि—'तू इस तख्त के लायक नहीं है—तू Miser है, भोला है, तुझमें देश सम्भालने की अक्ल नहीं है।' फिर विक्रमादित्य की अत्यधिक प्रशंसा की आवाजें आईं। राजा भोज ने दोनों बातें बड़े धीरज से सुनी और अपनी सफाई में एक शब्द भी नहीं बोला।

आखिर देव शक्तियां शांत हुईं और राजा भोज में सारे गुण आ गए।

सिद्धांत : किसी की कीर्ति बड़े प्रेम से सुनो तो सारे गुण आप में आ जाएंगे। हसद साद की जगह प्रेम होवे।

496. राजा ने निंदा कराई तो गोबर खत्म हुआ, थोड़ा बचा सो खाया

एक राजा बड़ा दानी था—सारा दिन दान-पुण्य करता, संतों को देता। एक दिन शाम को संत आया तो राजा को गुस्सा आ गया। वह बोला—'दान नहीं है।' उसे गोबर दान कर दिया। संत ने गोबर को कमण्डलु में देखा तो वहीं राजा के द्वार पर फेंककर चला गया। वह गोबर रोज बढ़ता गया। राजा को अचरज हुआ, यहां घोड़ा तो नहीं है, यहां लीद कैसे बढ़ रही है। पता लगाया तो मालूम पड़ा कि वह गोबर है जो उसने कमण्डलू में डाला था। संत ने कहा—'शहर में

अपनी निंदा कराओ। तुम्हारे पाप-कर्म नाश हो जाएंगे।' पहले तो राजा को दुख हुआ पर संत का कहा मानकर ऐसा ही किया। राजा की सबने निंदा की कि इतना सात्विक स्वभाव का होकर राजा ऐसा गलत है।

एक ब्रह्मज्ञानी ने उसकी निंदा नहीं की तो राजा को गोबर खाना पड़ा।

सिद्धांत : निंदा से पिछले झूठे कर्म खलास हो जाते हैं।

497. बुद्ध भगवान ने निंदक को क्षमादान किया

एक बार बुद्ध भगवान के भ्रमण और धर्म-प्रचार के बीच एक आदमी आया जो कि बुद्ध के धर्म से सहमत नहीं था।

उसने अनेक अपशब्द, गाली-गलौज की। बुद्ध मुस्कराते हुए सब सुनते रहे।

उसका कहना खत्म हुआ तब वे प्रेम से बोले—'हे मित्र, तुमने जो कुछ कहा उससे मुझे तनिक भी विक्षेप नहीं हुआ। यदि तुम किसी को फूल का गुलदस्ता दो और वह स्वीकार न करे तो गुलदस्ता किसके पास रहेगा?' आदमी ने सहज भाव से कहा—'देने वाले के पास।'

यह कहते ही उस निंदक के हृदय में एक गहरा परिवर्तन आ गया और वह बुद्ध भगवान के चरणों में गिर गया।

सिद्धांत : क्षमा उसके पास है जो भगवान के पास है।

498. संत पर इल्जाम लगाया

एक बार एक गांव में एक लड़की को बच्चा होने वाला था।

उसने एक संत पर झूठा इल्जाम लगा दिया कि यह बच्चा इसका है। सबने कहा अब तुझे ही इसकी देखभाल करनी होगी।

संत कुछ न बोला। जब नौवां महीना आया तो उसकी तकलीफ सहन से बाहर हो गई। बच्चा बाहर न आए, तभी उसको अंदर में आया कि संत पर झूठ इल्जाम के कारण ही ऐसा है तो उसने सब सच बता दिया। एक आदमी ने जाकर संत को कहा कि उस लड़की ने सब सच बता दिया सो सब गांव वाले तेरे से माफी मांगने आ रहे हैं। संत वह गांव छोड़कर चला गया।

सिद्धांत : ज्ञानी पुरुष न निंदा लेता है न स्तुति।

499. मेमने ने फूल खाया

एक सच्चा जिज्ञासु कई दिनों तक अपनी साधना, मनन-विचार में रहा तो उसे अपने अंदर कई अच्छे ज्ञान के लक्षण दिखाई देने लगे। या यूं कहिए कि उसमें सद्गुण रूपी कई फूल खिल गए। वह फूल से भरा हुआ—जिज्ञासु के लक्षण रूपी पौधा अपने सिर पर रखकर खुशी-खुशी गुरु के पास ले जाने के लिए निकल पड़ा। रास्ते में उसे अपना एक

पुराना दोस्त मिला। दोस्त अपने Pet Lamb (पालतू मेमने) को कंधे पर लिया था। उसने कुछ देर मित्र की कीर्ति की और पुरानी बाते कीं और फिर दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए। जिज्ञासु गुरु के पास पहुंचा और बोला—'देखिए कितने सुन्दर फूल खिले हैं मेरे पौधों में!' गुरु बोला, फूल कहां हैं? जिज्ञासु ने पौधा नीचे उतारा तो देखा कि दोस्त के मेमने ने सारा पौधा ही खा लिया है।

सिद्धांत : कीर्ति करने वाले या पुराने संग-साथ वाले दोस्तों से मिलते रहेंगे तो सारा ज्ञान धुल जाएगा।

दृष्टांत सागर

(खंड-2)

दृष्टांत की सूची

दृष्टांत सागर

(खंड-2)

	दृष्टांत	संख्या	पेज संख्या
1.	गुरु-शिष्य	500-518	411-436
2.	ज्ञान	519-536	437-452
3.	विवेक	537-559	453-476
4.	देहध्यास मिटाना	560-562	477-480
5.	आसक्ति मिटाना	563-576	481-494
6.	ब्रह्मज्ञानी	577-583	495-502
7.	समदृष्टि	584-585	503-506
8.	संस्कार	586-587	507-508
9.	माया का पर्दा	588-600	509-520
10.	अहंकार	601-605	521-526
11.	कर्म का फल	606-619	527-542
12.	भावना	620-632	543-554
13.	संग का प्रभाव	633-636	555-560
14.	युक्ति युक्त	637-658	561-582
15.	प्रेम/भक्ति/श्रद्धा	659-677	583-600
16.	गुण-हिम्मत	678-704	601-626
17.	त्याग भावना	705-714	627-636
18.	प्रारब्ध	715-719	637-642
19.	निंदा कीर्ति	720-721	643-647
20.	एक वाक्य की महिमा	648-656	

ॐ रात की प्रार्थना ॐ

1. भगवान आपने सारे दिन मेरी पूरी देख-भाल की है। आपका लाख-लाख शुक्र है।

2. अभी मैं आपकी गोद में सो रहा हूं, मेरी सब पोजीशन, सब रिश्ते-नाते आपके चरणों में अर्पण हैं।

3. अभी मैं आपकी गोद में हूं, आप मुझे थपकी लगाकर सुला दीजिए।

महापुरुषों के दृष्टांत

रामकृष्ण परमहंस

520. गुरु तोतापुरी और रामकृष्ण
558. रामकृष्ण को दुशाला दिया

रामतीर्थ

521. रामतीर्थ बोले–तुम मेरा अंग

कबीर

540. कबीर ने पंडित को राम राम बोला
573. शमशानी वैराग्य
576. सीधी-साधी बात हृदय में
612. कबीर को कोढ़
659. कबीर ने चोर को पनाह दी
674. कबीर के पास कोढ़ी आया
676. कबीर का यज्ञ सफल हुआ

दयानंद सरस्वती

539. दयानंद ने महाजन को जगाया
551. जीवन चरित कैसे लिखना
605. दयानंद का कर्मफल

नारद

607. बिना पंख का पक्षी
623. हनुमान और नारद का दृष्टिभेद
668. सबसे बड़ा कौन

गुरु नानक

614. गुरु नानक ने प्रकृति सुधारी

बुद्ध

619. भगवान बुद्ध को पत्थर लगा

नामदेव

661. नामदेव पर चोरी का इल्जाम

ॐ इच्छा-शक्ति को बलवान बनाने के लिए क्या करें ॐ

1. जब गुस्सा आता है तो हंस दो!
2. जब मन में कटुता आती है तो मधुर शब्द बोलो!
3. जब आराम की तबीयत हो तो किसी की कुछ मदद करो!
4. जब दिमाग खाली लगे तो अच्छे विचारों का चिंतन करो!
5. जब कोई नापसंदगी की चीज सामने आए तो उसकी तारीफ में कुछ कह दो!
6. रोज कोई न कोई त्याग करते रहो, चाहे वह छोटी-से-छोटी चीज क्यों न हो!
7. जिन चीजों से तुम्हें तकलीफ होती है, उसके लिए भी ईश्वर को धन्यवाद दो।

1. गुरु-शिष्य के दृष्टांतों की सूची

500. गुरु अर्जुनदेव और शिष्य
501. राजा का चाण्डाल के घर जन्म लेना
502. शिष्य शादी के फेरे से उठा
503. गुरु को भोजन देकर आने का नियम
504. शिष्य को गुरु ने छः महीने कोठी में बंद रखा
505. सांप को चींटियां नोच रही थीं
506. गुरु से मस्ती
507. दादू दयाल के गुरु द्वार पर
508. पाद पद्म ने गुरु वचन पाला
509. गुरु शिष्य को स्थूल-सूक्ष्म-कारण कोठी में लेकर गया
510. शिष्य ने आंख दी
511. कबीर, रविदास और वेश्या के साथ
512. कोमल हाथ
513. शिष्य को चांदी, सोने और हीरे की खान
514. लहणा ने अपना भाव बताया
515. रामकृष्ण ने विवेकानन्द के ज्ञान की रक्षा की
516. लड़की ने अपने बाल कटवाए
517. पांच सौ रुपए के लिए कुश्ती
518. महासती गुलाबा

गुरु-शिष्य के अन्य दृष्टांत

520. गुरु तोतापुरी और रामकृष्ण
523. सुख सामग्री देकर संत की सेवा
552. जब जागने से नींद बेहतर
604. दुनिया के नक्शे पर जागीर कहां
650. बिल्ली को खाट से बांधा
667. गुरु का निर्णय

गुरु का शिष्य

500. गुरु अर्जुनदेव और शिष्य

गुरु अर्जुनदेव जी के दरबार में एक शिष्य रहता था जो भण्डार से भोजन आदि तो खा लेता था पर दरबार में सेवा नहीं करता था। अगर कोई सेवा के लिए कहता तो जवाब देता—मैं गुरु का सेवक हूं, तुम्हारा नहीं। उसकी शिकायत गुरु के पास गई। गुरु तो करुणा के सागर हैं, किसी को भी सीधा कुछ नहीं कहते। एक बार सत्संग करते हुए गुरुजी ने फरमाया—'सेवा एक सार-वस्तु है, सेवा से मन शुद्ध होता है और जिन अंगों से सेवा की जाती है वह पवित्र होते हैं, वरना यह शरीर किस काम का?' जब यह सुना तो वह शिष्य बोला—'कृपा-निधान! मैं आपका सेवक हूं, आपकी आज्ञा पालन करने के लिए तैयार हूं। आप अगर दरिया में डूबने या जिंदा जलने का भी हुक्म देंगे तो भी मैं तैयार हूं, परंतु इन लोगों के कहने से सेवा नहीं कर सकता।' कहना बड़ा आसान है करना मुकिश्ल, जिसको गुरु के वचन की कदर ही नहीं है वो पालन क्या करेगा! सतगुरु ने फरमाया—'अगर हमारे कहने पर तू आग में जलने को

तैयार है तो अमुक वन में चिता जलाकर उसमें अपने आप को जला दे।' गुरु की आज्ञा सुनकर वह वन की तरफ चल पड़ा, चिता जलाकर चारों तरफ चक्कर लगाने लगा। यह सोचकर कि अभी गुरुजी की तरफ से वापिस आने का हुक्म आता होगा। इतने में एक चोर वहां आ निकला जो किसी सेठ का धन लूटकर आ रहा था। उसने पूछा—'तुम क्यों चिता जलाकर चारों ओर फिर रहे हो?' उसने गुरु का हुक्म सुना दिया और बोला—'जलने से मन घबराता है, सोचता हूं बिना कारण जीवन नष्ट करने से क्या लाभ?' चोर ने उसकी बातों को ध्यान से सुना, सुनते ही पूर्व के शुभ संस्कारों ने पलटा खाया। उसका भाग्य जाग गया और गुरु का नाम सुनते ही प्रेम से गद्गद् होकर कहने लगा—'एक विनती है, अगर तू स्वीकार कर ले तो यह सारा माल तू ले ले और उसके बदले गुरु का हुक्म मुझे दे दो।' वह शिष्य खुश हो गया कि ईश्वर जब देता है, छप्पर फाड़कर देता है। उसने कहा—'ठीक है।' चोर ने खुशी-खुशी इस बात को कबूल कर लिया। माल उसके हवाले कर खुद चिता में कूद पड़ा। उस समय वहां एक निराले रंग की रोशनी पैदा हुई जो सब दिशाओं को प्रकाशित करती हुई ऊपर चढ़ गई, परंतु इसको देखते हुए भी अज्ञानता ने शिष्य को जागने का अवसर नहीं दिया। उधर से सेठ के आदमी चोर को ढूंढ़ते हुए आए और शिष्य के हाथ सब माल देख उसे बांध लिया और उसे सेठ के पास ले गए। सेठ ने उससे पूछा—'तुझे क्या दण्ड दिया

जाए?' उसने सारी कहानी सुनाकर कहा कि—'मैं बेकसूर हूं।' सेठ ने कहा—'यहां चतुराई नहीं चलेगी, तू हमारा ही नहीं बल्कि गुरु का भी चोर है। पापी, तेरा तो मुख देखना भी धर्म नहीं है। गुरु के हुक्म से तो तू बच गया, पर काल से कौन छुड़ाएगा?' उसने सिपाहियों से कहा—'कुत्तों से इसका मांस नुचवाओ।'

सिद्धांत : असल बात गुरु का वचन ही है। अगर वचन की पावती न होती तो संगत में रहता हुआ भी शिष्य उसके लाभ से खाली रह जाता है।

501. राजा का चांडाल के घर जन्म लेना

एक बार सकेत मंडी का राजा गुरु गोविन्द सिंह जी के दर्शन करने के लिए आया। गुरुजी सत्संग में कह रहे थे कि मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। यह सुनकर राजा के मन में संदेह हुआ कि यदि महापुरुष की शरण में आकर भी कर्मों का फल भुगतना पड़ता है, तो यहां आने का क्या लाभ? सतगुरु उसके मन के भाव को जान गए, परंतु उत्तर नहीं दिया। दूसरे दिन राजा का सत्संग में मन नहीं लगा। रात को जब वह सोया तो उसने सपना देखा कि मैं चाण्डाल के घर में पैदा हुआ हूं। विवाह हुआ, बच्चे हुए, पोते हुए, फिर वृद्ध हो गया हूं, सौ साल की आयु हो जाने पर वहां ही मेरी मृत्यु हो गई है। जब आंख खुली तो देखा कुछ भी नहीं है। न कोई पैदा हुआ, न मरा। सोचने लगा, लोग

कहते हैं जो दिन में कार्य करो, वो सपने में आता है तो मैंने तो न कभी ऐसा सोचा, न कभी देखा, तो सपना कैसे आया? गुरुजी से जाकर पूछा। गुरुजी मौन रहे।

दो तीन दिन बाद गुरुजी राजा को वन में शिकार के लिए लेकर गए और आज्ञा दी कि जिसके आगे से शिकार निकले वह ही उसका पीछा करे। यह उनकी मौज थी और इसमें भेद था। थोड़ी ही दूर पर राजा के आग से एक हिरण गुजरा। राजा उसके पीछे बहुत दूर निकल गया पर वह हाथ नहीं आया। राजा घने जंगल में था, घबरा गया और टीले पर चढ़ गया। दूर उसे कहीं धुआं दिखा तो उसे धैर्य हुआ। उस तरफ चल पड़ा, जब निकट पहुंचा तो स्वप्न की रचना सत्य में सामने आई। वही झोंपड़ी। वह बड़ा हैरान हुआ। जब अंदर गया तो वही बाल-बच्चे। उन्होंने देखते ही पहचान लिया और घेर लिया—'बाबा आ गए।' वह बड़ा हैरान हुआ कि मैं तो मंडी का राजा हूं, पर इधर यह परिवार भी मेरा है। राजा परेशान हो गया। इतने में जिन्होंने यह खेल रचा था, अंतर्यामी गुरु भी पीछे से आ गए, पूछा, क्या झगड़ा है? उन्होंने कहा—'तीन दिन पहले हमारा पिता मर गया था पर आज अचानक आ पहुंचा। भगवान ने उन्हें जीवित कर दिया।' गुरु बोले—'यह तुम्हारा पिता नहीं है। कुदरत में एक शक्ल के दो मनुष्य होना बड़ी बात नहीं है। जहां उसको दफन किया था वहां खोदकर देख लो।' उसकी कब्र खोदकर देखी तो वो वहां था। गुरु महाराज ने राजा की तरफ देखा और कहा—'यह तेरे प्रश्न

का उत्तर है। यह जो भी स्वप्न के अंदर हुआ यह तेरे अपने ही कर्मों का फल है। तेरे संचित कर्मों में एक रेखा ऐसी थी जिसके लिए तुझे चांडाल के घर जन्म लेना पड़ता और तुझे सौ साल काटने थे पर गुरु के सत्संग के प्रभाव से वो चक्कर एक घड़ी में स्वप्न में कट गया। किए हुए कर्म भोगने पड़ते हैं पर महापुरुषों की शरण में आने से इस प्रकार कट जाया करते हैं।'

सिद्धांत : सतगुरु की शरण आने से कर्मों की रेखा भी मिट जाती है।

502. शिष्य शादी के फेरे से उठा

एक शिष्य गुरु से ज्ञान लेकर अपने घर गया पर वहां भी वो हमेशा गुरु आज्ञा में रहता था। कुछ दिन बाद उसकी शादी हो रही थी। वह फेरों पर बैठा था। उसी समय गुरु का संदेश आया कि हमारे पास अभी आ जाओ। शिष्य फेरे पूरे होने के लिए भी नहीं रुका। उसी समय उठ खड़ा हुआ और गुरु के आश्रम की ओर चल पड़ा। चलते-चलते रास्ते में उसके मन में अहंकार आ गया कि मैं कितना अच्छा शिष्य हूं कि शादी के लिए भी न रुका। अहंकार का आना था कि सारी माया अंदर आ गई। रास्ते में ही रात पड़ गई और वह एक पेड़ के नीचे रुक गया। सामने वेश्या का घर था। सामने बैठे-बैठे उसके अंदर काम जाग गया और वेश्या के दरवाजे पर पहुंच गया। पर चौकीदार ने अन्दर जाने से रोका कि कोई और

अन्दर है। इस तरह दो-तीन बार उसने अंदर जाने की कोशिश की पर हर बार चौकीदार ने उसे लौटा दिया। इतने में सवेरा हो गया और वह गुरु के आश्रम की ओर बढ़ चला। वहां पहुंचा तो मालूम पड़ा कि गुरुजी अभी भी सो रहे हैं। वह सोचने लगा, आज क्या हो गया कि गुरुजी इतनी देर तक सो रहे हैं? जब गुरुजी उठे तो उनसे पूछा और वे बोले कि—'सारी रात मैं तुम्हारे लिए चौकीदारी करता रहा।' शिष्य शर्म से पानी-पानी हो गया और समझ गया कि उसको गिरावट से बचाने वाले उसके सतगुरु ही थे।

सिद्धांत : 1. 'मैं आज्ञा में रहता हूं' इस तरह का कोई भी अहंकार किया तो माया घेर लेगी।

2. सच्चा गुरु अपने भक्तों की जहां-तहां रक्षा करता है और कभी माया में गिरने नहीं देता।

503. गुरु को भोजन देकर आने का नियम

एक शिष्य हमेशा गुरु को भोजन देकर आता था। एक दिन बहुत आंधी-तूफान था। उसका हृदय शुद्ध था, उसने जैसे ही प्रार्थना की कि कुछ समय के लिए यह तूफान रुक जाए ताकि मैं भोजन दे आऊं तो वो रुक गया। वह बहुत खुश हुआ कि उसका नियम नहीं टूटा। जब वो गुरु के पास पहुंचा तो गुरु ने भोजन नहीं किया। शिष्य के कारण पूछने पर गुरुजी बोले—'तूने मुझ एक के खाने का

सोचा, पर जो प्रकृति में दखल दिया कि तूफान रुक जाए, उससे कईयों को अन्न मिलने वाला था वो नहीं मिला।'

सिद्धांत : प्रकृति ठीक चल रही है, उसमें दखल नहीं देना चाहिए।

504. शिष्य को गुरु ने छः महीने कोठी में बंद रखा

एक बार एक भक्त गुरु के पास चार पैसे कमाकर दो पैसे गुरु के लिए लेकर गया, दो पैसे दो दिन के खर्च के लिए अपनी पत्नी को देकर गया। दो दिन के बाद गुरु को बोला—'अभी मुझे घर जाना है, मैं पत्नी को दो दिन का घर-खर्च देकर आया हूं, अभी मेरी पत्नी और बच्चे कहां से खाएंगे?' गुरु के रोकने पर भी वो नहीं रुका तो गुरु ने उसे एक चिट्ठी लिखकर दी कि रास्ते में मेरे एक भक्त को देते जाना। वो चिट्ठी लेकर भक्त के पास गया। उस खत में लिखा था जैसे ही यह खत आपको दे आप इसको छः महीने के लिए कोठी में बंद कर देना। भक्त ने वैसा ही किया। वह छः महीने तक अंदर ही अंदर रोता रहा। उधर उसकी पत्नी समझ गई कि शायद अभी वो वापिस नहीं लौटेगा तो उसने खेती-बाड़ी का काम शुरू कर दिया। खेती करते-करते उसे एक हीरे जवाहरात का मटका मिला। उसने ईमानदारी से वो मटका खेत के मालिक को दे दिया। इससे वो खुश हुआ तो बहुत बड़ा बंगला उसे बनाकर दिया और उसे हमेशा के लिए काम करने से मुक्त कर दिया। जब शिष्य छः महीने के बाद लौटा तो

देखकर हैरान हो गया और मन-ही-मन गुरु के शुक्राने गाने लगा कि उसने मुझे अहंकार से मुक्त किया, जो मैं समझता था मैं नहीं कमाकर दूंगा तो कैसे चलेगा। करने वाला तो सब परमात्मा ही है, लेकिन झूठे अहंकार के कारण मनुष्य समझता है 'मैं करने वाला हूं।' और वो भक्त भी हमेशा के लिए गुरु की शरण लेकर अपने उद्धार में लग गया और मुक्त हुआ। उसके घर वाले भी सब अपने पांव पर खड़े हो गए, गुरु की युक्ति से।

सिद्धांत : गुरु सिर्फ शब्दों से नहीं बल्कि अनुभव से माया से जगाता है।

505. सांप को चींटियां नोच रही थीं

एक बार एक गुरु अपने शिष्यों के साथ जंगल के रास्ते से जा रहा था। वहां उन्होंने देखा एक सांप मरा पड़ा है और हजारों चींटियां उसको नोचकर खा रही हैं। शिष्यों ने गुरु से पूछा यह कौन-से कर्मों का फल होगा? गुरु बोला—'यह पहले जन्म में गुरु था जिसने अपने शिष्यों से बहुत सेवा ली थी। तो अब यह सांप बना और शिष्य इसको नोचकर चींटी के रूप में अपना हिसाब-किताब पूरा कर रहे हैं।'

सिद्धांत : गुरु-शिष्य नहीं, पर भगवान और भक्त का सम्बंध हो जिसमें भगवान भक्त को आप समान बना लेता है।

506. गुरु से मस्ती

एक चौधरी था। भगवान को, भजन भक्ति को पहचानता

ही नहीं था। हर समय शराब पीकर कम-जास्ती बोलता रहता था। उसको मिरगी की बीमारी थी, जिसके कारण वह व्याकुल होता था। एक दिन उसके मन में आया गुरु अंगद का बहुत बड़ा नाम है, यह सोचकर उनके पास आकर अपना सब हालत बताया और कहा—'आप बहुत दयालु हैं, मेरे को इस मिरगी की बीमारी से बचाएं तो मैं आपकी महिमा करता रहूं।' अंगद देव जी ने बताया कि शराब पीना छोड़ दें तो मिरगी नहीं होगी, शरीर भी निरोग हो जाएगा। उन्होंने और कहा—'किसी भी समय आज्ञा का उल्लंघन किया और शराब पीने से न रहा तो फिर मिरगी होगी और प्राण नहीं बचेंगे।' यह सुनकर उसने शराब पीना छोड़ दिया और उसे मिरगी नहीं हुई। वह हमेशा निरोग और खुश रहने लगा। बहुत समय ऐसे ही बीता। एक दिन उसे शराब पीने की बहुत इच्छा हुई। उसने गुरु का वचन भुलाकर शराब पी और बहुत खुश होने लगा। बरसात और बहार का दीदार करने लगा।

सतगुरु के दरबार की तरफ देखकर नशे में मस्त बड़ी आवाज में कहने लगा—'मैंने आपका हुक्म छोड़कर इस बहार के वश होकर शराब पी। अब मैं बहुत प्रसन्न हूं।' गुरु अंतर्यामी थे, हंसकर बोले कि हुक्म छोड़ा है तो आएगी ही मिरगी। उसी समय परमेश्वर के हुक्म से उसको मिरगी हो गई और वह नीचे गिर गया। जमीन से माथा लगने के कारण उसी समय मर गया।

सिद्धांत : गुरु से मस्ती करने से अवगति होती है।

507. दादूदयाल के गुरु द्वार पर

बात तब की है जब दादूदयाल संत नहीं बने थे। एक दिन वे दुकान पर बैठे हिसाब में मगन थे। उनके गुरु बाहर द्वार पर खड़े थे और मूसलाधार पानी बरस रहा था। अचानक दादू की नजर बाहर पड़ी। गुरु को देख तुरंत चरणों में जा गिरे व आंखों में आंसू भरकर बोले—'माफ कर दीजिए गुरु देव! दुनियादारी में इतना डूब गया था कि मुझे मालूम न पड़ा कि आप आए हैं।' गुरु ने प्रेमपूर्ण स्वर में कहा—'मैं तो थोड़ी देर से खड़ा हूं पर (सिद्धांत) प्रभु तो अनन्त काल से तुम्हारे द्वार पर खड़ा तुम्हारे बुलावे की बाट जोह रहा है।' उसी दिन से दादू की जीवन-दिशा बदल गई।

508. पाद पद्म ने गुरु वचन पाला

एक सच्चा जिज्ञासु सतगुरु की खोज में भटक रहा था। एक दिन उसे आदिगुरु शंकराचार्य अपने शिष्यों के साथ भ्रमण करते हुए नजर आए। उनका तेजस्वी चेहरा और प्रसन्न शांत मुखमण्डल देखकर जिज्ञासु ने सोचा कि इनके जैसा सच्चा संत मुझे और कहीं नहीं मिल सकता। सो उसने शंकराचार्य जी से प्रार्थना की कि वे इसे अपना शिष्य स्वीकार करें। गुरुजी ने भी सच्चाई देख कर उसे कबूल किया। कुछ समय बीत गया और इस शिष्य की गुरु के प्रति श्रद्धा बढ़ती गई। एक दिन शंकराचार्य जी की मौज हुई कि वह शिष्यों की परीक्षा लें। वे गंगा नदी के उस पार स्नान करने गए। गंगा की

धारा बहुत बढ़ी हुई थी और पानी वेग से बह रहा था। शिष्य इस किनारे बैठे थे। गुरुजी ने जोर से आवाज देकर कहा—'जरा मेरी धोती तो लेकर आना।' सारे शिष्य लटपटाने लगे। किसी की हिम्मत न होवे कि ऐसी वेग में आई हुई गंगा में छलांग मार दें। पर इस शिष्य को भाव उठा कि जो गुरु मुझे संसार-सागर से पार करने वाला है क्या वह इस छोटी-सी गंगा से पार नहीं करेगा? यह विचार कर उसने तुरंत गुरु की धोती अपने सिर पर बांध ली कि वह गीली न हो और गंगा में उतर पड़ा। उधर गुरु ने उसकी श्रद्धा देखकर ऐसा चमत्कार किया कि जैसे ही उसने अपना पैर पानी में डाला, वहां एक कमल का फूल आ गया और पानी के बदले उसका कदम कमल के फूल पर रखा गया। इस प्रकार जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया कदम-कदम पर कमल के फूल खिलते गए और वह पानी को छुए बिना ही गंगा पार कर गया। गुरु शंकराचार्य अत्यंत प्रसन्न हुए और घोषित कर दिया कि आज से इसका नाम पादपद्माचार्य होगा और गुरु के आगे यह ही काम सम्भालेगा।

सिद्धांत : गुरु वाक्यं सत्यं ही चरम स्थिति है। उसी में कल्याण है। जो इसमें पक्का है, वही पूर्ण है।

509. गुरु शिष्य को स्थूल-सूक्ष्म-कारण कोठी में लेकर गया

एक शिष्य सच्चे दिल से अपने सब विकारों से उठना चाहता था। वह गुरु के पास गया और विनती की कि मुझे पूरा

सच में टिका दीजिए। गुरु ने उसे ब्रह्मविद्या दी और फिर एक दिन सोचा इसकी परीक्षा लूं। गुरु ने कहा—'समझो तुम्हारे सामने दुश्मन खड़ा है, उसके हाथ में तलवार है। वह कहता है तेरा आखिरी वक्त है, किसी सम्बंधी से मिलना चाहे तो मिल आ। ऐसे में तुम किससे मिलने जाओगे?' शिष्य बोला, मेरे दिल में किसी के लिए मोह नहीं है। किसी से मिलने की तमन्ना नहीं है। कुछ दिन बीत गए। फिर एक दिन गुरु ने उसके सामने अनेकों पकवान मंगवाए और बोले—'आज तू जी भर कर तृप्त हो ले।' शिष्य ने एक भी ऐसे वस्तु को हाथ न लगाया जो उसके शरीर के माफिक न थी। गुरु प्रसन्न हुआ कि यह जीभ के अर्थात इंद्रियों के रस से ऊपर है। फिर एक दिन गुरु उसे अंधेरी काली गुफा में ले गया। वहां तलवार की धार क्षण भर को बिजली की तरह चमकी पर शिष्य मौत के डर से अति परे हो चुका था। काल भी उसे डरा ना पाया। गुरु संतुष्ट हुआ कि शिष्य ने पूरा ज्ञान उठाया है।

सिद्धान्तः- स्थूल—इंद्रियों के रस—अन्नमय कोश से ऊपर उठना,

सूक्ष्म—मोह-ममता, मनोमय कोश से ऊपर होना,

कारण—मैं-पने का अहंकार, मौत के डर से ऊपर होना, यही ज्ञान है।

510. शिष्य ने आंख दी

समय-समय पर गुरु शिष्य की परीक्षा लेते है, ये जांचने के

लिए कि इसका मन कितना अमन हुआ है। इसकी एक मिसाल है कि गुरु ने एक बार अपने शिष्यों से कहा, आग जलाकर सोना। फिर कहा, चिलम जलाकर आओ। शिष्यों को, समझ न आए कि इतनी रात गए चिलम कहां से आए और उसे कैसे जलाया जाए। एक को सूझा कि यह दोनों चीज वेश्या के यहां मिल जाएंगी। वह सीधे वेश्या के कोठे पर पहुंचा। पर उसके पास पाई-पैसा कुछ न था तो उसने अपनी एक आंख निकाल कर वेश्या को दे दी और उसके बदले चिलम ले आया। गुरु उसकी भक्ति से प्रसन्न हुआ और उसकी आंख फिर बना दी।

सिद्धांत : श्रद्धा है तो गुरु बेड़ा पार कर ही देता है।

511. कबीर, रविदास और वेश्या के साथ

कबीर साहिब जात के कोढ़ी थे। एक राजा को उनके लिए बहुत श्रद्धा, प्रीत और इज्जत थी। जब भी कबीर साहिब उसके पास आते थे तो राजा तख्त से उतरकर कबीर को तख्त पर बिठाकर खुद उनके पांवों में बैठता था। एक बार कबीर ने राजा को आजमाना चाहा। कबीर ने एक तरफ वेश्या को लिया जिसने बुरी संगत छोड़कर उनकी शरण ली थी और दूसरी तरफ रविदास चमार को। अपने दोनों हाथों में रंगीन पानी की बोतलें ली और काशी के बाजार में हंसते-गाते चलने लगे। उस समय हिंदू और मुसलमान का आम तबका कबीर साहिब के खिलाफ था।

यह कौतुक देखकर उनमें हलचल पैदा हो गई। जभी कबीर उसी हालत में दरबार में पहुंचे तो राजा के मन में अश्रद्धा पैदा हुई और वह तख्त से नहीं उतरा। कबीर साहिब समझ गए कि यह परीक्षा में गिर गया। अब उसे नहीं सम्भाला तो मुश्किल हो जाएगी। कबीर ने बोतल से पानी गिरा दिया। राजा ने यह देखकर सोचा कि शराबी कभी भी शराब नहीं गिराता, यह शराब नहीं कुछ और वस्तु होगी। तख्त से नीचे उतरकर राजा ने पूछा—'महाराज! यह कैसा कौतुक है?' रविदास बोले—'तू अन्धा है क्या? तुमको मालूम नहीं कि जगन्नाथ मंदिर को आग लगी है, कबीर साहिब उसको बुझा रहे हैं?' राजा ने समय और तारीख लिख ली और उसकी जांच करवाई। जब राजा को मालूम पड़ा कि उस दिन उस वक्त आग लगी हुई थी और कबीर साहिब बुझा रहे थे तो राजा की श्रद्धा और भी बढ़ गई।

सिद्धांत : ऐसे अवसरों पर बड़े-बड़े प्रेमी भी परीक्षा में गिर जाते हैं। कोई विरला आशिक कसौटी पर खरा साबित होता है। तभी कहते हैं—'विरले कई के।'

512. कोमल हाथ

एक गुरु के पास शिष्य आया। उसने गुरु को पानी दिया। गुरुजी ने देखा इसके हाथ बहुत कोमल हैं। गुरु ने हाथ कोमल होने का कारण पूछा तो उसने जवाब दिया कि—'इन हाथों ने कभी कुछ नहीं किया।' तब गुरुजी ने

पानी नहीं पिया और बोले—'जिन हाथों ने सेवा नहीं की उन हाथों से पानी नहीं पीऊंगा।'

सिद्धांत : इंद्रियां जितनी सेवा करेंगी उतनी पवित्र होंगी।

513. शिष्य को चांदी, सोने और हीरे की खान

गुरु अपने शिष्यों को हमेशा बताते हैं कि अटकना नहीं, आगे ही बढ़ते चलो। एक शिष्य ने गुरु का वचन खूब पक्का किया था। एक दिन वह कहीं जा रहा था तो उसे रास्ते में चांदी की खान मिली। वह रुका नहीं, आगे बढ़ गया और आगे गया तो सोने की खान थी। गुरु का वचन याद कर वह और आगे हो गया। माया ने अब हीरे की खान का रूप लिया पर शिष्य पक्का था। वह फंसा नहीं तो अंत में परम पद प्राप्त कर लिया।

सिद्धांत : जिज्ञासु के मार्ग में अनेक सिद्धियां आती हैं। उन सब को नकारकर सत् के मार्ग में टिके रहने से ही आत्मानन्द की प्राप्ति होती है।

514. लहणा ने अपना भाव बताया

सिख-धर्म के संस्थापक गुरु नानक ने अपने सब शिष्यों से पूछा कि—'तुम क्या चाहत हो?' जब लहणा की बारी आई तो वह बोला—'गुरुदेव, मेरा एकमात्र भाव है कि मैं सदा गुरु, गुरु-भाइयों और अन्य मनुष्यों की सेवा तथा अरदास करता रहूं।'

उत्तर सुनकर गुरु बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने लहणा को बांहों में भरते हुए कहा—'वत्स, तुम मेरे सच्चे उत्तराधिकारी होने के लायक हो।' उन्होंने लहणा को 'अंगद' का नाम दिया और उसको ही गद्दी मिली।

सिद्धांत : मानव की सेवा ही हमारी सच्ची पूजा होती है।

515. रामकृष्ण ने विवेकानन्द के ज्ञान की रक्षा की

रामकृष्ण का शरीर शांत होने के बाद विवेकानन्द ने बोला—'ये संत योग बहुत अच्छा सिखाते हैं।' विवेकानन्द उसके पास गया तो उसको रामकृष्ण परमहंस की अन्दर से आवाज आई कि मैंने तेरे को क्या नहीं दिया जो इस संत के पास जाता है?' उसे लगा, रामकृष्ण का शरीर तो शांत हो गया है—यह आवाज मेरा भ्रम है। ऐसे वो सतरह बार गया, सतरह बार यही आवाज आई। तब वो बोला, सचमुच मेरे को गुरु ने क्या नहीं दिया है। मैं फिर-फिर भ्रम में क्यों आ जाता हूं?

सिद्धांत : गुरु ज्ञान देता है तो उसकी रक्षा भी खुद ही करता है।

516. लड़की ने अपने बाल कटवाए

पाकिस्तान में एक संत के पास एक लड़की गई और बोली कि—'मुझे संसार निस्सार लगता और सच्ची शांति की तलाश है।' गुरु ने कहा—'आज्ञा का पालन कर सकोगी!' उसने कहा—'मैं सब कुछ करने को तैयार हूं, आप केवल इशारा दीजिए।' गुरु ने कहा—'अपना सर्वस्व

लुटाकर यहां आओ।' उसने वैसा ही किया। गुरु प्रसन्न हुआ। इस लड़की के बाल बहुत लम्बे और रेशम जैसे खूबसूरत थे। गुरु ने कहा—'बाल कटाकर आओ।' वह नाई के पास गई पर नाई ने सलाह दी, ये गुरु तो पागल है। इतने सुन्दर बाल न कटा। पर लड़की गुरु वचन पर अटल रही। उसने दुगने दाम देकर बाल कटा डाले।

सिद्धांत : जिज्ञासु हो तो ऐसा जिसकी गुरु में पूरी श्रद्धा हो।

517. पांच सौ रुपए के लिए कुश्ती

एक बार सत्संग में गुरु की महिमा का विषय चल रहा था। सत्संग के बाद एक प्रेमी ने गुरु को गुरुमुख की महिमा के विषय को विस्तार से खोलने को कहा। तब गुरु ने उसे गुरुमुख के दर्शन कराने के उद्देश्य से एक गुरुमुख के नाम हुकुमनामा लिखा कि जो सिख आपके पास जा रहा है इसके हाथ 500 रुपए लंगर के लिए भेज दीजिए। जब हुकुमनामा गुरुमुख को उस प्रेमी ने दिया तो वो नाचने लगा, जबकि उसके पास पांच पैसे भी न थे। प्रेमी ने हैरान होकर पूछा कि तुम्हें चिंता नहीं कि कैसे रुपए देगा, उल्टा नाच रहे हो? तो गुरुमुख ने कहा—'जिसने पांच सौ रुपए का हुकुमनामा भेजा है, उन्होंने साथ में पैदा करने की शक्ति भी भेजी है।' इतने में ढिंढोरा हुआ कि—'मसकीनियां कुश्ती लड़ेगा, अगर कोई उसको हरा देगा तो हजार रुपए इनाम दिया जाएगा, अगर हार गया तो भी पांच सौ रुपए उसे इनाम मिल जाएगा।' यह सुन गुरुमुख बहुत खुश हुआ और गुरु की महिमा गाने लगा। कुश्ती के दिन बहुत पहलवान आए थे,

पर उससे लड़ने कोई न गया क्योंकि उसके नीचे जो आता मर जाता। इतने में गुरुमुख जो पतला और बूढ़ा था, मैदान में आया और ललकारने लगा। बादशाह सहित सब हैरान हो गए! मसकीनियां भी उसे देख हैरान हो गया, उसने उससे पूछा कि—'तू तो एक फूंक से उड़ जाए, फिर किस कारण से लड़ने आए हो? क्या जीवन से तंग हो?' तो उसने सारी बात बता दी और कहा कि मैं मारने नहीं मरने आया हूं, पर गुरु का वचन तो पूरा होगा? यह सुनकर मसकीनियां जान-बूझकर उससे हार गया।

सिद्धांत : गुरु-वचनों की कीमत हो तो गुरुमुख जैसी।

518. महासती गुलाबा

महासती गुलाबा छोटी थी। एक बार आचार्य ने उसे इधर-उधर चक्कर लगाते देख लिया तो बुलाकर कहा—'जा आले में बैठ जा।' वह तुरंत वहां बैठ गई। खाने का समय हुआ। सारे साधु-साध्वी आ गए, पर गुलाबा नहीं थी। खोजा गया तो देखा, दुबकी हुई आले में बैठी है और बहुत खुश है। खाने के लिए चलने को कहा तो बोली—'आचार्य जी की आज्ञा के बिना नहीं चलूंगी।' आचार्य जी आए और पूछा—'खाने के लिए क्यों नहीं आई?' तो कहा—'गुरुदेव, आपने तो वहां बैठ जाने को कहा था, आने को तो नहीं कहा था। आपकी आज्ञा बिना कैसे आती?'

सिद्धांत : गुरु के आज्ञाचक्र में चलने से वो हमारी शरीर की ममता का भी त्याग करा देता है।

2. ज्ञान के दृष्टांतों की सूची

519. भीम ने बंदर में भगवान देखा
520. गुरु तोतापुरी और रामकृष्ण
521. रामतीर्थ बोले, तुम मेरा अंग
522. ढोलक ने भगवान से कहा
523. राजा ने सारी सुख-सामग्री देकर संत की सेवा की
524. तुला की डंडी से ज्ञान
525. साहूकार के शब्दों का मर्म
526. नाटक में स्वयं को भुला दिया
527. वाणियां भगवान से मिलने गईं
528. राजा ने धार्मिक समारोह किया
529. दत्तात्रेय ने हंस-रूप में ज्ञान दिया
530. जादूगर संन्यासी बना
531. जहाज पर बैठा हुआ पंछी
532. छोटी रानी ने अपराधी को अभय-दान दिया
533. वेदान्ती के घर में जिज्ञासु
534. विद्वान विश्वनाथ ने सबको रस पिलाकर प्यास बुझाई
535. उपदेश से ज्यादा आचरण
536. जिज्ञासु ने पूछा—परमात्मा के दर्शन कैसे हों

ज्ञान के अन्य दृष्टांत

562. राजा कुरुपता पर हंसा
714. गुरु गोविंद सिंह के चार लड़के

ॐ सात बड़े खजाने ॐ

1. अपना मन सबसे बड़ा खजाना है, जो सब शक्तियों का भरपूर भंडार है।
2. सेवा बड़ा खजाना है, जो दिल को सच्ची खुशी देने वाला है।
3. कुदरती खजाने बड़े खजाने हैं, जो प्रभु-प्रेम जगाते हैं।
4. ब्रह्मचर्य बड़ा खजाना है, जो अखण्ड बल तथा तप देता है।
5. सत्संग बड़ा खजाना है, जो आत्मिक ज्ञान, समझ व आनंद देता है।
6. सुमिरन बड़ा खजाना है, ओउम ओउम जपने से मन शांत होता है।
7. संतोष बड़ा खजाना है, जो मन-इंद्रियों को तृप्त करता है।

ज्ञान

519. भीम ने बंदर में भगवान देखा

जुए में सब-कुछ हारने के बाद जब पांडव बारह वर्ष का बनवास झेल रहे थे तब एक बार भीम हिमाचल की तराई में घूम रहे थे। एक बन्दर वहां रास्ता रोके बैठा था। भीम ने बन्दर को देखा, उससे निवेदन किया कि—'रास्ते से हट जाइए।' बंदर बोला—'बहुत बीमार और कमजोर हूं, तुम लांघकर चले जाओ।' भीम ने कहा—'हर प्राणी में परमात्मा का वास होता है तो मैं लांघ नहीं सकता।' बन्दर ने तुरंत उत्तर दिया—'तो मेरी पूंछ हटाकर रास्ता बना लो।' भीम ने पहले एक हाथ से फिर दोनों हाथों से पूंछ हटाने की कोशिश की पर वह टस से मस न हुई। भीम के मन में विचार आया कि हो न हो ये पवनपुत्र हनुमान होंगे! और उसने झट दंडवत-प्रणाम किया। हनुमान जी प्रसन्न हुए और बोले—'मैं तुम्हें वरदान देता हूं कि युद्ध में पांडवों की विजय होगी और मैं स्वयं अर्जुन के रथ के झंडे पर रहूंगा।'

सिद्धांत : जिसमें भी भगवान देखकर बात करेंगे उर.का आशीश अवश्य पाएंगे।

520. गुरु तोतापुरी और रामकृष्ण

उन दिनों रामकृष्ण साधना की ऊंची स्थिति में थे। काली जी के मंदिर में अपनी सुध-बुध खो बैठते थे। इतनी एकता में थे कि काली जी की मूर्ति को माला पहनाने की जगह स्वयं पहन लेते थे।

वहां पर गुरु तोतापुरी का आना हुआ जो केवल अद्वैत मत अनुयायी थे। उन्होंने रामकृष्ण से कहा कि यदि ज्ञान पूरा अपनाना है तो काली की मूर्ति के ऊपर उठाना पड़ेगा। रामकृष्ण ने पूछा—'वो कैसे?' तोतापुरी बोले—'तुझे काली का वध करना होगा।' रामकृष्ण ने पूछा—'मैं ध्यान में तलवार कहां से लाऊंगा?' तोतापुरी ने कहा—'जहां से तुम काली जी को लाते हो, अर्थात कल्पना से।' रामकृष्ण ने वैसा ही किया और वे हमेशा के लिए अद्वैत में टिक गए।

521. रामतीर्थ बोले, तुम मेरा अंग

स्वामी रामतीर्थ जब अमेरिका से लौटे तो स्त्री ने पूछा—'हमको वहां जरूर याद किया होगा?' रामतीर्थ ने कहा—'क्या मैं अपनी नाक को याद करता हूं? जब वह मेरे शरीर का अंग है तो उसके लिए क्या सोचूं? ऐसा ही तुम भी मेरे विश्व का एक अंग ही हो तो तुम को क्या याद करूं। तुम मेरे से जुदा ही नहीं हो।'

सिद्धांत : सब मेरा Ownself है।

522. ढोलक ने भगवान से कहा

ढोलक ने कहा—'भगवन्! जहां-जहां आपकी पूजा होती है। वहां-वहां मैं अवश्य पीटा जाता हूं। मैंने आपका कौन-सा अपराध किया है कि आपने अपनी पूजा में मेरी पिटाई का जैसे सम्बंध ही जोड़ दिया है।' भगवान ने कहा—'तुम शायद विश्वास नहीं करोगे; पर सच्चाई ये है कि जहां-जहां मेरी पूजा के ढोल पीटे जाते हैं, वहां मेरी पूजा होती ही नहीं। जहां मेरी पूजा होती है, वहां न कोई ढोलक होता है, न कोई उसे पीटने वाला।'

सिद्धांत : सच्ची पूजा में पूजा का सामान तो क्या, पुजारी भी नहीं रहता, सिर्फ भगवान ही प्रकट रहता है।

523. राजा ने सारी सुख-सामग्री देकर संत की सेवा की

एक राजा की श्रद्धा हुई एक संत पर। राजा ने सेवा करने का बहुत महत्त्व सुना था। अतः अपने ढंग से संत की सेवा करने से लग गया। अपने महल जैसा ही महल उनके लिए बनवाया तथा सुख की दूसरी सारी सामग्री उनके लिए जुगाड़ कर दी।

एक दिन वो संत के साथ घूमने निकला और बोला—'स्वामी, अब आपमें और मेरे में अंतर ही क्या रहा?' संत समझ गया, ये बाहरी सुख को ही सब समझकर कह रहा है, पर कुछ जवाब नहीं दिया। बोला, और आगे

चलो, फिर बताऊंगा। चलते-चलते दोनों राज्य की सीमा के पास आ गए। राजा ने बार-बार प्रार्थना की वापस लौटने की, पर संत चलते ही जा रहे थे। राजा बहुत थक गया और उसे अपने महल पहुंचने में बहुत देर हो रही थी। राजा ने कहा—'अब तो अपने राज्य की सीमा का भी अंत हो गया है।' तो संत ने कहा—'तुम्हारी सीमा का अंत हो गया है और मेरी सीमा यहीं से शुरू होती है। राजन, यही हम दोनों में अंतर है। बाहर से एक जैसा व्यवहार करते हुए भी अंदर हृदय में अंतर है।'

सिद्धांत : गुरु हद में नहीं बेहद में होता है, और बेहद का मजा गुरु ही शिष्य को देता है।

524. तुला की डंडी से ज्ञान

एक ब्राह्मण ज्ञान करना चाहता था। वह एक साधु के पास पहुंचा। साधु ने उसे तुलाधार वैश्य के पास जाने की सलाह दी।

ब्राह्मण वहां गया और अपनी इच्छा बताई। उसने तुलाधार से कहा—'मुझे ऐसा ज्ञान दीजिए जिससे मेरा जीवन सुधर जाए।'

तुलाधार बोला—'इस तराजू को देखो। इसकी डंडी हमेशा सीधी रखनी है। न ऊंची न नीची, बस।' ब्राह्मण ने देखा कि तराजू की डंडी को सीधा रखने के बाहरी कर्म करते-करते तुलाधार का मन भी सीधा हो गया। उसकी

दुकान पर छोटा-बड़ा जो भी आता था, उसकी तुला की डंडी सबके लिए समान रहती थी।'

सिद्धांतः हम जो कुछ भी करते है, उसका असर हमारे मन पर पड़ता है। कर्मयोगी का कर्म उसका जप होता है। उससे उसकी चित्त शुद्ध हो जाती है।

525. साहूकार के शब्दों का मर्म

श्रद्धा और प्रेम भाव से भरा हुआ एक जिज्ञासु रोज गुरु के पास आता था। एक दिन उसने गुरु को अपने यहां आने का न्यौता दिया। गुरु भी उसकी प्रकृति जानना चाहते थे सो वे उसके घर पधारे। कुछ देर के लिए जिज्ञासु को किसी कार्यवश बाहर जाना पड़ा। उसकी स्त्री ने गुरु को बड़े भाव से भोजन परोसा। गुरु ने देखा दो नवयुवक भी सेवा में लगे हैं। बातों-बातों में गुरु ने स्त्री से पूछा आपके कितने पुत्र हैं, बोली—'चार पुत्र हैं।' फिर गुरु ने पूछा—'धन-सम्पत्ति कितनी है।' तो वह बोली—'करोड़ों में है, गिनी भी नहीं जाती।' बाद में गुरु को वापस छोड़ने के लिए जिज्ञासु साथ चला। गुरु ने ऐसे ही उससे पूछ लिया कि पुत्र कितने हैं तो वह बोला—'एक।' गुरु ने रहस्य खोलने के लिए फिर प्रश्न किया—'धन-दौलत कितनी है?' वह बोला—'करीब 25 हजार।' गुरु ने सोचा, जिस घर में मैं गया था वही करोड़ों का रहा होगा, फिर यह 25 हजार क्यों बोल रहा है? फिर उस बूढ़े से गुरु ने पूछा—'तुम्हारी उम्र कितनी होगी?' तो वह

बोला—'यही कोई 21 साल की।' अब गुरु ने कहा कि—'दिखने में तो तुम 70 वर्ष के लगते हो, फिर तुम्हारे तीनों उत्तरों का राज बताओ।' तो वह बोला—'ऐसे तो चार पुत्र हैं पर केवल एक की आपमें श्रद्धा है इसलिए मेरे लिए तो एक ही है। आज तक दूसरों की सेवा में मेरे केवल 25-30 हजार रुपए ही खर्च हुए होंगे तो मेरी पूंजी बस इतनी ही है—बाकी करोड़ बेकार हैं। तीसरा, मैं आज 21 साल से आपके संग में हूं सो मेरी उम्र इतनी ही है।'

सिद्धांत : जिसके लिए जगत मिथ्या है, उसकी बोली निराली हो जाती है। साधारण आदमी उसे झूठ ही समझने लगत हैं। शब्द में नहीं, मर्म में जाओ।

526. नाटक में स्वयं को भुला दिया

एक लड़के ने बचपन में स्कूल में राधा का पार्ट नाटक में किया।

बड़ा होने पर वह भूल ही गया कि वह ही राधा बना था। उसने फोटो में राधा को देखा तो उसने जिद ही पकड़ ली कि मुझे इसी लड़की से ही शादी करनी है। सबने बहुत कोशिश की उस लड़की को ढूंढ़ निकालने की। पर वह कहां से मिल सकती थी? कुछ दिन बाद उसका एक सहपाठी मिलने आया।

उसे फोटो दिखाई तो उसने याद कराया कि तुम ही तो ड्रामा में राधा बने थे। लड़के को बड़ा अचरज हुआ कि वह

पूर्ण रूप से भूल गया था कि राधा का पार्ट मैंने ही किया था। उसे खुद पर बहुत हंसी आई।

सिद्धांत : खुद खुदा होकर किसको ढूंढ़ते हैं?
ईश जीव बना, फिर जीव पूछे ईश कहां है?
बीज बना वृक्ष, फिर वृक्ष पूछे बीज कहां है?

527. वाणियां भगवान से मिलने गईं

संसार में जितने शब्द हैं उनको बोलने वाली सब वाणियां ब्रह्माजी के पास आईं और बोलीं—हम परमात्मा से मिलने जाएंगी।' ब्रह्मा ने कहा—'मार्ग सूना है।' वाणियां बोलीं—'किसी को साथ भेज दीजिए।' नारियों के साथ पुरुष का जाना ठीक नहीं, तो ब्रह्माजी ने नपुंसक मन को साथ दे दिया। मन सोचता बहुत है पर कर नहीं सकता। करता तो वह इंद्रियों के माध्यम से है। जहां तक शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध या मनोराज्य का क्षेत्र मिला, वहां तक वाणियां प्रसन्नता से चलती गईं। आगे शून्य था तो मन का साहस टूट गया। मन लौटा तो सब लौट आईं।

सिद्धांत : परमात्मा इस मन, वाणी की पहुंच से परे है।

528. राजा ने धार्मिक समारोह किया

एक बार एक राजा ने सब धर्मों के विद्वानों को न्यौता दिया कि ऐसा समारोह हो जहां बस अपने-अपने धर्मों के

मत बताएंगे। बहुत-से महात्मा पधारे और सबने अपने-अपने धर्मों की ऊंचाइयां बताईं, पर एक संत मौन ही बैठे रहते थे। राजा ने कहा—आप भी बताएं पर उन्होंने कह दिया कि अभी समय नहीं आया। ठीक समय पर बताऊंगा। अगले दिन वह फिर मौन बैठा रहा तो राजा बोला—'आज बताना ही पड़ेगा।' संत बोला कि—'नदी तट पर तुम सब तरह की नौकाएं रखना। मैं वहीं बताऊंगा।' राजा ने अलग-अलग तरह की नावें वहां इकट्ठी की—कोई सोने की मढ़ी, कोई चांदी से, कोई तांबे से और कोई काठ की। संत ने कहा कि—'कौन-सी नाव से पार जाएं?' राजा ने कहा—'सोने की नाव।' पर संत बोला—'मेरे लिए लकड़ी की ही अच्छी है, क्योंकि नाव का एक ही मकसद है कि वह नदी के पार कराए।'

सिद्धांत : कोई धर्म छोटा या बड़ा, कम या ज्यादा नहीं है क्योंकि सब धर्म मानव-जाति को संसार-सागर से पार कराने के लिए हैं।

529. दत्तात्रेय ने हंस-रूप में ज्ञान दिया

जब दत्तात्रेय हंस-रूप में विचर रहे थे तो देवताओं ने उनसे ज्ञान देने की प्रार्थना की। वे बोले—'धीरज, मन-वश और सत्य-धर्म का पालन कर्त्तव्य है। पुरुष को चाहिए कि अपने हृदय की सारी गांठें खोलकर प्रिय और अप्रिय को अपनी आत्मा जाने। दूसरों की गाली सुनकर भी गाली न दे। क्षमा

करने वाले का रोका हुआ क्रोध ही गाली को जला देता है। रूखी तथा गुस्से वाली वाणी न बोले। रुखी वाणी दूसरे का दिल तोड़ देती है।'

सिद्धांत : जो रूखा बोलता है वह महादरिद्र है क्योंकि वह वाणी से दरिद्रता बांधे हुए है।

530. जादूगर संन्यासी बना

एक राजा हमेशा संतों को खिलाकर उनके पांव धोता था। एक दिन एक जादूगर भी संत का वेश धारण करके खाना खाने आया। राजा ने उसे भी प्यार से खिलाया। वजीर को यह बात अच्छी न लगी। दूसरे दिन जादूगर का जादू का खेल हो रहा था।

वजीर राजा को वहां लेकर गया और दिखाया कि यह जादूगर है संत नहीं। कल संन्यासी का वेश धारण करके आया था।

राजा ने जब यह देखा तो Stage पर जाकर जादूगर के पांव पकड़े और कहा—'भगवान तुम कितने रूपों में आते हो? कल संन्यासी में भी तुम थे, आज जादूगर के रूप में भी तुम हो। वाह भगवान, हो तो तुम ही!'

सिद्धांत : जिसने तत्त्व को जाना है वह सबमें एक ही देखता है।

531. जहाज पर बैठा हुआ पंछी

एक पंछी समुद्री जहाज पर ही रहता था। कुछ समय के

बाद उड़ानें भरता था पर अथाह सागर में कहीं ठौर न मिलती तो वह वापस जहाज पर ही लौट आता था।

सिद्धांत : मन उड़ता है तो उड़ने दो। आखिर तो लौटकर अपने आप में ही शांति पाएगा, सतगुरु के चरणों में ही विश्राम पाएगा।

532. छोटी रानी ने अपराधी को अभय-दान दिया

किसी राजा ने चारों रानियों से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान मांगने को कहा। उन्होंने कहा—'हम और कभी मांग लेंगे।' कुछ दिन बाद वहां कोई अपराधी पकड़ा गया और उसे मृत्यु की सजा सुनाई गई।

बड़ी रानी ने सोचा कि इसे एक दिन का जीवनदान देकर उत्तम खाना खिलाकर संतुष्ट किया जाए। राजा को पूछके उसे महल ले गई और छत्तीस तरह के पदार्थ उसके सामने रखे। दूसरे दिन मौत निश्चित है, इस भय से वो कुछ खा नहीं सका।

दूसरे दिन दूसरी रानी ने अपराधी के लिए एक और दिन का जीवनदान मांगकर उसे स्वादिष्ट खाने के साथ बहुत महंगे कपड़े दिए और तीसरे दिन तीसरी रानी ने उसके मन बहलावे के लिए नाच-गाने का इंतजाम किया, परंतु मौत कंधे पे लटकती देख अपराधी को कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

चौथे दिन चौथी रानी ने राजा से वरदान मांगा—'अपराधी

को क्षमा कर दो।' और उसे रूखी मोटी रोटियां और दाल खिलाके विदा किया।

रानियों में अब यह विवाद उठा कि किसने अपराधी की सबसे ज्यादा सेवा की। बात राजा तक भी पहुंची। राजा ने अपराधी को बुलाकर पूछा। अपराधी ने कहा—'मुझे मौत के भय से खाना, कपड़ा, नाच-गाना कुछ भी अच्छा नहीं लगा, सामने मौत जो खड़ी थी, परंतु चौथी रानी-माता की रूखी रोटियों में अमृत-सा स्वाद लगा, क्योंकि मौत से अभय मिल चुका था।' और वो हमेशा के लिए बदल गया।

सिद्धांत : जितने भी दान हैं क्षणिक हैं तथा माया में और भी जकड़ लेते हैं पर अभय-दान आदमी को अपने मन के सारे बंधनों से दूर कर भगवान में टिकाता है।

533. वेदान्ती के घर में जिज्ञासु

एक दिन एक वेदान्ती के घर में एक जिज्ञासु व्यक्ति आया। वेदान्ती को वहां न पाकर उसके मुख्य आसन पर बैठ गया। जैसे ही वेदान्ती कमरे में आया, व्यक्ति ने पूछा—'कृपया करके मुझे बताइए कि ईश्वर क्या है और मनुष्य क्या है?' वेदान्ती ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और कठोर शब्दों में उसके आसन पर बैठ जाने के लिए डांटने लगा। व्यक्ति डर गया और आसन से उठ गया। अब

वेदान्ती ने बड़ी शांति और गंभीरता के साथ अपनी तरफ संकेत करके कहा कि—'ये ईश्वर है' और व्यक्ति की तरफ करके कहा कि—'ये मनुष्य है।' अगर तुम डरते नहीं और अपना संतुलन बनाए रखके वहां बैठे रहते तो तुम ईश्वर होते, लेकिन श्रद्धा खो देने, डरने के कारण ही जीव बन गए।'

सिद्धांत : जब मनुष्य अपनी दिव्यता में विश्वास रखता है तो स्वयं ईश्वर हो जाता है। जब बाहर की शक्तियों पर निर्भर रहता है तो जीव बन जाता है।

534. विद्वान विश्वनाथ ने सबको रस पिलाकर प्यास बुझाई

विद्वान विश्वनाथ एक बार बीमार पड़े। डॉक्टर ने घरवालों को कहा—'इन्हें एक बूंद भी पानी मत पीने देना, नहीं तो इनकी हालत और बिगड़ जाएगी।' विश्वनाथजी को बहुत तीव्र प्यास लगी।

उन्होंने कुछ ब्राह्मणों को बुलवाकर उन्हें अपने सामने शरबत, रस, नारियल पिलाया और पिलाते वक्त उन्होंने अनुभव किया कि—'मैं ही पी रहा हूं।' और सचमुच उनकी प्यास इससे शांत हो गई।

सिद्धांत : दूसरों को सुख और तृप्ति देने में ही अपनी तृप्ति है। इन अनुभवों से अद्वैत सिद्ध होता है।

535. उपदेश से ज्यादा आचरण

एक बार एक उच्च कोटि के ऋषि पहाड़ों पर एक आश्रम में आत्मानन्द में डूबे हुए शांत मुद्रा में बैठे थे। उसी समय कुछ शिक्षित लोग अपने आपको उनके दर्शन से धन्य करने के लिए वहां आए।

योगीराज की दृष्टि आशीर्वाद से भरी थी और होंठों पर अमृत-भरी मुस्कान थी। सज्जनों ने कहा—'कुछ उपदेश के वचन दीजिए।'

योगीराज ने विनम्रता से भरकर कहा—'असल में मुझे कुछ नहीं आता, आपको मैं क्या उपदेश दूं?' सज्जनों ने फिर निवेदन किया तो फिर से उन्होंने वही उत्तर दिया। उनमें किसी भी तरह का बाह्य दिखावटीपना या दम्भ नहीं था।

सिद्धांत : शब्दों से नहीं आचरण से सीख सकते हैं। सत्य वस्तु बाहर नहीं है अपने भीतर ही है।

536. जिज्ञासु ने पूछा—परमात्मा के दर्शन कैसे हों

एक ज्ञानी के घर एक जिज्ञासु रात को रुककर सुबह जाने वाला था। सुबह ज्ञानी के पास आकर पूछा—'मैं इतना ध्यान, प्रार्थना करता हूं फिर भी परमात्मा का दर्शन अब तक क्यों नहीं होता है?' ज्ञानी ने कहा—'वो तो रोज होता है तू जानता नहीं है।' जिज्ञासु को बड़ा आश्चर्य हुआ कि मुझे ही हो और मैं ही न जानूं? ज्ञानी ने पूछा—'अच्छा

सुबह-सुबह उठकर सबसे पहले तूने क्या देखा?' प्रेमी ने कहा—'घड़ी में टाइम देखा, फिर आपके पास आया बस।' ज्ञानी ने फिर कहा—'तू सच बता सबसे पहले क्या देखा?' जिज्ञासु हक्का-बक्का हो गया। अब ज्ञानी ने कहा—'देखो, घड़ी से पहले तुमने रोशनी (प्रकाश) देखी और रोशनी में ही समय देखा, फिर बिस्तर, दरवाजा और मेरे को देखा। अगर प्रकाश न होता तो किसी को भी नहीं देख सकता था।' अब जिज्ञासु को बात समझ में आ गई।

सिद्धांत : हम अपने में घ्यान दें तो पता लगेगा—परमात्मा हमारे ही अंदर है। शरीर, मन, इंद्रियां तो सब बाद में घ्यान में आते हैं। और उनसे ऊपर उठते परमात्मा में ही रहना है।

3. विवेक के दृष्टांतों की सूची

537. राजकुमारी के जुल्म से परेशान
538. राजपुरोहित ने सिक्का उठाया
539. कंजूस राजा और नर्तकी
540. दयानन्द ने महाजन को जगाया
541. कबीर ने पंडित को राम-राम बोला
542. द्वीप के राजा को गाय का मालूम नहीं
543. राजा ने राजपाट दिया धर्म नहीं
544. कुत्ते ने सीधा रास्ता अपनाया
545. मांगो तो उससे जो सबको देता है
546. विवेकी बहू की सुजागी
547. गफलत हुई तो 12 महीना ठहरो
448. शबरी का पहला जन्म
549. घोड़ा चोर
550. इब्राहिम ने फकीरी क्यों अपनाई
551. जीवन-चरित कैसे लिखना
552. जब जागने से नींद बेहतर
553. न मिटने वाले दाग
554. सिंकदर और अमृत-कुण्ड
555. रौंदी गई खेती
556. वेश्या की आंखों में घोंसला

557. सबसे आश्चर्य की चीज क्या है?
558. सेठ ने रामकृष्ण परमहंस को दुशाला दिया
559. गीता पुस्तक को बचाया जाए

विवेक के अन्य दृष्टांत

587. शृंगी ऋषि के रस में पड़े
604. पानी पर चलने की सिद्धि
615. बंद ज्ञानी

विवेक

537. राजकुमारी के जुल्म से परेशान

एक राजा को एक बेटी थी। जब भी वह महल से बाहर निकलती बड़ा कहर (जुल्म) ढाकर आती। सभी उससे बड़ा घबराते। राजा भी परेशान था कि अब इसे कौन रोके। एक दिन राजा से मिलने उसका परम मित्र आया। राजा ने सारी बात उससे कही तो मित्र ने उसे युक्ति बता दी। जिस महल में राजकुमारी रहती थी उसके दो दरवाजे बनवा दिए और चारों तरफ 32 पहरेदार खड़े कर दिए। अब राजकुमारी का बाहर निकलना कुछ कम होता गया और धीरे-धीरे कहर ढाना बंद हो गया।

सिद्धांत : राजा है ये मुख। राजकुमारी है जीभ। 32 पहरेदार हैं दांत, दो दरवाजे हैं ये होंठ। परम मित्र हैं सत्गुरु। उनकी युक्तियों से हमारी वाणी में फर्क आ जाता है। हम कर्म-रूपी कहर ढाने से बच जाते हैं। गुरु बोलते हैं, बोलने के समय 32 बार पहले विचारो। कम से कम 3 या 2 बार विचार कर बाद में शब्द बोलो। तो बोलो, क्या शब्द कहर ढाएंगे?

538. राजपुरोहित ने सिक्का उठाया

एक बार राजपुरोहित के मन में विचार आया कि जरा परीक्षा लूं कि राजा मेरा इतना आदर करता है उसका कारण क्या है, मेरा ज्ञान या अच्छा व्यवहार? दूसरे दिन दरबार के बाद जाने के समय उसने कोष से एक सिक्का उठा लिया। कोष के अधिकारी ने देखा पर सोचा—'जल्दी में होगा, उठाने का क़ारण फिर कभी बता देगा।' दूसरे दिन भी यही हुआ और तीसरे दिन तो मुट्ठी भर सिक्के उठा लिए। अब कोष-अधिकारी को विश्वास हो गया कि ये ऊपर से सिर्फ प्रवचन करता है पर है लालची और चोर। बात राजा को बताई गई।

राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसकी श्रद्धा पर चोट पहुंची। पुरोहित की उंगलियां काटने की आज्ञा दी। दूसरे दिन उसे दरबार में जब लाया गया तो पुरोहित ने बताया—'मैंने सिक्के उठाए जरूर हैं, पर मैं चोर नहीं हूं। सही बात यह है कि मैं जानना चाहता था कि सारी प्रजा और आप मेरा इतना आदर क्यों करते हैं—ये आदर है ज्ञान का या मेरे सदाचार का और अब यह पाया कि ज्ञान तो कल जितना था आज भी उतना ही है मेरे पास, केवल सदाचार टूटा और मैं चोर हो गया।'

सिद्धांत : सिर्फ ज्ञान ही जरूरी नहीं है। ज्ञान के साथ-साथ सच्चा व्यवहार और पूर्ण आदर्श उतना ही जरूरी है।

539. कंजूस राजा और नर्तकी

एक राज्य में एक कंजूस राजा का राज्य था। उसके लिए लोग शर्त लगाते थे, कौन सूरमा है जो इस राजा से कुछ भी इनाम हासिल करे। उस राज्य में एक बहुत सुन्दर और प्रसिद्ध नर्तकी रहती थी जिसके सुन्दतरता और नृत्य देखने के लिए लोग तरसते रहते थे। नर्तकी ने ठान ली कि वह राज दरबार में ऐसा नाच दिखाएगी कि राजा उसे इनाम दिए बिना रह न सकेगा। उसने अपने तबलची और साज वालों से बात कर राजा के पास यह पैगाम भेजा कि वह दरबार में नृत्य पेश करना चाहती है। राजा ने सोचा, चलो अच्छा है मुफ्त मनोरंजन होगा। रात हुई। दरबार खचाखच भरा हुआ था। राजा के सब अधिकारी और परिवार तथा प्रजा के कई लोग उपस्थित थे। नर्तकी का नृत्य शुरू हुआ, रागजिन्दों ने राग छेड़ा, पहला पहर खत्म हुआ, सबने 'वाह-वाह' की पर राजा के मुख पर लकीर तक नहीं आई। दूसरे पहर नर्तकी ने और सुन्दर नृत्य किया। देखते-देखते दूसरा पहर भी बीत गया। राजा के हाव-भाव में कोई अंतर न आया। नर्तकी को दुख हुआ पर वह निराश न हुई उल्टे और जोश से नृत्य करने लगी कि कम-से-कम राजा ताली तो बता दे। उसने ऐसा नाच पेश किया जो कभी किसी ने न देखा था। इसका भी राजा पर असर न हुआ तो नर्तकी को रोना आने लगा पर उसने हिम्मत न हारी। आंखों-ही-आंखों में उसने सयाने तलबची से बात की। तबलची ने कहा—'इतनी बीत चुकी, बाकी

भी गुजर जाएगी, तू ताल पर ताल सजा।' ये शब्द सुनकर उसने बेजोड़ नाच किया। अचानक राजा का कुलगुरु उठा और अपनी कीमती शाल नर्तकी को पहना दी। इससे उसका उत्साह और बढ़ गया और वह बेतहाशा नाच उठी। फिर राजा के बेटे ने अपना बहुमूल्य गले का हार उसे पहना दिया। राजकुमारी ने भी मुट्ठी-भर सोने की मोहरें उसकी झोली में डाल दीं। अब राजा से रहा न गया। उसने पहले कुलगुरु से पूछा—'आपने शाल क्यों दे डाली?' कुलगुरु बोले—'मैं संन्यास से तंग आ चुका था। नर्तकी का इतना सुन्दर नाच देखकर मेरे दिल में गृहस्थ में जाने का विचार आया। पर गृहस्थ में जाऊंगा तो किसको मुंह दिखाऊंगा। यह विचार कर मेरी इज्जत बच गई इसलिए कीमती शाल उसके कंधे पर डाल दी।' फिर राजा ने राजकुमार से पूछा तो वह बोला—'पिताजी, आज मैं आपका खून करने वाला था—बस मौके की तलाश में था कि कब रात बीते और मैं आपका कत्ल करके खुद राजगद्दी पर बैठूं।' फिर तबलची की बात सुनी—'इतनी बीत चुकी है, बाकी भी गुजर जाएगी, तू ताल पर ताल सजा', तो मैंने विचार किया, आखिर आप कितने दिन जीएंगे? आखिर तो मुझे ही राजा होना है। इस तरह से मेरा नाम खराब होने से बच गया।'

फिर राजा ने राजकुमारी से पूछा तो उसने कहा—'मेरी शादी की उम्र बीत चुकी है। मेरी तमन्नाओं का गला घुट चुका है। आज रात को ही मैं कोतवाल के बेटे के साथ भाग

जाने वाली थी सारी धन-सम्पत्ति लेकर, पर जब तबलची का वाक्य सुना तो विचारा कि मेरी इज्जत खराब होगी और पिता वक्त से पहले ही बदनामी से मर जाएंगे। मुझे लगा कि इसकी बात में दम है और जिंदगी को बचा लिया और नर्तकी को सोने की गिन्नियां दे दी।'

राजा भी विचार में पड़ गया कि इतनी जिंदगी बीत गई है थोड़ी-सी बची है और जमा करके क्या होगा? आखिर कौन खुश है मुझसे? उसी क्षण से राजा के मन में गहरा परिवर्तन आ गया।

सिद्धांत : समय पर कही हुई सही सीख जीवन में क्रांति ला सकती है। गुरु के विवेक से भरे हुए वचन हमें रोज जगाते हैं। यदि हम उन पर चल पड़ें तो ये हो नहीं सकता कि भव से न पार हों—आया जो तेरे दम पर।

540. दयानन्द ने महाजन को जगाया

स्वामी दयानन्द सरस्वती घूमते-घूमते एक गांव में पहुंचे तो रात बिताने वहां के मंदिर में ठहर गए। लोगों को मालूम पड़ा तो सब उनसे ज्ञान लेने को मंदिर के आंगन में पहुंच गए। गांव का प्रधान स्वामी दयानन्द से सबका परिचय कराने लगा। गांव वालों ने देखा सब तो आए हैं पर गांव का महाजन नहीं आया है। सरपंच ने बताया कि वह गांव में सबसे धनवान है इसलिए अपने को कुछ समझता है और सबके

साथ ज्ञान नहीं लेना चाहता। उसने यह भी बताया कि वह बहुत कंजूस है। ब्याज पर पैसा देता है और दोगुना-चौगुना वसूल करता है। खुद भी परेशान रहता है और औरों को भी परेशान करता है। दयानन्द जी ने सब सुनकर केवल इतना ही कहा कि अगर वे नहीं आए तो हम उनको न्यौता भेजकर बुलाएंगे। उन्होंने न्यौता भेजा तो वह चला आया और अकेले में ज्ञान लेने की इच्छा प्रकट की। स्वामी दयानन्द जी ने उससे कहा कि समझो तुम रेगिस्तान में हो। वहां प्यास से तुम्हारा गला सूख रहा है और तुम्हारा दम निकल रहा है। उसी समय एक आदमी एक कटोरे में गंदा पानी लाता है और कहता है कि मैं तुझे यह देने को तैयार हूं पर इसके बदले में तुझे अपनी आधी धन-सम्पत्ति देनी पड़ेगी तो तुम ऐसे में क्या करोगे? महाजन ने कहा कि—'मैं उसे देने को तैयार हो जाऊंगा और वह कटोरा पानी पी लूंगा।'

फिर दयानन्द जी ने कहा कि—'समझो यह गंदा पानी पीकर तुम्हें कोई बीमारी हो जाए और वह तुम्हें ऐसा घेरे कि तुम मरने वाले हो जाओ। उसी सयम यदि एक हकीम आए और कहे कि मेरे पास वह दवा है जिससे तुम ठीक हो सकते हो पर उसके लिए जो कुछ धन-दौलत तुम्हारे पास बची है उसमें से आधी तुम्हें मुझे देनी पड़ेगी, तो तुम क्या करोगे?' महाजन बेधड़क बोला कि—'मैं उसे धन-दौलत देकर दवा ले लूंगा।'

इस पर स्वामी जी ने उससे कहा कि देखो, फिर तुम्हारी

सारी दौलत का मूल्य एक कटोरा गंदा पानी और एक बार की दवा के बराबर हो गया। इस धन-दौलत का गुरुर झूठा है। यह सुनकर महाजन की आंख खुल गई और पैसे में जो उसकी जकड़ थी वह खतम हो गई और वह भी परमात्मा की तरफ उन्मुख हो गया।

सिद्धांत : सच्चा गुरु वो ही है जो हमारे अन्दर पदार्थ-अभावनी करा दे।

541. कबीर ने पंडित को राम-राम बोला

एक बार कबीर कहीं जा रहे थे, रास्ते में ब्राह्मण से भेंट हो गई। कबीर साहिब ने उसे चेताना चाहा। बोले—'पंडित जी राम-राम।' पंडित मौन रहे। कबीर ने तीन बार ऐसा ही कहा पर वह न बोले। जब पंडित स्नान करके, कपड़े बदलकर चलने लगे, कबीर ने फिर कहा—'पंडित जी राम-राम।' पंडित बोले—'कबीर राम-राम।' कबीर ने पंडित से पहले उत्तर न देने का कारण पूछा। वह बोले—'पहले मैं अपवित्र था।' कबीर ने पूछा—'तो क्या अब आप पवित्र हैं?' तो बोले—'हां।' कबीर ने पूछा—'कैसे?' ब्राह्मण ने उत्तर दिया—'पानी से।' कबीर बोले—'पानी किससे पवित्र होता है?'

'वायु से।'

'वायु किससे शुद्ध होती है?'

'जब शेषनाग हजार मुख से भगवान का नाम लेता है।'

'तो फिर सबको पवित्र करने वाला भगवान का नाम हुआ न!' इससे ब्राह्मण का संशय दूर हुआ।

सिद्धांत : पवित्र-अपवित्र मन की अवस्था है, तन की नहीं।

542. द्वीप के राजा को गाय का मालूम नहीं

एक द्वीप में जहां सिर्फ हीरों का व्यापार होता था, गाय के बारे में कुछ पता नहीं था। एक व्यापारी वहां गाय लाया और राजा को खुश करने के लिए रोज दूध, दूसरे दिन दही, तीसरे दिन मक्खन आदि लेकर जाता था। राजा बहुत खुश हुआ। व्यापारी जब अपने शहर वापस जाने लगा तो राजा ने कहा—'जो पेड़ तुम्हारे पास है, जिससे तुम इतना स्वादिष्ट सामान लेकर आते थे, वो यहीं छोड़ जाओ, मैं तुम्हारा सारा कर्जा माफ कर दूंगा।' व्यापारी गाय छोड़कर चला गया। राजा की आज्ञा के अनुसार राजा का आदमी चांदी का कटोरा लेकर वहां खड़ा हो गया और जैसे ही गाय ने मूत्र किया, वो कटोरे में राजा के पास ले आया। राजा ने चखते ही नाक-मुंह सिकोड़ा। अब एक जो सोने का बर्तन लेकर खड़ा था, गोबर गाय से निकलते ही राजा के सामने लाया। अब इसे चखके तो राजा आग बबूला हो गया और व्यापारी को पकड़कर लाने को कहा। राजा ने सोचा उसने बहुत बड़ा धोखा किया है, असली पेड़ ले गया, नकली छोड़ गया। व्यापारी को लाया गया और उसने राजा के आदमियों को दूध निकालना,

मक्खन बनाना, दही जमाना सब सिखा दिया। व्यापारी ने कहा—'पहले आप दूध दोहना जानते नहीं थे तो मक्खन, दही भी कहां से मिलता।'

सिद्धांत : हमारे मन और शरीर में शक्तियां भरी हुई हैं। बस जरूरत है दोहने की, मंथन की। जितना ज्ञान के विचार से मंथन करेंगे, उतना ही शक्तियां बाहर प्रकट होती जाएंगी और एक दिन सिर्फ शक्ति ही रह जाएगी।

543. राजा ने राजपाट दिया धर्म नहीं

एक बड़े दानवीर राजा के पास एक साधु आया। साधु ने मांगा कि या तो 12 वर्ष के लिए अपना राज्य दे दो या अपना धर्म। राजा परेशानी में पड़ा। फिर कुछ विचार करके राजपाट दे दिया और वहां से चल पड़ा। रास्ते में रोती हुई अकेली एक राजकुमारी को देखकर राजा को दया आ गई और उसके कहने पर उसे घोड़े पर बिठाकर दूसरे शहर ले आया। राजकुमारी ने कुछ मोहरें दी और उसके कहने पर एक मकान लिया और दोनों उसमें रहने लगे। उसके ही कहने पर राजा मन बहलाने के लिए राजा की कचहरी में जाने लगा। एक दिन वहां के राजा से जान-पहचान हुई और उसने राजा के धार्मिक स्वभाव से बहुत प्रभावित होकर अपने महल में बुलाकर बड़ी आवभगत की। अब राजकुमारी के कहने पर राजा ने उस राजा और उसके सारे परिवार को खाने पर बुलाया। परेशान राजा जिसके पास अब कुछ नहीं

था, सुबह देखा—पास के ही बगीचे में स्वर्ग के देवदूत ने सारा इंतजाम करके स्वर्ग-सा ही वहां बना दिया। सब खाना खाकर बहुत तृप्त होकर गए। अब राजकुमारी ने बताया—'देखो तुम्हारे 12 वर्ष भी पूरे हो गए हैं, तुम्हें याद ही नहीं है, अब अपने राज्य को वापस जाओ।' राजा ने कहा—'मैं तुम्हें छोड़कर कैसे जा सकता हूं, तुम भी साथ चलो।' उसने कहा—'मैं तुम्हारी स्त्री नहीं हूं, मैं तो तुम्हारा धर्म हूं जो हर समय तुम्हारे साथ रहकर तुमको दुख नहीं पाने दिया।'

सिद्धांत : राजपाट और माया जो क्षणिक हैं, आज है कल नहीं, पर धर्म और सत् में रहें तो माया भी उनकी दासी है।

544. कुत्ते ने सीधा रास्ता अपनाया

एक बार एक कुत्ते को 100 मील दूर एक शहर में पहुंचना था। उसने अनुमान लगाया कि यदि वह 10 मील रोज चलेगा तो 10 दिन में अपनी मंजिल पर पहुंच जाएगा। यह सोचकर उसने अपनी Speed set कर ली पर जब वह बस्ती के पास पहुंचा तो वहां के सारे कुत्ते इकट्ठे हो इस पर भौंकने लगे। इसने सब से कहा कि—'मैं तुम्हारा क्या बिगाड़ रहा हूं, तुम मुझ पर न भौंको।' पर यह सब करने में बहुत समय चला गया। इसने विचार किया कि इस प्रकार तो मुझे बहुत देर हो जाएगी तो आगे उसने बस्ती आते ही बहुत

तेज भागना शुरू कर दिया। इस प्रकार कुत्ते भौंकते थे पर इसको फर्क नहीं पड़ता था, उल्टे रास्ता और जल्दी कट जाता था। इस तरह वह दस दिन से पहले ही अपने लक्ष्य पर पहुंच गया।

सिद्धांत : दुनिया की परवाह न करके तू सच के रास्ते पर बढ़ता चल।

545. मांगो तो उससे जो सबको देता है

एक बार अकबर बादशाह वेश बदलकर राज्य में घूम रहा था। रास्ते में उसे भूख लगी तो एक जमींदार के कुएं पर पहुंचा। जमींदार ने उसे राही समझकर कुछ खाने को दिया और उसके घोड़े को पानी पिलाया। राजा बहुत खुश हुआ और उसे अपना रहस्य बताते हुए कहा कि मैं अकबर बादशाह हूं, कभी जरूरत पड़े तो मेरे पास आना। कुदरत का खेल ऐसा हुआ कि कुछ ही दिनों में उसे जरूरत पड़ी तो बादशाह की बात याद आई। सीधे राजमहल पहुंच गया। अकबर बादशाह उस समय नमाज पढ़ रहे थे। जमींदार ने देखा कि कैसे बादशाह ने नमाज पढ़ने के बाद हाथ ऊपर उठाकर भगवान से आशीश मांगी। जब बादशाह उठा तो जमींदार उनसे मिला और फिर वापस जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। बादशाह ने कहा—'तुमने यह तो बताया ही नहीं कि तुम किस लिए आए थे।' जमींदार ने कहा कि—'आया तो था मैं आपसे मदद मांगने, पर मैंने देखा

आप भी मांग ही रहे हैं तो क्यों न मैं उससे ही मांगूं जो सबकी मांग पूरी करने वाला है।'

सिद्धांत : भगवान ही एकमात्र सब का सहाय है।

मुझे गर्ज न और सहारों की,
एक तेरा सहारा काफी है।

546. विवेकी बहू की सुजागी

नई बहू एक धनवान घराने में आई जहां सब माया के नशे में डूबे हुए थे पर परमार्थ का खयाल नहीं था।

उसको सब घरवालों के लिए दर्द था और वह अपने हर शब्द से किसी भी तरह उनका विवेक जगाना चाहती थी। एक दिन द्वार पर एक संत आया। उसने पुकारकर कहा—'भिक्षा दो।' नई बहू ने कहा—'अभी का तो हमारे पास नहीं है, पहले की कमाई खाते हैं।' फिर संत ने कहा—'आपके घर में कोई है?' बहू ने कहा—'मर्द है पर वह एक ही वर्ष का है। सास छः महीने की है और ससुर जी का तो अभी तक जन्म ही नहीं हुआ।' संत उसकी अटपटी बातें समझ गया।

सिद्धांत : पहले की कमाई का अर्थ है प्रारब्ध। मर्द एक साल का है मतलब ज्ञानमय जीवन एक साल से अपनाया है। सास ने छः महीने से सत्संग जाना शुरू किया है और ससुर को अभी तक धर्म में रुचि ही नहीं है।

547. गफलत हुई तो 12 महीना ठहरो

एक राजा के 365 रानियां थीं। हर एक का नम्बर साल में एक बार ही आता था। एक दिन जिस रानी का नम्बर था उसने बड़े चाव से राजा के आने की तैयारियां कीं। खूब सजधज की और 56 भोग बनवाए कि आज मेरा पति मेरे पास आएगा। इधर राजा राज्य के कार्य में इतना व्यस्त हो गया कि उसे देर हो गई। ग्यारह-बारह बजे तो रानी को नींद आने लगी।

उसने अपनी दासी से कहा—'तुम ध्यान रखना, राजा आएं तो मुझे सूचित करना।' राजा को आने में चार बज गए। तब तक दासी की आंख भी लग चुकी थी। राजा फिर छः बजे उठ गया और ध्यान-स्नान के लिए अपने कक्ष में चला गया। रानी की नींद खुली तो दासी को बुलाया। सब कुछ मालूम पड़ा तो वह बहुत पछताई कि अब फिर 12 महीने ठहरना पड़ेगा, राजा से मिलने के लिए।

सिद्धांत : अगर मनुष्य में गफलत हुई तो अनेक योनियों में चक्कर काटना पड़ेगा फिर कहीं जाकर एक मौका मिलेगा। इसलिए तू अभी चेत जा और अपना काम पूरा कर। मनुष्य जन्म सफल बना।

448. शबरी का पहला जन्म

शबरी अपने पहले जन्म में रानी थी। वो राजा के साथ तीर्थ यात्रा करके वापिस लौट रही थी तो उसने राजा से प्रार्थना की

कि——'हम जंगलों में जो साक्षात ऋषि-मुनि बैठे हैं उनका दर्शन करें और उनसे भगवान की बातें करें।' पर राजा न माने। उन्होंने कहा——'मैं राजा हूं, मैं वहां कहां बैठूंगा?' शबरी को बहुत तमन्ना थी पर राजा न माने, तो वह संकल्प रह गया और अगले जन्म में वह शबरी के रूप में पैदा हुई तो किसी कारणवश घर छोड़कर जंगलों में रहने लगी। वहां उसे ऋषि-मुनियों का संग मिला। जो संकल्प उसका पहले जन्म में रह गया था, वह पूरा हो गया।

सिद्धांत : हमें कोई भी संकल्प नहीं करना चाहिए क्योंकि हर संकल्प चाहे शुभ हो या अशुभ समय पर पूरा होता है।

549. घोड़ा चोर

एक मुखिया का घोड़ा गुम हो गया। पुलिस ढूंढ़ने के लिए गई, चोर के पदचिन्हों पर पुलिस गई तो वहां एक संत बैठा था। उन्होंने संतों से पूछा——'आपने यहां से किसी चोर को जाते देखा है?' उसने कहा——'देखा तो नहीं है, उसे मैं जानता तो नहीं हूं, पर पता बता सकता हूं।' तो संत उन्हें कब्र में ले गया, बोला——'यहां इंतजार करो, वो यहां एक-न-एक दिन जरूर आएगा, सबका आखिर यहीं ठिकाना है।'

550. इब्राहिम ने फकीरी क्यों अपनाई

एक बार संत इब्राहिम से किसी राह चलते व्यक्ति ने

पूछा——'आप तो राजा थे। सारे सुख आपके चरणों में कुर्बान थे। फिर सब पर ठोकर मारकर आप फकीर क्यों बने?' इब्राहिम ने गम्भीरता से उत्तर दिया——'एक दिन मैंने महल में लगे चौड़े शीशे को गौर से देखा तो उसमें मेरे महल के स्थान पर श्मशान का प्रतिबिम्ब झलक रहा था। वहां पर केवल मैं ही अकेले खड़ा था। सगे-सम्बंधी कोई नहीं थे। बहुत भयानक श्मशान था। फिर एक तेजस्वी न्यायाधीश प्रकट हुए।' उन्होंने कहा कि——'तुम कुछ सबूत दे सकते हो कि तुम निर्दोष हो?' मैंने जो कुछ भी युक्तिपूर्ण सबूत दिए, वे सब रद्द हो गए। मैं उनके सामने असहाय था। उसी दिन से मैंने राज्य का सुख त्याग दिया और फकीरी अपना ली।'

सिद्धांत : फकीरी में ही निर्दोष रहकर जिया जा सकता है।

551. जीवन-चरित कैसे लिखना

आर्य समाज के संस्थापक श्री दयानन्द सरस्वती के एक बहुत श्रद्धालु भक्त थे गुरुदत्त विद्यार्थी। एक और भक्त उनके पास आए और बोले——'आप दयानन्द जी के इतने नजदीक रह चुके हैं, क्यों न उनकी जीवनी लिखें जिससे सबको फायदा हो।' गुरुदत्त जी बोले——'हां यह काम मैंने शुरू कर दिया है।' बड़ी उत्सुकता से उस आदमी ने पूछा——'तो कब तक जीवन-चरित पूरा होगा? और कब छपेगा?' इस पर

गुरुदत्त जी ने जवाब दिया—'मैं कागज पर कोई चरित नहीं लिख रहा हूं। महापुरुषों का आदर्श मनुष्यों के स्वभाव पर लिखा जाना चाहिए।'

सिद्धांत : हमारा यही लक्ष्य हो कि हमारा जीवन सतुगुरु के पदचिन्हों पर चले।

552. जब जागने से नींद बेहतर

शेख सादी लड़कपन में अपने पिता के साथ मक्का जा रहे थे।

जिस दल के साथ जा रहे थे उसका नियम था आधी रात को उठकर प्रार्थना करना। एक दिन आधी रात के समय सादी और उनके पिता उठे। प्रार्थना की, परंतु दूसरे लोगों को सोते देखकर सादी ने पिता से कहा—'देखिए ये लोग कितने आलसी हैं, उठते ही नहीं हैं, प्रार्थना भी नहीं करते।' पिता ने कड़े शब्दों में कहा—'अरे सादी बेटा, तू भी न उठता तो अच्छा होता। जल्दी उठकर दूसरों की निंदा करने से न उठना ही ठीक था।'

553. न मिटने वाले दाग

पुत्र किसी घर में डाका डालकर आता तो मां कमरे में एक कील गाड़ देती। किसी का खून करता तो एक और गाड़ देती।

यह सिलसिला बहुत दिनों तक चलता रहा। एक दिन पुत्र

ने पूछा—'मां तुमने सारा कमरा कीलों से भर दिया, यह सब क्या है?'

'पुत्र, ये तुम्हारे बुरे कर्म हैं। जब तू बुरा काम करता है, मैं एक कील गाड़ देती हूं। अब तो पूरा कमरा कीलों से भर गया है!'

पुत्र का हृदय पश्चाताप से भर गया। उस दिन से वह अच्छे काम करने लगा।

हर दिन जब वह घर आता तो मां को अच्छे कर्म बताता, मां एक कील उखाड़ देती।

कई वर्षों तक ऐसा चलता रहा। एक दिन सभी कीलें उखड़ गईं तो पुत्र ने पूछा—'मां, अब तो कोई पाप नहीं रहा?'

'बेटा, कीलें तो सब निकल गईं, पर कीलों के न मिटने वाले दाग दीवार पर रह गए हैं जो तुम्हारे बुरे कर्मों की हमेशा याद दिलाते रहेंगे। साथ ही ये दाग तुम्हें अच्छे कर्मों की प्रेरणा देते रहेंगे।'

सिद्धांत : आज अच्छे कर्म करने से पहले के गलत कर्म मिट सकते हैं।

554. सिंकदर और अमृत-कुण्ड

सिकंदर ने एक महात्मा की बहुत सेवा की तो उन्होंने कुछ मांगने को कहा। सिकन्दर में हुकूमत करने की हवस रहती थी, उसने कहा—'मैं सदा जीता रहूं, इस संसार पर

मेरा राज्य बना रहे।' महात्मा बोले—'शरीर बदलने वाली चीज है, हुकूमत कभी एक हाथ में नहीं रहती, अपने कल्याण की वस्तु मांग।' पर वह न माना। महात्मा बोला—'दूर अमृत-कुंड है, वहां जाने पर बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, वहां जाकर अमृत पी ले।' जैसे ही वो वहां पहुंचा एक पंछी तड़पता हुआ गिरा और बोला—'इसे मत पीना, इसे पीने से तुम्हारी दशा भी मेरे जैसी हो जाएगी, मैंने भी पिया था, अब मैं शरीर से पीड़ित हूं, न मरता हूं, न जीने के काबिल हूं।' सिंकदर ने अमृत वहीं छोड़ दिया। महात्मा ने पूछा—'सिकंदर, अमृत पिया?' तो उसने सारी कथा सुनाई। महात्मा बोले—'तू मूर्ख है, तू अगर पी लेता तो अवश्य अमर हो जाता, पर तुम्हें उस पंछी ने गुमराह कर दिया। उसका काम ही यही है।'

सिद्धांत : 84 लाख योनियों के बाद मनुष्य जन्म मिलता है अमृत-कुंड का किनारा, पर वहां पहुंचकर मनरूपी पंछी गुमराह कर देता है।

555. रौंदी गई खेती

हजरत सुलेमान अपने पुत्र की मृत्यु के बाद शोक में डूब गए।

सुलेमान की सभा में दो देवता मनुष्य रूप में आए और एक-दूसरे को दोषी ठहराने लगे। एक का कहना था कि

इसने मेरी खेती रौंद दी। दूसरे ने सफाई देते हुए कहा कि इसने अपनी खेती रास्ते में बो रखी थी और किसी ओर से भी आने-जाने का रास्ता नहीं बचा था, इसलिए वहां से निकलते समय मेरे पैरों से इसकी खेती जरूर रौंदी गई होगी। सुलेमान ने पहले आदमी से पूछा कि तुमने रास्ते में खेती क्यों लगाई?

क्या तुम नहीं जानते कि मार्ग में तो लोग आते-जाते रहते हैं?

उत्तर में उन्होंने कहा कि क्या आप नहीं जानते कि सभी मनुष्य लगातार मृत्यु की ओर बढ़ रहे हैं, तब पुत्र की मृत्यु पर इतना शोक क्यों? सुलेमान का विवेक जाग गया और वह अपने शोक से ऊपर उठ गया।

सिद्धांत : कभी न भूलना कि सब के सिर पर मौत की तलवार लटक रही है। मौत तो Return Ticket है।

556. वेश्या की आंखों में घोंसला

एक वेश्या को अपनी आंखों की खूबसूरती पर बहुत गरुर था। रोज उनको काजल और सुरमे आदि से सजाया करती थी।

एक दिन नौकरानी ने काजल ठीक नहीं बनाया, वह मोटा रह गया और वेश्या की आंखों में चुभन हुई तो उसने नौकरानी पर बहुत ही गुस्सा किया। काल का चक्र चलता गया। एक

दिन वह वेश्या मौत का ग्रास बन गई। उसकी खोपड़ी श्मशान में पड़ी थी तो चिड़ियों ने उसके आंखों के गड्ढों में घोंसला बना लिया।

सिद्धांत : ऐ भोले मनुष्य, जिस शरीर पर तुझे इतना नाज है, जरा सोच, मौत के बाद इसकी क्या दशा होगी।

557. सबसे आश्चर्य की चीज क्या है?

यक्ष ने धर्मराज युधिष्ठिर से पूछा—'सबसे आश्चर्यजनक चीज कौन-सी है?'

युधिष्ठिर—'एक आदमी मृत आदमी को श्मशान में फूंककर वापिस आता है पर भूल जाता है कि कल मेरे साथ भी ऐसा ही होगा। वह घर गृहस्थी में माया की बात शुरू कर देता है पर यह नहीं सोचता कि छोड़-छाड़कर मुझे भी यहीं आना।'

558. सेठ ने रामकृष्ण परमहंस को दुशाला दिया

रामकृष्ण परमहंस के पास एक सेठ आया और उन्हें एक बहुत कीमती दुशाला भेंट किया। रामकृष्ण ने लेकर रख लिया।

पांच-सात दिन बाद सेठ फिर आया तो देखा दुशाला तो नीचे बिछा हुआ है, और उसे बहुत बुरा लगा। आखिर रहा नहीं गया। जाकर रामकृष्ण को बोला—'यह दुशाला बहुत कीमती

होने के कारण कभी-कभी ही ओढ़ने का कार्य करें और आपने तो इसे नीचे बिछा रखा है।' रामकृष्ण ने कहा—'संभालकर इस दुशाले को रखूं या भगवान को, दो को नहीं रख सकता। मेरे लिए इसकी कीमत नहीं है, भगवान की ही कीमत है।' सामने ही आग थी और उन्होंनें दुशाले को आग में डाल दिया। दुशाला जल गया। रामकृष्ण ने कहा—'दुशाला तो जल गया, तुमने कहा—यह बहुत कीमती है, अब क्या है इसकी कीमत? आग ने तो इसे जला दिया।'

सिद्धांत : मनुष्य बाहर की वस्तुओं के ही मूल्य को आंककर दुखी-सुखी होता रहता है। गुरु ही बताता है—अपने अंदर के मूल्य को देखना, जांचना और उसी में टिकना।

559. गीता पुस्तक को बचाया जाए

कानपुर की एक घटना है। एक आदमी आचार्य के पास आकर बोला—'मेरी हार्दिक इच्छा है कि गीता जो महान ग्रंथ है वो हमेशा सुरक्षित रहे। आज के समय बड़ा खतरा है। पता नहीं कब तीसरा संसार का युद्ध शुरू हो जाए जिसमें पूरी दुनिया ही खतम हो जाए। इसलिए मैं चाहता हूं कि एक ऐसा कमरा बनाया जाए जो कभी नाश न हो सके किसी भी केमिकल से और उसमें एक पेटी में गीता को रखकर बंद कर दिया जाए। संसार खतम हो जाएगा पर गीता तो बच

जाएगी।' आचार्य के पूछने पर कि गीता के आदर्श को कितना जीवन में उतारा है, तो पता चला—'कुछ भी नहीं, हां, श्लोक कंठस्थ याद हैं।' आचार्य ने कहा—'गीता ग्रंथ को बचाने की जरूरत नहीं। गीता के वचनों पर चलो। जब हम बच जाएंगे तो गीता अपने आप बच जाएगी।'

सिद्धांत : सिर्फ शास्त्रों को रटने से बचाकर रखना नहीं है, उनके आदर्शों पर चलकर वैसा ही बनना है। अगर हम बन गए तो सारा संसार बना ही पड़ा है।

4. देहध्यास के दृष्टांतों की सूची

560. राम ने अपना नाम रखा श्याम
561. रामतीर्थ बाजार में गिरे
562. राजा कुरुपता पर हंसा

ॐ कामयाबी की ॐ
पांच निशानियां

1. अपने आनंद का अनुभव कर मन खुशी से झूम उठे।
2. मन इंद्रियों को रोकने में रस आए।
3. कभी भी किसी में अवगुण न दिखाई दे।
4. सेवा, करुणा, निष्काम करके भूल जाए।
5. दिल के साज पर हमेशा आनंद का गीत बजता रहे।

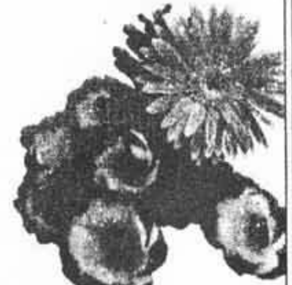

देहध्यास मिटाना

560. राम ने अपना नाम रखा श्याम

एक सेठ के पास राम नाम का लड़का नौकरी करता था। सेठ उसको बहुत गाली देता था। वह किसी संत के पास गया और अपनी बात सुनाई। संत ने कहा—'अपना नाम बदली करके श्याम रख, राम को गाली मिले तो तू समझना मैं तो श्याम हूं।' तब से सेठ जब भी गाली दे उसे लगे नहीं और वह बहुत प्रसन्न रहने लगा। सेठ के कारण पूछने पर वह बोला—'मैं श्याम हूं आप तो राम को गाली देते हैं, मुझे थोड़े ही।'

सिद्धांत : अपने को देह समझते हैं तो सब बातें लगती हैं।

561. रामतीर्थ बाजार में गिरे

एक बार रामतीर्थ बाजार में गया तो रास्ते में केले के छिलके पर पैर फिसल गया। वहां बाजार के सब लोग जोर-जोर से हंसने लगे। तो रामतीर्थ भी हंसने लगा। सब लोगों ने कहा—'आप क्यों हंस रहे हो?' रामतीर्थ ने

पूछा—'आप क्यों हंस रहे हो?' सबने कहा हम तो रामतीर्थ पर हंस रहे हैं जो फिसल गया। रामतीर्थ ने कहा—'मैं भी इस मूर्ख रामतीर्थ पर हंस रहा हूं जो देखकर नहीं चलता।'

सिद्धांत : देह से न्यारापन हो तो ऐसा।

562. राजा कुरुपता पर हंसा

एक राजा दरबार में कवि की कुरुपता पर हंस दिया। कवि ने पूछा—'तू मिट्टी पर हंस रहा है कि उसके बनाने वाले कुम्हार ईश्वर पर। मिट्टी तो तेरे शरीर में भी है। इसके कारीगर को हंसी उड़ाना तो बड़े साहस का काम है।'

सिद्धांत : जब वही सब करने वाला है तो Credit, Discredit सभी ईश्वर का है।

5. आसक्ति मिटाना—वैराग्य के दृष्टांतों की सूची

563. धन का परिणाम हिंसा
564. हीरे-जवाहरात का थाल परोसा
565. राजा भर्तृहरि का मिठाई का मन
566. रामकृष्ण ने अपने से हिसाब किया
567. लड़की ने शेर को पाला
568. हिरणी का दूध राजा को पिलाया
569. अपना ही खून बेवफा
570. लक्ष्मी वरदान देना चाहती है
571. स्त्री की सुन्दरता देखने के लिए उल्टा चलता था
572. भक्त ने पुत्र के मर जाने में भी भगवान का उपकार माना
573. तुलसीदास जी को वैराग्य आया
574. शमशानी वैराग्य
575. पिंगला वेश्या का वैराग्य
576. सांसारिक मित्रता—तू कहे तो खून दूं

आसक्ति मिटाना के अन्य दृष्टांत

540. दयानंद ने महाजन को जगाया

ॐ सुबह उठकर कौन सा विचार करें? ॐ

आज का विचार

1. आज सबसे मधुर व्यवहार करेंगे।
2. आज किसी से किसी की निंदा नहीं करेंगे।
3. आज जो भी होगा उसे ईश्वर की कृपा समझेंगे।
4. आज पूरा दिन भगवान का सिमरन करेंगे।
5. आज पूरा दिन सच बोलेंगे।
6. आज अपने को ज्यादा-से-ज्यादा सुधारने की कोशिश करेंगे।
7. आज सभी को प्यार करेंगे।
8. आज हर क्षण भगवान का नाम जपेंगे।

आसक्ति मिटाना-वैराग्य

563. धन का परिणाम हिंसा

दो दरिद्र ब्राह्मण भाई थे। बहुत कम पढ़े-लिखे थे पर आपस में बहुत प्यार था। गरीबी से ऊबकर दोनों घर छोड़कर समुद्र के किनारे एक मछुआरे की बस्ती में पहुंचे। उनकी ऊंची-ऊंची पगड़ियां, लम्बे तिलक और बड़ी-बड़ी पोथियां देखकर सीधे-सादे मछुआरे ठगे गए। कुछ ही दिनों में उन्होंने काफी धन कमा लिया। यह धन सोने की मोहरों के रूप में था।

दोनों भाई बारी-बारी से मोहरों की थैली अपने पास रखते और विचित्र बात यह थी कि जिसके पास थैली होती उसी के मन में विचार आता कि यदि मैं अपने भाई को मार दूं तो पूरा धन मेरा हो जाएगा। पर दोनों में गहरा प्रेम था तो एक जाकर बोला कि—'भैया, माफ करना जब-जब यह थैली मेरे पास आई तब-तब मेरे मन में तुम्हें मारने का खयाल आया। इसलिए यह धन तुम्हीं अपने पास रख लो।' दूसरे ने कहा—'मेरी भी यही दशा है। बेहतर है कि हम इस धन का ही नाश कर दें।'

घर के पास कचरे का गड्ढा था, उन्होंने वह थैली वहीं फेंक दी। उसे ढकने की भी जरूरत न समझी। थोड़ी देर में बहन आई और सोने की मोहरें देख उन्हें बटोरने लगी। भाभी ने देखा ननद कचरे के गड्ढे के पास न जाने क्या कर रही है। वह पास गई तो ननद ने समझा, इसने धन देख लिया तो हाथ में फल काटने की छुरी थी वह भाभी के पेट में घुसा दी। भाभी की चीख सुनकर उसका पति भागा-भागा आया तो बहन को अपनी करतूत पर अफसोस हुआ और उसने उस छुरी से खुद को भी मार डाला।

सिद्धांत : पाप से कमाए धन को फेंक देने पर भी अनर्थ हो जाता है। लोभ पाप का बाप है।

564. हीरे-जवाहरात का थाल परोसा

यूनान का राजा दूसरे देश पर चढ़ाई कर रहा था। एक रात, खेमे में राजा ने वजीर को आदेश दिया कि भोजन की व्यवस्था करो। विवेकी वजीर ने थाल में हीरे-जवाहरात भरकर रेशमी रूमाल से ढककर राजा के आगे पेश किया। राजा ने गुस्से में कहा—'क्या ये मेरी भूख मिटा सकते हैं?' वजीर शांत स्वर में बोला—'चावल तो अपने देश में भी था। यहां तो आप इसके लिए ही आए हैं, तो ये ही आपकी खिदमत में पेश है।'

सिद्धांत : गुरु समय पर Money Useless करके दिखाता है।

565. राजा भर्तृहरि का मिठाई का मन

भर्तृहरि राजा थे—राजपाट से वैराग्य हो जाने पर फकीर हो गए। एक बार वे शहर से गुजर रहे थे तो हलवाई की दुकान देखी। मिठाई खाने का मन हुआ। हलवाई ने कहा पैसे दो।

जंगल में जाकर सारा दिन लकड़ी काटी, पैसे लेकर हलवाई से मिठाई ली। सोचा, साधु के कपड़े पहने हैं, यहां लोग देखेंगे, शहर से दूर जाकर एकांत में खाऊं। मन कहता था अभी खाओ। भर्तृहरि और मन के बीच संघर्ष शुरू हो गया। बोले—'हे मूर्ख मन, तूने मिठाई के लालच में आज जंगल में लकड़ियां चुनी, क्या घर में इन चीजों की कमी थी? ठहर अब तेरी खबर लेता हूं।' तब उन्होंने मिठाई का एक दाना उठाया, मन को दिखा-दिखाकर तरसा-तरसाकर नदी में फेंक दिया। मन को कुछ भी नहीं दिया और कहा—'ऐ पापी मन, तूने राजपाट सब त्यागा पर कामना नहीं त्यागी। तुझे धिक्कार है।'

सिद्धांत : गुरु का हाथ है तो मन की हार तेरी विजय है।

566. रामकृष्ण ने अपने से हिसाब किया

एक दिन रामकृष्ण परमहंस को सपने में सोने की अंगूठी, रेशमी कुर्ता और हुक्का दिखा। अगले दिन वे शिष्यों के बीच मौन बैठे थे तो शिष्यों ने पूछा—'क्या बात है?' रामकृष्ण जी ने कहा—'एक सोने की अंगूठी लाओ, एक रेशमी कुर्ता और हुक्का लाओ।' फिर इन तीनों चीजों को लेकर वे समुद्र तट पर बैठे। पहले अंगूठी पहनी, अपने को विचार दिया कि

यह सब यहीं रहने वाली है—एक-दो बार पहना, उतारा, फिर समुद्र में फेंक दी। फिर कुर्ता हाथ में लिया—स्पर्श किया—मन को ज्ञान दिया—फिर हुक्के को होंठों से लगाया—गुड़गुड़ाया फिर उन्हें भी समुद्र में फेंककर अपनी तीनों पकड़ से ऊपर उठकर स्वच्छ हो गए।

सिद्धांत : सपना हमारी छिपी हुई वासना का परिचय देता है। हमारा काम है ज्ञान की तलवार से उन वासनाओं को काटते रहें। यही मोक्ष का सुगम साधन है।

567. लड़की ने शेर को पाला

एक लड़की को कहीं से शेर का छौटा-सा बच्चा मिल गया। वह बहुत प्यारा था, तो लड़की ने उसे पाल लिया। सबने कहा ऐसा न करो, पछताना पड़ेगा। पर लड़की उसके मोह में आ गई थी। शेर जब कुछ बड़ा हुआ तो एक दिन उसने लड़की को खरोंच लगाई पर लड़की ने बात टाल दी। फिर एक दिन थोड़ा काटा पर लड़की ने सोचा ऐसे ही हो गया। आखिर एक दिन उसी शेर ने लड़की को बहुत काट खाया।

सिद्धांत : संसार में जिसे अपना समझते हैं, वे ही काट खाते हैं।

568. हिरणी का दूध राजा को पिलाया

एक संत ने राजा को हिरणी का चौथा हिस्सा दूध पीने को दिया, तीन हिस्सा खुद पिया, तो राजा को सारी रात ऐशो-आराम

के सपने आए। सुबह को राजा ने संत से कहा—'मुझे सारी रात सपने आए। आपने जो ज्यादा दूध पिया, आपको सपने नहीं आए?' संत ने कहा कि—'मुझे बहुत ही बुरा सपना आया कि अड़तालिस घण्टे में तेरी मौत हो जाएगी।' दूसरे दिन राजा को पूरा का पूरा हिरणी का दूध पीने को दिया तो भी राजा को नींद नहीं आई। दूसरे दिन संत ने राजा से पूछा—'आपको रात को नींद आई?' राजा ने कहा—'मैं कैसे सो सकता हूं? मौत के भय से सारी रात नींद नहीं आई।'

सिद्धांत : जिसे मौत याद है वो माया के ऐशो-आराम में गुम नहीं हो सकता।

569. अपना ही खून बेवफा

एक बार जंगल में एक रानी ने खूबसूरत हिरण देखा तो राजा से कहा—'मुझे इसकी छाल चाहिए।' राजा उसके पीछे हो लिया। उसने तीर मारा जो हिरण को लगा पर हिरण मरा नहीं, उठकर भाग गया। राजा के हाथ न आया। रानी ने फिर कहा कि—'मुझे तो उसकी छाल से ही वस्त्र बनाने हैं।' राजा हिरण को ढूंढ़ने निकल पड़ा। इतना जंगल, कहां ढूंढ़े? फिर देखा, ताजा खून पड़ा हुआ है। खून के सहारे सीधे उस गुफा तक पहुंच गया जहां हिरण छुपा था। हिरण ने पूछा—'तुमने कैसे ढूंढ़ा?' राजा ने बताया खून के निशान से। हिरण बोला।

सिद्धांत : हिरण बोला—'जब मेरा अपना खून ही बेवफा हो गया तो जिसके मोह में तुम मुझे मार रहे हो, क्या वह बेवफा नहीं होगा?'

570. लक्ष्मी वरदान देना चाहती है

एक फकीर ने सच्चे दिल से तपस्या की तो भगवान प्रसन्न हो गए और लक्ष्मी को बोले इसे वरदान दे आओ। लक्ष्मी जी फकीर के सामने प्रकट हुईं और बोलीं—'नारायण तुझ पर प्रसन्न हैं, मांग क्या चाहता है?' फकीर बोला—'मुझे कुछ नहीं चाहिए।' पर लक्ष्मी ने कहा—'तू सोचकर रख मैं कल फिर आऊंगी।' फकीर सारी रात सोच में पड़ गया। उसे नींद भी न आई। अगले दिन सवेरे लक्ष्मी जी आईं तो फकीर ने कहा—'अभी तो आप आईं भी नहीं कि मेरी नींद चली गई। बेहतर हो आप न आएं।'

सिद्धांत : संत लक्ष्मी को दूर से ही नमस्कार करते हैं।

571. स्त्री की सुन्दरता देखने के लिए उल्टा चलता था

एक ब्राह्मण अपनी स्त्री की आंखों पर मुग्ध था। वह एक पल भी उन्हें देखे बिना न रह सकता था। एक बार वे लोग तीर्थ के लिए गए जहां भगवान के मंदिर की मूर्ति बहुत सुन्दर थी, पर वह ब्राह्मण तो स्त्री की आंखों पर इतना मुग्ध था कि उसे और कुछ होश ही न था। उसने स्त्री के लिए हाथी की सवारी की और खुद पैदल उल्टा होकर चलने लगा जो कि वह हर समय उसे निहार सके। वहां के मंदिर के पुजारी विवेकी थे। उन्होंने अपने चेलों से कहा कि—'उस ब्राह्मण को हमारे पास ले आओ।' फिर उन्होंने उससे उल्टे चलने का कारण पूछा। ब्राह्मण बोला—'मुझे अपनी पत्नी

की आंखें बहुत सुन्दर लगती हैं और मैं हमेशा उन्हें देखता रहना चाहता हूं।'

पुजारी ने कहा—'ठीक है, कोई बात नहीं, पर तुम शाम की आरती के समय मंदिर आ जाना।' वह वहां आरती के समय पहुंच गया तो पुजारी ने उसे अन्दर अपने पास बुला लिया और वहां से दीपक के झिल-मिल प्रकाश में जब ब्राह्मण ने भगवान की आखें देखी तो वह उन पर मुग्ध हो गया। फिर पत्नी की आंखों से उसका मन हट गया। पत्नी को भी उसने यह बता दिया तो वह भी धीरे-धीरे भगवान की तरफ खिंच गई। ब्राह्मण की बहुत सच्चाई और श्रद्धा थी इसलिए पुजारी उसे अपने पास रखता था। इससे और चेलों को ईर्ष्या हो गई। पुजारी ने सोचा इन्हें असलियत दिखानी चाहिए।

एक दिन उसने अपने दो वफादार शिष्यों से कहा कि सब कपड़े जब रस्सी पर सूखने के लिए डालेंगे तो तुम उन सब को फाड़ देना और किसी को मालूम न होने पाए। अगले दिन जब सबने अपने कपड़े फटे हुए पाए तो आपस में सब लड़-भिड़ लिए और इतना झगड़ा किया कि सड़कों पर भी मालूम पड़ गया कि आज कुछ गड़बड़ हुई है। फिर पुजारी ने उन्हीं दो शिष्यों से कहा कि इस ब्राह्मण के घर से सब कुछ चुरा लाओ। वे लोग रात में गए जब ब्राह्मण मंदिर की सेवा में लगा था। सब धन-दौलत ले लिया और स्त्री जो सो रही थी, उसके गहने भी लेने लगे। एक तरफ से सब उतार लिए तो स्त्री ने करवट ली तो ये लोग समझे यह जाग रही है तो उतना

ही सामान ले भागे। इतने में ब्राह्मण मंदिर के काम से निपटकर घर पहुंचा। सच्ची भक्ति करने से इसका अंतःकरण साफ हो गया था। यह चोर में भी अपनी ही आत्मा देखता। स्त्री ने उसे सब बात बताई तो ब्राह्मण बोला कि—'तुम्हारे में अभी भी लोभ रह गया है कि जो तुमने चोरों को दूसरी तरफ के गहने नहीं लेने दिए।' स्त्री बोली कि—'आगे से मैं और सावधान रहूंगी कि उन्हें ये न लगे कि मैं जाग रही हूं। असल में मैंने करवट इसलिए ली थी कि वे दूसरी तरफ के भी उतार लें।' दोनों शिष्य बाहर खड़े पति-पत्नी की बातचीत सुन रहे थे। उन्होंने सब पुजारी जी को बताया। पुजारी जी ने अपने बाकी शिष्यों को सब रहस्य बताया तो सब पानी-पानी हो गए और उनके अन्दर की ईर्ष्या भी खतम हो गई।

सिद्धांत : सुन्दर में सुन्दर भगवान है। उसे दिल में बैठाने से अन्दर की सारी सफाई खुद हो जाती है।

572. भक्त ने पुत्र के मर जाने में भी भगवान का उपकार माना

एक भक्त के एक ही पुत्र था। पुत्र बड़ा सदाचारी व धर्मात्मा था और भक्त को बहुत प्यारा था। एक दिन अचानक वह मर गया और भक्त ने इसमें भी भगवान का उपकार ही माना। लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ। उन्होंने भक्त से मौत का जरा भी दुख न लगने का कारण पूछा, उसने कहा—'मालिक के बगीचे में लगा हुआ सबसे सुन्दर फूल

ही माली अपने मालिक को देकर खुश होता है या रोता है? तो ऐसे ही मेरा तो कुछ है ही नहीं सब भगवान का है। कुछ दिन के लिए उनकी एक चीज मेरी संभाल में थी और मैंने जी-जान से उसकी संभाल की। आज उन्होंने अपनी चीज वापस ले ली है तो मुझे खुशी हो रही है, और उपकार मैं इसलिए मान रहा हूं कि मैंने उनकी चीज को कई बार अपनी मान लिया था, मेरे मन में बेईमानी आ गई थी, उसकी देखभाल में भी मुझसे कई बार भूलें हो गई थीं, तो भी आज प्रभु ने मेरी भूलों की ओर ध्यान न देकर मुझसे कोई शिकायत नहीं की है।' अब यह सुनकर लोगों की समझ भी खुल गई।

सिद्धांत : आदमी 'मेरा' मान के बैठता है फिर सारी जिंदगी दुख भोगता है। पहले ही समझ जाएं—मेरा कुछ भी नहीं, सब तेरा है।

573. तुलसीदास जी को वैराग्य आया

तुलसीदास जी का अपनी पत्नी रत्नावली से बहुत प्यार था। वे उसके बिना एक दिन भी नहीं रह सकते थे। एक दिन जब वे भिक्षा लेने के लिए निकले (क्योंकि वे ब्राह्मण थे) तब रत्नावली चुपचाप अपने मायके चली आई। उधर तुलसीदास भिक्षा लेकर लौटे तो पत्नी को न देखकर अधीर हो गए।

इधर-उधर पूछने से मालूम पड़ा कि वह तो अपने मायके चली गई है। प्रेम में पागल वे उसी समय रात को स्त्री के पास

उसके मायके पहुंचने के लिए निकल पड़े। बरसात की रात थी, पर उनका Will इतना Strong था कि उनको नदी में बहती हुई एक नाव दिखी जिस पर वो बैठ गए और नदी से पार हो गए। असल में वह तैरता हुआ मुर्दा था जिसको नाव समझा। स्त्री के घर पहुंचे तो सब दरवाजे बंद और सब लोग सो रहे थे तो उन्होंने देखा एक रस्सी छज्जे से लटक रही है।

वह रस्सी असल में सांप था। उसी के सहारे वो ऊपर पहुंच गए और रत्नावली को आवाज दी। रत्नावली ने उन्हें फटकार कर कहा कि—'इस हाड़-मांस की पुतली से जितना आपको प्यार है उतना ही अगर परमात्मा के लिए होता तो अब तक आप तर गए होते।' यह सुनते ही तुलसीदास का विवेक जाग गया और वे उसी समय उल्टे पैर चले गए। गहरा पुरुषार्थ करके प्रभु प्रेम में लीन हो गए। फिर लोकों के हित के लिए उन्होंने साधारण भाषा में रामचरित मानस लिखा जो आज भी सबको सही मार्ग दिखाता है।

सिद्धांत : वैराग्य को पकड़कर रखें तो मुक्ति के मार्ग पर जल्दी ही उन्नति होगी।

574. शमशानी वैराग्य

एक बार एक आदमी कबीर को ढूंढ़ता हुआ उसके घर पहुंचा। औरत ने कहा—'वे तो शमशान गए हुए हैं।' आदमी ने कहा—'मैं कबीर को श्मशान में इतने लोगों के बीच कैसे पहचानूंगा?' औरत बोली—'तुम पहचान जाओगे,

क्योंकि सब लोगों को तो शमशानी वैराग्य होगा, पर जिसे सच्चा वैराग्य होगा, वह ही कबीर हैं।' आदमी श्मशान घाट पहुंचा तो देखा कई लोग शांत बैठे हैं पर थोड़ी ही देर में सब उठ गए। अपने काम-काज की बातचीत करने लगे पर एक आदमी कोने में मौन धारण किए विरक्त बैठा था। आदमी समझ गया कि ये ही कबीर हैं।

सिद्धांत : सच्चा वैराग्य ज्ञान से आता है जो हमेशा रहता है। शमशानी वैराग्य तो हालत आने पर थोड़ी ही देर रहता है।

575. पिंगला वेश्या का वैराग्य

अत्यंत रूपवती पिंगला वेश्या आज की रात अपने प्रियतम की इंतजार में सोलह शृंगार करके बैठी है। जिस वेश्या की एक झलक पाने के लिए शहर के धनवान हजारों लुटाने को तैयार रहते हैं, वही आज अपने प्रेमी की राह ताक रही है! रात की एक-एक घड़ी बीतती गई पर वह न आया। पिंगला को अपने रूप से, धन-दौलत से, दुनिया से गहरा वैराग्य आ गया। पता नहीं कौन से शुभ कर्मों का फल निकला जो उसके हृदय में यह भाव उठा कि इतनी इंतजार मैंने भगवान के लिए की होती तो आज मेरा जीवन बन गया होता। उसके जीवन ने नया मोड़ ले लिया।

सिद्धांत : जब प्रेमी भगवान है तो न इंतजारी है न बेकरारी, क्योंकि वह तो सदा हृदय में बसता है।

576. सांसारिक मित्रता—तू कहे तो खून दूं

एक युवक बारिश में कीचड़ हो जाने के कारण फिसलकर गिर गया और सिर में काफी चोट लगी।

एक सज्जन ने उसे अस्पताल में भर्ती कराकर सिर में टांके लगवाकर उपचार कराकर घर में छोड़ा और युवक से कहा—'आपका कोई सम्बंधी हो तो उसे बुलाएं।' युवक ने कहा—'यहां इस समय एक मित्र के अलावा मेरा कोई नहीं है।' युवक ने मित्र को फोन किया, सारा हाल बताया कि काफी चोट आई है...! मित्र ने कहा—'अरे रे, तू कहे तो खून दूं।' युवक ने कहा—'नहीं-नहीं रे, कुछ नहीं, बस तू यहां आ जा।' मित्र ने कहा—'बारिश बहुत पड़ रही है, मेरे पास छतरी भी नहीं है, कैसे आऊंगा? मैं नहीं आ सकता यार।'

सिद्धांत : समय पर सत्गुरु के सिवाय दूसरे काम नहीं आते। यह समय जगत से वैराग्य लेने का और परमात्मा से जुड़ने का है।

6. ब्रह्मज्ञानी के दृष्टांतों की सूची

577. सीधी-सादी बात हृदय में पहुंचती है
578. सदना कसाई के हाथ कटना
579. संत की आंख का पानी वेश्या पर
580. पागल ने संस्कृत बोली
581. समभाव सौदागर के घोड़े वापस
582. संत ने सिकंदर को जवाब दिया
583. संन्यासी कैसा होता है

ॐ गुरु के वचन ॐ

- ❖ खाएं — इत्मीनान से
- ❖ जीएं — हौसले से
- ❖ बोलें — विनम्रता से
- ❖ बात सुनें — ध्यान से
- ❖ गाना गाएं — तान से
- ❖ विचारें — समझदारी से
- ❖ खर्च करें — मन से

ब्रह्मज्ञानी

577. सीधी-सादी बात हृदय में पहुंचती है

अड़तालीस साल काशी में रहकर वेद का पठन करनेवाले विद्वान एक दिन कबीर के पास गए और प्रश्न किया—'हम इतने सालों से वेद पढ़ रहे हैं कि हमारे रोम-रोम में रचनाएं बसी पड़ी हैं, फिर भी मेरी बातें लोगों के पल्ले नहीं पड़तीं और आपकी सीधी-सादी बातें उनके हृदय को पहुंच जाती हैं। इसका रहस्य क्या है?' कबीर जी बोले—'बुरा तो नहीं लगेगा?' 'नहीं,' वे बोले, तो कबीर जी ने कहा—'सुनो, तुम कहते हो कागज लेखी, मैं कहता हूं नयन देखी। तुमने तैरने पर पुस्तक पढ़ी है पर पानी में छलांग नहीं लगाई है। मैंने जो अनुभव किया है वही कहता हूं।' यह सुनकर पंडितों ने कबीर के कदम पकड़ लिए।

सिद्धांत : सवाल है अनुभव का, प्रेम का, सादा जीवन और उच्च विचार का। 'संत की महिमा वेद न जाने।' पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय। जब तक आत्मा में छलांग नहीं लगाई तो अनुभवी प्रेम से तुम दूर हो।

578. सदना कसाई के हाथ कटना

एक बार सदना कसाई के पास एक औरत आती है और उस पर आशिक हो जाती है, लेकिन वो परमात्मा में इतना लीन होता है कि उस औरत की तरफ उसकी नजर ही नहीं जाती है। उस औरत ने समझा शायद मुझे इसलिए नहीं अपनाता है कि मैं शादी-शुदा हूं। वो उस पर इतनी आशिक हो जाती है कि उसे पाने के लिए वो अपने पति का खून करके आती है। जिस काती से सदना बकरा काटता था उस काती से पति को मार डालती है और उसके सामने आकर खड़ी हो जाती है कि अब हम दोनों आजाद हैं—मैं अपने पति को मारके आई हूं। लेकिन फिर भी सदना उसकी बात नहीं सुनता और अपने में ही मग्न रहता है। यह देखकर उसको पछतावा होता है और सबके सामने जोर-जोर से बोलती है कि सदने ने मुझे पाने के लिए मेरे पति का खून कर दिया। यह दोष सदना के ऊपर लगने के कारण उसके दोनों हाथ काट दिए गए। फिर भी वो मौन-शांत रहता है, जैसी प्रभु आपकी इच्छा, तेरा भाणा मीठा लागे!

सिद्धांत : सच्चे भक्त अपना सबूत नहीं देते।

579. संत की आंख का पानी वेश्या पर

एक ब्रह्मज्ञानी महात्मा आत्मानन्द में लीन सड़क के किनारे बैठा था। उस मार्ग से एक साहूकार का बेटा एक वेश्या के हाथ में हाथ डाले आ रहा था। वह वेश्या अपने

रूप और कपड़ों की साज-सज्जा के गर्व में चूर थी। संयोगवश जिस समय ये दोनों महात्मा के सामने से गुजर रहे थे उसी समय संत ने अपनी आंखों से बहता हुआ पानी उंगली से पोंछकर झिटक दिया। उसकी बूंदें वेश्या की कीमती साड़ी पर आ गिरीं। वेश्या को गुस्सा आ गया और उसने नौजवान को झड़काया कि आपके रहते इस फकीर की यह हिम्मत कैसे हुई। नौजवान भी जोश में आ गया और फकीर को तीन थप्पड़ मार दिए। महात्मा शांत स्वरूप अपने आनन्द में ही लीन रहे। पर महात्मा का निरादर करने की सजा तो भुगतनी ही पड़ती है! घर पहुंचते-पहुंचते नौजवान के पेट में असहय दर्द हो गया और देखते ही देखते उसके प्राण निकल गए।

वेश्या समझ गई कि हो न हो यह संत को थप्पड़ लगाने का नतीजा है।

वह भागी-भागी महात्मा के पास पहुंची और उनके चरणों में गिरकर माफी मांगने लगी। सारा हाल जानकर महात्मा ने कहा—'इसमें तुम्हारा क्या दोष है? वह नौजवान तुम्हारा यार था, उसने मुझे मारा। मेरा यार जो है उसने उसे पूरा ही खत्म कर दिया, क्योंकि वह सर्वसमर्थ है। इसमें तुम्हारी या मेरी कोई बात ही नहीं है। तुम अपने आप को दोषी न ठहराओ।'

सिद्धांत : (i) ब्रह्मज्ञानी अभय-दान करते हैं।
(ii) भक्त के लिए भगवान खुद लड़ाई करने आते हैं।

580. पागल ने संस्कृत बोली

20–25 साल पहले अमृतसर में शास्त्रीय अध्ययन चल रहा था। वहीं पर आठ-दस साल से एक पागल-सा आदमी फटे कपड़े पहने बैठा रहता था। वह भीख मांगकर खाता था। एक दिन जब अद्वैत-सिद्धि का पाठ चल रहा था तो जो पढ़ रहे थे वे रुक गए—उनको पंक्ति का अर्थ समझ नहीं आया था। झट से वह पागल खड़ा हो गया और उसने उस लाइन का सुन्दर अर्थ समझाया। सब लोग अवाक रह गए कि जिसे हमने पागल समझा था वह ब्रह्मज्ञानी निकला। लेकिन यह क्या हुआ, मैंने संस्कृत बोलकर कितनी मूर्खता की, इस भाव से महात्मा दुखी हुआ और अज्ञात स्थान में चला गया।

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी कभी अपने को प्रकट नहीं करना चाहता।

581. समभाव सौदागर के घोड़े वापस

एक सौदागर अपने घोड़ों के झुंड को लेकर जा रहा था। एक फकीर की नजर उन पर पड़ी और उसकी नियत बिगड़ गई। उसके दिल में आया कि मैं इनका स्वामी क्यों न बनूं? उसने ऐसी चाल चली कि जब सौदागर थोड़ा आगे निकला तब उसने घोड़ों के पूरे झुंड को अपने वश करके अपने साथ भगा लाया। इधर सौदागर ब्रह्मज्ञानी था। सब घोड़ों को खोकर भी शांत स्वरूप मौन ही रहा। उधर फकीर के पास घोड़े तो

आ गए पर अब उसको फिक्र होने लगी कि इतनों की सम्भाल कैसे होगी, दाना-पानी कहां से पूरा करेगा? यह सोचकर वह सारे घोड़े फिर से सौदागर के पास छोड़ गया।

सिद्धांत : जो समानता में हो उसकी गई हुई चीज भी वापस आ जाती है।

582. संत ने सिकंदर को जवाब दिया

विश्व विजयी सिकंदर के नाम से बड़े-बड़े राजा भी कांपते थे।

एक दिन वह कहीं से लौट रहा था। रास्ते में उसे एक ऊंचे दर्जे का संत मिला। सिकंदर ने प्रार्थना की कि—'महाराज आप मेरे राज्य में आकर रहिए।' मुनि ने उत्तर दिया—'ऐसा नहीं हो सकता।' सिकंदर का पारा चढ़ गया। उस साधु की इतनी हिम्मत की उसकी बात को टाल दे! तड़ककर सिकंदर बोला—'तुम जानते नहीं हो मैं कौन हूं और मेरी बात न मानने का क्या अंजाम होता है?' मुनि ने अविचलित आवाज में कहा—'क्या होता है?' सिकंदर बोला—'जो मेरे कहे को नहीं मानता है, यह तलवार उसका काम तमाम कर देती है।' साधु मुस्कराकर बोला—'किसे डराते हो? मेरे लिए न मौत का डर है, न मौत में मुझे मारने का दम है। तुम जिसे डराते हो मौत उससे डरती है। जो मौत से डरता नहीं उसका तुम कुछ नहीं बिगाड़

सकते।' सिकंदर साधु की निडरता देखकर चकित रह गया, हाथ की तलवार छूटकर नीचे गिर गई।

सिद्धांत : जो आत्मा में जग गया मौत उसे छू भी नहीं सकती।

583. संन्यासी कैसा होता है

काशी में एक महान विद्वान संन्यासी रहते थे, विशुद्धानन्द सरस्वती। एक राजा उनका दर्शन करने आए तो देखा, यहां तो राजसी ठाठ-बाट से रहते हैं! राजा ने पूछा—'स्वामी जी, संन्यासी के लक्षण क्या हैं?' स्वामी जी ने सेवक को बुलवाया और राजा को मठ से बाहर निकलवाकर द्वार बंद करवा दिया। राजा श्रद्धालु था। सर्दी के दिन होने पर भी वह पूरी रात दरवाजे पर हाथ जोड़े बैठा रहा। सवेरे फाटक खुला तो राजा की श्रद्धा देखकर स्वामी जी ने राजा को भीतर बुलाया और बोले—'इसका नाम संन्यासी है जो तुम्हारे जैसे राजा को भी कुछ गिनता नहीं है।'

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी अपनी प्रकृति अनुसार जीवन व्यतीत करता है। ज्ञान होने पर वह चाहे तो याज्ञवल्क्य की तरह संन्यास ले, या वशिष्ठ की तरह गृहस्थ में रहे, या दत्तात्रेय की तरह अवधूत रहे या श्रीकृष्ण की तरह भोग में रहते हुए भी योग में रहे।

7. समदृष्टि-समभावना के दृष्टांतों की सूची

584. कुत्ते के लिए हृदय में प्रेम
585. सिख ने समानता से पानी पिलाया

8. स्वभाव संस्कार के दृष्टांतों की सूची

586. राजा बली का दान संस्कार
587. शराब पीने के लिए मना करतो है

स्वभाव संस्कार के अन्य दृष्टांत

599. आसुरी स्वभाव वाला
665. महावीर के संस्कार

ॐ दादा के विचार ॐ

1. मुक्ति का द्वार— सत्संग।

2. मुश्किलों की चाबी— हिम्मत और धीरज।

3. सम्बंधियों की वफाई— विपरीत परिस्थितियों और दिवाला निकलने पर।

4. संसार में सुखी होने का उपाय— आत्मज्ञान और श्रेष्ठ गुण!

समदृष्टि-समभावना

584. कुत्ते के लिए हृदय में प्रेम

मदन मोहन मालवीय जी के बारे में प्रसिद्ध है कि 'वे सिर से पैर तक हृदय ही हृदय हैं।' उस समय वे एक विद्यार्थी थे। उन्होंने देखा, एक कुत्ते के कान के पास एक घाव हो गया है। वह पीड़ा से छटपटाता हुआ इधर से उधर भाग रहा है।

और लोग कुत्ते को देखकर उधर से मुंह फेर लेते थे, पर मालवीय जी ने अपना काम छोड़ा और दौड़कर दवा की दुकान पर गए। वैद्य ने दवा तो दी पर सचेत किया कि ऐसे कुत्ते ज्यादातर पागल हो जाते हैं, तुम इस खतरे में न पड़ो तो अच्छा है। पर मालवीय जी के हृदय में करूणा का स्त्रोत बह रहा था। वे एक लम्बा-सा बांस लाए। उस पर कपड़ा बांधकर मरहम लगाई। फिर दूर से कुत्ते के कान पर लगाई। दवा से दर्द में राहत पाकर वह सो गया। फिर मालवीय जी अपने काम पर चले गए।

सिद्धांत : जब दिल में किसी के लिए दर्द होता है तो युक्ति आ ही जाती है कि कैसे पीड़ा निवारण करें।

585. सिख ने समानता से पानी पिलाया

गुरु गोविन्द सिंह के समय में जब लड़ाई छिड़ी हुई थी तो एक शिष्य के ऊपर पानी पिलाने का काम सौंपा गया था।

जब वह पानी पिला रहा था तो एक दुश्मनों की तरफ का आदमी भी पानी पीने को आ गया। इस शिष्य ने उसे भी पानी पिला दिया। तब कोई और शिष्य भागा-भागा गुरु के पास गया और बोला कि यह दुश्मन को भी पानी पिला रहा है। तब गुरु ने वहां आकर उससे कारण पूछा। सिख ने गुरु से कहा कि आपने मुझे पानी पिलाने की सेवा दी है तो मैं इस बात में द्वैत क्यों करूं? अगर आपने मुझको लड़ाई का काम सौंपा होता तो और बात थी। यह सुनकर गुरु बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि उन्हें तो ऐसा अद्वैत वाला जिज्ञासु ही चाहिए था।

सिद्धांत : जितनी अद्वैत वाले गुरु की महिमा है उतनी ही अद्वैत वाले सिख की जरूरत है।

8. स्वभाव संस्कार

586. राजा बलि का दान का संस्कार

राजा बलि पहले जन्म में बहुत अय्याश और प्रमादी था। उसमें जुआ, चोरी, ठगी सब अवगुण और विषय विकार थे। साधु संतों की निंदा और उन्हें दुख देना यह उसका रोज का काम था। वह धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म समझता था।

एक रात वह फूलों का हार और हाथ में तेल, फुलेल लेकर एक वेश्या को देने को जा रहा था। बरसात की रात थी। रास्ते में कीचड़ में वह गिर पड़ा और बहुत कोशिश करने पर भी फूलों को कीचड़ से न बचा सका। अब सोचने लगा, यह कीचड़ लगे हार मैं वेश्या को कैसे भेंट कर सकता हूं। रास्ते में एक शिव मंदिर पड़ा। शिवजी की मूर्ति पर हार और इत्र चढ़ाकर उसने नए हार लिए और वेश्या को भेंट कर दिए। ऐसे ही विषय विकारों में उम्र बीत गई। मरने के बाद धर्मराज के दरबार में उसका हिसाब खोला तो निकला कि इसने सारी उम्र कुकर्म किए हैं केवल एक बार शिवजी को हार और इत्र चढ़ाया। इस शुभ कार्य का फल उसे यह मिला कि तीन घंटे के लिए इसे इन्द्र की पदवी मिली। धर्मराज ने पूछा—'पहले बुरे कर्मों का फल चाहिए या शुभ कर्म का।' वह बोला शुभ कर्म का। अब इंद्र की पदवी मिली तो इसने विचार किया

कि इस समय को धर्म के काम में लगाएं। जब इंद्राणी उसको आजमाने आई तो हाथ जोड़कर बोला—'हे माते, मैंने विषय विकार बहुत भोगे हैं। आप तो मेरी माता हो।' फिर उसने कामधेनु गाय और कल्पवृक्ष ऋषियों को दान कर दिया। इसी प्रकार उदार चित हो उसने बहुत से दान-पुण्य कर दिए। उस समय उसके पास अप्सराएं, गंधर्व, वैभव-सम्पत्ति सब था, लेकिन वह धर्म के मार्ग में टिका रहा। इसका नतीजा यह हुआ कि उसको अगला जन्म राजा बलि का मिला जिसमें उसका दान-पुण्य का संस्कार बना रहा।

सिद्धांत : सेवा सामने आए तो खुले दिल से पूरी करो तो कंजूसी का संस्कार खत्म हो जाएगा और हृदय में उदारता का फूल खिल जाएगा।

587. शराब पीने के लिए मना करती है

एक पत्नी कई सालों तक अपने पति को शराब पीते हुए देखती रही और उसे टोकती रही कि शराब मत पियो, पर पति की आदत न सुधरी। पत्नी तंग आकर एक संत के पास गई और पूछा कि वह क्या करे। संत ने कहा कि—'तुम तीन दिन, सिर्फ तीन दिन के लिए उससे इस बारे में कुछ न कहो।' पहले दिन पत्नी ने अपने को बहुत रोका और कुछ नहीं बोली, दूसरे दिन कह पड़ी कि आपने फिर बोतल निकाल ली? तीसरे दिन अपनी भूल बताने वह वापस संत के पास गई तो संत बोला कि तू तीन दिन अपने आपको न रोक सकी तो वह वर्षों की आदत कैसे छोड़ेगा?

सिद्धांत : हर एक अपने संस्कार लेकर आया है। हमें सुधारना नहीं, सबको समझने की कोशिश करनी है।

9. माया, लोभ, वासना के दृष्टांतों की सूची

588. श्रृंगी ऋषि कैसे रस में पड़े
589. लड़की और सांप
590. बच्चे ने कहा—बर्फ गर्म करो
591. सपने की लड़की पाना
592. कैदी को हथकड़ी का आधार
593. आदमी ने चोरी से बेर खाया
594. गरीब औरत ने संत को भोग लगाया
595. पटेल के दोनों पुत्रों की हत्या
596. पक्षी ने मोती का लालच दिया
597. जो बोलें उस पर अमल करें
598. बाहर का दिया, भीतर का अंधकार
599. तैत्रेयी ऋषि ने गुरु को ज्ञान वापस दे दिया
600. आसुरी स्वभाव वाला

माया, लोभ, वासना पर अन्य दृष्टांत

633. कौवे के संग से हंस पर दोष

ॐ सातों दिन के अनमोल वचन ॐ

1. सोमवार के दिन समता में रहो!
2. मंगलवार के दिन मौन में रहो!
3. बुधवार के दिन बुराइयों से बचो!
4. गुरुवार के दिन गुरुजी की महिमा का गुणगान करो!
5. शुक्रवार के दिन शुक्राना गाओ!
6. शनिवार के दिन शांति में रहो!
7. रविवार के दिन रिलेक्स में रहो!

माया का पर्दा

588. श्रृंगी ऋषि कैसे रस में पड़े

श्रृंगी ऋषि हमेशा अपनी साधना और तप में रहते थे। वे जंगल में रहते और आहार के लिए केवल एक पेड़ का कड़वा रस पीते। उन्हें दीन-दुनिया की फिक्र न थी। एक बार वहां के राजा ने एक बड़े यज्ञ का आयोजन किया जो श्रृंगी ऋषि के बिना पूरा नहीं हो सकता था। राजा स्वयं उन्हें बुलाने आया पर वे आने को तैयार न थे। राजा असमंजस में पड़ गया कि अब क्या करें, तो एक वेश्या ने कहा कि आप फिक्र न करें, मैं उन्हें ले आऊंगी। सबसे पहले वेश्या ने यह किया कि पेड़ पर जहां से रस टपकता था, वहां शहद की एक थैली बांध दी जिसमें से धीरे-धीरे रस के साथ शहद की मिठास श्रृंगी ऋषि को मिलने लगी। ऋषि ने सोचा यह मेरी तपस्या का फल है। एक बार रस का स्वाद आया फिर बाकी सब रस का आकर्षण भी पैदा हो गया और धीरे-धीरे वह वेश्या के बहलाव में आ गया। उन्हें बच्चे भी हो गए।

फिर जब दशरथ राजा का यज्ञ पूरा करने वे राजमहल

जाने लगे तो पीछे-पीछे उनके बच्चे और वह वेश्या भी आने लगी तो लोग देखकर हंस दिए कि यह कैसा ऋषि है!

सिद्धांत : जिज्ञासु को पल-पल की सुजागी होनी चाहिए कि कहीं भी जरूरत से ज्यादा तो वह इस शरीर को नहीं दे रहा।

589. लड़की और सांप

एक लड़की कॉलेज पढ़ने के लिए जाती थी तो उसे जंगल के रास्ते से होकर निकलना पड़ता था। जंगल में एक खास स्थान पर रोज आवाज आती थी कि तू मेरे पास आ जा। एक दिन लड़की ने अपने भाई को सारी बात बताई। कुछ दिन पहले इस लड़की का पति जो इसको हमेशा बहुत ही सताता था, भाई के हाथों मारा गया था। भाई ने कहा—'तू जवाब देना—तुम ही मेरे पास आ जाओ।' लड़की ने ऐसा किया तो एक सांप आया और उसे गले से लिपट कर डंक मार गया। लड़की खत्म हो गई।

सिद्धांत : वासना जन्म-जन्म में भटकती है।

590. बच्चे ने कहा—बर्फ गर्म करो

एक बच्चे को मां ने एक बर्फ का टुकड़ा दिया। बच्चे ने कहा—'मां मुझे ये बर्फ गर्म करके दो।' मां ने कहा—'बर्फ गर्म नहीं हो सकती।' बच्चे ने कहा—'गरम

क्यों नहीं हो सकती? दाल, सब्जी, रोटी तो गरम करके देती हो?' लड़का माना नहीं। मां ने तवे पर बर्फ रखी तो बर्फ रही नहीं, वो पिघलकर पानी हो गई।

सिद्धांत : मिथ्या जगत से सच सुख नहीं मिल सकता।

591. सपने की लड़की पाना

एक आदमी प्रतिदिन सपना देखता था कि दरवाजा खोलकर एक सुन्दर लड़की आती है, जैसे ही वो उसे पाना चाहता है, दरवाजा बंद हो जाता है। एक दिन 'वो मनोवैज्ञानिक के पास जाता है कि हर रोज मुझे यह सपना आता है तो उसने कहा—'मैं तेरा सपना तोड़ दूं तो?' उसने कहा—'यह सपना तोड़ो नहीं, लेकिन जैसे ही मैं उस लड़की से मिलने जाऊं तो दरवाजा खुला रहे और मैं उसे पा लूं।'

सिद्धांत : ऐसे ही गुरु भी कहता है कि तेरे सपने का जगत तोड़ दूं, लेकिन इस जगत में मैं सुखी हो जाऊं हम ऐसा कहते हैं।

592. कैदी को हथकड़ी का आधार

एक जेल में कई वर्षों से एक कैदी रहता था जिसका आचार-व्यवहार अच्छा था। जेलर ने उसकी अच्छी वृत्ति देखकर सरकारी अफसरों से सिफारिश की कि इसकी जेल की अवधि कम कर दी जाए। अफसर भी उसके

चाल-चलन से संतुष्ट थे तो उन्होंने लोहार को बुलाया कि इसकी बेड़ियां काट दे जिससे यह रिहा हो सके। पर यह क्या, जितनी बार जेलर बेड़ियां खोलने आता, वह कैदी बहुत घबरा जाता और गुस्से से चिल्ला-चिल्लाकर उसे भगा देता। जेलर को उसका यह स्वभाव समझ में न आया तो एक Psychiatrist को बुलाया गया। वह उसके Past में गया और भेद खुला कि इस कैदी का एकमात्र आधार उसकी हथकड़ियां ही हैं। उनके खुल जाने के डर से वह बहुत विक्षिप्त हो जाता है।

सिद्धांत : हम भी इस संसार और इसके सामाजिक व्यवहारों की बेड़ियों को ही अपना आधार मान बैठे हैं। गुरु जब अपनी उज्जवल वाणी से उसके मिथ्या ढांचे को गिराता है तो हम डरें नहीं। जो है ही मिथ्या वह हमारा क्या बिगाड़ सकता है।

593. आदमी ने चोरी से बेर खाया

एक बार एक आदमी छिपकर चोरी से बेर खा लेता है। थोड़ी देर बाद वो नटनी के पास नाच देखने जाता है तो वो नटनी गाना गाती है। गाना गाते-गाते बोलती है—'मैंने देख लिया।' थोड़ी देर बार कहती है—'मैं बोल दूंगी रे।' वो अंदर ही अंदर डरता है कि इसने मुझे देख लिया। उसके बार-बार कहने पर बोल देता है—'बोल दे, आखिर एक बेर ही तो खाया है न और क्या किया है?' ऐसे ही मन डरता

रहता है कि ये न हो जाए, वो न हो जाए। मन को बोलो, अच्छा, हो भी गया तो आखिर क्या होगा?'

सिद्धांत : मन की कमजोरी मौत है।

594. गरीब औरत ने संत को भोग लगाया

एक सच्चा संत नगर में आया तो बहुत से नगरवासी उससे प्रभावित हो तन-मन-धन से उसकी सेवा में लग गए। एक गरीब औरत भी वहां सत्संग सुनने आती थी। उसके मन में बहुत भाव उठा कि वह संत उसकी कुटिया में भी पधारें और प्रसाद ग्रहण करें। सच्ची भावना देखकर संत तैयार हो गए। गरीब औरत सादी दाल-रोटी से अधिक कुछ न बना सकी, पर जो कुछ भी संत को परोसा, प्रेम से ओत-प्रोत होकर किया।

संत ने आशीश दिया कि तुम्हारे मन का भावी पूरा हो। देखते ही देखते निर्धन औरत के पुत्र का काम चल पड़ा और अब वे दोनों संतों की सेवा में धन लगाने लगे। पड़ोस के घर में रहने वाली औरत ने पूछा कि इतना धन कैसे कमाया तो उस औरत ने कहा कि—'सब संत की मेहर से हुआ है।' पड़ोस वाली के मन में लोभ आया और उस औरत की देखा-देखी संत को न्यौता दिया। रीस की वजह से उसने सोचा, संत शायद केवल दाल-रोटी से प्रसन्न होते हैं। उसके पास पैसा तो भरपूर था पर भावना नहीं थी। केवल दाल-रोटी बनाई और संत के सामने रख दी। फिर कहने लगी, आशीश

दीजिए। हम बहुत गरीब हैं। संत ने फिर बोला, तुम्हारी भावना पूरी हो। कुछ ही दिनों में उसकी खुशहाली खतम हो गई और वह बहुत निर्धन हो गई।

सिद्धांत : 1. माया आने जाने वाली है।

2. अगर धन अच्छे मार्ग में नहीं लगाया तो कोर्ट और अस्पतालों में पूरा होता है।

3. भगवान और संत के पास भावना काम करती है ना कि दिखावा।

595. पटेल के दोनों पुत्रों की हत्या

एक बार दो यात्री देर हो जाने के कारण एक पटेल के यहां रात को रुक गए। उनकी पैसों की थैली देखकर पटेल की नियत बिगड़ गई और उसने गुंडों को बुलाकर दरवाजे पे सोते दोनों यात्रियों को रात को मार देने को कहा। पटेल के दोनों पुत्र जो रात को खेत में ही सोने वाले थे, वापस आए और पलंग पर दो अनजान आदमियों को देखकर उन्हें डांट कर उठा दिया और खुद वहां सो गए। रात को गुंडे आए और दोनों पुत्रों को मार डाला। सुबह दोनों यात्री जाने लगे और दरवाजे पे खून की धार देखकर पटेल को उठाया और उसने पाया कि उसके दोनों बेटे मर चुके हैं। पटेल का पाप उसके ही सिर पर पड़ा।

सिद्धांत : जैसी करनी वैसी भरनी। लालच करें ही क्यों? लालच में अपनी ही बरबादी है।

596. पक्षी ने मोती का लालच दिया

एक शिकारी जंगल में जाल फैलकर बैठा था। जाल में केवल एक ही पक्षी फंसा पर शिकारी खुश था क्योंकि यह पक्षी बहुत खूबसूरत था। पक्षी होशियार था। वह छूटने की तरकीब सोचने लगा। पहले उसने शिकारी से बात की कि भईया, लोभ बहुत बुरी चीज है। मैंने लोभ किया तो मैं जाल में फंस गया। तुम कभी लोभ न करना नहीं तो धोखा मिलेगा। शिकारी बोला—'मैं क्या बेसमझ हूं जो तेरी बातों में आ जाऊंगा?' अब पक्षी बोला—'मैं मादा हूं मेरा Delivery का समय है। जाली जरा-सी ढीली कर दो। मेरे पेट से मोती निकलते हैं। जो मोती निकलें वे तुम ले लेना।' शिकारी ने जाली ढीली कर दी तो वह पक्षी निकल भागा। उड़ते-उड़ते वह बोला—'मैंने तुम्हें साफ कहा था कि लोभ न करना, पर तुम मोती के लोभ में आ गए। चिड़िया भी क्या कभी मोती देती है।'

सिद्धांत : इसी तरह भगवान भी हमें माया के प्रलोभनों में फंसाकर हमारी परीक्षा लेता है कि हम सच्चे हैं या नहीं।

597. जो बोलें उस पर अमल करें

एक पंडित ने कथा करते हुए प्रसंग में कहा कि—'अगर कोई वस्तु रास्ते में गिरी हो तो तीन बार पुकारकर कहें कि किसी की हो तो ले लो। यदि कोई आगे

न आए तो ही हाथ लगाना चाहिए।' एक श्रोता ने कहा—'पंडित जी की परीक्षा लेनी चाहिए।' तो उसने मिट्टी की मोहरें बनाईं और उन्हें सुनहरे रंग से रंग दिया। फिर एक थैली में डालकर रास्ते में रख दी। पंडित जी उधर से गुजरे तो उन्होंने थैली देखी। अपनी ही वाणी याद की कि तीन बार पुकारे बिना वस्तु को हाथ नहीं लगाना। पर मन में लोभ था तो बहुत आहिस्ता आवाज से पुकारा। फिर चुपके से थैली उठाकर अपनी अंटी में दबा ली। कथा करने पहुंचे तो उसी श्रोता ने उठकर पूछा कि कोई थैली उठाकर रख ले तो उसका क्या अंजाम होता है। तो पंडित जी बोले कि—'वह सोना मिट्टी हो जाता है।' कथा के बाद वे घर पहुंचे और थैली खोलकर देखा तो सारी मोहरें मिट्टी ही मिलीं।

सिद्धांत : बोलना नहीं लोभ से ऊपर होकर दिखाना है।

598. बाहर का दिया, भीतर का अंधकार

एक आदमी रोज सवेरे-सवेरे मंदिर में जाकर दिया जलाता था। आंधी हो या तूफान, वह यह क्रिया नियम से करता था। एक दिन वह आदमी (जो रोज उसे यह करते देखता था) ने पूछा कि—'भाई साहब, आपकी भगवान में बहुत श्रद्धा है क्या, जो आप रोज मंदिर में दिया जलाते हैं?' आदमी हंसकर बोला कि—'मैं दिया जलाता हूं क्योंकि एक मुकदमा जीत

गया हूं। मैंने वादा किया था कि जीत जाऊंगा तो रोज दिया जलाऊंगा।' दूसरे ने पूछा—'मुकदमा क्या था?' आदमी ने कहा—'घर के पास पड़ोसी की जमीन थी। मैंने लोगों से मिलकर उसे अपने नाम करवा लिया। भगवान दयालु हैं—उन्होंने मुझे जीता दिया।'

सिद्धांत : हर चमकदार चीज सोना नहीं होती।

599. तैत्रेयी ऋषि ने गुरु को ज्ञान वापस दे दिया

शास्त्रों में तैत्रेयी ऋषि की बात आती है कि तेत्रैयी ऋषि ने गुरु से ज्ञान लिया। गुरु रोज कहता था—मैंने तुझे ज्ञान दिया, मैंने तुझे सुजाग किया। एक दिन तैत्रेयी ऋषि ने गुरु को ज्ञान वापस उल्टी करके दे दिया और सूरज से ज्ञान लिया कि सूरज भगवान तो इतना सबको रोशनी देते हुए भी अहंकार नहीं करते।

सिद्धांत : किसी को कुछ देकर सुनाओ नहीं।

600. आसुरी स्वभाव वाला

राजिमक नामक एक छोटी-सी बस्ती थी जहां लड़ाकू पठानों की एक कौम रहती थी। एक दिन सवेरे एक भंगी (जमादार) झाड़ू लगा रहा था। सामने एक पठान बैठा उसे देख रहा था। उसके अन्दर मरने-मारने के संस्कार इतने पक्के थे कि अकारण ही उसने बंदूक उठाई और बेखबर भंगी के

सीने में गोली दाग दी। मरे हुए भंगी की लाश से कुछ भी कीमती चीज बरामद न हुई तो पठान ने उसकी कमीज ही निकाल ली कि कुछ कीमत वसूल होगी। वह कमीज लेकर एक व्यापारी के पास गया जिसने उसकी कीमत बारह आना आंकी, पर उसने कहा, मैं इसका क्या करूंगा और यह तुम कहां से लाए? पठान ने कह दिया कि उसने कैसे भंगी को मारकर कमीज ले ली थी। व्यापारी बोला कि एक कमीज के खातिर तुमने एक इंसान का खून कर दिया। पठान ने जवाब दिया—'अरे तुम रुपए की चीज दो रुपये में बेचते हो, पर मैंने छः पैसे के कारतूस से दस आने की वस्तु प्राप्त की है।'

सिद्धांत : जिसके सोचने का तरीका इतना गया-बीता हो उसको क्या समझा सकेंगे? आसुरी बुद्धि वाले मलीन और कठोर होते हैं।

10. अहंकार के दृष्टांतों की सूची

601. मैं सबसे नीचा, सब मेरे से उत्तम
602. गधे पर मूर्ति रखी
603. प्रह्लाद को अहंकार आया
604. शिष्य ने पानी पर चलने की सिद्धि प्राप्त की
605 दुनिया के नक्शे पर जागीर कहां

अहंकार के अन्यं दृष्टांत

610. नजर टेढ़ी करे तो
636. चार बुद्धिमान इंजीनियर्स
637. अंदर के चांडाल को बाहर करो

ॐ गुरु के वचन ॐ

1. नियम से सत्संग में आने से और निरंतर अभ्यास से शक्ति बढ़ती है।

2. गुरु का आदर्श आगे रखने से और उसे अंग संग जानने से शक्ति बढ़ती है।

3. आत्मशक्ति से बुद्धि की दुविधा मिट जाती है।

4. तृप्ति ऐसा गुण है जो अपनाए मालामाल हो जाए, इसलिए अपने को तृप्त जानो!

अहंकार

601. मैं सबसे नीचा, सब मेरे से उत्तम

एक संत सबको हमेशा यही कहता था—'मैं सबसे अधम और सब मेरे से उत्तम हैं।' एक बार उन्होंने नदी के किनारे पर बड़ी उम्र के आदमी और छोटी उम्र की एक स्त्री को कांच के गिलास से कुछ पीते हुए और हंसते हुए देखा। संत सोचने लगा—'जरूर ये स्त्री कोई वेश्या है और गिलास में ये लोग शराब पी रहे हैं। तो क्या मैं इनसे भी नीचा हूं? मैं तो एकांत में कभी किसी स्त्री से बात नहीं करता और न कभी शराब पीता हूं।' वो विचार कर ही रहा था कि इतने में ही नदी में एक नाव उलट गई और लोग मदद के लिए संत को पुकार रहे थे। वो आदमी बिजली की तरह तेजी से नदी में कूद पड़ा और नौ आदमियों को बचा लाया और संत से बोला—'महात्मा जी, अभी एक और वहीं रह गया है जरा आप बचा लाएं।' संत को तैरना नहीं आता था और उसकी नदी में जाने की हिम्मत नहीं हुई। तब आदमी ने कहा, जो हमेशा संत एक ही बात बार-बार सुना चुका था—'अपने को नीचा और दूसरों को ऊंचा मानना सिर्फ कहने से नहीं

होता। उसमें वैसे भाव होने चाहिए। अपने को नीचा बताना और दूसरों को ऊंचा बताना खुद में अहंकार पैदा करता है। अपने को ऊंचा करिए और दूसरों को भी ऊंचा जानिए।'

सिद्धांत : मन में नीच भावों को हटाकर हमेशा ऊंचे भाव रखकर वैसा ही ऊंचा कर्म करें। कथनी नहीं सिर्फ करनी होवे। जब आदमी अपने में भगवान पहचान लेगा, तो सबमें भी भगवान जानेगा।

602. गधे पर मूर्ति रखी

एक आदमी ने गधे के ऊपर भगवान की मूर्ति रखी तो जो भी लोग उधर से गुजरते, वे मूर्ति को देखकर प्रणाम करते, उसके आगे झुकते और कुछ न कुछ चढ़ावा चढ़ा के जाते। गधे को अहंकार आ गया कि सब उसी को नमस्कार कर रहे हैं। यह सोचकर वह गर्व से नाचने लगा। उसके अल्मस्त नाच ने मूर्ति को नीचे गिरा दिया। अब सब लोग गधे से नाराज हो गए और उसे पत्थर मारने लगे।

सिद्धांत : गुरु की कृपा से ही किसी की भी जगत में कीर्ति होती है या Value होती है। अगर अहंकार आ गया कि मेरे से कुछ होता है तो गधे वाली हालत हमारी होगी।

603. प्रह्लाद को अहंकार आया

प्रह्लाद के पिता का शरीर जब शांत हुआ तो प्रह्लाद को

अहंकार आ गया, देखो मैंने भक्ति के बल से सब काम कर लिया। प्रह्लाद का अहंकार तोड़ने को भगवान ने बूढ़े का रूप धारण किया। प्रह्लाद को कहा—'मैं भगवान से लड़ाई करने जा रहा हूं। भगवान ने मेरे घरवालों को तकलीफ दी।' प्रह्लाद को भी कहा—'तुम्हारे बाप को भी भगवान ने मारा है।' प्रह्लाद ने कहा—'हां मैं भी भगवान से बदला लूंगा।' बूढ़े ने कहा—'तू भगवान से लड़ सकता है?' वह बोला—'हां, मैं भी भगवान से लड़ सकता हूं।' बूढ़े ने अपनी लकड़ी गिरा दी, कहा—'बेटा उठा तो दो।' प्रलाद ने बहुत दम लगाया पर लकड़ी हिली ही नहीं। प्रह्लाद समझ गया भगवान ही आए हैं, नमस्कार किया, सिर झुकाया, अपनी भूल की माफी ली।

सिद्धांत : अहंकार कितनी भी ऊंचाई से गिरा देता है, इसलिए उस वक्त और भी सुजाग रहने की जरूरत है।

604. शिष्य ने पानी पर चलने की सिद्धि प्राप्त की

एक साधक था। उसने घोर तपस्या की और 14 वर्ष बाद पानी पर चलने में सफल हो गया। बहुत खुश होकर दौड़ता हुआ गुरु के पास आया और बताया कि मुझे पानी पर चलने की सिद्धि मिल गई है। अहंकार से चूर साधक को गुरु ने कहा—'यह काम तो तुम एक नाव चलाने वाले को चार पैसे देकर भी कर सकते थे। चौदह साल यदि तुमने भगवत प्राप्ति के लिए तपस्या की होती तो तुम्हारे में ही भगवान

प्रकट हो जाते। चौदह वर्ष बाद अब क्या मिला तुझे, सिर्फ पानी पर चलना तथा एक और बड़ा अहंकार, और यह अहंकार ही पूरी बरबादी का कारण हो जाता है।'

सिद्धांत : साधना सीखकर कुछ बनने में नहीं, अपने को मिटाकर भगवान को प्रकट करने में है।

605 दुनिया के नक्शे पर जागीर कहां

एक धनवान जमींदार था। उसको अपनी जागीर का बहुत अभिमान था। एक दिन सुकरात के पास जाकर उसने अपनी धन-दौलत का बखान शुरू कर दिया। सुकरात कुछ देर तो उसकी बात सुनते रहे फिर उन्होंने पृथ्वी का नक्शा मंगवाया और बोले—'अपना यूनान देश इसमें आप देखते हैं?' जमींदार ने उंगली रखते हुए कहा—'यह रहा यूनान।' फिर पूछा—'आपका प्रांत कहां है?' जमींदार ने कुछ देर ढूंढकर प्रांत पर उंगली रखी। फिर पूछा—'आपकी जागीर की जमीन कहां है?' तो वह आदमी बोला—'इतनी छोटी जागीर कैसे बताई जा सकती है?' सुकरात बोला—'जिस जमीन को इस नक्शे में एक बिन्दू से भी नहीं दिखा सकते, वह ब्रह्मांड में क्या Importance रखती है? तो तुम किस बात का गर्व करते हो?'

सिद्धांत : हम इतने छोटे हैं फिर अहंकार कैसा?

11. कर्म का फल के दृष्टांतों की सूची

606. दयानन्द सरस्वती का कर्मफल
607. संत के घर में चालीस चोर
608. बिना पंख का पक्षी
609. जज ने खून होते देखा
610. रानियों ने सौतेले पुत्र को मारा
611. नजर टेढ़ी करे तो
612. सुनार का खून
613. कबीर को कोढ़ हो गया
614. जैसी करनी वैसी भरनी
615. गुरु नानक ने प्रकृति सुधारी
616. बंद ज्ञानी
617. राजा से गलती से दान की गई गाय वापस दान दी गई
618. दशरथ की भावी— श्रवण कुमार
619. गुरु अमरदास की भक्ति

कर्म का फल के अन्य दृष्टांत

594. पटेल के दोनों पुत्रों की हत्या

ॐ नवधा भक्ति ॐ

1. संत जनों की संगति।
2. मेरे गुणानुवाद सुनने में प्रीति।
3. अहंकार छोड़कर गुरु के चरणविंद की सेवा करना।
4. छल छोड़कर मेरे गुणों का गुणगान करें।
5. मुझमें दृढ़ विश्वास करके मंत्रों का जाप और भजन जो वेदों में प्रमाणित हैं, का गान करें।
6. दम, बहुत से कर्मों से विरक्त होना और सज्जनों का धर्म पालना।
7. सब संसार को राममय देखें और मुझसे संत को अधिक देखें।
8. जो कुछ मिले, उसमें सतोष करें और सपने में भी पराए दोष न देखें।
9. सीधे स्वभाव सबसे निष्कपट रहें, मन में मेरा भरोसा रखें, न आनंदित न दीन ही रहें।

कर्म का फल

606. दयानन्द सरस्वती का कर्मफल

संत दयानन्द सरस्वती ने एक दिन एक राजा को वेश्या के साथ बैठा देखा तो एकदम से बोल पड़ा—'शेर भी कभी कुत्ती के साथ बैठता है।' तो वेश्या को बहुत दुख हुआ कि संत होकर भी मुझे कुत्ती कहता है। उसने दुख और क्रोध में अपमान का बदला लेने के लिए दयानन्द के दूध में संखिया डाल दिया और उन्हें पिला दिया। इस प्रकार दयानन्द सरस्वती का देहांत हो गया।

सिद्धांत : शब्द हारे शब्द जीते।

607. संत के घर में चालीस चोर

एक संत के घर में 40 चोर आए और सब कुछ लूटकर ले गए।

भक्त ने भगवान को दोष दिया कि साईं क्या है? आपका दास हूं तो भी सारी धन-दौलत खत्म कर दी? भगवान ने कहा कि—'कुछ जन्म पूर्व तुमने इन सबको अलग-अलग लूटा था तो इस जन्म में ये बदला लेने वाले थे। मैंने इन

सबको कहां-कहां से बुलाकर आपस में मिलवा दिया जो कि चालीस बार यह पीड़ा सहने की जगह एक बार ही तुम्हारे को कष्ट मिले। यह तो सूली का कांटा है। अगर तुम कांटे से ही परेशान हो रहे हो तो यदि सूली लगती तो क्या करते?'

सिद्धांत : कर्मों की गति गहन है फिर भी भगवान दयालु है।

608. बिना पंख का पक्षी

एक पक्षी था। उसके जन्म से ही पंख नहीं थे। वह सब पक्षियों को उड़ते देखता तो अफसोस करता कि वह नहीं उड़ सकता।

एक दिन वो मायूस बैठा था कि उसने नारद जी को आते देखा। पूछने पर पता लगा कि नारद भगवान के पास जा रहे हैं। पक्षी ने नारद जी से कहा कि—'भगवान से पूछकर आना कि कौन-से गुनाह के फलस्वरूप बिना पंख के मैं पैदा हुआ।' नारद जी ने पूछा तो भगवान ने कहा कि—'दो जन्मों से मैं इसे उत्तम योनि दे रहा हूं, पर इसने शुकराना नहीं किया, इसलिए इस जन्म में भी बिना पंख का पक्षी बना है।' पक्षी को अपनी भूल का एहसास हुआ तो बाकी जीवन उसने चोंच से मिट्टी में शुक्राना-शुक्राना लिखकर बिताया।

सिद्धात : जो भूलें पहले की हैं उन्हें आज बदलकर सुधारा जा सकता है।

609. जज ने खून होते देखा

एक बार एक गांव में जज गया हुआ था। वहां शौच के लिए बाहर झाड़ियों में जाना पड़ता था। जज शौच के लिए बैठा हुआ था कि उसने थोड़ी दूर पर एक खून होते देंखा। उस वक्त वो उठ नहीं सकता था। उसने सोचा, केस तो मेरे कोट में ही आएगा। जब केस आया तो खूनी के रूप में दूसरा आदमी पेश किया गया और सब गवाही भी उसी के बरखिलाफ थी। कोर्ट तो गवाहों के हिसाब से फैसला करती है। सारा इल्जाम, खून का उस पर ही आता था। उसे फांसी की सजा का हुक्म हुआ। जज को बहुत दुख हुआ, वह जानता था कि यह अपराधी नहीं है। जज ने उस अपराधी को अकेले में ले जाकर पूछा कि—'मैं जानता हूं तूने यह खून नहीं किया, पर जीवन में कभी कोई ऐसा काम किया है तो बता?' जज के पूछने पर अपराधी ने बताया कि—'हां पहले मेरे से एक खून हुआ था जिसकी सजा किसी और को मिली थी।' तो जज को संतोष हुआ कि इसको गलत सजा नहीं मिल रही है।

सिद्धांत : भगवान के घर हमेशा इंसाफ है।

610. रानियों ने सौतेले पुत्र को मारा

एक राजा के कोई पुत्र न था। मन में यही गहरी ख्वाइश थी कि पुत्र तो होना ही चाहिए, तो उसने एक के बाद एक बहुत-सी शादियां कर ली कि किसी से तो पुत्र होगा ही।

आखिर एक दिन एक रानी से पुत्र पैदा हुआ। जब अज्ञान बुद्धि को पूरा घेर लेता है तो सोचने का तरीका ही गलत हो जाता है।

पुत्र की पैदाइश से राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने बहुत खुशियां मनाई। अब राजा केवल उसी रानी को प्यार करता था जिसने पुत्र को जन्म दिया था। इससे बाकी सब रानियों के हृदय ईर्ष्या की आग में जलने लगे। आपस में सलाह करके उन्होंने राजकुमार को जहर देकर मार दिया। राजा दुख के सागर में डूब गया। संयोग से नारद मुनि वहां से गुजरे। राजा का दुख देखकर उसे आत्मज्ञान दिया और बताया कि—'दुनियावी चीजों के लिए जितना सुख मनाओगे उतना दुख भोगना ही पड़ेगा, क्योंकि प्रकृति Changeable है—आज जो है कल नहीं रहेगा।' आत्मज्ञान से राजा का अज्ञान नाश हुआ और उसके दुखी मन को राहत मिली। नारद जी ने लड़के को वापस जिंदा कर दिया, तो लड़का बोला—'कौन पुत्र, कौन माता?' पिछले जन्म में यह सब रानियां चींटी थीं। मैंने इनके बिल में गर्म पानी डालकर इन्हें मारा था, इसलिए ये आज मुझे मारना चाहती हैं।'

सिद्धांत : 1. प्रकृति के Changeable स्वरूप को न जानने से दुख होता है।

2. आत्मज्ञान ही संसार सागर से पार कराता है।

3. संसार में कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

611. नजर टेढ़ी करे तो

शाहजहां जब अपनी पालकी में सेना सहित निकलता था तो सारी प्रजा उसे झुक-झुककर सलाम करती थी। जो सलाम नहीं करता था उसे दंड दिया जाता था। ऐसे ही एक बार उसकी पालकी निकली तो उसकी नजर एक फकीर पर पड़ी जो परमात्मा के ध्यान में मस्त था इसलिए सलाम नहीं कर रहा था। शाहजहां ने कहलवाया कि फकीर को कहो सलाम करेगा। फकीर ने कहा—'सलामी उस खुदा को करता हूं जो शाहों का शाह है, क्या तू उससे भी बड़ा है?' यह बात शाहजहां को पसंद न आई और उसे काल-कोठरी की सजा सुनाई। उस पर फकीर ने कहा—'राजा, इतना अहंकार ठीक नहीं। अरे! नजर टेढ़ी करे तो सुल्ताना घा करे।' वह फकीर काल-कोठरी में डाल दिया गया।

समय बड़ा बलवान है और प्रकृति का नियम पूरा है। कल का राजा शाहजहां आज अपने ही बेटे औरंगजेब के द्वारा जेल में बेड़ियों में जकड़ा पड़ा है। आज उसे अपनी बेगम की याद में बनाया हुआ ताजमहल देखकर दिल में आया कि बेगम की मजार पर जाकर हाले-दिल का रोना रोए। औरंगजेब ने इजाजत दे दी पर ढिंढोरा पिटवाया कि कोई भी शाहजहां को सलाम न करे, न ही आश्रय दे। जो ऐसा करेगा उसकी गर्दन काट दी जाएगी। अगले दिन सुबह शाहजहां बेड़ियों सहित राज्य में पैदल नंगे पैर झुककर उसी बाजार में चल रहा था जहां से कल तक वह पालकी में गुजरता था। वह भूखा-प्यासा मुमताज की

कब्र पर पहुंचा और अपना दुखड़ा रोया। लौटने लगा तब तक शाम हो चली थी। वह भूखा-प्यासा था, पैर के छालों में से खून निकल रहा था। नदी के किनारे उसे एक झोंपड़ी दिखी। वह उस तरफ बढ़ चला। वहां जो मछुआरा रहता था उसने शाहजहां को झुककर सलाम किया। उसे पानी का गिलास दिया और अपनी परोसी हुई थाली उसके सामने खिसका दी। उसी समय दूर से मछुआरिन दौड़ते हुए आई और एक हाथ राजा के हाथ पर मारा जो उसके मुंह का निवाला भी गिर पड़ा। फिर चिल्लाकर बोली, हमें अपनी गर्दन प्यारी है बाबा, तुम यहां से जाओ। शहंशाह शाहजहां की आंखों में पानी आ गया और उसे एकदम से फकीर की बात गूंजने लगी कि—'नजर टेढ़ी करे तो सुल्ताना घा करे।' उसने महसूस किया कि अपने एक अहंकार के कारण उसकी क्या हालत हुई है। वह दौड़ता हुआ अपनी कोठरी से पहले उस कोठरी में गया जहां उसने फकीर को डलवाया था। देखा तो वहां फकीर तो न था पर उसकी दी हुई सीख थी।

सिद्धांत : एक अहंकार ही सब पापों की जड़ है। इक अहंकार जब निकल जाता, सब विकार खुद-ब-खुद निकल जाते...गुरु के ज्ञान में वो शक्ति है।

612. सुनार का खून

एक सज्जन के घर के सामने सुनार का घर था। उसके पास सोना आता था वो गढ़कर देता था। एक बार उसके

पास अधिक सोना जमा हो गया। रात को पहरा देने वाले सिपाही को इस बात का पता लग गया। उस पहरेदार ने सुनार को रात को मार दिया और सोने का बक्सा लेकर चल दिया। इतने में सामने रहने वाले सज्जन बाहर आए, उन्होंने उसे पकड़ लिया। पहरेदार ने कहा, आप भी थोड़ा सोना ले लो। उन्होंने इनकार किया तो पहरेदार ने सीटी बजाकर सबको इकट्ठा कर लिया और कहा कि यह सज्जन सोना लेकर भाग रहे थे। अंदर देखा तो सुनार भी मरा पड़ा था। तो कोर्ट में केस गया और सज्जन को फांसी की सजा सुनाई गई। उससे उसके मुख से निकला, भगवान के दरबार में न्याय नहीं है, मैंने मारा नहीं मुझे दण्ड मिल रहा है, जिसने मारा वो बेदाग छूट रहा है। जज पर उसके वचनों का असर पड़ा। उसने सोचा इसकी जांच होनी चाहिए। ऐसे विचार से उसने एक खेल रचा। सुबह होते ही एक आदमी रोता हुआ आया कि मेरे भाई की हत्या हो गई सरकार, इसकी जांच होनी चाहिए। तब जज ने सिपाही और कैदी सज्जन को उस व्यक्ति की लाश लाने को भेजा। दोनों उस आदमी के साथ वहां गए और लाश को जो खाट पर पड़ी थी उठाकर ले चले। साथ का दूसरा आदमी खबर के बहाने दौड़कर आगे चला आया। तब सिपाही ने कैदी से कहा—'देख तू उस दिन मेरी बात मान लेता तो सोना मिल जाता और फांसी भी नहीं होती।' कैदी ने कहा—'मैंने तो अपना काम सच्चाई से किया था, फांसी हो गई तो हो गई। हत्या की तूने और

दण्ड भोगना पड़ा मेरे को।' जब जज के सामने खाट रखी गई तो झूठमूठ का मरा हुआ आदमी उठ खड़ा हुआ। उसने कैदी को एकांत में बुलाकर कहा कि इस मामले में तो तुम निर्दोष हो, पर सच-सच बताओ कि इस जन्म में तुमने कोई हत्या की है क्या? उसने बताया कि उसकी पत्नी का यार था उसकी हत्या उसने की थी जिसका किसी को पता नहीं चला था। यह सुनकर जज बोला—'तुम्हें फांसी होगी ही, मैंने भी सोचा मैंने कभी घूस नहीं खाई फिर इस हाथ से फांसी का हुक्म लिखा कैसे गया? उस पाप का फल तुम्हें भोगना पड़ेगा।' सिपाही को अलग फांसी हुई।

सिद्धांत : कब के कर्म का फल कब मिलता है, पर है सब अपना ही कर्म फल।

613. कबीर को कोढ़ हो गया

एक बार कबीर के पास एक गरीब कुछ मांगने के लिए आया। कबीर के पास अनाज आदि कुछ नहीं था तो उसने गरीब को धागे की लच्छी दे दी। उस गरीब ने डोरे से मछली पकड़ने का जाल बनाया और मछलियां पकड़कर वह अपना गुजारा करने लगा। क्योंकि वह डोरा सही काम में न लगकर प्राणी मात्र को कष्ट देने के काम आया, इसलिए इसका फल कबीर को भुगतना पड़ा। उनके शरीर में कोढ़ हो गया।

सिद्धांत : कर्मों की गति गहन है। देश, काल, पात्र देखकर ही कर्म होवे।

614. जैसी करनी वैसी भरनी

एक पति-पत्नी उनकी बेटी, छोटा-सा परिवार था। पत्नी मर गई तो आदमी ने दूसरी शादी कर ली। उससे भी एक लड़की हुई। दूसरी स्त्री को सौतेली लड़की आंखों देखे न सुहाती थी। वह उसे धिक्कारती, पीटती, गालियां देती और मनहूस कहकर नोचती और अपनी बेटी को बहुत प्रेम, सेवा और मोह करती। ऐसे 15 साल बीत गए। दोनों बेटियां सयानी हो गईं। बड़ी वाली बड़ी गम्भीर और सयानी थी। घर का सारा कामकाज और स्कूल की पढ़ाई में व्यस्त रहती थी। पिता देखते हुए भी कुछ नहीं बोल पाते थे, पत्नी के आगे उनकी एक न चलती। सिर्फ वे बड़ी बेटी का दर्द समझ पाते थे। एक दिन जब रोज की तरह दोनों बहनें स्कूल चली गईं तो औरत के दिल में आया कि कैसे भी बड़ी लड़की घर से विदा हो—शादी कर के या मर के। इतने में उसे एक छिपकली दिखी। उसने बढ़िया खीर-पूरी बनाई और वह जिंदा छिपकली खीर में डाल दी। शनिवार का दिन था, उस दिन बड़ी बहन एक घंटा जल्दी स्कूल से आती थी। सौतेली मां ने सोचा पहले बड़ी वाली ही आएगी और खीर खाकर वहीं तमाम हो जाएगी। खुद पड़ोसन से बातचीत करने चली गई।

इधर इत्तफाक से छोटी लड़की की टीचर नहीं आई थी तो उन्हें 1½ घंटे पहले छुट्टी हो गई। वह घर पहुंची—भूख ी थी तो बड़े चाव से खीर खाने बैठी और वहीं... मां घर

आई और रसोई घर में पहुंची तो माथा पीटने बैठ गई। पश्चाताप के आंसुओं में पूरी घुल गई। पति को सारी बात सच-सँच बता दी तो उसने कहा—'जितना धिक्कार तुमने बड़ी बेटी को दिया था उससे दस-गुना ज्यादा प्यार दोगी तो इस पाप का प्रायश्चित्त पूरा होगा।' औरत की आंखें खुल गईं।

सिद्धांत : 1. जो दूसरे के लिए खड्ढा खोदता है तो खुद ही उसमें गिरना पड़ता है।

2. प्रेम में इतनी शक्ति है जो पराया भी अपना हो जाता है।

3. जब पाप का प्रायश्चित्त हो जाता है तो प्रगाढ़ प्रेम का सागर फूटता है।

615. गुरु नानक ने प्रकृति सुधारी

गुरु नानक एक नगर में पहुंचे जहां की धरती पूरा फल नहीं देती थी। वहां के लोग हल चलाते, अच्छे बीज डालते, खूब मेहनत करते पर धरती की उपज थोड़ी ही होती और उनकी मेहनत व्यर्थ जाती। लोग अपने हालात से दुखी थे और गुरु नानक के पास आए कि उनकी समस्या का निवारण होवे। गुरु नानक ने देखा कि इनका आचार-व्यवहार अच्छा नहीं है। झूठ और कपट में ही इनका समय गुजरता है। उन्होंने समझाया कि तुम्हारी जड़ें गलत हैं, जैसे किसी वृक्ष की जड़ में आग लगी हो तो वह पूरा फल नहीं दे सकता। तुम अपने जीवन की सच्चाई से चलाओ तो पांच तत्त्व भी सच्चाई के

फल देंगे। लोगों ने सलाह मानकर सुधार किया और सुखी हुए।

सिद्धांत : हमारी आसुरी सम्पदा होती है तो पांच तत्त्व भी गलत फल देते हैं।

616. बंद ज्ञानी

एक आदमी अपने को ज्ञानी समझता था। वह एक बगीचे में गया जहां आम के पेड़ में कुछ पके हुए आम देखे, एकदम आम तोड़ने के लिए ऊपर चढ़ गया कि तोड़कर आम खाऊं। मालिक ने देख लिया। पूछने पर जवाब दिया कि सब कुछ ईश्वर का है। सब कुछ वह ही करता-कराता है। ऐसा कहकर आम तोड़कर नीचे उतरा। मालिक ने दो-तीन जने और लेकर उसकी अच्छी पिटाई की और कहा—'यह भी ईश्वर करता और कराता है। पर अच्छे कर्म करते हैं तो कहते हैं हमने किया।'

सिद्धांत : भगवान को कहनी नहीं रहनी चाहिए।

617. राजा से गलती से दान की गई गाय वापस दान दी गई

एक राजा बहुत दानी पुरुष था, पर अंदर से मोह और अभिमान रखता था। हमेशा एक हजार गाय ब्राह्मण को दान करता था। एक बार एक गाय ब्राह्मण को दान दी। वह कुछ दिनों के बाद दूसरी गायों के साथ स्थान में गई। उसने वह

गाय दूसरे दिन एक ब्राह्मण को दान में दी। उस गाय का पहला मालिक राजा के पास आया और बोला—'मेरी दान की हुई गाय फिर दान की है, वह मुझे लेकर दो।' राजा बोला—'उसके बदले जितनी गाय लेना चाहो ले जाओ।' पर वह नहीं माना। जिस ब्राह्मण को वह गाय राजा ने दूसरी बात दान में दी थी उसने भी किसी शर्त पर वापस देना कबूल नहीं किया। आखिर उसका फल यह निकला कि मरने के बाद राजा को उस पाप-कर्म के लिए सांड़ का जन्म मिला और सौ साल के बाद जब भगवान कृष्ण ग्वालों से खेलते समय उस कुएं पर आए तो उसको निकालकर शुभ गति दी। उसने दान-पुण्य तो बहुत किए थे, पर यदि अपनी ममता न रखकर सब परमात्मा के अर्पण करता तो वह सजा नहीं मिलती। भूल तो भूल ही है बेशक अनजाने में ही हो, नहीं तो उसको पहले ही परम पद मिल सकता था।

सिद्धांत : अभिमान या मोह से कर्म करने में भूल होवे तो बहुत कठिन फल मिलता है, पर निष्काम में ऐसा कोई डर नहीं है।

618. दशरथ की भावी—श्रवण कुमार

श्रवण कुमार के अन्दर माता-पिता के प्रति बहुत भक्ति-भाव था। वे दोनों अंधे और बीमार थे तो श्रवण कुमार इन्हें अपने कंधे पर बैठाकर तीर्थ-यात्रा आदि कराता था। एक दिन इन बूढ़े माता-पिता को बहुत प्यास लगी तो इन्हें

जंगल में एक स्थान पर बैठाकर, वह इनके लिए पानी लेने गया। उधर राजा दशरथ शिकार खेलने निकले थे। उन्हें ध्वनि के सही अनुमान की विद्या प्राप्त थी। श्रवण कुमार पानी भर रहा था तो उन्होंने समझा कोई जानवर पानी पी रहा है। अनुमान लगाया कि कहां से आवाज आ रही है और उसी दिशा में तीर चला दिया। श्रवण कुमार को तीर लग गया और वह जोर से चीखा। आदमी की आवाज सुनकर दशरथ राजा भागे-भागे वहां पहुंचे। श्रवण कुमार ने कहा कि—'मेरे बूढ़े माता-पिता बिना पानी के मर जाएंगे। उन्हें जाकर पानी पिलाओ। मेरे प्राण तो अभी निकल रहे हैं।' राजा दशरथ जब वहां पानी लेकर गए और अंधे माता-पिता को पूरा किस्सा मालूम पड़ा तो उन्होंने राजा दशरथ को श्राप दिया कि जैसे हम पुत्र के बिना तड़प-तड़प कर मरेंगे ऐसे ही तुम भी एक दिन पुत्र वियोग में मरोगे।

सिद्धांत : राजा हो या फकीर, एक मिनट की लापरवाही से भावी बन जाती है।

619. गुरु अमरदास की भक्ति

गुरु अमरदास अपने गुरु अंगद की बहुत सेवा करते थे। एक बार वो सुबह-सुबह गुरु के नहाने के लिए पानी भरने जाते हैं। बारिश के कारण खड्डे में पानी भरा हुआ था। वापस लौटते समय एक घर के बाहर एक खड्डे में गिर गए। उनके गिरने की आवाज सुनकर किसी ने

बोला—'कौन है? किसका पांव फिसला?' एक औरत ने कहा—'और कौन होगा? ये निथावा अमर होगा।' अमरनाथ ने सुना और बोला—'अरे पगली जिसका! गुरु अंगद देव हों उसको निथावा बोलती है?' उनके 'पगली' शब्द से सचमुच वो पगली हो गई। गुरु ने कहा—'अब तुझे भक्ति से वाणी-सिद्धि आ गई है, अब सोच-विचार कर शब्द निकालना।'

सिद्धांत : गुरु-भक्ति से अंदर की शुद्धि आती है और शुद्धि से वाणी की, संकल्प की, सब सिद्धियां आ जाती हैं। इससे हमें और भी सुजाग रहना है।

12. भावना के दृष्टांत गुण ग्राहक दृष्टि, शुक्राना की सूची

620. भगवान बुद्ध को पत्थर लगा
621. मनुष्य सबसे भयंकर जानवर
622. डाकू में भी भगवान
623. लक्ष्मण को लहर-वन में क्या आया
624. हनुमान और नारद का दृष्टि-भेद
625. जो मन दिखाए वह आंख देखे
626. कौन अच्छा कौन बुरा
627. गुणों का पुल बनाना सीखो
628. संत नजर गुण पर
629. बीरबल ने भावना का फल दिखाया
630. तू कुत्ता तू बिल्ला
631. दाल तेरी पत्नी ने बनाई है
632. लम्बी उम्र का कारण

भावना के अन्य दृष्टांत

559. गीता पुस्तक को बचाया जाए
593. गरीब औरत ने संत को भोग लगाया
690. कुएं में भगवान के दर्शन

शुक्राना के अन्य दृष्टांत

607. बिना पंख का पक्षी

भावना के दृष्टांत

620. भगवान बुद्ध को पत्थर लगा

भगवान बुद्ध पेड़ के नीचे बैठे थे, ऊपर से दो बड़े-बड़े पत्थर गिरे, एक दाएं, एक बाईं तरफ। फिर एक तिनके जितना पत्थर आकर उनको लगा तो उनके शिष्यों ने उनसे पूछा—'ऐसा क्यों हुआ?' तो वह बोले कि तिनके जितना माया में मेरा मन गया था, इसलिए तिनके जितना पत्थर लगा।

सिद्धांत : जितनी माया अन्दर जाती है, उतने हालत-रूपी पत्थर, सुख-दुख-रूपी पत्थर लगते हैं।

621. मनुष्य सबसे भयंकर जानवर

एक बार पक्षियों की सभा हुई। उसमें पक्षियों ने कहा—'हम सबसे श्रेष्ठ हैं। हम सर्दी-गर्मी सहन करते हैं, पेड़ों पर रहते हैं, फल-फूल खाते हैं, एक दूसरे से विशेष सम्बंध नहीं रखते तो हम तो अवधूत जैसे श्रेष्ठ हैं, पर मनुष्य बहुत खराब जानवर है वह हमको मार कर खा जाता है। उससे बचकर रहना चाहिए।'

फिर पशुओं की सभा हुई। वे कहने लगे कि मनुष्य बड़ा भयंकर है। वह हाथी जैसे विशाल पशु को भी वश में कर लेता है। बैल को हल में जोत लेता है और गधे के ऊपर बोझा लाद देता है। जहां तक हो सके उससे बचना चाहिए।

अब सवाल यह है कि जब दूसरे जानवरों की दृष्टि में मनुष्य इतना भयानक है तो वह श्रेष्ठ कैसे माना जाता है? यह मनुष्य के हाथ में है कि वह अपनी मनुष्यता प्रमाणित करे, सर्व के हित के लिए जीवन निर्वाह करे।

सिद्धांत : जो दूसरों की भलाई में है वही मनुष्य कहलाने के लायक है।

622. डाकू में भी भगवान

किसी गांव में एक स्त्री के यहां उसकी लड़की का विवाह था।

उसने लड़की को देने के लिए यथाशक्ति जेवर आदि बनवाया था। डाकुओं को पता चला तो उन्होंने रात में ही धावा बोल दिया। लड़की की माता डाकुओं के सरदार से बोली—'भैया तुम मेरे भाई हो, तुम्हारी बहन की लड़की का ब्याह है। तुम्हारी मर्जी हो तो ले जाओ, मर्जी हो तो छोड़ जाओ।' इस पर सरदार पिघल गया। बोला—'तुम्हारी लड़की का ब्याह मैं करवाऊंगा और शादी के दिन भात भरने आऊंगा।' इसके बाद उसने अपने साथियों से कहा—'चलो भैया, यहां तो देना है लेना नहीं है।' ठीक समय पर पहुंचकर

अपनी जिम्मेदारी से ब्याह का काम उसी डाकू ने पूरा करवाया।

सिद्धांत : सही भाव डालने से सामने वाले में गहरा परिवर्तन आ सकता है। सबके अंदर भगवान है।

623. लक्ष्मण को लहर-वन में क्या आया

एक बार वनवास में लक्ष्मण को खयाल आया कि मैं साथ के साथ वनवास क्यों आया? मैं तो राजमहल में ही रह सकता था। सिर्फ इनके पीछे-पीछे घूमता रहता हूं। रामचंद्र जी को मालूम पड़ गया और उन्होंने कहा—'लक्ष्मण तू इस मिट्टी की पोटली बांधकर रख ले।' जब-जब लक्ष्मण ये पोटली उठाते तो यही खयाल आ जाता था नहीं तो मौज ही मौज थी। उन्होंने राम से कारण पूछा तो राम ने बताया—'जिस मिट्टी पर तुमको यह खयाल आया वहां दो दानव रहते थे। उन्होंने वरदान लिया हुआ था कि हम किसी से भी हारेंगे नहीं सिवाय कि आपस में ही दोनों अगर लड़कर न मर जाएं। देवता उनके अत्याचार से तंग आ गए तो उन्होंने एक अप्सरा को वहां भेजा। उस अप्सरा को पाने के लिए दोनों ने आपस में भीषण झगड़ा किया और वहीं लड़कर मर गए। इस धरती पर अभी तक वो ही गलत Vibrations हैं जिनकी वजह से तुम्हें भी गलत खयाल आता है।'

सिद्धांत : सृष्टि उत्तम है पर मनुष्य गलत काम और गलत खयाल करके उसे दूषित कर देता है। सतगुरु उससे बचाता है।

624. हनुमान और नारद का दृष्टि-भेद

एक बार हनुमान जी और नारद मुनि एक बगीचे में टहल रहे थे। उस दिन हनुमान जी कोई कारणवश क्रोधित थे, उनकी आंखों में अभी भी क्रोध की अग्नि जल रही थी। नतीजा यह हुआ कि उन्हें बगीचे में लगे हुए सुन्दर सुकोमल सफेद फूल भी लाल-लाल नजर आ रहे थे जैसे वे भी अंगार बरसा रहे हों। नारद जी भगवान के भक्ति भाव से भरे हुए थे तो उनको हर चीज प्रेममय दिख रही थी। दोनों विष्णु भगवान के पास गए तो उन्होंने समझाया कि—

सिद्धांत : जैसी भावना होती है वैसा ही आंखें देखने को मजबूर हो जाती हैं। जब तक मन जिंदा है हम सच नहीं देख पाते। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।

625. जो मन दिखाए वह आंख देखे

वीरान जंगल में एक सुन्दर मकान था। साधु ने देखा तो सोचा—'ईश्वर का ध्यान करने के लिए सुन्दर जगह है।' चोर ने देखा तो सोचा—'चोरी का माल छुपाने के लिए बढ़िया जगह है।' जुआरी ने देखा तो सोचा—'अपने साथियों के साथ बैठकर जुआ खेलने का अच्छा स्थान है।' अलग-अलग दृष्टिकोण होने से मकान का अलग-अलग रूप दिखा। हमारे हाथ में है हम क्या देखें।

सिद्धांत : सब जग ईश्वर का रूप है, भला-बुरा नहीं कोय, जैसी जाकी भावना तैसो ही फल होय।

626. कौन अच्छा कौन बुरा

एक आदमी ने एक महात्मा को कहा कि फलाना आदमी आपके लिए बहुत बुरा-भला बोल रहा था। वह जो-जो कह रहा था, मैं सुन भी नहीं पा रहा था। मेहरबानी कर आप उसे समझाएं कि आप ऐसे नहीं हैं और उसका भ्रम दूर कीजिए। महात्मा बोले—'मैं उसे क्या समझाऊं? वह जो कुछ मेरे लिए कह रहा है मैं उससे भी गया-बीता हूं तो मैं अपनी सफाई में उससे क्या कहूं?'

सिद्धांत : संत वाणी—बुरा जो देखन मैं गया मुझसे बुरा न कोय।

627. गुणों का पुल बनाना सीखो

एक व्यक्ति संत के पास गया और बोला—'स्वामी जी, मैं एक व्यापारी हूं, मुझे कई आदमियों से मेल-मिलाप रखना पड़ता है और संगति वश मुझसे भी गलत काम हो जाते हैं। कृपया बताएं कि मैं उनसे कैसे बचूं?' स्वामी जी ने उस आदमी को एक कांच का गिलास मिट्टी से भरकर दिया और कहा कि—'इसे नल के पानी के नीचे तब तक रखो जब तक यह पूरा साफ न हो जाए।' आदमी ने ऐसा ही किया और फिर स्वामी जी से इसका अर्थ समझाने को कहा। स्वामी जी बोले—'तुम्हारा मन मिट्टी से भरे गिलास की तरह है, क्योंकि तुमने सब की बुराइयां देख-देखकर वे ही अपने अन्दर भर ली हैं। जब तुम अपने नजदीक आने वाले हर आदमी के

गुण ही गुण साफ पानी की तरह अपने मन में बैठाते जाओगे तो तुम्हारे अंतःकरण में दुर्गुण ग्रहण करने की ताकत समाप्त हो जाएगी और तुम कोई गलत काम नहीं कर पाओगे।'

सिद्धांत : जब हम किसी के गुण Observe करते हैं तो उसके और हमारे बीच एक पुल बन जाता है जिस पर से सारे गुण अपने अंदर आ जाते हैं।

628. संत नजर गुण पर

एक बार रास्ते में एक मुर्दा पड़ा था। जो भी उधर से गुजरता, कहता—'इसमें कितनी बास आ रही है!' कोई कहता—'यह कितना बदसूरत दिख रहा है या यह कितना काला है!' तभी एक संत उधर से निकला। वो बोला—'देखो इसके दांत कितने सुन्दर हैं!'

सिद्धांत : हर चीज में अच्छाई ढूंढ़ लेना ही संत-दृष्टि का होना है।

629. बीरबल ने भावना का फल दिखाया

अकबर बादशाह बीरबल के साथ अपनी रैयत का मुआयना करने निकले। सामने से एक लकड़हारा आता हुआ दिखाई दिया। अकबर ने पूछा—'यह मेरे लिए क्या सोच रहा होगा?' बीरबल बोला—'जो आप इसके लिए सोचते होंगे।' अकबर ने कहा—'मैं सोच रहा हूं, यह मेरे जंगलों से इतनी लकड़ी काटकर ले जाता है—कर तो दस रुपया भी नहीं

देता।' बीरबल बोला—'आप जरा ठहरिए, मैं पूछकर आता हूं यह क्या सोच रहा है।' अकबर पेड़ पर छिपकर बैठ गया। बीरबल ने लकड़हारे से कहा—'आज सवेरे-सवेरे समाचार मिला है कि हमारे अकबर बादशाह का शरीर शांत हो गया है।' लकड़हारा एकदम बोल पड़ा—'अच्छा ही तो हुआ, हमारी बला टली। अकबर हम गरीबों की फिक्र ही नहीं करता था। अपने हरम में, ऐशो आराम में प्रजा का धन लुटाता था।' अकबर ऊपर बैठे सुन रहा था। लकड़हारा यह कहकर चला गया। इतने में उधर से एक बूढ़ी औरत आई जो कुछ पुरानी लकड़ियों का बण्डल अपने सिर पर उठाकर ले जा रही थी। अकबर ने बीरबल से कहा—'पता करो यह हमारे लिए क्या सोचती है।' बीरबल बोला—'पहले आप बताइए आपकी क्या भावना है।' अकबर ने कहा—'मुझे लगता है यह बेचारी इतनी बूढ़ी होकर भी मेहनत कर रही है। राजकोष से इसके लिए कुछ बन्दोबस्त होना चाहिए।' बीरबल औरत से जाकर बोला—'आज सवेरे-सवेरे हमारे बादशाह को एक सांप काट गया और वह मर गया है।' यह सुनते ही उस औरत के आंसू गिरने शुरू हो गए। वह बोली कि—'इतना दयालु इतना कृपालु बादशाह तो आज तक हुआ ही नहीं है। भगवान मुझे उठा लेता, बादशाह सलामत को सांप क्यों काट गया! मेरी उमर उसे लग जाती!'

सिद्धांत : अपने दिल में झांककर देखो तो मालूम पड़ जाएगा सामने वाला क्या भाव लाया है।

630. तू कुत्ता तू बिल्ला

एक ज्ञानी के पास दो आदमी झगड़ा करते हुए पहुंचे। एक ने कहा—'यह दिन भर कड़वा बोलता है तो अगले जन्म में कुत्ता बनेगा।' फिर झट दूसरे ने कहा—'यह सारा दिन सूंघता रहता है, तो दूसरे जन्म में बिल्ला बनेगा।' ज्ञानी ने कहा देखो—'बिल्ला तुमको होना पड़ेगा और कुत्ता उसको होना पड़ेगा। क्योंकि कुत्ते का संकल्प उसके अंदर है और बिल्ले का तेरे अंदर। जैसा जिसका संकल्प होगा, वैसा ही उसे आगे बनना पड़ेगा।' यह सुनकर दोनों डर गए और अपने अंदर से कुत्ता-बिल्ला निकाल दिया।

सिद्धांत : तुम अपने संकल्प को ठीक करो तो दुनिया खुद-ब-खुद ठीक हो जाएगी।

631. दाल तेरी पत्नी ने बनाई है

एक पति दफ्तर से घर आया। भूखा था। मां ने थाली परोसी, दाल, चावल, परांठे, भाजी आदि। खाने बैठा तो चिढ़कर बोला—'अरे पानी जैसी दाल। कुछ तो खयाल रखा करो रसोई का। दाल है या नल का पानी?' मां ने कहा—'बेटा गरम मत हो, दाल तेरी पत्नी ने ही बनाई है।' सुनकर आदमी बोला—'बेशक दाल है पानी जैसी ही पर है बहुत स्वादिष्ट।'

सिद्धांत : जहां मोह होता है वहां मन दोष नहीं देखता। अर्थात मन में यह ताकत है कि यह दोष न देखे तो जहां

दुश्मनी है वहां पर भी हम अपनी दृष्टि दोष-रहित बना सकते हैं।

632. लम्बी उम्र का कारण

एक बार भारत के राजा ने अपने एक मंत्री को बुलाकर कहा—'तुम चीन देश में जाओ और वहां के सम्राट से उनकी लम्बी उम्र का रहस्य पता लगाओ।' मंत्री चीन पहुंचे और सम्राट से लम्बी उम्र का कारण पूछा—'बताऊंगा, पर आज नहीं, कुछ दिनों बाद। आप अब मेरे अतिथि घर में आराम से रहिए। इस कमरे के सामने एक बरगद का पेड़ है। इस पेड़ के जब सारे पत्ते सूख जाएंगे, उस दिन मैं आपको रहस्य बता दूंगा। तब तक आप अपने देश वापस नहीं जा सकेंगे।' मंत्री बहुत पछताए कि कहां फंस गए—इतना बड़ा पेड़, लाखों पत्ते थे, ये कब सूखेंगे और कब हम अपने देश जाएंगे? परेशान मंत्री रोज बरामदे में बैठ जाते, उनकी नजर खाली पेड़ पर होती थी कि कब सारे पत्ते सूखेंगे और कब हमें मुक्ति मिलेगी। रोज यही खयाल करते थे कि सत्यानाश हो इस पेड़ का, जल्दी ठूंठ हो जाए तो अच्छा है। रात-दिन एक ही संकल्प! कुछ दिन बीते और देखते-देखते विशाल बरगद सूखकर ठूंठ बन गया। सारे मंत्री बहुत खुश हुए और सम्राट को बताया सूखे पेड़ के बारे में और कहा, अब हमें अपनी लम्बी उम्र का रहस्य बताते हुए हमारे वापस जाने का इंतजाम कीजिए। सम्राट बोला—'तुम सब रोज इसकी

बरबादी का गहरा संकल्प करते थे। तुम्हारे विकल्प के कारण यह सूख गया। इसी प्रकार भारत के राजा ऐसे काम करते हैं कि उनको प्रजा की बद्दुआ मिलती है। बद्दुआ मिलते रहने के कारण वो अपना काम करती है और तुम्हारे राजा जल्दी मर जाते हैं, उम्र घट जाती है। हम लगातार प्रजा की भलाई की सोचते हैं तो उनकी हमें दुआ मिलती है, और उनकी शुभ-भावना के कारण हमारी उम्र लम्बी होती है।'

सिद्धांत : संकल्प में बहुत बड़ी शक्ति है। संकल्प से असंभव लगने वाली बात भी सम्भव हो जाती है। तो संकल्प हम हमेशा अपने तथा सबके उद्धार और भलाई का ही करें।

13. संग के प्रभाव के दृष्टांतों की सूची

633. हंस, शेर और कौवा—तीन गुण
634. कौवे के संग से हंस पर दोष
635. चित्रकार ने सरलता और कठोरता के चित्र बनाए
636. राजा ने तोते की बोली से संगत को पहचाना

संसार का दुख ठीक उसकी वासना के अनुपात में होता है। अधिक वासना ही अधिक दुखों का कारण है।

वेदांत आपसे नौकरी, धंधा अथवा संसार नहीं छुड़ाता बल्कि उसमें जो आसक्ति है, उसे छुड़ाता है।

संग का प्रभाव

633. हंस, शेर और कौवा—तीन गुण

एक बार एक शेर ने हंस को अपना वजीर बनाया क्योंकि हंस पक्षियों में सबसे उत्तम माना जाता है। एक दिन उधर से एक ब्राह्मण निकला। शेर उस पर हमला करने को तैयार हुआ पर हंस ने शेर को सलाह दी कि यह तो ब्राह्मण है, इसका वध करने से ब्रह्म-हत्या का पाप लगेगा और जन्म-जन्म में दुख मिलेगा, यह तो पूजा के योग्य है। शेर ने उसकी बात मानकर ब्राह्मण का सत्कार किया और भेंट में उसे गुफा में पड़ा खजाना दिया। कुछ दिन बाद ब्राह्मण फिर उधर से गुजरा। इस बार शेर का वजीर एक कौवा था। शेर ब्राह्मण को देखकर शांत था क्योंकि उसको पहली बार की बात याद थी। पर इस बार कौवे ने सलाह दी—'कभी शेर भी किसी का यजमान बनता है? यह तो शिकार खुद आपके पास आया है।' शेर के हंस के संग का रंग था इसलिए उसने ब्राह्मण से कहा—'जल्दी से चले जाओ, अभी हाथ नहीं लगाऊंगा।'

सिद्धांत : हंस सतोगुण है, शेर अहंकार या रजोगुण, कौवा तमोगुण।

634. कौवे के संग से हंस पर दोष

एक दिन राजा भोज दोपहर के समय बगीचे में पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे। एक हंस और एक कौवा उड़ते-उड़ते उसी पेड़ की डालियों पर आ बैठे। हंस ने देखा—'राजा के मुख पर सूरज की किरण पड़ रही है।' उसने अपने पंख फैलाकर छांव कर दी। कौवा चंचल स्वभाव का था। उसने राजा पर बीट कर दी और जल्दी से उड़ गया। राजा ने आंख खोली तो हंस दिखा और यह सोचकर कि बीट इसी ने की होगी, उसी समय उसे तीर से मार दिया। घायल हंस नीचे गिर पड़ा और मरने के पहले बोला—'हे राजन, आपका दोष नहीं है। मैंने ही नीच का संग किया, उसका मुझे फल मिला है। बीट कौवे ने की थी। मैं तो अपने पंखों की छाया से आपको धूप से बचा रहा था।'

सिद्धांत : जब-जब हम अपने ही अंदर या बाहर के तमोगुण का संग करेंगे, जरूर धोखा खाएंगे।

635. चित्रकार ने सरलता और कठोरता के चित्र बनाए

रोम के एक चित्रकार ने एक ऐसे आदमी का चित्र बनाना चाहा, जिसके मुख से सरलता और भोलापन का भाव प्रकट होता हो। बहुत वर्षों के बाद उसे ऐसा एक बच्चा मिला और इस बच्चे के चित्र की लाखों कापियां बिकीं। अब वर्षों बाद उसकी इच्छा हुई—एक ऐसे आदमी का चित्र बनाऊं,

जिसके चेहरे से दुष्टता और कठोरता के भाव फूटते हों। कई जेल में जाने के बाद आखिर एक जेल में उसे एक ऐसा आदमी मिल गया। चित्रकार ने उसे अपनी चित्र बनाने की बात बताई तो वो डर गया और पूछा—'क्यों बनाना चाहते हो?' अब उसने उस बच्चे का चित्र दिखाया और सारी बात समझाई। चित्र देखते ही वो आदमी फूट-फूटकर रोने लगा और उसने बताया—'यह चित्र मेरा ही है।' चित्रकार ने हैरानी से पूछा—'तुम इस दशा में कैसे पहुंच गए?' कैदी पश्चाताप के आंसू बहाते हुए बोला—'कुसंगत से।'

सिद्धांत : As the Company, So the Colour. इसलिए हमारी संगत ही संतों की होनी चाहिए, ताकि सत् की ही रंगत चढ़े।

636. राजा ने तोते की बोली से संगत को पहचाना

एक बार एक राजा अकेले घोड़े पर वन में जा रहा था। जब वह डाकू-भीलों की झोंपड़ी के सामने से निकला तो, एक दरवाजे के बाहर पिंजड़े में बंधा तोता चिल्लाया—'दौड़ो, पकड़ो, गहने छीन लो।' राजा समझ गया कि वो डाकुओं की बस्ती है और घोड़े को बहुत तेज दौड़ाकर वहां से निकल गया। आगे राजा मुनियों के एक आश्रम में रुका और वहां एक झोंपड़ी के बाहर टंगा पिंजड़े का तोता देखते ही बोला—'आइए राजन, बैठिए, इनके लिए आसन लाओ, पानी लाओ।' राजा ने मुनि से पूछा—'एक

ही जाति के पक्षियों के स्वभाव में इतना अंतर क्यों?' मुनि ने कहा—'ये दोनों तोते भाई हैं। एक को डाकू ले गए और एक को हम मुनि ले आए। वो हिंसा की बातें सुनता है और ये भगवान की कथा और इस प्रकार संगत के गुण-दोष इनमें आ गए।'

सिद्धांत : जैसी संगत वैसी रंगत। हमारी संगत ही सदा संत की होवे तो आप ही भगवान हमारे में प्रकट हो जाएगा।

14. युक्ति-युक्त-सच्ची समझ, शब्द की महिमा के दृष्टांतों की सूची

637. चार बुद्धिमान इंजीनियर्स
638. अन्दर के चांडाल को बाहर करो
639. मुझे भगवान विष्णु ने स्वर्ग भेजा
640. पिता ने बेटों को दो थैली दी।
641. पूजा करने में ज्यादा सुख
642. बोतल का प्रेत
643. राजा रणजीत सिंह का चित्र बनाया
644. तीन भाइयों में से वर चुना
645. पहले अपनी व्यवस्था ठीक करो
646. लड़के ने जवाब दिया—तारे गिन लो
647. तीन प्रकार के गुरु
648. सम्राट अशोक का कीमती हीरा
649. हनुमान मूर्ति पर छप्पर
650. प्रसव में रानी को आराम
651. बिल्ली को खाट से बांधा
652. अंत मते सोई गते
653. चार अंधे
654. आदत का गुलाम

655. राजा के पास आदमी कटी जीभ लेकर आया
656. दो अशिष्ट प्रभाव
657. सेठ ने आइसक्रीम लाने को कहा
658. शब्द की महिमा

सच्ची समझ के अन्य दृष्टांत

532. अपराधी को अभयदान
576. सांसारिक मित्रता : तू कहे तो खून दूं
625. कौन अच्छा कौन बुरा
632. हंस, शेर और कौवा तीन गुण
633. कौए के संग से हंस पर दोष

युक्ति-युक्त

637. चार बुद्धिमान इंजीनियर्स

एक गांव में चार बुद्धिमान Engineers एक पुल का काम करने में व्यस्त थे।

आज का काम यह था कि एक टेढ़े-मेढ़े पाइप में से उनको एक पतले धागे की तरह के तार को पाइप में एक तरफ से डालकर दूसरी तरफ से निकालना था, परंतु वे लोग तार को अंदर डाल ही नहीं पा रहे थे। सब लोग अपनी-अपनी बुद्धि चला रहे थे पर कामयाबी नहीं हासिल कर पा रहे थे। वहां से एक किसान गुजरा। उसने देखा, धूप में ये चार साहब लोग क्या कर रहे हैं? उसने पूछा—'कोई मदद कर दूं साहब?' पहले तो उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया, फिर एक ने कहा—'चल, आया है बड़ा मदद करने!' उसने कहा—'बाबूजी, बोलकर तो देखो।' दूसरा बोला—'जा-जा गंवार कहीं का, तू क्या मदद करेगा?' तीसरे ने कहा—'ज्यादा सिर मत खा, एक तो हम सुबह से परेशान हैं, यह तार इस टेढ़े-मेढ़े पाइप में जा ही नहीं रही है, ऊपर से तू नाक में दम कर रहा है।' चौथे ने

कहा—'पाइप के भीतर ये कैसे जाए, एक तो पतला है ऊपर से टेढ़ा-मेढ़ा पाइप।'

तो किसान ने उस पाइप को और पतले धागे को एक बार निहारा और फिर थोड़ी दूर चला गया। कुछ देर में वह एक छोटा-सा चूहा हाथ में पकड़कर लाया। उस चूहे की पूंछ में उसने उस धागा को बांध दिया और चूहे को पाइप के अंदर छोड़ दिया। चूहा अपनी जान बचाने के चक्कर में पाइप में घुसता गया और पाइप के दूसरे सिरे से बाहर निकल आया और उसकी पूंछ में बंधा हुआ वह धागे जैसा Wire भी बाहर निकल आया।

इस तरह इन चार Engeneers का अहंकार एक मामूली किसान ने अपने अनुभव से तोड़ डाला। वे किसान को धन्यवाद देने लगे और अपने व्यवहार पर बड़े शर्मिन्दा हुए।

सिद्धांत : कभी किसी को मामूली नहीं समझना चाहिए। सबके अंदर लाल। सबके अन्दर बैठकर परमात्मा ही लीला करते हैं।

638. अन्दर के चांडाल को बाहर करो

एक राजा ने एक बड़े यज्ञ की तैयारी की। सब सामग्री आ गई और बहुत से साधु-संत यज्ञ में भाग लेने के लिए आए। यज्ञ का नियम था कि जो भी सबसे पहुंचे हुए महात्मा हों वे ही यज्ञ की शुरूआत करें। क्योंकि यह सम्मान राजपुरोहित को न मिला इसलिए वे क्रोधित हो उठकर चले गए। राजा के बहुत बुलाने

पर भी नहीं आए। राजा ने मंत्री को भेजा कि अनुरोध करके उन्हें लेकर आएं पर पुरोहित ने एक न सुनी। उधर से राजा का भंगी जा रहा था। उसने देखा यज्ञ का काम रुक गया है। पूछने पर पूरी जानकारी हुई तो भंगी बोला—'आप लोग निश्चिंत रहें। मैं पुरोहित को लेकर आता हूं।'

वह पुरोहित के दरवाजे पर खड़ा होकर आवाज देने लगा कि पंडित महाराज, मेरा एक भाई अंदर है उसे निकालिए। पुरोहित जी ने पूछा—'तू कौन है?' वह बोला—'मैं भंगी हूं। मेरा एक भाई अंदर है इसे निकालिए।' पुरोहित सोचने लगा—'मैं ब्राह्मण, इसकी छाया तक अपने ऊपर नहीं पड़ने देता, फिर यह क्यों बोल रहा है—'मेरा भाई अंदर है?' विचार से बुद्धि सूक्ष्म हो गई और एकदम उनकी समझ में आया कि यह झूठा अहंकार जो वे दिल में लेकर बैठे हैं, यह चांडाल ही तो है। उनको अपने किए पर बहुत पश्चाताप हुआ और वे यज्ञ-स्थल में लौट आए।

सिद्धांत : कितने ही तमोगुण से घिरे हों, गुरु रमज कर हर एक की सूक्ष्म बुद्धि जगाता है और हमें अज्ञान से बाहर निकाल लेता है।

639. मुझे भगवान विष्णु ने स्वर्ग भेजा

एक हाथी मरकर स्वर्ग पहुंचा तो उससे पूछा गया कि—'तुमने पृथ्वी पर कौन-सा अच्छा काम किया।' हाथी ने कहा—'मैं क्या कर सकता था, मुझे सिर्फ भारी शरीर दिया,

विवेक नहीं, वो तो सारा मनुष्य को दे दिया है।' धर्मराज ने कहा—'अच्छा किसी मनुष्य को लेकर आओ, देखें उसमें क्या विवेक है।' तो एक जिंदा मनुष्य को नींद में ही उठाकर ले आए। यह वास्तव में विवेकी और भगवान के वचनों पर चलने वाला था। स्वर्ग के दरवाजे पर पहुंचकर उसने लिखकर भेजा—मुझे भगवान विष्णु ने भेजा है। यह सुनकर सबने उसका बड़ा आदर सत्कार किया और धर्मराज ने भी अपना सिंहासन दिया। इसने सिहांसन पर बैठकर सब मरे हुए को स्वर्ग में भरना शुरू कर दिया। नर्क खाली हो गया, स्वर्ग में जगह नहीं बची। विष्णु भगवान स्वयं चलकर आए कि देखें कौन आया है। उन्होंने पूछा—'तुमको किसने भेजा है?' मनुष्य ने उत्तर दिया—'स्वयं मैंने, पर उसमें शक्ति तो आपकी थी।' फिर पूछा—'सबको स्वर्ग में क्यों भर दिया?' तो कहा—'आपने ही तो गीता में कहा है कि किसी के दोष-विकार मत देखो।' वह विष्णु ने कहा—'ठीक है, अब पृथ्वी पर वापस जाओ।' तो उस विवेकी मनुष्य ने कहा—'जो आपकी शरण में आ जाता है वह मुक्त है और मैं तो आपके चरणों में नत हूं।' भगवान बोले—'अच्छा मैं हारा तुम जीते।'

सिद्धांत : भगवान ने जो बुद्धि दी है उसे सिर्फ भगवान के लिए इस्तेमाल करो।

640. पिता ने बेटों को दो थैली दी।

एक किसान के दो बेटे थे। किसान की उम्र हो चली थी।

किसान की जमीन-जायदाद काफी थी पर उसे बेटों को परखना था कि कौन मूर्ख और कौन सयाना है।

उसने एक युक्ति की। दोनों को बुलाया और एक-एक थैली हाथ में देते हुए कहा—'यह अमानत है, रखो। कल मैं तीर्थ-यात्रा पर जा रहा हूं। लौटकर आऊंगा तो वापस कर देना।'

समय बीतता गया, एक वर्ष गुजर गया। पिताजी अचानक आ गए।

रात हुई और पिता ने दोनों को बुलाकर कहा—'मेरी अमानत की थैली कहां है?'

एक बेटे ने कहा—'पिताजी अभी लाया।' और थैली लाकर पिता के हाथ में पकड़ा दी।

दूसरे ने कहा—'अभी नहीं, कल दूंगा।' सुबह हुआ। अभी पिता सोए पड़े थे। आंख खुली तो देखा दरवाजे पर चार गोनियां रखी हैं।

दूसरे बेटे ने कहा—'पिताजी आपकी अमानत।'

पिता बोले—'मैंने तो एक थैली दी थी। फिर यह सब कहां से आया?'

बेटे ने रहस्य खोला कि एक की चार गोनी बन गई। पिता बहुत प्रसन्न हुए और उसे गले से लगा लिया। पिता ने बीज दिए थे। एक बेटे ने तो ज्यों का त्यों पिता को थैली पकड़ा दी, दूसरे ने बीजों से फसल बोई, काटी और अनाज की चार गोनियां तैयार की।

सिद्धांत : ठीक इसी तरह भगवान गुरु भी हमें ब्रह्मज्ञान

के तत्त्वरूपी, वचनरूपी बीज देते हैं। यह तो हमारे हाथ में है कि हम उन वचनों को अपने जीवन में अपनाएं, सबकी भलाई के लिए रखें और बांटें और बढ़ाएं।

641. पूजा करने में ज्यादा सुख

एक दिन फूलों को लगा कि हमेशा पत्थरों की ही पूजा क्यों होती है। यह भला कहां का न्याय है? पूजा तो हमारी भी की जानी चाहिए। यह सोचकर वे प्रकृति से रूठ गए। तो प्रकृति ने उनसे कहा कि परेशान होने की कोई बात नहीं है। आज से पत्थर तुम्हारी पूजा किया करेंगे। फूलों ने खुशी-खुशी यह बात मान ली, पर जैसे ही एक ऊबड़-खाबड़ भारी-सा पत्थर सैकड़ों फूलों पर चढ़ा उनकी जान निकलने लगी और वे मुरझाने लगे। तब फूलों ने प्रार्थना की कि हमें पूजा का सम्मान नहीं चाहिए।

सिद्धांत : पूजा पाने से ज्यादा सुख पूजा करने में है।

642. बोतल का प्रेत

एक प्रेत बोतल में बंद था। एक व्यक्ति से बोला—'भाई मुझे इस बोतल से निकाल दो, मैं जीवन भर तुम्हारी सेवा करूंगा, पर अगर तुम मुझे कुछ काम नहीं बताओगे तो मैं तुमको खाने को आऊंगा।' व्यक्ति ने सोचा—'मेरा तो दुनिया भर का काम रहता है, यह सब प्रेम से कराता रहूंगा और बड़े आराम से रहूंगा।' इतना सोचकर उसने प्रेत की बोतल का

ढक्कन खोल दिया। निकलते ही प्रेत ने कहा—'मेरे लिए क्या हुक्म है?' आदमी ने कहा—'मेरे लिए कुआं खोदो।' थोड़ी ही देर में कुआं तैयार हो गया। प्रेत ने कहा—'काम बताओ नहीं तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा।' व्यक्ति ने कहा—'नहीं-नहीं, अच्छा मेरे लिए एक सुन्दर-सी हवेली बना दो जिसमें सुख के सभी साधन हों। सूई से लेकर किचन का भी सब सामान हाजिर हो।' थोड़ी ही देर में हवेली तैयार हो गई। इस प्रकार प्रेत ने उसके सारे काम पूरे कर दिए और अब वह व्यक्ति के पीछे खाने को दौड़ा। व्यक्ति दौड़ता हुआ गुरु के पास पहुंचा और अपनी परेशानियां बताईं। गुरुजी ने युक्ति बताई तो खुश होकर आदमी ने प्रेत से कहा—'जाओ हवेली के आंगन में एक डंडा गाढ़ दो और जब तक मैं न बताऊं तब तक उस डंडे पर ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर चढ़ते-उतरते रहो।' यह सुनकर प्रेत आज्ञा पूरी करने में लगाया और आगे से आदमी को कोई तकलीफ नहीं हुई।

सिद्धांत : मनरूपी प्रेत शरीररूपी बोतल में बंद है जो हमें खाने के लिए दौड़ता है। सतगुरु उसे सत्संग-रूपी डंडे पर ऊपर-नीचे करवाते हैं। इस पर चढ़ते-उतरते आखिर संकल्प-विकल्प से खाली हो जाता है और मन राम में रम जाता है।

Empty Mind is a devil's Workshop.

खाली मन शैतान का घर है।

643. राजा रणजीत सिंह का चित्र बनाया

वैसे तो राजा रणजीत सिंह का स्वभाव-संस्कार अन्य राजाओं जैसा ही था, फिर भी उसमें नम्रता ज्यादा थी, इसलिए उसकी जीवनी की बहुत-सी कहानियां मशहूर हैं।

एक बार दरबार में राजा ने ऐलान किया कि राज्य में सबसे अच्छा चित्रकार कौन है?

एक चित्रकार उठकर खड़ा हुआ तो राजा ने कहा कि मेरा जीता जागता चित्र चित्रित करो। राजा का चित्र बनाने के हुकुम से चित्रकार घबरा गया और उसने दो महीने की मुहलत मांगी। पहला महीना तो फिक्र में खाट पर लेटकर बीता दिया कि राजा तो काना है, चित्र पसंद नहीं आया तो फांसी पर लटका देगा। अचानक उसे अपने गुरु की याद आई।

मन में उधेड़बुन लिए वह गुरु के पास पहुंचा और अपनी समस्या कह सुनाई। गुरु ने उसे युक्ति दी कि कैसे वह राजा का चित्र बना सकता है। युक्ति सुन वह खुशी-खुशी घर आया और चित्र बनाने बैठा। चित्र तैयार हुआ तो राजदरबार में राजा रणजीत सिंह को दिखाया गया। सब के मुंह से 'वाह-वाह' निकल गई, इतना सजीव-साकार चित्र था।

उसमें दर्शाया गया था——राजा रणजीत सिंह शिकार खेल रहा है। धनुष निशाना लगाने के लिए उन्होंने अपनी एक आंख बंद कर रखी है। मतलब——राजा की कानी आंख

दिखाई, पर इस खूबसूरत अदा से कि वह कलंक नहीं लग रही थी।

सिद्धांत : कोई भी समस्या गुरु के पास लेकर जाओ, वह रमज और समझ देता है।

गुरु के वचन हृदय का हीरा, घसा-घसा कर मिटाओ पीड़ा।

644. तीन भाइयों में से वर चुना

तीन भाई साथ रहते थे। बड़ा ज्योतिष विद्या जानता था और बीती बातें सच-सच बता सकता था। दूसरा ज्योतिष विद्या से भविष्य का सच-सच बता सकता था। तीसरा सेवा भाव वाला था। दूसरों की मदद करके खुश होता था और जब कभी सेवा होती वह जरूर हाजिर होता था। उनके घर के सामने नए पड़ोसी आए जिनकी कन्या रूपवती थी। तीनों उससे शादी करना चाहते थे पर सोचा जिसे ये चुने वही इससे शादी करेगा। दोनों बड़े भाइयों ने सोचा इसे सुन्दर Gift देंगे जो इसका दिल हमारी तरफ झुक जाए। पर वे अपने धंधे में बहुत व्यस्त थे। एक Past की जानकारी हासिल करने की मशीन बना रहा था, दूसरा Future बताने वाली मशीन बनाने में लगा था। तो दोनों ने सोचा काम पूरा करते ही इस लड़की के लिए gift लाएंगे। तीसरे ने सोचा, मैं कैसे लड़की को खुश करूं? उसे कुछ समझ न आया तो वह सीधे उसके पास पहुंच गया और बोला——'कुछ सेवा हो तो बताइए।' घर की Light खराब थी

सो उसने चट-पट कर दी। लड़की प्रसन्न हो गई कि कितना अच्छा पड़ोसी है और उसने पलटकर पूछ लिया कि मेरे लायक कुछ काम हो तो बताइएगा। लड़के ने शादी का प्रस्ताव रखा। लड़की राजी हो गई। वह गया अपने भाइयों को बताने पर वे काम में व्यस्त थे——उनके दरवाजे बंद थे। तो वह Note छोड़कर आ गया कि मैं विवाह करके बाहर जा रहा हूं।

सिद्धांत : Its Now or Never.

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।

पल में प्रलय होएगी, बहुरी करेगा कब?

645. पहले अपनी व्यवस्था ठीक करो

एक महात्मा किसी सेठ के यहां कथा करने गए। वहां काफी लोग जमा थे। एकदम से बिजली चली गई तो सारे में कोलाहल मच गया। सेठ सरकार को गालियां देते जा रहे थे कि न बिजली का ठिकाना है न पानी का। न जाने सरकार क्या करती है, कोई व्यवस्था ठीक नहीं है। लाला जी के घर में ढूंढने पर भी माचिस नहीं मिली। किसी आदमी ने माचिस निकाल कर दी। अब मोमबत्ती ढूंढने लगे पर कहीं न मिली। सेठ जी सरकार को गालियां दिए जा रहे थे। इतने में बत्ती आ गई। तब महात्मा ने सेठ को बुलाकर कहा——'तुम्हारे घर की व्यवस्था भी ठीक नहीं, न माचिस का पता न मोमबत्ती का। फिर सरकार को गालियां क्यों देते हो?'

सिद्धांत : पहले अपना कसूर देखो, दूसरे को दोष मत दो।

646. लड़के ने जवाब दिया——तारे गिन लो

एक राजा को प्रधानमंत्री की जरूरत थी। कौन बुद्धिमान है यह परीक्षा करने के लिए उसने एक गाड़ी तिलों से भरवाकर एक गांव में भेज दी। गांव के मुखिया को कहलवाया कि गाड़ी में कितने तिल हैं वो गिनके भेजो। यदि नहीं गिन सके तो पूरे गांव को मौत की सजा मिलेगी। गांव वाले सारे बहुत चिंतित हो गए। गांव में एक बुद्धिमान लड़के को यह बात मालूम पड़ी तो उसने मुखिया को जाकर कहा कि आप चिंता न करें, मैं जवाब दे दूंगा। उसने एक चिट्ठी में राजा को लिखकर भेजा कि——हमने तिल गिन लिए हैं। आकाश में जितने तारे हैं, उतने ही तिल हैं। आपके पास तो ऊंचे-से-ऊंचे गणितज्ञ हैं, आप उनसे तारों को गिनवा लें। आपको पता है——हमारे पास तो कोई गणितज्ञ है नहीं। उनसे तारे गिनवाकर आप तिल भी गिन लें। इतना विश्वास दिलाता हूं कि तिल की संख्या सच निकलेगी। इतना बुद्धि भरा जवाब देखकर राजा ने उसे तुरंत प्रधानमंत्री बना दिया।

सिद्धांत : ब्रह्मज्ञानी गुरु अपने ज्ञान और रमज से न सिर्फ लाखों के जीवन बनाता है, बल्कि उन्हें ज्ञान से ऊपर उठाता है।

647. तीन प्रकार के गुरु

एक राजा का बेटा गलत आदतों का शिकार हो गया। वह जुए, शराब और अन्य विषय विकारों में जीवन बिताने लग

गया। इस प्रकार कई वर्ष बीत गए। राजा बूढ़ा हो चुका था। उसे विचार आया कि मेरे बाद गद्दी पर कौन बैठेगा? राजकुमार तो जिस स्थिति में है, वह गद्दी के लायक नहीं है। यह सोचकर उसने अपने एक मंत्री से कहा कि—'राजकुमार को समझा-बुझाकर ठीक रास्ते पर ले आओ।' वह मंत्री ज्ञानी तो था पर Artist न था। वह राजकुमार के पास पहुंचा और उसकी गलतियां बताने लगा। राजकुमार तंग आ गया और उसे चले जाने का आदेश दे दिया। वह अपना-सा मुंह लटकाए राजा के पास वापस आ गया। अब राजा ने दूसरे मंत्री को राजकुमार के पास भेजा। इसका तो ज्ञान भी पक्का न था। राजकुमार के साथ वो भी उसी के रंग में रंग गया और विषय-विकारों में फंस गया। जब कई दिनों तक मंत्री वापस न आया तो राजा ने तीसरे मंत्री को भेजा। वह ज्ञानी के साथ-साथ अनुभवी भी था। उसने पहले तो राजकुमार का दिल जीता और उससे मित्रता कर ली। इतना कि राजकुमार उसके सिवाय किधर भी आता-जाता न था। फिर एक दिन मंत्री ने बोला अब मैं वापस जाता हूं। तब तक राजकुमार उसके प्रेम में इतना भीग गया था कि वह बोला—'मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।'

सिद्धांत : पहला गुरु कहता है हमने इतनी तपस्या की, तुम तो भोगी हो। दूसरा गृहस्थी में खुद ही फंस जाता है। तीसरा ब्रह्मज्ञानी खुद निर्बंध है और दूसरों को बुराइयों से निकालते हैं।

648. सम्राट अशोक का कीमती हीरा

सम्राट अशोक के यहां एक महात्मा आए। अशोक को हीरों का बहुत शौक था। वे महात्मा जी को बोले—'मेरे पास एक बहुत मूल्यवान हीरा है, चलिए आपको दिखाऊं।' महात्मा ने देखा, फिर बोले—'राजन, अब आप मेरे साथ चलिए, मैं आपको इससे भी मूल्यवान हीरा दिखाता हूं।' सम्राट अशोक चल पड़े। शहर के बाहर एक झोंपड़ी थी जहां पर एक बूढ़ी औरत चक्की पीस रही थी। वह दिखाकर महात्मा सम्राट अशोक से बोले—'उस औरत की चक्की का पत्थर आपके हीरे से अधिक बहुमूल्य है क्योंकि वह उसका पेट भरता है। आपके पत्थर को तो चौकीदार चाहिए।'

सिद्धांत : उसी की कीमत है जो सबके काम आए।

649. हनुमान मूर्ति पर छप्पर

एक गांव के पास हनुमानजी की मूर्ति मिली। गांव के लोगों ने मिलकर खड़ी कर दी। एक महात्मा आए और बोले—'तुम सब बड़े पापी हो, हनुमानजी को धूप में खड़ा कर रखा है।' यह सुनकर लोगों ने उस पर छप्पर डाल दिया। थोड़े दिन में दूसरे महात्मा आए। बोले, तुम सब बड़े मूर्ख हो। कभी छप्पर में आग लग गई तो अनर्थ हो जाएगा। यह छप्पर यहां से हटाओ। दोनों महात्माओं को हनुमानजी से प्यार था पर दोनों की बुद्धि में भेद था।

सिद्धांत : यह बुद्धि-भेद ही राग-द्वेष उत्पन्न करता है और दुख का कारण बनता है।

650. प्रसव में रानी को आराम

रानी की Delivery हुई तो उसे बहुत दिन आराम की जरूरत पड़ी और उसने खाने-पीने पर भी बहुत ध्यान दिया। अपने को बहुत पौष्टिक भोजन खिलाया। राजा को लगा यह बेकार नखरा कर रही है। वह रानी से बोला—'औरों के भी बच्चे होते हैं, उन पर कौन इतना ध्यान देता है?' रानी ने कुछ जवाब न दिया पर माली को बुलाकर चुपचाप आदेश दे दिया कि आज से बगीचे के पौधों में पानी देना बंद कर दो। राजा को पौधों का बहुत शौक था। उसके कीमती पौधे मरने लगे तो माली से पूछताछ करने पर सब मालूम पड़ा। राजा सीधे रानी के पास गया और उससे इसका कारण पूछा।

तब रानी ने जवाब दिया—'जैसे जंगल के पेड़-पौधों में और आपके बगीचे के पौधों में फर्क है वैसे ही राजमहल में पले और साधारण घरों में पले लोगों में फर्क है।'

सिद्धांत : शरीर को जैसी आदत डालो वैसी इसकी जरूरत हो जाती है।

651. बिल्ली को खाट से बांधा

एक झोंपड़ी में गुरु-शिष्य दोनों रहते थे। उन्हें चूहे सताते थे तो एक बिल्ली को रख लिया। जब गुरु ध्यान में बैठते तो कभी बिल्ली चंचलता करती तो गुरु उसे खाट के पांव से

बांध देते और फिर ध्यान के लिए बैठ जाते। कुछ समय बाद गुरु का शरीर शांत हो गया और बिल्ली का भी। जब शिष्य ध्यान में बैठता तो उसका मन स्थिर न हो पाता। उसने सोचा मेरा गुरु खटिया से बिल्ली को बांधता था फिर ध्यान में बैठता था। तो मैं भी ऐसे ही करूं तो ध्यान लगेगा। ऐसे ही कई शिष्य गुरु के कर्मों की कापी करते हैं।

सिद्धांत : गुरु के कर्म का मर्म जानो।

652. अंत मते सोई गते

एक आदमी हर समय सिर्फ धन पदार्थ इकट्ठा करने में लगा रहता था। कभी भगवान का स्मरण नहीं करता था। कभी मित्र या सगा कहता कि कभी तो राम नाम लिया कर, तो उसकी बात काटकर कहता कि तुम सब यों ही व्यर्थ समय गंवाते हो। आखिर अंत काल आ गया। उसके पड़ोसी के लड़के का नाम राम था। लोगों ने सोचा कि किसी बहाने इसके मुख से राम नाम कहलवा लें। उसको सामने ले जाकर आदमी से पूछा यह कौन है? वह बोल पड़ा—'यह तो फलानी साहुकारनी का बेटा है...पर उसे राम नाम न लिया गया।'

सिद्धांत : जिसका चिंतन उम्र भर चलता है, वही मौत के समय में साथ रहता है। इसलिए मन को शुरू से परमात्मा के चिंतन में ही लगा।

653. चार अंधे

किसी गांव की धर्मशाला में चार अंधे रहते थे। अचानक

उस गांव में एक हाथी आ गया। अंधों के दिल में भी हाथी देखने की सूझी। उन्होंने सोचा, हाथों से टटोलकर पता चल जाएगा कि हाथी कैसा होता है। एक का हाथ हाथी की टांगों पर लगा, दूसरे का पूंछ पर, तीसरे का कानों पर, चौथे का पीठ पर लगा। जिसका हाथ टांग पर लगा वह बोला—'हाथी तो जैसे खम्बा हो।' जिसका पूंछ पर पड़ा था उसने कहा—'तुम गलत हो, हाथी ऐसे था जैसे लम्बा सांप हो।' जिसका कानों पर पड़ा था वो कहने लगा—'हाथी ऐसे था जैसे छाज।' जिसका पीठ पर पड़ा वो कहने लगा—'हाथी ऐसे था जैसे थड़ा।' इस तरह वो चारों आपस में लड़ने लगे।

भाव कि संसारी लोग की हालत भी यही है, उनके पास भी परमार्थ को देखने वाली आंख नहीं और एक ही परमात्मा के विषय में परस्पर झगड़ते रहते हैं।

जब सतुगुरु से नजर मिलती है तो परमार्थ ठीक-ठाक दिखाई देने लगता है।

सिद्धांत : गुरु ही सच्ची आंख देता है।

654. आदत का गुलाम

एक दुल और शहनाई बजाने वाला ऐसा था कि वो जिस बारात के लिए शहनाई बजाने जाता, वहां दुल्हन को विदाई के समय रोते देख, उसको भी आदतवश रोना आ जाता था। एक बार लड़के के पिता ने कहा कि तुम मेहरबानी के लिए

विदाई के समय आंसू न बहा। उसके लिए मैं दस रुपया तुम्हें पहले ही दे देता हूं। वह मान गया और वादा किया कि वह नहीं रोएगा।

पर जब विदाई की घड़ी आई और दुल्हन के पक्ष के सभी लोग रोने लगे तो यह लड़के के बाप के पास गया, वह दस रुपया लौटाया और बोला—'मैं अपने आपको रोक नहीं पा रहा हूं। आंसू निकले ही आ रहे हैं।'

सिद्धांत : गलत आदत जैसी कोई फांसी नहीं। अच्छी आदत जैसी कोई शक्ति नहीं।

655. राजा के पास आदमी कटी जीभ लेकर आया

एक राजा था जो हमेशा कड़वा बोलता था, प्रत्येक को धमकी देता था।

अब राजा के आगे बोले कौन? एक दिन राजा ने अपने दरबारियों से कहा—'जो आदमी जिस चीज को सबसे बुरी समझता है, उसे मेरे पास लाओ।' दूसरे दिन कोई आदमी लाया मल-मूत्र, कोई कीचड़, कोई सड़ी-गली चीज, कोई सांप, कोई बिच्छू। एक बुद्धिमान आदमी एक मरे हुए की जीभ काटकर ले गया। राजा ने पूछा—'इसमें क्या बुराई है?' आदमी ने कहा—'तलवार के काटे का इलाज है, पर कड़वी बात से दिल पर जो घाव हो जाता है, उसका कोई इलाज नहीं और यह जीभ ही बुराइयों की जड़ है।' राजा बहुत शर्मिन्दा हुआ, उसे अपनी गलती समझ में आई पर वह

कुछ बोला नहीं। अब राजा ने ऐलान किया जिसको जो चीज सबसे अच्छी लगती है वो लेकर आओ। कोई घी, कोई चीनी, कोई सोना आदि लेकर आया पर वो आदमी आज भी वही जीभ लेकर आया। राजा हैरान हुआ, कहा—'कल तो तू कहता था ये सबसे बुरी चीज है और आज कहता है, सबसे अच्छी?' उसने कहा—'जब कड़वा बोलो तो सबसे बुरी और मीठा बोलो तो यही सबसे अच्छी है। इसी से तो भगवान का नाम-जप कर सकते हैं, भजन गा सकते हैं।'

सिद्धांत : यह जीभ ही बसे घरों को उजाड़ सकती है और उजड़े घरों को बसा सकती है।

656. दो अशिष्ट प्रभाव

एक व्यक्ति भड़कीले कपड़े पहने रेल के डिब्बे में आया। सामने सीट पर एक बूढ़ा यात्री बैठा था और पास ही उसका हैट भी रखा था। शायद उसने वह अपने मित्र के लिए जगह रोकने के लिए रखा था। भड़कीला आदमी झट से सीट पर बैठ गया और धम्म से हैट को दबा दिया। फिर बजाए माफी मांगने के बूढ़े आदमी को ही गुस्सा करने लगा और बुरे शब्द बोलने लगा। उसकी ये बेतुकी हरकतें सभी को खराब लग रही थीं। अगले स्टेशन पर वह यात्री उतर गया, तो बूढ़े यात्री ने कुली को पुकार कर कहा कि इस यात्री को बुलाना, यह अपना सामान भूल गए हैं। वह भागा-भागा आया और ऊंची

आवाज में पूछा—'मैं यहां क्या छोड़ गया?' वृद्ध ने शांतिपूर्वक कहा—'दो अशिष्ट प्रभाव।' यह सुनकर उसका सिर नीचा हो गया और वह चुपचाप चला गया।

सिद्धांत : मनुष्य की पहचान उसके स्वभाव से होती है।

657. सेठ ने आइसक्रीम लाने को कहा

एक सेठ के यहां रात को पार्टी थी तो उन्होंने अपनी पत्नी से आइसक्रीम मंगवाने को कहा। सेठानी श्रृंगार में व्यस्त थी तो उन्होंने बेटे से कह दिया। बेटा सूटबूट में लगा था तो उसने Main Cook से कहा। Main ने Junior Cook को कह डाला। और ऐसे सब भूल गए। सेठ ने रात पत्नी को डांटा, पत्नी ने लड़के को, लड़के ने Main Cook को। Main Cook ने Junior Cook को। Junior के नीचे कोई न था तो उसने अपने बाजू में बैठे कुत्ते को लात लगा दी।

सिद्धांत : एक असावधानी से विक्षेपता का सिलसिला शुरू हो जाता है। ऐसे ही एक प्यार के शब्द से प्यार का वातावरण बन सकता है।

658. शब्द की महिमा

गुरु और शिष्य दोनों साथ-साथ कहीं जा रहे थे। गुरुजी ने चेले से कहा—'जाओ पूछ आओ इस घर के मालिक कहां हैं।' चेले को बोलना नहीं आता था। उसने जाकर

कहा—'ऐ औरत तेरा खसम कहां है?' इस पर वह औरत नाराज हो गई और उसने उसे भगा दिया। उसके बाद गुरुजी स्वयं गए और बोले—'माताजी आपके श्रीमान पतिदेव कहां हैं?' औरत बोली—'आइए-आइए, बैठिए, अभी थोड़ी देर में आते होंगे।' इस प्रकार गुरु-शिष्य ने बात तो एक ही पूछी पर बोलने का ढंग अलग-अलग था।

सिद्धांत : कठोर बोलना मनुष्य जीवन का पाप है और मानवता को नीचे गिराने वाला है।

15. प्रेम, भक्ति, श्रद्धा के दृष्टांतों की सूची

659. भक्त के लिए भगवान स्वयं क्यों आते हैं
660. कबीर ने चोर को पनाह दी
661. पतंगे की तरह ईश्वर पर कुर्बान
662. नामदेव पर चोरी का इल्जाम
663. जिसको देगा मौला
664. खोमचे वाले ने पानी पिलाया
665. सीता ने डिब्बी में कीड़ा रखा
666. महावीर के संस्कार
667. गुरु का निर्णय
668. शकू बाई के लिए भगवान प्रकट
669. सबसे बड़ा कौन
670. प्रेम पर वार्तालाप
671. तफ़ान में श्रद्धा का सबक
672. भाव भीगी मीरा
673. अकबर ने ईश्वर भक्ति की महिमा पूछी
674. भगवान ही मुझे बचाएगा
675. कबीर के पास कोढ़ी आया
676 भक्त की गरीब चोर से सहानुभूति
677. कबीर का यज्ञ सफल हुआ

ॐ प्रेम और अहंकार ॐ

1. अहंकार तोड़ता है, प्रेम जोड़ता है।
2. अहंकार तनाव है, प्रेम आनंद है।
3. अहंकार अशांति देता है, प्रेम शांति देता है।
4. अहंकार जन्मदाता है समस्या का, प्रेम जन्मदाता है समाधान का।
5. अहंकार दूसरों को मिटाकर खुश है, प्रेम खुद को मिटाकर खुश है।
6. अहंकार जीतकर भी हारता है, प्रेम हारकर भी जीतता है।
7. अहंकार बेहोशी का नाम है, प्रेम जागरण का नाम है।
8. अहंकार अकड़कर खड़े होने का नाम है, प्रेम झुकने का नाम है।
9. अहंकार लूटना चाहता है, प्रेम लुटाना चाहता है।
10. अहंकार बेचैनी-परेशानी है, प्रेम चैन-विश्राम है।

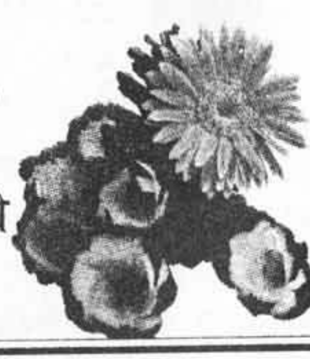

प्रेम, भक्ति, श्रद्धा

659. भक्त के लिए भगवान स्वयं क्यों आते हैं

एक बार अकबर ने बीरबल से कहा—'सुना है तुम्हारे भगवान अपने भक्तों की रक्षा के लिए स्वयं आते हैं। क्या उनके पास कोई दूसरा दरबारी नहीं होता है जिसे भेज दें?' समय बीतता गया। एक बार बादशाह नाव में सवार होकर दरबारियों सहित दरिया की सैर कर रहे थे। उस नाव में एक आदमी बादशाह के नादान बच्चे को गोद में ले बैठा था, वास्तव में वो बच्चा बनावटी था। अचानक बच्चा गोद में से दरिया में गिर गया। जब बादशाह ने देखा तो फौरन खुद ही छलांग मार दी। तब बीरबल के इशारे पर मल्लाहों ने बादशाह और बच्चे को बाहर निकाला। बादशाह ने देखा बच्चा नकली है। बीरबल पर चिल्ला उठे—'यह क्या बात है?' बीरबल बोला—'ये आपके प्रश्न का उत्तर है। आप रक्षा के लिए स्वयं क्यों उतरे, दरबारी को भेज देते? ऐसे ही भगवान भी अपने भक्त के दुख को सहन नहीं कर सकते।'

सिद्धांत : भगवान अपने भक्तों के लिए सब कुछ करते हैं।

660. कबीर ने चोर को पनाह दी

एक बार आधी रात को एक चोर भागता हुआ कबीर के घर में घुस गया और बोला कि—'सिपाही पीछे लगे हुए हैं मुझे पनाह दो।' कबीर ने जल्दी से उसे अपनी बेटी के पलंग पर सो जाने को कहा। इतने में सिपाही आ पहुंचे और पूछने लगे कि यहां कोई चोर आया है क्या? कबीर ने कहा—'यहां तो केवल मैं हूं और मेरी बेटी है और मेरा दामाद है जो बेटी के साथ सो रहा है।' सिपाही यह देखकर बाहर चले गए।

उधर चोर के मन में भारी परिवर्तन होने लगा। उसका दिल कबीर के प्रेम और करुणा से पिघलने लगा। वह कबीर की अलौकिकता से गदगद हो गया और उसे अपना गुरु मानकर पूरा बदल गया। आगे चलकर वह ही कबीर का दामाद बना।

सिद्धांत : संतों का दिव्य प्रेम ही लोगों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

661. पतंगे की तरह ईश्वर पर कुर्बान

एक प्रेमी भक्त भगवान के दर्शन का अति प्यासा था। वह हर समय यह ही विनती करता था कि प्रभु कब दर्शन दोगे। यह प्यास उसे सब मंदिर ठिकानों में ले गई और उसने सभी तीर्थों की यात्रा कर ली। पर उसे दर्शन न हुए। एक दिन वह सवेरे उठकर भगवान को दंडवत-प्रणाम कर रहा था कि आकाशवाणी हुई कि जैसे तू अरदास करता है वैसे तो सारा संसार करता है। पतंगा जैसे रोशनी पर फना होता है वैसे ही तन-मन-धन भगवान के लिए कुर्बान करना पड़ता है।

संसारी इश्क में भी पत्नी अपना सब कुछ पति पर न्यौछावर करती है तब पति उसे कबूल करता है।

सिद्धांत : परमात्मा को सच्चा प्रेम और सच्ची श्रद्धा चाहिए।

662. नामदेव पर चोरी का इल्जाम

एक बार भक्त नामदेव नदी पर बैठे कपड़ा धो रहे थे। पास में ही एक पाखण्डी साधू समाधि लगाए बैठा था। इतने में एक नौजवान आया और नदी में स्नान करने के लिए कपड़े उतारे। उसने अपना कीमती मोतियों का हार भी उतारकर कपड़ों में छुपाकर रख दिया। साधु ने यह सब देख लिया और नौजवान जब स्नान करने में व्यस्त था तो चुपचाप माला उठाई और अपने आसन के नीचे रखकर वापस समाधि में बैठ गया। नौजवान वापस आया तो उसे अपनी माला न मिली। इधर-उधर देखा—एक साधु समाधि में बैठा है और दूसरा नामदेव कपड़े धो रहे हैं। उसने नामदेव पर दोष लगाया कि हो न हो यह माला आपने ही ली होगी। नामदेव ने भगवान को पुकारा कि यह चोरी का इल्जाम दूर करो। इतने में जोर से तूफान आया और बनावटी साधु का आसन भी उड़ने लगा। नामदेव ने नौजवान को दिखाया कि वह देखो तुम्हारी माला रखी है।

सिद्धांत : सच के रास्ते पर हो तो निंदा-कीर्ति की परवाह न करके बढ़ते चलो। एक दिन दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।

663. जिसको देगा मौला

आसफ दौला नाम का एक राजा बहुत दानी था। उसके राज्य में एक फकीर रहता था जो कहता था—'जिसको देगा आसफ दौला उसे क्या देगा मौला।' पास ही एक साधु रहता था जो भगवान की भक्ति में लीन रहता था और कहता था—'जिसको देगा मौला उसे क्या देगा आसफ दौला।' दोनों की उल्टी-सुल्टी बातें राजा के कानों तक पहुंच गईं और उन्होंने दोनों को दरबार में बुलवाया। राजा ने कहा कि मैं दोनों की परीक्षा लेकर देखूंगा कि कौन सच्चा है। तुम दोनों मेरे पास बीस दिन तक आना। राजा रोज फकीर को एक तरबूज देता जिसमें गुप्त रूप से एक गिन्नी रख देता। फकीर बिना जाने यह तरबूज एक तरबूज वाले को बेच देता। उधर साधु मेहनत की कमाई से जो कुछ मिलता उसी से गुजारा करना चाहता था। उसकी कमाई थोड़ी-सी होती तो वह तरबूज वाले के पास जाकर एक तरबूज खरीद लेता और संयोगवश वो ही तरबूज उसे मिलता जो फकीर उसे बेचता था। इस तरह फकीर तो फकीर ही रहा पर साधु के पास 20 गिन्नियां जमा हो गईं। 20 दिन के बाद दोनों राजा के पास पहुंचे और अपनी-अपनी बातें दोहराईं। राजा दंग रह गया और उसे पक्का विश्वास हो गया कि मेरे देने से कुछ नहीं होगा।

सिद्धांत : एक मात्र देने वाला परमात्मा है और वह उसकी ही मदद करता है जो अपनी मदद करता है।

664. खोमचे वाले ने पानी पिलाया

एक महात्मा अपने आश्रम के बाहर रोज वेदांत सुनाया करते थे। वहीं पर एक कुएं के पास एक आलू-मटर बेचने वाला खोमचा लगाकर बैठता था और ध्यान से कथा सुनता। एक दिन उसने महात्मा से कहा—'महाराज, मैं इतने दिनों से मन लगाकर कथा सुनता हूं। मैंने आत्मा का स्वरूप भी जान लिया है, पर मुझे आत्मानन्द की प्राप्ति नहीं हो रही है, इसका कारण क्या है?' महात्मा ने कहा—'अंदर से कोई बंधन होगा, और जिस दिन मन का ये बंधन हटेगा तो आत्मा का आनंद का अनुभव होगा।' एक दिन कड़ी धूप में जब वो खोमचा लगाकर बैठा था तो एक राजपूत को बड़ा-सा सर पे बोझ ले जाते देखा। वो बहुत थका हुआ, व्याकुल था और कुएं के पास बेहोश होकर गिर पड़ा। खोमचे वाले ने तुरंत उसको छाया में सुलाया, हवा दी कपड़े से और थोड़ा-थोड़ा शरबत मुंह में डालना शुरू किया। बहुत देर बाद उसे होश आया तो उसे चने खिलाकर ठंडा पानी पिलाया। राजपूत अब बिल्कुल अच्छा हो गया और उसके रोम-रोम से आशीष निकल रहा था।

इसी समय खोमचेवाले को आत्मानंद महसूस हुआ। उसका हृदय ब्रह्मानंद हो गया।

सिद्धांत : निष्काम अपना आप समझकर अतिप्रेम से सेवा करने से अंदर के सारे मन के बंधन कट जाते हैं और आत्मानंद की प्राप्ति होती है।

665. सीता ने डिब्बी में कीड़ा रखा

भगवान सारी सृष्टि के जीवों का पालन-पोषण करता है, इस बात की परीक्षा लेने के लिए एक बार सीता ने एक कीड़ा लेकर उसे डिब्बी में बंद कर दिया। खाने का समय हुआ तो सीता जी वह डिब्बी वहां ले आईं। भगवान रामचंद्र जी को भोजन परोसा। वे दस मिनट ध्यान करके भोजन ग्रहण करने लगे तो सीता माता हंस पड़ीं कि आज तो सब जीवों को भोजन न मिला। यह कहकर उन्होंने वह सोने की डिब्बी खोली तो देखा कि उस डिब्बी में एक चावल का कण पड़ा है। वे बहुत हैरान हुईं तो भगवान ने बताया कि जब तुम डिब्बी बंद कर रही थीं तो अनजाने में एक चावल का दाना जो पूजा करने के समय उनके तिलक में लगाया गया था, उस डिब्बी में गिर पड़ा जिसे चूसकर वह कीड़ा जीवित है।

सिद्धांत : सारे जीव-जंतु भगवान के बच्चे हैं तो वह कैसे नहीं उन्हें खिलाएगा।

666. महावीर के संस्कार

महावीर भ्रमण करते हुए एक ऋषि के आश्रम में पहुंचे। आश्रम के कुलपति के आग्रह पर पर्णकुटी में रहने लगे। उन दिनों वहां पर वर्षा नहीं हुई थी जिससे उस प्रदेश के जानवर त्रस्त थे। गाय आकर वहां की झोंपड़ियों की घास खींचकर खा रही थी। तो उनमें रहने वाले उन्हें भगा देते थे पर महावीर की पर्णकुटी की घास खातीं तो महावीर कुछ न

कहते। कुलपति ने कहा—'राजकुमार, पक्षी तक अपने घोंसले की सुरक्षा करते हैं, फिर आप तो राजपुत्र हैं।' पर महावीर को सारे प्राणिमात्र के प्रति इतना प्रेम था कि पशुओं का भूखा रहना उनको सहन नहीं था। अत: उन्होंने उस आश्रम को ही छोड़ दिया और प्रतिज्ञा की कि—

'अप्रीतिकर जगह में नहीं रहूंगा। सदा ध्यान और मौन में रहूंगा। हाथ में ही भोजन करूंगा, गृहस्थ से भीख नहीं मांगूंगा।'

667. गुरु का निर्णय

एक गुरु के दो उत्तम शिष्य थे। दोनों ने ज्ञान बहुत अच्छी तरह उठाया था। गुरु ने सोचा प्रश्न करके पता लगाना चाहिए किसकी स्थिति बेहतर है जो उसे ही गद्दी का अधिकारी बनाएं। गुरु ने पहले ईश्वर, जीव, ब्रह्म, द्वैत, अद्वैत, माया-मोह, धन-यश आदि के प्रश्न किए और दोनों को योग्य पाया। फिर कर्म, प्रेम, राज्य आदि का प्रश्न किए जिनके दोनों ने अच्छे जवाब दिए। फिर गुरु ने सोचा, गद्दी को लेकर ही प्रश्न करेंगे। उन्होंने वामदेव को बुलाया और पूछा—'मैं सत्यदेव को अपने पद पर आसीन करना चाहता हूं, तुम्हारा क्या मत है?' वामदेव बोला—'आपकी आज्ञा शिरोधार्य है और निर्णय उत्तम है।' फिर गुरु ने सत्यदेव को बुलाया और कहा—'मैं वामदेव को आसीन करना चाहता हूं, तुम्हारी क्या राय है?' सत्यदेव ने गुरु के चरण स्पर्श किए और कहा—'मैं वामदेव में आपको ही देखूंगा। इस तरह से

आप हमेशा मेरे पास ही रहेंगे।' वामदेव आज्ञाकारी निकला और सत्यदेव आज्ञाकारी के साथ गुरु भाई को सम्मानित करने वाला निकला।

सिद्धांत : गुरु-भक्ति के सिवाय ज्ञान का 'ज्ञ' भी नहीं आता।

668. शकूबाई के लिए भगवान प्रकट

शकूबाई भगवान की भक्ति में हमेशा मस्त रहती थी। उसे उसके घर वाले समझ नहीं पाते थे। वे उस पर बहुत अत्याचार करते—उससे दिन-भर काम लेते और खाने को भी पूरा न देते। ऊपर से सास की गाली-गलौज और पति की मार बरसती रहती। ऐसा सब होते हुए भी शकू बाई का मन शुद्ध रहता। वह पल भर के लिए भी किसी की शिकायत मन में न लाती और प्रेमपूर्वक सेवा करती रहती। एक दिन एक पर्व आया और गांव के नजदीक मेला लगा जहां पर सब उच्च कोटि के साधु-संत आ रहे थे। शकू बाई के हृदय में तीव्र शुभ संकल्प उठा कि मेले में जाकर सब का दर्शन करूं और सत्संग सुनूं। घरवालों को महसूस हो गया कि यह तो चली जाएगी, फिर हमारी सेवा कौन करेगा, सो उसे एक खम्बे से बांध दिया। दोपहर में जब वे सो गए तो शकू बाई ने देखा रस्सियां ढीली हैं और वह छुड़ाकर भाग गई और मेले में पहुंच सत्संग आदि के आनन्द में डूब गई। कई दिन बीत गए। उसे समय का पता ही न लगा। उधर भगवान को चिंता

लगी कि घर वाले उसे न देखकर मेले से ढूंढ़ निकालेंगे और बहुत मारेंगे। यह सोचकर स्वयं भगवान ने शकूबाई का रूप धारण किया और घरवालों की सेवा इतने प्रेम से की कि ऐसे तमोगुणी भी उन पर रीझ गए। इधर दस पन्द्रह दिन बीत गए तो शकू बाई ने सोचा घर चलना चाहिए। वह वहां पहुंची तो भगवान अंतर्धान हो गए पर शकूबाई ने देखा, सब उसको प्यार इज्जत दे रहे हैं। उसकी स्थिति पलट गई और वह प्रेम-भक्ति में आराम से रहने लगी।

सिद्धांत : सच्चे भक्त के लिए भगवान सब कुछ करता है।

669. सबसे बड़ा कौन

नारद जी ने एक दिन भगवान से पूछा—'सबसे बड़ा कौन?' नारायण ने नारद का निरीक्षण किया। फिर श्रीमुख से बोले—'आपको धरती बड़ी लगती है पर धरती से तो पानी तीन गुना ज्यादा है। पर समुद्र भी बड़ा नहीं है क्योंकि उसे तो अगस्त मुनि पी गए थे और अगस्त भी तो अनन्त आकाश में मात्र एक टिमटिमाता तारा रहा है। आकाश को तो वामन अवतार में भगवान ने एक कदम में नाप डाला था तो वह भी छोटा हो गया। नहीं, भगवान विष्णु भी बड़े नहीं क्योंकि वे तो भक्तों के एक अंगूठे के बराबर जगह में समा जाते हैं। अतः मन ही सबसे बड़ा और विशाल होता है।'

सिद्धांत : सबसे बड़ा भक्त का मन है।

670. प्रेम पर वार्तालाप

ग्रीस में एक बहुत प्रसिद्ध कवि था—एगोथन। उसे ड्रामा में प्रथम पुरस्कार मिला तो उसने बहुत बड़ी दावत दी। सबके मनोरंजन के लिए बातचीत का विषय रखा 'प्रेम', इस पर सबने अपनी मत बताई।

एक ने कहा—'प्रेम से ही देवता देवता है। प्रेम सब का अगुआ है और सबसे ज्यादा शक्तिशाली है। प्रेमी कायर से वीर बन जाता है क्योंकि अपनी प्रेमिका के सामने वह कायरता का प्रदर्शन नहीं करना चाहता। अगर मुझे ऐसी सेना दी जाए जहां सब प्रेमी हों तो मैं विश्व विजय कर लूं।'

दूसरे ने कहा—'बात सच्ची है पर दुनियावी प्रेम और इलाही प्रेम में फर्क है। साधारण प्रेम यौवन के नशे में सुंदरता पर आशिक होता है और जैसे-जैसे बुढ़ापा घेर लेती है, वह प्रेम उड़ जाता है। पर परमात्मा के प्रति प्रेम सनातन होता है और वह बढ़ता ही जाता है।'

तीसरा एक हास्य कवि ने कहा—'पहले जमाने में Male-Female का स्वरूप एक Ball जैसा था। उसके चार हाथ, चार पांव और दो मुख होते थे। जगत में सृष्टि की गति बहुत तेज थी, इसलिए जियस (ईश्वर) ने उसके दो भाग कर दिए। ये दोनों शक्तियां आज भी मिलने के लिए आतुर रहती हैं। इसी का नाम प्रेम है।'

जब सुकरात की बारी आई, उन्होंने कहा—'प्रेम ईश्वरीय सुन्दरता की भूख है। विद्या, क्षमा, धैर्य, उत्साह,

वीरता, न्याय, श्रद्धा—ये ही उस सुन्दरता के अलग-अलग रूप हैं एक शब्द में।'

सिद्धांत : आत्मा की सुन्दरता के लिए तड़प ही वह प्रेम है जो हमें परमात्मा तक पहुंचाता है।

671. तफ़ान में श्रद्धा का सबक

एक जहाज महासागर में बड़े तूफान में घिर गया और ऊंची-ऊंची लहरों पर खिलौने की तरह नाचने लगा। पति अविचल था। पत्नी ने कहा—'जहाज डूबने का डर है। इससे बचने का उपाय निकालिए।' पति ने अपना पिस्तौल उठाकर पत्नी की ओर निशाना लगाकर कहा—'अभी तुझे डर नहीं लगता?' पत्नी बोली—'जब पिस्तौल आपके हाथ में है तो डर काहे का?' श्रीमान जी बोले—'तो जब यह तूफान हमारे प्रियतम प्रभु के हाथ में है तो डरने का क्या कारण? प्रेम रूप प्रभु इतना नजदीक है कि हम क्यों डरें?'

672. भाव भीगी मीरा

जब मीरा पांच साल की थी तब उनके घर एक संत आए। संत के पास कृष्ण भगवान की बड़ी सुन्दर मूर्ति थी। सवेरे पूजा के समय मीरा ने वह मूर्ति देख ली और दावा किया कि यह मूर्ति मेरी है। माता-पिता ने समझाया कि बेटी यह खिलौना नहीं है, भगवान की मूर्ति है पर बहुत मिन्नतों के बाद भी मीरा

इसी अटल इरादे पर टिकी रही कि यह मूर्ति मेरी है। जब महात्मा मूर्ति लेकर जाने लगे तो मीरा बहुत रोई। वह रोती ही रही और ग्यारह दिन तक खाना नहीं खाया। मां-बाप को चिंता हो गई कि अब संत को कहां ढूंढ़ें? 'मुझे मेरा कृष्णा ला दो' की रट ने उनको दुखी कर दिया। उधर उस संत को लगातार तीन दिन तक एक ही सपना आता रहा कि जा उस लड़की को यह मूर्ति दे आ, इस मूर्ति की असली हकदार वो है, जा, जल्दी जा। महात्मा मीरा के घर आए और मूर्ति उसके हाथ में दे दी। रोती हुई मीरा ने दौड़कर मूर्ति ले ली और उसे अपने हृदय से लगा लिया। स्थूल रूप में मूर्ति भले ही बाहर थी, पर उतर चुकी थी वह मीरा के हृदय में।

सिद्धांत : जो जिसका अधिकार होता है निराकार उसे दिलाता है। जो मुझे जिस भाव से भजता है मैं भी उसे उसी भाव से भजता हूं। 'मीरा के प्रभु गिरिधर नागर' करते-करते मीरा ने आखिर अनुभव किया कि मीरा के प्रभु घट-घट के वासी हैं और उस एक ही परमात्मा के हर घट में दर्शन करके वे मुक्त हुईं।

673. अकबर ने ईश्वर भक्ति की महिमा पूछी

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा—'हिन्दू ग्रंथों में ईश्वर की भक्ति पर बड़ा जोर दिया जाता है, ईश्वर हमको क्या देता है जो उसका भजन करें।' बीरबल ने थोड़ा समय मांगा। एक बार अकबर को प्यास लगी, पानी का हुकुम दिया,

नौकर पानी लेकर आया। बीरबल ने कहा—'भगवान करे कभी ऐसा मौका न आए, पर समझो आप रेगिस्तान से जा रहे हैं, प्यास से आपकी बुरी हालत हो रही है, पानी नहीं है, तो आप क्या करेंगे?' अकबर बोले कि—'मैं कहूंगा, जो मुझे पानी देगा मैं उसे अपना आधा राज्य दे दूंगा।' बीरबल ने वापस कहा—'भगवान न करे पानी आपके हलक में अटक जाए और आप तड़पने लगें तो आप क्या करेंगे?' तो अकबर ने कहा—'मैं कहूंगा, जो कोई भी वैद्य मुझे इस पीड़ा से बचाएगा उसे आधा राज्य दे दूंगा।' तो बीरबल ने कहा—'तो आपके इस राज्य की कीमत एक पानी का गिलास हुई। तो जो ईश्वर हमको पानी मुफ्त में देता है तो क्या उसका भजन करना, धन्यवाद करना हमारा कर्त्तव्य नहीं है?'

सिद्धांत : ईश्वर और प्रकृति का हमेशा शुकराना करना चाहिए।

674. भगवान ही मुझे बचाएगा

एक बार एक प्रदेश में बहुत बाढ़ आई। घरों में पानी आ गया और बेसहारा लोग अपने घरों की ऊपर की मंजिलों में चढ़ गए। पानी बरसता ही गया। आखिर लोग छतों पर पहुंच गए। उनमें से एक आदमी अपने आप को भगवान का बड़ा भक्त मानता था। उसका दृढ़ विश्वास था कि भगवान उसे बचाने आएंगे। वहां पर जिन-जिन लोगों के पास नावें थीं वे छतों पर अटके हुए लोगों को बचाने नावें ले-लेकर वहां पहुंचे। सब

लोग नावों में बैठकर सूखी जगहों पर ले जाए गए। इस भक्त के पास नाव पहुंची और सबने पुकार कर इसे कहा कि आओ भाई, नाव में बैठ जाओ, तो यह बोला, मैं नहीं आऊंगा, मेरे लिए तो भगवान आएंगे। उनके बहुत कहने पर भी वह छत पर ही इंतजार में बैठा रहा। उधर सरकार की ओर से Rescue Operations भी Organise हो रहे थे। Helicopter उन बाढ़ पीड़ितों के लिए भेजे गए और सभी लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया। इस आदमी की छत के ऊपर Helicopter आया, इसके हाथ के पास रस्सी की सीढ़ी लटकाई और इसे कहा कि ऊपर चढ़ जाओ, पर यह अपनी जिद में अड़ा रहा कि मुझे बचाने भगवान ही आएंगे। आखिर वे चले गए और इसे रात भर छत पर ही रहना पड़ा। ऐसी हालात में नींद कहां से आए? पर इसे एक-दो झपकियां अवश्य लगीं। उसमें इसने सपना देखा कि यह भगवान को उलाहना दे रहा है कि मैं आपका सच्चा भक्त, और आपने मेरी ही रक्षा नहीं की? भगवान ने सपने में इसे जवाब दिया कि उन नावों और मल्लाहों के रूप में मैं ही तो आया था। उन सरकारी Helicopters में मैं ही तो हर बार आकर तुझे पुकारता था, पर तूने ही मेरी आवाज नहीं सुनी।

सिद्धांत : भगवान साधारण वेश में ही प्रकट होता है। हर रूप में भगवान ही तो है!

675. कबीर के पास कोढ़ी आया

एक बार एक कोढ़ी अपना कोढ़ मिटाने के लिए कबीर

के पास आया। कबीर की पत्नी लोई ने तीन बार उसे राम-नाम जपवाया। जब संत सच्चे दिल से राम का नाम लेते हैं तो उसमें अद्भुत शक्ति का संचार होता है। लोई के जो साथ में राम-नाम बोला तो उसका कोढ़ दूर हो गया। कबीर को मालूम पड़ा कि लोई ने तीन बार राम-नाम जपवाया तो वह बोला—'यह तो एक बार राम कहने से ही ठीक होने वाला था, फिर तीन बार क्यों बोला?' तब लोई ने बताया कि इसको दो आने वाले जन्मों में भी कोढ़ आने वाला था। इसलिए तीन बार राम बोला जो कि सब कर्म कट जाएं।

सिद्धांत : सच्चा संत किसी का दुख दर्द नहीं देख सकता। वह उसे अपना आप समझकर दर्द का निवारण करता है।

676. भक्त की गरीब चोर से सहानुभूति

एक भक्त का कोई कपड़ा चुरा ले गया। कुछ दिनों बाद उन्होंने उस आदमी को वही कपड़ा बाजार में बेचते हुए देखा। दुकानदार ने कहा—'यह कपड़ा चोरी का है या नहीं ये क्या पता, हां कोई सज्जन आदमी इसे पहचानकर बता दें तो ही मैं खरीदूंगा।' भक्त पास ही खड़े थे, उन्होंने कहा—'मैं जानता हूं तुम दाम दे दो।' दुकानदार ने अब खरीद लिया। भक्त के एक साथी ने यह सब देखकर पूछा—'आपने ऐसा क्यों किया?' भक्त बोला—'वो बेचारा बहुत ही गरीब है, गरीबी से तंग आकर ही उसने

ऐसा किया होगा। गरीब की तो हर तरह से मदद करनी चाहिए। ऐसी स्थिति में उसे चोर बताकर फंसाना तो और भी बुरा है।' आदमी सब सुन रहा था। इस बात का उस पर इतना असर हुआ कि वो भक्त की कुटिया में जाकर रोने लगा और खुद भी भक्त बन गया।

सिद्धांत : आदमी का साधु स्वभाव न सिर्फ झूठ को काट देता है, बल्कि उसे भी साधु में बदल देता है।

677. कबीर का यज्ञ सफल हुआ

कबीर भक्त की बदनामी करने के लिए उनके वैरियों ने हजारों लोगों को कबीर के नाम से पत्र भेजा कि उनके यहां बड़ा यज्ञ हो रहा है और वे सब पधारकर भोजन ग्रहण करें। कबीर और लोई को यह सब कुछ मालूम ही नहीं था। वे दोनों रोज की तरह उस दिन भी जंगल में ध्यान-भक्ति के लिए चले गए। उधर भगवान ने देखा कि यहां तो उनको ही सम्भालना होगा तो वे स्वयं कबीर का रूप धारण करके आए और लक्ष्मी जी लोई बनीं। फिर सबको भरपूर भोजन और दक्षिणा दे तृप्त किया और सब लोग 'वाह कबीर——वाह कबीर' के नारे लगाते हुए लौटे। भगवान सच्चे भक्तों का काम खुद सम्भाल लेता है और उनके हाथों में भी रिद्धियां-सिद्धियां देता है।

सिद्धांत : भक्तों के योग-क्षेम का भार हमेशा से भगवान उठाते आए हैं।

16. गुण, हिम्मत, निर्भयता, सच्चाई के दृष्टांतों की सूची

गुण

678. मलबाई की शूरवीरता
679. चोर चोरी में पक्का
680. चार का मोल
681. संगीत सभा में 'वाह-वाह' नहीं करना
682. सत्य का प्रथम प्रयोग

नम्रता

683. नीच जात वाले के घर नहीं ठहरना चाहता था
684. सागर और सरिता संवाद
685. सिकंदर ने सेनापति को सूबेदार बनाया
686. फलों के टोकरे से साधु की गर्मी शांत
687. आचार्य तुलसी ने निर्णय लिया

क्षमा/क्रोध

688. घमंडी ने सर रैले के मुंह पर थूका
689. क्लास में नया लड़का आया
690. संत को लकड़ी से मारा
691. भक्त को कुएं में भगवान के दर्शन हुए
692. भक्त हरिदास की क्षमा-भावना

693. संत को आकाशवाणी हुई
694. जुलाहे ने लड़कों को सिखाया
695. राजा ने गुस्से में चकोर को मार डाला
696. आदमी ने महात्मा को गालियों से क्रोध दिलाना चाहा
697. ब्राह्मण को चांडाल ने छू लिया
698. झुकना स्वर्ग, अहंकार नर्क

व्रत-एकाग्रता, मौन

699. बोनापार्ट का संयम
700. गणेशजी का गहरा मौन

सच्चाई

701. विक्रमादित्य का तख्त
702. राजा ने मानसरोवर से हंस पकड़वाकर मंगवाए
703. युधिष्ठिर का सबक
704. राजा से हाथ मिलाने की चाह

हिम्मत/निर्भयता पर अन्य दृष्टांत

582. संत ने सिकंदर को जवाब दिया

क्षमा/क्रोध पर अन्य दृष्टांत

579. संत की आंख का पानी वैश्या पर

मौन पर अन्य दृष्टांत

535. उपदेश से ज्यादा आचरण

गुण

678. मलबाई की शूरवीरता

बल्लारी दक्षिण भारत में एक छोटा-सा राज्य है जहां पर मुगलों के समय में एक बड़ी शूरवीर विधवा मालबाई राज्य करती थी।

शिवाजी के गुरिल्लों ने उन पर आक्रमण कर दिया। मुट्ठी-भर बल्लारी सैनिक लड़े तो खूबी से पर अंत में हार गए और विधवा मलबाई को बंदी बनाकर शिवाजी के सामने लाया गया।

शिवाजी ने फिर भी उनको सम्मान दिया। तो वे फुंफकारकर बोलीं—'असमान शक्ति के कारण हमारी हार हुई। थोड़ी देर पहले हम भी स्वतंत्र थे। मेरे साथ यह सम्मान का नाटक क्यों?' शिवाजी हाथ जोड़कर बोले—'बल्लारी अब भी स्वतंत्र है। आपके अंदर मुझे अपनी स्वर्गीय माता के दर्शन हुए हैं। मुझे अपना पुत्र स्वीकार करें।' शूरवीर मलबाई एक पल में ममता-भरी मां बन गईं और शिवाजी को अंक में भर लिया।

सिद्धांत : हिम्मत के आगे प्रकृति झुक जाती है।

679. चोर चोरी में पक्का

एक ब्रह्मज्ञान का जिज्ञासु था। उसने गुरुमुख से अभी-अभी अद्वैत मत सुना था और वह आनन्द विभोर था। जो सामने आता उसे ही ज्ञान सुनाने लगता। सब बोलने लगे—'छोटा मुंह बड़ी बात! तू झूठा है।' ऐसे कहकर उसका तिरस्कार करते, गाली देते और कोई-कोई उसे मार भी देते।

वह हताश होकर एक जंगल में जाकर बैठ गया। उधर से एक चोर भागता हुआ आया। जिज्ञासु को उदास देखकर उसका कारण पूछा। मालूम पड़ने पर चोर ने अपनी कमीज उठाकर दिखाई कि कैसे सारी पीठ चाबुक के घावों से और छालों से भरी है, फिर भी उसने अपना चोरी का पेशा नहीं छोड़ा है। संत ने चोर का शुक्राना माना।

सिद्धांत : जैसी प्रीत हराम में, वैसी होवे हरि में।

680. चार का मोल

एक बार तैमूरलंग ने बहुत से गुलाम पकड़े, उनमें से दार्शनिक अहमदी भी थे। उनसे तैमूरलंग ने पूछा—'बताइए, पास में खड़े ये दो गुलामों की कितनी कीमत होगी?' अहमदी ने कहा—'ये समझदार मालूम पड़ते हैं, इनकी कीमत चार-चार हजार अशर्फी से कम नहीं हो सकती।' तैमूरलंग ने फिर प्रश्न किया—'बताइए, मेरी कीमत क्या हो सकती है?' वो कुछ सोचकर बोले—'दो अशर्फी।' तैमूर गुस्से से गरजने लगा—'मेरा इतना अपमान! इतने पैसों की

तो मेरी चादर है!' अहमदी बोले—'यह कीमत तो मैंने चादर की ही बताई है, तुम्हारे जैसे अत्याचारी की कीमत तो एक पाई भी नहीं हो सकती।' अहमदी की निर्भीकता देखकर तैमूर का गुस्सा ठंडा पड़ गया। सच बोलने की हिम्मत करने वाले अहमदी को उसने आजाद कर दिया।

सिद्धांत : सत् की ताकत (शक्ति) के सामने कोई विकार नहीं ठहर सकता।

681. संगीत सभा में 'वाह-वाह' नहीं करना

एक बार तानसेन के दरबार में संगीत सभा का आयोजन था, सभी 'वाह-वाह' कर रहे थे। अकबर बोला, क्या सभी संगीत प्रेमी हैं जो सब 'वाह-वाह' कर रहे हैं? दूसरे दिन सबके पीछे तलवार टांग दी गई और ऐलान किया गया कि संगीत के बीच में जो 'वाह-वाह' करेगा उसका सिर काट दिया जाएगा। संगीत शुरू हुआ, लेकिन डर के मारे किसी ने भी 'वाह-वाह' नहीं किया, लेकिन कोई-कोई उसमें इतना मस्त हो गया जो अपना आप ही भूल गया और Automatic 'वाह-वाह' अंदर से निकल गया—उन्हें पता ही नहीं पड़ा।

सिद्धांत : वो ही सच्चा जिज्ञासु है जो मस्ती में अपना आप भूल जाए। सच्चे जिज्ञासु को मौत का भय नहीं होता वो अभय पद पर बैठा है।

682. सत्य का प्रथम प्रयोग

गांधी जी जब स्कूल में पढ़ते थे तब एक दिन

Inspector आए। गांधी जी की क्लास में आकर उन्होंने Dictation बोला। गांधी जी ने Cattle शब्द गलत लिखा था। मास्टर ने पैर से ठीक करने का इशारा किया पर गांधी जी ने शब्द गलत ही रहने दिया। यह उस महान पुरुष के जीवन में सत्य का पहला प्रयोग था जिसके आधार पर चलकर वे महात्मा और राष्ट्रपिता कहलाए।

सिद्धांत : सत्य की जीत होती है।

683. नीच जात वाले के घर नहीं ठहरना चाहता था

एक वैष्णव वृन्दावन जा रहा था। शाम को उसने गांव में ठहरना चाहा पर केवल किसी वैष्णव के घर पर ही। जब पता लगा बगल के गांव में सभी वैष्णव ही हैं, वहां जाकर एक गृहस्थ से पूछा—'क्या आप वैष्णव हो? अगर हो तो मैं रात भर ठहरना चाहता हूं।' उसने कहा—'मैं तो नीच जात हूं, पर मेरे सिवाय गांव में सब वैष्णव हैं। फिर भी यदि आप यहां रुकना चाहें तो मैं अपने को धन्य समझूंगा।' वैष्णव दूसरे दरवाजे पे गया। वहां भी बड़ी नम्रता से यही जवाब मिला—'मैं तो नीच हूं, पर बाकी सब वैष्णव हैं।' वह गांव भर में भटका पर सभी ने नम्रता से अपने को दीन-हीन बताया। पूरे गांव की ऐसी नम्रता देखकर अब वैष्णव का अभिमान दूर हो गया। उसकी अंदर की दृष्टि खुल गई, और उसने अपने को सबसे नीचा समझकर एक घर में ठहरा।

सिद्धांत : वैष्णव वही है जिसमें भगवान विष्णु के गुण हैं। नम्रता, धीरज, प्रेम, सेवा ही वैष्णवता है।

684. सागर और सरिता संवाद

एक बार सागर ने नदियों से पूछा—'तुम लोग बड़े-बड़े पेड़ों को रोज बहाकर लाती हो, पर अपने किनारों पर उगने वाली बेतों को कभी बहाकर नहीं लातीं। इसका क्या रहस्य है? या तो तुम बेंत को तुच्छ समझकर उसकी तरफ ध्यान नहीं देती हो या उसके किसी उपकार की वजह से उस पर कृपा करती हो।'

नदियों की ओर से गंगा ने उत्तर दिया—'देव! हम लोग उन्हीं वृक्षों को उखाड़ते हैं जो हमारे ही जल से पलकर हम को ही अकड़ दिखाते हैं। वर्षा ऋतु में भी हमारे जोर के आगे झुकते नहीं हैं तो हम उन्हें निर्मूल कर देते हैं। बेंत ऐसा नहीं करता। वह हमारे दबाव के आगे झुककर सम्मान करता है। हम उसकी रक्षा करती हैं।'

सिद्धांत : विनम्रता में सफलता छिपी हुई है।

685. सिकंदर ने सेनापति को सूबेदार बनाया

सिकंदर ने अपने एक सेनापति को किसी बात से नाराज होकर, छोटा सूबेदार बना दिया। थोड़े दिन बाद उसे प्रसन्न देखकर पूछा—'इतना खुश दिखाई पड़ते हो, क्या कारण है?' सूबेदार बोला—'पहले सैनिक और छोटे सिपाही सब मुझसे डरते थे और संकोच करते थे, परंतु अब वो मुझे सच्चा आदर करते हैं और भरपूर प्यार करते हैं और मुझे उनकी सेवा का मौका मिलता है।' सिकंदर ने फिर

पूछा—'तुम्हें सूबेदार बनने का अपमान नहीं लगता?' सूबेदार ने कहा—'मान पद में नहीं मानवता में हैं। ऊंचा पद पाकर तो अहंकार बहुत बढ़ जाता है और ईमानदारी नहीं रहती। मान तो है—सेवा करने में, नम्रता में, ईमानदारी में, चाहे वह सैनिक हो या चौकीदार।' यह सुनकर सिकंदर बहुत खुश हुआ और वापस उसे सेनापति बना दिया।

सिद्धांत : सच्चा सुख और शांति, ऊंचे पद में नहीं, सेवा करने में, नम्रता और ईमानदारी में है।

686. फलों के टोकरे से साधु की गर्मी शांत

गंगा किनारे एक साधु रहता था। कुछ दिन बाद एक संन्यासी ने भी वहां अपनी कुटिया बनाई। संन्यासी नम्र, सरल और स्नेही थे। उनके पास रोज कोई न कोई आता रहता था और साधु कुटी के सामने खड़ा होकर गालियां सुनाता था। संन्यासी के शिष्य कहते, आप इसे कोई सबक सिखाइए। एक दिन संन्यासी के पास किसी ने फलों का टोकरा भेजा। उन्होंने अच्छे-अच्छे फल छांटकर टोकरे में रखे और शिष्यों से कहा, यह टोकरा साधु को दे आओ और उससे कहना कि आप जो हमारे ऊपर अमृत-वर्षा करते हैं उससे आपकी शक्ति क्षीण होती है, इनके खाने से आपकी ताकत बनी रहेगी। साधु को अक्ल आ गई और वह संन्यासी के चरणों में आ गिरा।

सिद्धांत : अपनी नम्रता से किसी की भी गर्मी शांत कर सकते हैं।

687. आचार्य तुलसी ने निर्णय लिया

बाईस वर्ष की छोटी उम्र में ही तुलसी आचार्य बन गए। बीकानेर में चतुर्मास हुआ। चतुर्मास पूरा हुआ उस दिन, आचार्य तुलसीदास और दूसरे किसी आचार्य का जुलूस उनके अपने-अपने हजारों शिष्यों के साथ निकला। जुलूस मुख्य सड़कों से होता हुआ एक संकरे चौक पे मिलने वाला था। दोनों आचार्य थे, पीछे कौन हटे, कौन किसको रास्ता दे। बात गंभीर थी। दोनों संघ के लोग अपनी-अपनी ताकत से लड़ने को तैयार थे। संकरे चौक पे मिलने के ठीक पहले आचार्य तुलसी ने निर्णय लिया और शिष्यों को आज्ञा दी—सब सड़क छोड़कर एक ओर हट जाएं। सब हट गए और दूसरा जुलूस अपने नारे लगाता हुआ शांति से निकल गया। यह बात राजा के पास पहुंची तो वो बहुत खुश हुआ कि हजारों का खून-खराबा होने से बच गया और आचार्य तुलसी को राजा ने बहुत सम्मान दिया।

सिद्धांत : ज्ञानी की नजर में हमेशा निर्माण होता है, विनाश नहीं। वह अपने तेजस से दूसरों को भी तपस्वी बनाता है। एक ज्ञानी के पीछे पूरा समाज, हजारों लोग उन्नति करते हैं।

688. घमंडी ने सर रैले के मुंह पर थूका

सर रैले तलवार चलाने में बहुत माहिर थे। एक बार एक घमंडी आदमी ने उनको भिड़ने के लिए चुनौती दी और सर

रैले ने 'ना' कर दिया। इस पर इस असभ्य ने उनके मुंह पर थूक दिया। फिर भी बिना उत्तेजित हुए उन्होंने रूमाल से थूक पोंछ लिया और कहा—'इसको तो मैं बड़ी आसानी से रूमाल से पोंछ सकता हूं, पर मनुष्य-हत्या का पाप इतनी सरलता से पूंछता? यदि इतनी ही आसानी से ये पाप पूंछ जाता तो तुम्हारे से भिड़ जाता।' तब आदमी अपने झूठे घमंड और बदतमीजी से बहुत लज्जित हुआ।

सिद्धांत : क्षमा और सहनशीलता में इतनी अदम्य शक्ति है कि घमंड का सिर उसके सामने नीचा हो जाता है।

689. क्लास में नया लड़का आया

क्लास में एक नया लड़का आया तो पढ़ाई में भी उतना ही अच्छा था जितना Sports में। देखते ही देखते वह सब Teachers का Favourite बन गया। अब क्लास के बाकी सब लड़के उससे जलने लगे। खासकर रमेश नाम का लड़का जो इसके पहले क्लास में पहला नम्बर था। कुछ दिन बाद इस क्लास में चोरी का सिलसिला चालू हो गया। कभी किसी की किताब, कभी Pen, Pencil आदि खोने लगी। बहुत कोशिश करने पर भी अध्यापकों को चोर का पता न पड़ा। एक दिन रमेश की घड़ी खो गई। अब तो सारे स्कूल में सनसनी फैल गई। सब की तलाशी ली गई और घड़ी नए लड़के के Desk में मिली। वह लड़का सब तरह से इतना अच्छा था कि सबको बहुत अचम्भा हुआ कि यह

चोर है। नए लड़के ने भी अचम्भा व्यक्त किया और कहा कि उसे इसके बारे में कुछ मालूम नहीं है। पर इतना बड़ा सबूत मिल जाने के बाद प्रधान अध्यापक ने यह Decision लिया कि अब वह इस स्कूल में नहीं रह सकता। यह सुनकर नए लड़के ने अपना सिर झुका लिया पर वह खामोश रहा। दो-चार दिन बाद ही गर्मियों की छुट्टियां हो रही थीं। रमेश ने नए लड़के से उसकी एक किताब पढ़ने के लिए ली थी सो छुट्टियों के पहले वह किताब उसने नए लड़के को लौटा दी। पर यह क्या! वह जैसे ही किताब उलट-पुलट कर रहा था, उसमें एक चिट्ठी गिरी। रमेश के हाथ का नोट था और उसमें लिखा था, अब मेरा Plan है कि अपनी ही घड़ी चुराकर नए लड़के के Desk में रख दूंगा। चिट्ठी पढ़कर उसकी आंखें भर आईं। वह सीधा रमेश के घर गया और उससे बोला—'अपना नोट वापस लो। मैं चाहता तो Pricncipal को दिखाकर अपना नाम साफ कर सकता था पर मैंने अनुभव किया है कि नाम खराब होने से कितनी पीड़ा होती है। मैं नहीं चाहता कि तुम भी उस पीड़ा से गुजरो।' रमेश को काटो तो खून नहीं।

सिद्धांत : क्षमा से स्वयं की और सामने वाले, दोनों की शुद्धि होती है।

690. संत को लकड़ी से मारा

एक संत एक दिन नैया में बैठा था और आत्म-आनंद की

पूरी मस्ती में था। वहां दो आदमी बैठे थे, जो बहुत नीच स्वभाव के थे। संत को देखकर उसने एक गाना शुरू किया और गाते-गाते एक ने अपना डंडा संत के सिर पर लगाया जैसे धूकड़ को लगाते हैं। संत के तो ईश्वर हर समय साथ ही है। जब उन्होंने दो-चार बार ऐसा किया, संत ने तो सह लिया, पर एकदम आकाशवाणी हुई—'हे संत, कहो तो इन पापियों को सजा दूं और नैया गर्क कर दूं, या सिर्फ इन दोनों को डूबा दूं।' पर संत का द्वेष-भाव बिल्कुल खत्म हो चुका था। यह कहने लगा—'अगर इतनी कृपा मेरे ऊपर करने के लिए तैयार हो और समर्थ भी हो तो इन दोनों की बुद्धि शुद्ध करो, बाकी इनको मारने से मुझे क्या लाभ होगा?' ऐसा कहा तो उन दोनों का हृदय साफ हो गया और वह संत के पांव पर गिरकर माफी मांगने लगे।

सिद्धांत : सच्चे संत दुख देने वाले से भी द्वेष नहीं करते। संत के संग निंदक भी तेरे।

691. भक्त को कुएं में भगवान के दर्शन हुए

एक सच्चा भक्त था। उसे छल-कपट का पता हीं नहीं था। वह दिल से चाहता था कि उसे जल्दी भगवान के दर्शन हों। वह दर्शन के लिए छटपटाता रहता और जो मिलता उससे उपाय पूछता था। एक ठग को इस बात का मालूम पड़ा और वो साधु के वेष में भक्त के पास आकर बोला कि—'मैं तुम्हें आज ही भगवान के दर्शन करा दूंगा, तुम अपना सारा

सामान बेचकर मेरे साथ जंगल में चलो।' भक्त को बहुत खुशी हुई और वह तुरंत सारा सामान बेचकर रुपए साथ लेकर ठग के साथ चल दिया। रास्ते में एक कुआं मिला। ठग ने कहा—'बस! इस कुएं में झांको।' और जैसे ही वो झांकने लगा, ठग ने उसे कुएं में धकेल दिया। भगवान की कृपा से उसे जरा भी चोट नहीं लगी और भगवान के दर्शन हो गए। ठग रुपए लेकर चंपत हो गया। भगवान ने सिपाही के वेष में ठग को पकड़ लिया और कुएं के पास आकर भक्त को सारी बात बताई। भक्त तो बस भगवान के दर्शन में मस्त था। उसने कहा—'ये तो ठग नहीं मेरा गुरु है, इसी ने मुझे आपके दर्शन कराए हैं, आप इसे छोड़ दीजिए।' भक्त की ये बात सुनकर तथा उसके सरल विश्वास का चमत्कार देखकर ठग का भी हृदय पलट गया और वो भी भगवान का सच्चा भक्त बन गया।

सिद्धांत : सच्चे भक्त का सरल तथा अटूट विश्वास न सिर्फ उसे परमात्मा से मिलाकर एक करता है, बल्कि दूसरे का भी कपट-विकार हटाकर वहां भी आत्मा जगाता है।

692. भक्त हरिदास की क्षमा-भावना

भक्त हरिदास जन्म से मुलसमान थे पर उनको भगवान का नाम लिए बिना चैन नहीं पड़ता था।

उसी गांव के हाजी ने जो कट्टर मुसलमान था, राजा को

शिकायत की कि हरिदास को इस नापाक काम के लिए कड़ी-से-कड़ी सजा दी जाए, ताकि कोई भी फिर कभी ऐसी हिम्मत नहीं कर सके। सजा मिली—हरिदास को बेंत मारते हुए पूरे गांव में घुमाया जाए। उनपे बेंत पड़ती जा रही थी और मुंह से 'हरि ॐ' की ध्वनि निकलती जाती थी। उन्होंने बेंत मारने वाले से कहा—'तुम बेंत मारो, पर हर बेंत के साथ 'हरि ॐ' बोलो ताकि तुम्हारा उद्धार हो जाए।' उनको मरा हुआ जान मारने वालों ने नदी में फेंक दिया। नदी के ठंडे पानी से हरिदास में वापस जान आ गई। गांव वालों ने उन्हें देखा और बाहर निकाला, गांव वाले अब राजा को, काजी को मार देना चाहते थे, पर हरिदास ने कहा—'इनका क्या अपराध है, मैं तो अपने ही कर्मों की सजा भुगत रहा था। भगवान ने वास्तव में मेरी परीक्षा ली कि मैं सचमुच उनको याद करता हूं या सिर्फ ढोंग करता हूं। ये तो सब निमित्त मात्र हैं, इन्हें माफ कर दिया जाए।' संत की ऐसी वाणी सुनकर राजा और काजी बहुत शर्मिन्दा हुए और उनके शिष्य हो गए।

सिद्धांत : गुरु का आदर्श, उनकी क्षमा-भावना से जल्लाद भी देवता बन जाता है।

693. संत को आकाशवाणी हुई

एक संत नाव में बैठकर नदी पार कर रहा था। नाव में एक किनारे अपनी मस्ती में बैठे थे। दो तीन बदमाशों ने

उनका मजाक उड़ाना शुरू किया फिर गाली देना शुरू किया। पर संत पर कोई असर नहीं पड़ा, वे अपनी ही मौज में बैठे रहे। तब उन्होंने संत को पानी में डुबो देने के लिए धकेलना शुरू किया। अब आकशवाणी हुई कि—'ये बदमाश आपको डुबा देना चाहते हैं, आप कहो तो इन्हें अभी भस्म कर दें।' अब वे डर के कांपने लगे और संत रोने लगा। संत को रोते देखकर वे और भी डर गए कि अब हमें जरूर भस्म कर दिया जाएगा। इसी बीच संत ने पूछा—'ऐसा मत करें, स्वामी, मुझ तुच्छ जीव के लिए इतने प्राण न लिए जाएं। आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो इनके मन में के खराब विचारों और खराब भावनाओं को भस्म कर इनको निर्मल और पवित्र बना दीजिए।' बस सारे बदमाश परम साधु बन गए हमेशा के लिए, जब ऐसा सुना-देखा तो।

सिद्धांत : सहनशीलता आदमी को भगवान बना देती है।

694. जुलाहे ने लड़कों को सिखाया

किसी नगर में एक जुलाहा रहता था। स्वभाव का अच्छा था, मीठा बोलता, नाराज न होता।

लोग उसे संत कहते थे। कुछ शरारती लड़के उसकी परीक्षा लेने वहां पहुंचे। उनमें से एक बहुत धनी आदमी का लड़का था।

उसे अपने पैसे का घमण्ड था। वह देखना चाहता था कि

कैसे जुलाहे को गुस्सा नहीं आता है। उन लड़कों को देखते ही जुलाहे ने बड़े प्यार से कहा—'आओ बेटा, तुम लोगों को क्या चाहिए?'

सामने रखी साड़ियों में से एक की ओर इशारा करके एक लड़के ने कहा—'मुझे वह साड़ी चाहिए। उसका क्या लोगे?' जुलाहे ने कहा—'दो रुपया।'

उस लड़के ने साड़ी हाथ में ले ली और उसके दो टुकड़े कर डाले। बोला—'मुझे पूरी नहीं आधी चाहिए। इसका क्या लोगे?' जुलाहे ने बड़ी शांति से कहा—'एक रुपया।' नौजवान ने आधी साड़ी के भी दो टुकड़े करके पूछा—'इसका क्या लोगे?' 'आठ आना।' जुलाहे ने बिना किसी प्रकार की नाराजगी से कहा।

युवक तो उसको चिढ़ाना चाहता था। वह साड़ी के टुकड़े पर टुकड़े करता गया पर उस जुलाहे ने न उसको रोका, न डांटा, अपने माथे पर शिकन तक न आने दी।

जब साड़ी के बहुत से टुकड़े हो गए तो लड़के ने हंसकर कहा—'ये टुकड़े मेरे किस काम के हैं। मैं इन्हें नहीं खरीदूंगा।'

जुलाहे ने बिना किसी तेजी के कहा—'तुम ठीक कहते हो बेटे, ये टुकड़े अब तुम्हारे क्या, किसी के भी काम नहीं आ सकते।' युवक को उसकी इस बात पर कुछ शर्म आई। उसने कहा—'यह लो, मैं इस साड़ी की पूरी कीमत दिए देता हूं।'

जुलाहे ने रुपए नहीं लिए। बोला—'मैं इन टुकड़ों को जोड़कर काम में ले आऊंगा। जब ये तुम्हारे काम नहीं आ सकते तो मैं इनका दाम कैसे ले सकता हूं?' लड़के के ऊपर धन का नशा था। उसने कहा—'मेरे पास बहुत रुपए हैं, पर तुम गरीब हो। मैंने तुम्हारी चीज खराब की है। उसका घाटा मुझे पूरा करना चाहिए।' जुलाहे ने धीमी आवाज में कहा—'क्या रुपए से यह घाटा पूरा हो जाएगा? देखो किसानों की मेहनत से कपास पैदा हुई, मेरी स्त्री ने सूत काता, मैंने रंगा, फिर बुना। तुमने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। देखो कितने लोगों की मेहनत बेकार गई। रुपए इस घाटे को कैसे पूरा करेंगे?' जुलाहे की आवाज में तनिक आवेश नहीं था। लड़का पानी-पानी हो गया। जुलाहे के पैर में गिर पड़ा।

जुलाहे ने उसे छाती से लगाकर कहा—'अगर मैं लालच करके दो रुपए ले लेता तो तुम्हारी जिंदगी का वही हाल होता जो इस साड़ी का हुआ। वह किसी के काम नहीं आती। अब तुम समझ गए। आगे ऐसी गलती कभी नहीं कर सकते।'

सिद्धांत : एक वस्तु खराब हुई तो दूसरी तैयार हो सकती है पर जिंदगी बिगड़ गई तो दूसरा कौन-सा जन्म मिलेगा क्या भरोसा? (यह संत थे दक्षिण के महान संत तिरुवल्लुवर जिनका लिखा हुआ 'कुरल' आज दो हजार वर्ष बाद भी बड़ी श्रद्धा से पढ़ा जाता है।)

695. राजा ने गुस्से में चकोर को मार डाला

एक राजा को पक्षी पालने का बहुत शौक था। वह हमेशा एक पक्षी कंधे पर बैठाए रखता था। एक बार राजा शिकार खेलने जंगल में गया। थक गया और उसे बहुत प्यास लगी थी। खोजते-खोजते दिखा कि सामने एक बड़े पत्थर से बूंद-बूंद करके पानी टपक रहा है। राजा ने जेब से प्याला निकालकर पानी भरने को रख दिया। थोड़ी देर में प्याला भर गया तो जैसे ही पीने को उठाया तो कंधे पर बैठे चकोर ने चोंच मारकर गिरा दिया। राजा ने फिर प्याला रख दिया भरने के लिए। बड़ी देर में प्याला भरा और जैसे ही राजा पीने लगा, चकोर ने फिर पंख मारकर गिरा दिया। अब राजा गुस्से से पागल हो गया और चकोर को मार डाला। अचानक राजा की नजर सामने के पत्थर पर पड़ी और देखा कि वहां एक मरा हुआ सांप दबा पड़ा है और उससे ही ये बूंद-बूंद पानी टपक रहा था। पानी पीकर कहीं मर न जाए, इसलिए ही चकोर बार-बार पानी को गिरा देता था। अब राजा बहुत-बहुत पछताया। पर अब पछताए होत क्या?

सिद्धांत : क्रोध बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है। जहां क्रोध है वहां विवेक नहीं है।

696. आदमी ने महात्मा को गालियों से क्रोध दिलाना चाहा

एक जंगल में एक महात्मा एकांत में अपनी कुटिया में

रहते थे। वे क्षमा और शांति के गुणों के लिए मशहूर थे। एक बार दो आदमियों ने आपस में शर्त लगाई महात्मा को क्रोध दिलाने की।

वे महात्मा की कुटिया पर गए और कहा—'जरा गांजे की चिलम तो दीजिए।'

महात्मा ने कहा—'भाई मैं गांजा नहीं पीता।' उन्होंने फिर कहा—'अच्छा तम्बाकू तो लाओ।'

उत्तर मिला—'मैंने तम्बाकू कभी नहीं खाया।' तब उन्होंने कहा—'ढोंगी कहीं का, बाबा बनकर जंगल में आकर बैठ गया है।' इन दोनों के प्लान के हिसाब से अब गांव के और भी बहुत सारे लोग इकट्ठे हो गए। उनको सुनाकर एक ने कहा—'ये महात्मा पूरा ठग है, चार बार तो जेल भी जा चुका है।'

दूसरा बोला—'मैं इसके साथ ही था जेल में।' फिर महात्मा को चुप देखकर वे अब उनके मां-बाप को गाली देने लगे और नए-नए इल्जाम लगाने लगे। बकते-बकते उनका गाली का सारा भंडार खत्म हो गया। वे थक गए और चुप हो गए। महात्मा ने चीनी घोलकर पानी लाकर दिया। उन्हें पीने को कहा—'आप थक गए हैं, इसे पी लीजिए।' दोनों महात्मा के पांव में गिर पड़े और बहुत माफी मांगी और पूछा—'इतना बुरा व्यवहार करने पर भी आपको गुस्सा कैसे नहीं आया?' महात्मा बोले—'जिसके पास जो माल होता है वही वो ग्राहक को दिखाता है, और यह तो ग्राहक की

इच्छा है—उसे ले न ले। तुमने अपना माल दिखाया पर मुझे पसंद नहीं था सो मैंने नहीं लिया।'

सिद्धांत : दूसरा आदमी गलती करता है और हम अपने अंदर क्रोध की आग जला लेते हैं। क्रोध करना अपने ही पतन का कारण है, और क्षमा न सिर्फ खुद को शांति देती है, बल्कि दूसरों को भी शांत करती है।

697. ब्राह्मण को चांडाल ने छू लिया

एक संन्यासी गंगा-स्नान करके घाट से ऊपर जा रहे थे। भीड़ बहुत थी। बचने का प्रयत्न करने पर भी एक चांडाल संन्यासी के छू गया। संन्यासी को क्रोध आया और उन्होंने एक छोटा पत्थर चांडाल को मारते हुए कहा—'अंधा हो गया है क्या? मुझे फिर स्नान करना पड़ेगा।' चांडाल बोला—'अपराध हो गया, क्षमा करें। रही स्नान की बात तो आप करें या न करें मुझे तो अवश्य स्नान करना पड़ेगा।' संन्यासी ने आश्चर्य से पूछा—'तुझे क्यों स्नान करना पड़ेगा?' चांडाल बोला—'सबसे अपवित्र चांडाल तो क्रोध है। उसने आप में प्रवेश करके मुझे छू लिया है। अब स्नान से मुझे पवित्र होना है।' संन्यासी का सिर लज्जा से नीचा हो गया।

सिद्धांत : क्रोध से पतन निश्चित है।

698. झुकना स्वर्ग, अहंकार नर्क

एक संत के पास सम्राट आया। उसने संत से पूछा—'संत

जी, स्वर्ग-नर्क क्या है?' तो संत ने पूछा—'तुम हो कौन?' राजा ने कहा—'मुझे पहचानते नहीं, मैं इतनी बार आ चुका हूं। मैं राजा हूं।' संत ने कहा—'तुम शक्ल से तो भंगी दिखते हो।' तो राजा ने क्रोध में संत को मारने के लिए तलवार निकाली। संत ने कहा—'ये है नर्क।' थोड़ी देर में राजा का विवेक जागा कि मैं क्या करने जा रहा था—उसने संत के पैर छूकर माफी मांगी। संत ने कहा—'यह है स्वर्ग।'

सिद्धांत : अपने को झुकाना है स्वर्ग, अहंकार करना है नर्क।

699. बोनापार्ट का संयम

अपने पढ़ाई के दिनों में एक बार नेपोलियन को एक छोटे-से शहर में एक नाई के घर रहना पड़ा। नेपोलियन में यौवन का आकर्षण था और नाई की स्त्री उन पर मुग्ध हो गई। वह कई तरह से उनको रिझाने की कोशिश करती रहती थी पर वे अपनी किताबों से मन लगाए रहते थे। वही नेपोलियन आगे चलकर देश का प्रधान सेनापति बना दिया गया और वे एक बार फिर उस स्थान में गए और नाई की स्त्री के सामने जाकर खड़े हो गए। वे बोले—'तुमको याद है तुम्हारे यहां बोनापार्ट नाम का युवक रहता था।' वह बोली—'उस नीरस युवक की चर्चा रहने भी दीजिए। वह न नाच न गाना न मीठा बोलना ही, वह तो बस किताबी कीड़ा था।'

नेपोलियन हंसे—'ठीक कहती हो देवी! संयम ही मनुष्य को महान बनाता है। बोनापार्ट तुम्हारी रसिकता में उलझ गया होता तो देश का प्रधान सेनापति होकर आज तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हो सकता था।'

सिद्धांत : Success is the power to say 'no' to hundred things so that you can progress in the one thing which is your goal.

700. गणेशजी का गहरा मौन

जब वेद व्यास जी महाभारत का आखिरी श्लोक कह चुके थे और गणेशजी ने उसे सुन्दर अक्षरों में अंकित कर लिया, तब वेद व्यास ने कहा—'धन्य है आपकी लेखनी! जिसने सारा महाभारत लिख डाला, पर उससे भी ज्यादा महिमाजनक था आपका इतना लम्बा मौन। मैंने तो 15-20 लाख शब्द बोल डाले पर आपके मुंह से एक अक्षर भी नहीं निकला।'

गणेशजी बोले—'सबकी प्राण-शक्ति सीमित है। इस प्राण-शक्ति का लाभ वो ही पा सकता है जो संयम से उसका उपयोग करता है। संयम की तरफ पहला कदम है वाणी का संयम। ज्यादा बोलने से द्वेष पैदा हो जाता है तो हमारी प्राण-शक्ति सोख डालता है इसलिए मैं मौन का उपासक हूं।'

सिद्धांत : मौन की महिमा कही न जाए।

701. विक्रमादित्य का तख्त

एक औरत विक्रमादित्य के तख्त पर बैठ बोलती थी, मैं अपने बेटे की शादी राजा की लड़की से करूंगी। सब बोलते थे, तू कैसे बात करती है!

बाद में सबने जाना कि तख्त की महिमा ऐसी थी जो वो शब्द उससे कहलवाती थी।

सिद्धांत : सच की कुर्सी पर कोई झूठ नहीं बोल सकता।

702. राजा ने मानसरोवर से हंस पकड़वाकर मंगवाए

एक राजा को कोढ़ की बीमारी हो गई थी। हकीम ने बताया कि यदि मानसरोवर से हंस पकड़वाकर मंगाएं और उनके पित्त से दवा बनाई जाए तो कोढ़ ठीक हो जाएगा। राजा ने हंस लाने को शिकारी भेजे। शिकारियों को देखते ही हंस उड़ गए। तब शिकारियों ने एक युक्ति निकाली। वे गेरुए कपड़े पहनकर साधु का वेष बनाकर बैठ गए। उनको संन्यासी के वेश में देखकर हंस नहीं उड़े और शिकारी उन्हें पकड़कर राजा के पास ले आए। राजा ने जब उनसे पकड़ने का तरीका सुना तो समझ आया कि—हंसों ने साधु-वेष का विश्वास करके भय नहीं किया था और अब इस तरह धोखा देकर उन्हें मारना तो बहुत पाप की बात है। यह सोचकर राजा ने उन्हें छोड़ दिया। इस पुण्य के कारण राजा दूसरे किसी हकीम की दवा से ठीक हो गया। अब शिकारियों ने

सोचा कि जब नकली साधु के वेश को पशु पक्षी तक विश्वास कर लेते हैं तो असली साधु बन जाने से तो खुद का फायदा ही फायदा है और वे भी हमेशा के लिए साधु बन गए।

सिद्धांत : सच्ची साधुता से सारे झूठ भाग जाते हैं। अपने असली स्वरूप का ज्ञान होता है।

703. युधिष्ठिर का सबक

एक बार द्रोणाचार्य ने कुरु और पांडु राजकुमारों को सच बोलने का और हर बात में धीरजवान होने का सबक पढ़ाया। दो-चार दिन बाद उन्होंने सब से पूछा कि सच्चाई और धीरज का सबक पक्का किया? सबने रटा-रटाया सुना दिया। केवल युधिष्ठिर ने कहा—एक सबक तो कुछ पक्का हुआ है दूसरा तो बिल्कुल पक्का नहीं हुआ है। यह सुनकर द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर को कस कर थप्पड़ लगा दिया। युधिष्ठिर शांत स्वर में बोले—'अब दूसरा सबक भी पक्का हो गया।'

सिद्धांत : सच्चाई के विकार के पीछे पड़ेंगे तो जरूर सफलता मिलेगी।

704. राजा से हाथ मिलाने की चाह

एक बार एक राजा किसी गांव में से गुजरा, गांव के सब बड़े-बड़े लोग राजा को मिलने के लिए आए। यह देखकर

एक गरीब देहाती के मन में आया कि राजा मेरे साथ भी इसी तरह बातचीत करे और हाथ मिलाकर पूछे—मित्र तेरा क्या हाल है, तो कितना अच्छा हो! वह कितनों से पूछता है कि मुझे राजा से मिलने की युक्ति बता दो। सब उसे डांटते कि पागल हो गया है। किसी ने कहा—'ऐसी युक्ति कोई संत ही बता सकता है। जो उसने किसी संत को खोजा और सेवा करने लगा।' तीन-चार महीने बाद संत ने पूछा—'बालक तुम्हें क्या चाहिए, क्यों यहां इतनी सेवा करते हो?' तो उसने बताया कि मुझे वस्तु की जरूरत नहीं केवल राजा से मिलने की इच्छा है। पहले तो महात्मा हंसे और उसे समझाया कि यह नादानी है, पर जब बच्चा नहीं माना तो कहा—'राजमहल बन रहा है तुम वहां मजदूरी करो पर मजदूरी नहीं लेना।' महात्मा की आज्ञा पाकर वो वैसे ही करने लगा। कुछ दिन बीत गए तो राजमहल के मुंशी ने देखा, यह लड़का इतनी लगन से काम करता है पर मजदूरी नहीं लेता। मुंशी ने उससे पूछा—'क्यों भाई तुम मजदूरी क्यों नहीं लेते?' उसने कहा—'अपने घर में कोई काम करता है तो मजदूरी लेता है?' मुंशी ने आश्चर्य से पूछा—'घर का काम कैसे?' उसने कहा—'राजा से मुझे बहुत प्रेम है, इस कारण उनकी सेवा करना मैं अपना काम समझता हूं।' उसे खास राजमहल का काम दे दिया गया। जब राजमहल तैयार हो गया, राजा देखकर बहुत खुश हुआ और पूछा—'इतना सुन्दर काम किसने किया?' मंत्री ने उस लड़के की लगन

और प्यार की बात बताई। राजा ने इसे इज्जत से लेकर आने को बोला। जब वो राजा के सामने आया राजा अपनी कुर्सी से उठा और पूछा—'आओ मित्र क्या हाल है? आपको जिस वस्तु की इच्छा को प्रकट करो।' उसने कहा—'मैं यह ही तो चाहता था वो मुझे मिल गया और मुझे कुछ नहीं चाहिए।' राजा यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ और उसे अपना मंत्री चुन लिया और अपने जैसा एक राजमहल बना दिया। दोनों मित्र की तरह रहने लगे।

सिद्धांत : सफलता चाहिए तो हिम्मत ऊंची होनी चाहिए, फिर प्रकृति भी साथ देती है।

मायापति को प्रेम करोगे तो माया दासी बन जाएगी, तुम उस पर हुक्म चलाओगे।

17. त्याग भावना–निष्काम-सेवा के दृष्टांतों की सूची

705. खेतों से चना लेकर घोड़ों को दो
706. स्वामी नहीं न्यासी हूं
707. दोनों रोटी कुत्ते को दी
708. मालवीय जी ने छाता लगाया
709. बच्चा फल की जगह अमर-फल लाया
710. गांधी जी के शरीर पर एक लंगोटी ही क्यों?
711. चंद्रशेखर आजाद की निःस्वार्थ सेवा
712. भगवान शंकर कोढ़ी के रूप में
713. राजा रन्तिदेव की त्याग-भावना
714. ऐफेन और इस्माइल हज पर गए

धर्म में अंधविश्वासों को जबर्दस्ती दूर नहीं किया जा सकता। ज्ञान के प्रसार से ही उन्हें दूर किया जा सकता है।

त्याग-भावना—निष्काम-सेवा

705. खेतों से चना लेकर घोड़ों को दो

अकबर का पुत्र सलीम राजस्थान जीतने गया और वहां के मुख्य स्थान पर अपना डेरा डाला। मालूम पड़ा कि राजस्थान में चने की फसल बहुत अच्छी है। तो सलीम ने आज्ञा दी कि जाओ खेतों में से चने लेकर घोड़ों को चारा खिलाओ। सैनिक दो-तीन मील तय करके एक खेत के कोने में आए जहां एक बूढ़ा राजपूत बैठा था। उससे कहा कि सलीम का आदेश है घोड़ों के लिए चने चाहिए तो आप साथ चलिए और हमें चने दिलवाइए। बूढ़ा कुछ क्षण विचार करके उनके साथ चल पड़ा। थोड़ी दूर पर एक हरा-भरा चने का खेत आया तो सैनिक बोले—'हम काट लें?' बूढ़े ने कहा—'नहीं आगे चलें, इससे भी बढ़िया और घने खेत हैं, वहां काटिएगा।' वह इस तरह बना-बनाकर उन्हें काफी दूर ले आया और एक खेत के पास आकर बोला—'अपने घोड़ों के लिए और अपने लिए यहां से जितना चाहिए लीजिए।' सैनिकों ने क्रोध से पूछा—'इतने खेत आए, उसमें से क्यों न काटने दिया? इतनी दूर पर लाकर बोलते हो काट

लो।' तब वह बूढ़ा बोला——'भाइयों, मार्ग में जो खेत थे वे मेरे सम्बंधियों और मित्रों के थे। यह खेत मेरा है। एक राजपूत अपने आपको बाजी पर लगा देता है पर दूसरों को बचा देता है। यहां से आप जो मर्जी ले सकते हैं।' यह सुनकर सैनिकों की उस बूढ़े व्यक्ति के प्रति श्रद्धा बहुत बढ़ गई।

सिद्धांत : जिज्ञासु में से हमेशा त्याग-भावना की खुशबू आनी चाहिए।

706. स्वामी नहीं न्यासी हूं

एक सेठ थे। लाखों की उनकी सम्पत्ति थी, दूर-दूर फैला कारोबार था। एक दिन एक आदमी ने उनसे कहा——'सेठ जी, कीमत इतनी बढ़ गई है कि आपकी जायदाद भी करोड़ों की हो गई होगी।' सेठ जी ने कहा——'मेरी जायदाद करोड़ों की? भाई जिसे तुम मेरी जायदाद कहते हो वो मेरी कहां है? जो कुछ दूसरों की भलाई में खर्च हुआ उतना ही मेरा था। अब जो बचा है वह समाज का है। मैं उसका स्वामी नहीं, न्यासी हूं——सम्भाल करने वाला।'

सिद्धांत : सब कुछ उसकी अमानत है। हम कुछ न साथ लाए थे न लेकर जाएंगे।

707. दोनों रोटी कुत्ते को दी

एक अमीर आदमी काफी उदार था। अपने पास मांगने आए किसी को भी वो वापस नहीं भेजता था। उसे अपनी

उदारता पर बड़ा गर्व था। एक बार वो घूमते हुए एक खजूर के बगीचे में पहुंचा। उसी समय बाग के रखवाले के लिए एक लड़का रोटियां लेकर आया। रखवाले ने हाथ धोए और जैसे ही रोटियां खाने वाला था, वहां एक कुत्ता आ गया। उसने एक रोटी कुत्ते को दे दी। कुत्ता बहुत भूखा था, वो फिर रखवाले की ओर देखने लगा। उसने उसे दूसरी रोटी भी दे दी और खुद सिर्फ पानी पीकर रह गया। अमीर आदमी यह सब देख रहा था और वो अपनी दिखावे की उदारता पर बहुत शर्मिन्दा हुआ।

सिद्धांत : सच्ची उदारता बनकर कुछ देने में नहीं, अपने पास जो है और अपने को ही दे देने में है।

708. मालवीय जी ने छाता लगाया

जून का महीना था। मालवीया जी खालसा कॉलेज देखने गए थे जिस पर मार्शल लॉ के दिनों में बम फेंके गए थे। बहुत से नेता उपस्थित थे और भारी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। सबके पास छाते थे पर तिवारी जी के पास नहीं था। मोती लाल जी ने तिवारी जी से कहा——'खुदकुशी करने पर तुले हो क्या? एक 1¼ रुपए का छाता क्यों नहीं खरीद लेते?' मालवीय जी ने देखा तो भीड़ में धीरे-धीरे खिसकते हुए तिवारी जी तक पहुंचे और उनके सिर पर छाता लगा दिया। तिवारी जी ने हाथ जोड़कर एक मूक प्रार्थना की कि ऐसा न करें तो मालवीय जी ने कहा——'देखो मैं सेवा समिति

का सभापति हूं पर काम तो तुम ही करते हो, क्या मैं तुम्हारी सेवा भी न करूं?'

सिद्धांत : बड़े हमेशा सेवा-भाव और नम्रता का सबक सिखाएं।

709. बच्चा फल की जगह अमर-फल लाया

पिता ने छोटे बच्चे को पैसे दिए बाजार से फल लाने को। बच्चे ने रास्ते में कुछ लोगों को देखा जिनके बदन पर फटे कपड़े थे और वो भूख से तड़प रहे थे। उसने पैसे उसको दे दिए और खुशी-खुशी घर वापस आ गया। पिता के पूछने पर कहा—'मैं फल नहीं अमर-फल लाया हूं। अपने ही जैसे कुछ आदमियों को जो भूखे थे, मैंने पैसा दे दिया और उनकी भूख मिटने से उनके चेहरों पे जो खुशी आई वो ही अमर-फल है।'

सिद्धांत : अपनी इच्छा की पूर्ति की खुशी क्षणिक होती है, परंतु दूसरे की भलाई करने की खुशी में ही अमरता है, तृप्ति है।

710. गांधी जी के शरीर पर एक लंगोटी ही क्यों?

एक गांव की औरतों के कपड़े बहुत गंदे देखकर कस्तूरबा ने उन्हें समझाया कि गंदे कपड़ों से बहुत-सी बीमारियां होती हैं, इसलिए कपड़े साफ रखना चाहिए। दूसरे दिन एक औरत

उन्हें अपने झोंपड़े में लाई और दिखाया कि उनके पास एक ही साड़ी है, अगर गांधी जी से कहकर और दिलवा दें तो वो साफ रखें। गांधी जी को जब यह बात मालूम हुई तो उन्हें गहरा दुख लगा और उन्होंने कहा—'जब मेरी लाखों बहनों के पास शरीर ढकने को भी कपड़ा नहीं है तो मुझे क्या अधिकार है 3-4 कपड़े पहनने का और उसी दिन से उन्होंने सिर्फ एक लंगोटी पहनने की प्रतिज्ञा की।'

सिद्धांत : यह है सच्चा त्याग। त्याग में ही अमरता है। यह त्याग ही लाखों के हृदय में अपना घर बनाता है।

711. चंद्रशेखर आजाद की निःस्वार्थ सेवा

एक बार भगत सिंह ने बातचीत के दौरान चंद्रशेखर आजाद से कहा—'पंडित जी, हम क्रांतिकारियों के जीवन-मरण का कोई ठीक नहीं है। अतः अपने घर का पता बता दें ताकि यदि कुछ हो गया तो आपके परिवार की कुछ सहायता की जाएगी।' उन्होंने खीजते हुए कहा—'पार्टी का कार्यकर्ता मैं हूं, मेरे परिवार से तुम्हारा क्या मतलब? दूसरी बात, उन्हें तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं और न ही मुझे जीवनी लिखानी है। हम लोग निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा में जुटे हैं। इसके एवज में न धन चाहिए न कीर्ति।'

सिद्धांत : दृढ़ निश्चय हो तो परिस्थिति नहीं हिला सकती।

712. भगवान शंकर कोढ़ी के रूप में

एक बार पार्वती सुन्दर लड़की के रूप में और शंकर भगवान कोढ़ी के रूप में गंगा के किनारे बैठे थे और पार्वती पुकार-पुकारकर सबको कहती थी कि कोई मेरे पति को लेकर गंगा में स्नान कराए, लेकिन सब कहने, लगे तू इतनी सुन्दर है, तुझे इस बूढ़े कोढ़ी के साथ रहकर क्या मिलेगा? तू हमारे साथ चल, हम तुझे रानी बनाएंगे, लेकिन एक आया। उसने बूढ़े कोढ़ी को देखकर बोला—'तू भगवान कोढ़ी के रूप में आया है?' जैसे ही उसे उठाया तो भगवान अपने असली रूप में आ गए। उन्होंने कहा—'देखा पार्वती, इस ज्ञान का अधिकारी कोई-कोई है।'

सिद्धांत : अधिकारी की परख समय आने पर होती है।

713. राजा रन्तिदेव की त्याग-भावना

राजा रन्तिदेव के पास जो भी अतिथि जो कुछ भी मांगने आता था वो दे देते थे। एक बार उनके राज्य में जोर का अकाल पड़ा और उन्होंने अपने सारे अनाज के भंडार भूखे लोगों के लिए खोल दिए। धीरे-धीरे भंडार और खजाना सब खत्म हो गया। अब देने के लिए जब उनके पास कुछ भी नहीं रहा तो वे अपनी रानी और लड़के को लेकर जंगल की तरफ निकल गए। खाने को उन्हें 80 दिनों कुछ नहीं मिला तो सूखी पत्तियां ही खाकर रह गए। एक दिन 80 दिन बाद एक सज्जन उनकी ऐसी हालत देखकर थाली में बहुत-सा खाना और पानी

लेकर आए। जैसे ही खाने को बैठे, दो ब्राह्मण आए जिन्हें भूख लगी थी और सारा भोजन उन्हें दे दिया। अब पत्नी और लड़के के खाने के 3 हिस्से करके जैसे ही खाने बैठे, दो यात्री आए और रन्तिदेव ने भोजन उन्हें दे दिया। अब सिर्फ बचे हुए पानी को पीने ही वाले थे कि एक चांडाल आया और उन्होंने पानी भी उसे पिला दिया। अब एक आवाज आई—'रन्तिदेव तुम परीक्षा में सफल हुए हो, जो चाहो वर मांग लो।' रन्तिदेव ने मांगा—'मैं हर दुखी के दिल में वास कर सकूं, बस और कुछ नहीं चाहिए।'

सिद्धांत : दूसरे के दुख को अपना दुख समझकर उसे निवृत करें, इसी में सच्चा आनन्द है और भगवान से एकत्व है।

714. ऐफेन और इस्माइल हज पर गए

ऐफेम और इस्माइल दो दोस्त थे जो बचपन से साथ ही बड़े हुए थे। ऐफेम अमीर घराने का था और इस्माइल को खरी मेहनत करके जीवन निर्वाह करना पड़ता था। दोनों का झुकाव भगवान की तरफ था। उनका मन था कि वे लोग साथ हज पर जाएं। आपस में एक दिन निश्चित कर लिया कि इस दिन हज पर निकल जाएंगे। हज के लिए इस्माइल रोज की कमाई में से कुछ धन निकालकर अलग रख लेता। आखिर वह दिन आ गया। ऐफेम काफी धन-दौलत लेकर निकला और इस्माइल ने भी जितनी कमाई की थी, उसने

साथ ले ली। रास्ते में एक गांव पड़ा, जहां महामारी फैली हुई थी और सब लोग अकाल से पीड़ितं थे। दोनों को विचार आया कि क्या करना चाहिए? ऐफेम बोला, हम हज के लिए निकले हैं, वही पूरा करना चाहिए। इस्माइल बोला—'मैं कुछ दिन इधर ही रुकूंगा।' ऐफेम आगे बढ़ गया। इस्माइल उसी गांव में सबकी सेवा करने लगा। उसने अपनी पूंजी से कुएं साफ करवाए। बीमारों की दवा-दारू करके उन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया। इस प्रकार एक महीना होने को आया और उसका सब धन यहीं पूरा हो गया। पर उन गांव वालों में थोड़ी खुशहाली आ गई।'

उधर ऐफेम पूजा के स्थान पर पहुंचा तो उसने देखा कि इस्माइल भगवान के Altar में पहले ही खड़ा है मोमबत्ती हाथ में लिए। उसे लगा इस्माइल ने मेरे साथ धोखा किया है। वह मुझे बताए बिना ही यहां पहुंच गया। वह बाहर निकलकर उसका इंतजार करने लगा। सब लोग एक-एक करके बाहर आए पर इस्माइल न आया। वह अंदर गया और जो वहां की सम्भाल करते थे उनसे पूछा तो उन्होंने कहा—'इस्माइल तो उसी दिन यहां पहुंच गया था जब उसने पीड़ितों के सेवा करने का निर्णय किया। और जितने दिन वह वहां रहा, यहीं का सोच रहा था तो वह तो काबे में हर समय था। तुम काबे में होते हुए भी अपने ही गांव में थे क्योंकि धंधें की सोच रहे थे।'

सिद्धांत : 1. मानव सेवा परम धर्म है।

2. मन जहां होता है हम असल में वहीं होते हैं।

18. प्रारब्ध के दृष्टांतों की सूची

715. गुरु गोविन्द सिंह के चार लड़के
716. दो ब्राह्मण भाइयों की अलग-अलग प्रारब्ध
717. प्रारब्ध से ज्यादा क्या दोगे?
718. पेपू भक्त
719. दत्तात्रेय ने अजगर से सबक लिया

प्रारब्ध पर अन्य दृष्टांत

664. सीता ने डिब्बी में कीड़ा रखा

धर्म पर प्रवचन देने की अपेक्षा यदि सभी एक दूसरे की सेवा-सहायता में लग जाएं तो इससे ऊंचा व बड़ा धर्म दुनिया में कोई हो ही नहीं सकता। फिर दया, प्रेम, अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता आदि के उपदेशों की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

प्रारब्ध

715. गुरु गोविन्द सिंह के चार लड़के

गुरु गोविन्द सिंह का समय मुगलों से जंग का समय था तो गुरु गोविन्द सिंह अपने एक लड़के को जंग के लिए पूरा तैयार करते थे और कहते थे—'सवा लाख से एक लड़ा, तो गोविंन्द सिंह कहाऊं।' एक बार लड़ाई के लिए और नवयुवकों के साथ गुरु साहब के चारों बेटे भी गए जिन्हें दुश्मनों ने दीवार में चुन दिया। शाम को जब सब वापस आए तो गुरु साहब के बेटे न दिखे। उनकी स्त्री ने पूछा—'मेरे लड़के कहां हैं?' गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा—'ये जो बाहर खड़े हैं सब तेरे ही बच्चे तो हैं।' पर स्त्री ने दोबारा पूछा कि—'ये नहीं मेरे पेट के जाए बच्चे?' तब गुरु साहब ने कहा—

सिद्धांत : जिसके वस्तु तिस आगे राखे
प्रभु की आज्ञा माने माथे।

716. दो ब्राह्मण भाइयों की अलग-अलग प्रारब्ध

दो ब्रह्मण भाई थे। एक ने सोचा कि घर बैठने से पेट थोड़े भर सकता है, बाहर निकलकर कमाई-धंधा करना चाहिए।

दूसरा प्रारब्ध-विश्वासी और प्रभु अनुरागी था। दिन-भर आत्मविचार में रहता था। पहले वाला घूमते-घूमते राजा के द्वार पर पहुंचा तो राजा ने उसे एक खरबूजा दिया। यह इसे लेकर घर पहुंचा और भाई से कहा—'यह राजा ने दिया है पर है टके की चीज। आप ही इसे रख लें।' जब उसने काटा तो देखा हीरे-जवाहरातों से भरा है। राजा ने गुप्त दान किया था। प्रारब्ध अनुसार सब कुछ मिलता है।

सिद्धांत : मनुष्य स्वभाववश इच्छाओं के पीछे भागता रहता है पर मिलता उसे वह ही है जो उसके प्रारब्ध में होता है।

717. प्रारब्ध से ज्यादा क्या दोगे?

एक नर्तकी के पास एक संत आया। उसका हाथ देखा और बोला—'मैं तुम्हारे को बहुत-सी धन-सम्पत्ति दिलवा सकता हूं, करामातें करके।' नर्तकी होशियार थी। उसकी बातों में न आई। उसने कहा—'क्या तुम मेरी प्रारब्ध के अलावा कुछ भी दे सकते हो?' संत समझ गया वहां उसकी चतुराई नहीं चलेगी।

सिद्धांत : God has already planned everything for you.

718. पेपू भक्त

पेपू भक्त भगवान का प्यारा संत था। दुख-सुख,

मान-अपमान में समान रहता था। जब कोई साधु-संत घर में आते तो स्त्री के वस्त्र गिरवी रखकर उनको खिलाता था। एक बार जंगल में गया तो बारिश बहुत पड़ने के कारण जमीन में दबी हुई एक देग दिखने में आई। देखा तो उसमें गिन्नी-मोहरें पड़ी थीं। कोई भी खयाल न करके घर चला गया, पर वहां जाकर उसकी बात की, जो पड़ोसी के घरवालों ने सुनी। वे एकदम दौड़कर वह लेने गए। जाकर देखा तो देग तो बराबर है पर खोलने से उसमें से बड़े-बड़े देंभू निकले और उनको दुख देने लगे। उसने समझा, पेपू ने हमें धोखा दिया है। वे देग ले गए और जाकर उसके घर में फेंक दी। उन्होंने सोचा, धोखे का फल पेपू को ही देते हैं तो भले देंभू उसको और बच्चे को मारे। लेकिन प्रारब्ध हर एक की अपनी होती है जो भगवान भी नहीं मिटा सकता। उसने देग फेंकी जो पेपू की स्त्री ने देखी। पेपू ने भी कहा—'यह तो वही देग है जो मैंने जंगल में देखी थी।' खोली तो उन्हें गिन्नियों के ढेर मिले। यह प्रारब्ध में लिखी थी तो दूसरी दुश्मनी के कारण उसके पास छोड़कर गए पर दूसरों को गिन्नी भी देंभू होकर लगी।

सिद्धांत : प्रारब्ध हर एक की अपने साथ ही है।

719. दत्तात्रेय ने अजगर से सबक लिया

दत्तात्रेय ने अपने साधना काल में जड़-चेतन से सबक लिया और सबको अपना गुरु माना। वे संन्यास ले चुके थे

और घर-घर भीख मांगकर खाते थे। कभी कोई भीख नहीं देता तो उन्हें गुस्सा आता। जिस दिन भिक्षा में अच्छा मिलता उस दिन उन्हें खुशी होती। एक दिन वे जंगल की तरफ निकल पड़े। वहां देखा अजगर पेड़ पर लिपटे पड़े हैं। कोई-कोई हिरण खुद वहां पहुंचते हैं और अजगर को पेड़ का हिस्सा समझकर जब पीठ खुजलाने लगते हैं तो अजगर उन्हें निगल जाता है। इस प्रकार दत्तात्रेय को अपनी प्रारब्ध पर विश्वास हो गया और उन्हें भीख मांगने की जरूरत ही न रही।

सिद्धांत : श्रद्धालु को नारायण स्वयं भोजन पहुंचाता है।

19. निन्दा-कीर्ति के दृष्टांतों की सूची

720. राजा ययाति ने अपनी कीर्ति की
721. काशी के धर्मात्मा राजा ने निंदा कराई

निंदा/कीर्ति के अन्य दृष्टांत

552. जब जागने से नींद बेहतर
618. गुरु अमरदास की भक्ति
661. नामदेव पर चोरी का इल्जाम

सुविधा शरीर को होती है, सुख मन को होता है किंतु आनंद आत्मा को होता है। धन से शरीर को सुख मिलता है, तृप्ति मन को होती है, आत्मा में दोनों की उपेक्षा होती है।

निन्दा-कीर्ति

720. राजा ययाति ने अपनी कीर्ति की

एक बार राजा ययाति ने बहुत कठिन तपस्या की थी। कई हजार वर्षों तक फल-फूल पर रहा। कई वर्षों तक जल पीकर गुजारा करता रहा। उसने इतनी घोर तपस्या की कि जो उसे इन्द्र का आसन मिला। यह देखकर इंद्र को उसके प्रति ईर्ष्या हुई।

वो सब देवताओं को लेकर बृहस्पति गुरु के पास जाता है।

गुरु उसे बोलता है, तुम उससे उसके द्वारा अपनी कीर्ति करवाओ तो उसके सारे पुण्य नष्ट हो जाएंगे। सब देवता जाकर ययाति की कीर्ति करने लगे कि आपने बहुत तपस्या की होगी, आपने ऐसी कौन-सी तपस्या की है जो यह आसन मिला। ययाति ने कहा—'मैंने ऐसी तपस्या की है जो आज तक किसी ने नहीं की। कई हजार वर्षों तक मैंने तपस्या की। ऐसे वो अपनी कीर्ति के पुल बांधने लगा। जैसे ही उसने अपनी कीर्ति की, इन्द्र देवता ने कहा—'बस अब आप इस आसन से नीचे उतरो, आपके पुण्य नष्ट हो गए। मुख में

अग्नि देवता होता है, अपनी कीर्ति करने से पुण्य नष्ट हो जाते हैं।'

सिद्धांत : कितनी भी ऊंचाई पर चढ़े हो तपस्या की, पर कीर्ति सीधा नीचे पटकती है।

721. काशी के धर्मात्मा राजा ने निंदा कराई

काशी के बहुत धर्मात्मा राजा के पास स्वर्ग से देवदूत ने आकर कहा कि आपके लिए स्वर्ग में सोने के महल तैयार हैं, आप कभी भी आकर आराम से रह सकते हैं। राजा स्वर्ग की तरफ से निश्चिंत हो गया। उसके अपने धार्मिक स्वभाव का बड़ा घमंड भी हुआ। कुछ दिन बाद वहां एक संत आए। राजा उनका दर्शन करने गया। संत ध्यान में इतना लीन था कि उसे राजा के आने-जाने का कुछ पता ही नहीं पड़ा। राजा ने देखा कि संत ने मुझसे बात भी नहीं की तो गुस्से में घोड़े की लीद उसके सिर पर डालकर चला गया। कुछ दिन बाद फिर स्वर्ग से देवदूत आया और राजा को बताया कि—'स्वर्ग में उसके सोने के महल में अब सिर्फ लीद ही लीद भरी पड़ी है।' राजा बड़ी चिंता में पड़ा और समझ गया कि यह संत के सिर पर लीद डालने का परिणाम है। बहुत पूछने पर देवदूत ने बताया कि इससे छूटने का एक ही उपाय है—'आप अपने राज्य में घोर निन्दा करवाओ। जितनी आपकी निंदा होगी उतनी ही महल से लीद खाली हो जाएगी।' दूसरे दिन राजा ने गुप्तचरों को भेजकर अपनी झूठी

क्रियाओं को फैलाया और अपनी निंदा करवाई। सिर्फ एक लोहार ने नहीं की जिसके कारण थोड़ी लीद बच गई थी। राजा खुद गया लोहार के पास कि वो राजा की निंदा करे। पर समझदार लोहार ने कहा—'मैं आपकी निंदा कर क्यों लीद खाऊं?'

सिद्धांत : अपनी कीर्ति कराना ही फंसना है। परनिंदा करने वाला दूसरों के पापों को अपने ऊपर ले लेता है।

21. एक वाक्य की महिमा

1. अक्षर से मनुष्य की बुद्धि की परीक्षा होती है।
2. मृत्यु कब होगी? इस पर विचार मत हो।
3. वियोग में प्रेम पुष्ट होता है।
4. कहना और करना एक रखो।
5. अधिक लोभ पाप की जड़ है।
6. सत्य कभी पुराना नहीं होता।
7. निंदा को सुनना करने से भी बुरा है।
8. मरने के बाद धन नहीं—धर्म साथ जाता है।
9. ज्यादा जीने की, जल्दी मरने की इच्छा मत करो।
10. आप भला तो जग भला।
11. काम अधिक बात कम करो।
12. नेत्रों द्वारा 'काम' मन में आता है।
13. स्वार्थ मनुष्य को पागल बनाता है।
14. भावों की शुद्धि बड़ा तप है।
15. जीभ के अधीन नहीं होना।
16. जप और नाम मन कों सुधारते हैं।
17. सत्य बोलना भी यज्ञ है।
18. संत का सुमिरन पाप करने से रोकता है।

19. अन्य धर्मों के प्रति दुर्भाव न रखो।
20. इच्छा भक्ति में विघ्नकारक है।
21. अकेले खाने वाला दरिद्र हो जाता है।
22. वृद्धावस्था में प्राण बहुत अकुलाते हैं।
23. प्रतिक्षण को जो सुधारे उसका मरण सुधरता है।
24. स्त्रियों से अधिक अधीनता पाप है।
25. प्रेम करने योग्य एक भगवान ही तो है।
26. दुख ईर्ष्या का कारण है।
27. प्रेम के बंधन से भगवान भी बंध जाते हैं।
28. अपना मन और बुद्धि भगवान को अर्पण करो।
29. सत्कर्म को अपने मुख से बखान न करो।
30. अभिमान मनुष्य के पतन का कारण है।
31. भक्ति रहित ज्ञान रूखा-सूखा है।
32. जीवन के अंतिम स्वांस में भगवान ही याद रहें।
33. दूसरों के सुख में सुखी रहना ही प्रेम का लक्षण है।
34. बिना ज्ञान और भक्ति के वैराग्य नहीं होता।
35. वासना ही पुनर्जन्म का कारण है।
36. दूसरे के सुख में सुखी रहना सीखो।
37. जीवन जिसका सादा, वही है सच्चा साधु।
38. पसीने की कमाई ही परमात्मा को प्यारी है।
39. व्यवसाय करते समय धर्म में भूलना मत।
40. मन की मृत्यु ही मोक्ष है।
41. मानव के लिए क्षण-क्षण मूल्यवान है।

42. सुख में छलकना नहीं, दुख में मुरझाना नहीं।
43. मनुष्य मालिक नहीं, प्रभु का मुनीम है।
44. तृष्णा नहीं पर मनुष्य बूढ़ा हो जाता है।
45. ईश्वर के रास्ते में बुद्धि नहीं पर शुद्धि की जरूरत है।
46. पुरुषार्थ बिना प्राप्ति में आनन्द नहीं आता ।
47. विश्वास का वियोग हो तो श्रद्धा को झुकना पड़ता है।
48. अधिक सम्पत्ति अधिक विपत्ति।
49. महात्माओं के द्वारा संसार सफेद दिखाई देता है।
50. प्रभाव छिपावे, स्वभाव प्रगट करे, वही सच्चा संत है।
51. माता-पिता जन्म देते हैं गुरु जीवन देता है।
52. आंख और कान दोनों को पवित्र रखो।
53. जो खुद शांत नहीं वह औरों को क्या शांति देगा?
54. चौबीस घंटे ईश्वर का सुमिरण ही भक्ति है।
55. संतों का दर्शन मनुष्य को निर्विकारी बनाता है।
56. दांत होने पर ही सुपारी खा सकते हैं।
57. जल्दी सीखा हुआ जल्दी भूल जाता है।
58. तलवार से दाढ़ी नहीं बना सकते।
59. बिल्ली को दूध पीने का आग्रह नहीं किया जाता।
60. आदमी सत्संग में बैठता है पर सत्संग आदमी में नहीं बैठता।
61. सब कामनाओं का त्याग ही तप है।
62. मोक्ष-तत्त्व का जानकार ही तत्त्वदर्शी है।
63. सिद्धांतों को जीवन में उतारने से ही ज्ञानी होता है।

64. अहं भाव रखे वो मूर्ख है।
65. माया के अधीन हो जाए वो जीव है।
66. संतोषी पुरुष सच्चा धनवान है।
67. असंतोषी ही गरीब है।
68. विचार करने से ही वैराग्य आता है।
69. स्त्री, धन, बालक ये तपस्या के बाधक हैं।
70. मृत्यु का अर्थ है जीवन के हिसाब बताने का दिन।
71. बारम्बार एक ही स्वरूप का चिंतन करो।
72. जिसका जीवन शुद्ध है उसका हिसाब ठीक है।
73. संयम और सदाचार धीरे-धीरे बढ़ाते जाओ।
74. सज्जनता संत-मिलन का कारण है।
75. मन के अधीन नहीं होना——उस पर विजय प्राप्त करना।
76. काल (मृत्यु) अवश्यम्भावी है उसे याद रखना।
77. भक्ति में भोग बाधक है।
78. गर्भ-वास नरक-वास तुल्य है।
79. लोभ और ममता पाप के माता-पिता हैं।
80. प्रारंभ में भोग का त्याग करना ही पड़ता है।
81. समर्थ होकर भी जो सहन करे वो ही सच्चा संत है।
82. सुखी रहना है तो कम खाओ गम खाओ।

खाना, पीना, सोना पशुओं का भी काम।
मनुष्य में बस एक गुण जपे राम का नाम॥

Money

Money can buy books - But not the knowledge.
Money can buy toys - but not joy.
Money can buy jewellery - but not beauty.
Money can buy plants - but not their growth.
Money can buy house - but not a home.
Money can buy eatables - but not an appetite
Money can buy all visibles - but not the invisible.
Money can bear many fruits but not a child.

विश्वास

- Faith is the force of life—विश्वास ही जीवन की शक्ति है।
- ईश्वर की अपने अंदर उपस्थिति का चैतन्य ज्ञान ही विश्वास है। वो भी गुरु के बिना नहीं।
- विश्वास सारे वरदानों का आधार है।
- विश्वास का अभाव ही अज्ञान है।
- विश्वास ही व्यक्ति की महानता का पहला लक्षण है।

स्थिरता

आपने देखा होगा कि जब एक फोटोग्राफर फोटो खींचता है तब यदि उसके हाथ का Camera हिल जाता है तो फोटो धुंधला आता है पर यदि उसका हाथ एकदम स्थिर है तो

फोटो साफ और सुन्दर खिंचता है। ऐसे ही जिसका मन स्थिर 'Still' है उसके मन में मधुसूदन का दर्शन साफ-सुन्दर दिखाई देगा, तो अस्थिर मन भ्रम, स्थिर मन ब्रह्म है।

सुविचार

- हंसते-मुस्कुराते हुए मनुष्यों के पास क्रोध, ईर्ष्या, हिंसा फटकते तक नहीं हैं।
- जो सही बात कहने में संकोच नहीं करता और सच बात को भी मीठा-मीठा करके कहता है, जो कटु सत्य नहीं बोलता, प्रिय असत्य भी नहीं बोलता, जो अपनी प्रशंसा और दूसरे की निंदा नहीं करता, जो अपनी भलाई के लिए किसी का नुकसान नहीं करता और जो किसी भी लालच, भय से न्याय-मार्ग से विचलित नहीं होता—वही बुद्धिमान है।
- व्यथा, क्रोध, चिड़चिड़ापन—थके हुए मन में ही ज्यादा उत्पन्न होते हैं।
- मदिरा की दुकान पर दूध भी अपनी पवित्रता को खो देता है और लोग दूध को भी मदिरा समझने लगते हैं। और दूध का संग पाकर पानी भी दूध के भाव बिकता है।

  As the Company so the Colour.
- चरित्र के निर्माण की नींव बचपन में ही डालनी आवश्यक है तभी चरित्र का सही रूप उभरता है।
- अवसर को खो देना सफलता को खो देना है।
- मेहनत शरीर को स्वस्थ, मस्तिष्क को साफ और हृदय को उदार रखती है।

हम सब केकड़े हैं

एक टोकरी है जिसमें केकड़े ही केकड़े भरे हुए हैं। वह टोकरी खुली है, बंद नहीं। उस पर ढक्कन भी नहीं है, खुले मुंह की है। पास ही एक व्यक्ति निर्भय सोया हुआ है जो खर्राटे की नींद ले रहा है। एक आदमी ने यह देखा और आश्चर्यचकित होकर खड़े का खड़ा रह गया, फिर उसने सहानुभूति में भरकर उस सोए हुए आदमी को जगाया और कहा—'भले आदमी, कैसे बेखौफ सोए हुए हो? केकड़ों से डरते नहीं?' उस सोए हुए व्यक्ति ने उस भले इंसान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा—'ऐसी बात नहीं कि मुझे डर नहीं लगता। मैं मक्खी-मच्छर से भी बचने का प्रयास करता हूं। पर मुझे लगता है कि आप केकड़ों की प्रवृत्ति नहीं जानते, इनसे डर कैसा? ये केकड़े अंदर हैं तो अंदर ही रहेंगे। आप देखें—एक केकड़ा जब बाहर निकलने के लिए ऊपर चढ़ता है तो दूसरा टांग पकड़कर उसको खींचकर पटक देता है। सभी तत्पर हैं, सभी सजग हैं—सभी देखते हैं कि कोई ऊपर चढ़ न जाए। सब एक-दूसरे की टांग खींचकर गिराने की बहादुरी में लगे हैं।'

उसके इस उत्तर से वह भला आदमी विस्मय में पड़ गया। उसने सोचा—'आज हम सभी तो केकड़े हैं, इनसे भी गए-बीते। जब कोई आगे बढ़ता है तो हम गिराने में, नीचा दिखाने में और उसकी छवि पर कालिख पोतने में लग जाते हैं।'

असली ज्ञान

एक युवा संन्यासी एक आश्रम में ठहरा हुआ था। वह युवा वहां रह रहे एक वृद्ध संन्यासी की सत्-संगत को आया था। दो-चार दिन रहने के बाद उसे लगा कि वह बूढ़ा अज्ञानी है। सोचा, छोड़ दूं इस आश्रम को, कहीं और खोजूं किसी और गुरु को, लेकिन जिस दिन वह आश्रम छोड़ने को था उसी दिन एक अन्य साधु का आगमन उस आश्रम में हुआ। रात को आश्रम के एक कक्ष में सभी अंत:वासी एकत्र हुए और उनकी बातें हुईं। नए आए हुए साधु ने बड़े प्रभाव से इतनी ज्ञान की ऐसी बातें की कि छोड़ने वाले युवा संन्यासी को लगा कि गुरु हो तो ऐसा हो! दो घंटे में ही वह मन्त्रमुग्ध हो गया था।

जब चर्चा समाप्त हुई तो नए साधु ने वृद्ध संन्यासी से पूछा—'आपको मेरी बातें कैसी लगीं?' वृद्ध ने कहा—'तुम्हारी बातें! बातें तो तुम करते थे, लेनिक वे तुम्हारी नहीं थीं। मैं तो बहुत ध्यान से सुनता था कि तुम कुछ बोलोगे, परंतु तुम तो कुछ बोलते ही नहीं थे। तुमने जो कुछ इकट्ठा कर लिया उसे ही निकालते जा रहे। बाहर से जो भीतर ले जाया जाए और उसे फिर निकाला जाए तो उसमें से वमन की दुर्गन्ध आती है।

तुम्हारे भीतर से किताबें बोलती थीं, शास्त्र बोलते थे, लेकिन तुम जरा भी नहीं बोले।'

युवा संन्यासी जो आश्रम छोड़कर जाना चाहता था, वह रुक गया। उसे पता चला कि जानने-जानने में फर्क बहुत है। एक

जानना वह है, जिसका जन्म भीतर से होता है। हम बाहर से जो इकट्ठा कर लेते हैं, वह हमारा बंधन हो जाता है। उससे हमारे जीवन में कोई परिवर्तन आने वाला नहीं है, वह हमें मुक्त नहीं करता। जो भीतर से आता है वही हमें मुक्त करता है।

सफल जीवन

महापुरुष आते हैं और उन्हें हम खो देते हैं। हमारे जीवन की यह विडम्बना है। हम उन्हें पूजते हैं, देवता बनाते हैं, उनके लिए विशाल मंदिर बनाते हैं——इस प्रकार हम उन्हें अपने जीवन से दूर पटक देते हैं। हमें उनके जीवन काल में उनका मूल्य-बोध नहीं हो पाता, हमें पता भी नहीं चलता कि हमारे आस-पास कोई है, एक विभूति है, एक शानदार शख्सियत है और एक विवेकशील मनुष्य!

किसी को पता न चला उसके कद का अंदाज।
जो आसमान था मगर सर झुकाकर चला॥

हम हमेशा महापुरुषों को खोते हुए आए हैं, कभी उन्हें तुच्छ समझकर, कभी शैतान मानकर और कभी देवता बनाकर। महापुरुषों के चरित-गठन को हम अपने चरित-गठन के रूप में पहरेदार बनाएं, उनकी खूबियों को अपनाएं, उनकी बुराइयों से दूर रहें, यही उनके दृष्टांतों को पढ़ने का सफल ढंग है और यही जीवन को सफल बनाने का तरीका है।

ॐ ॐ ॐ